नया उपन्यास

केशव पण्डित

बन जाओ सजना तानाशाह

111 वाँ
नया उपन्यास

करोड़ों पाठकों की पसंद

धोखे से बचें! नक्कालों से सावधान!

एक ही पुस्तक में
सम्पूर्ण नया उपन्यास

धीरज पॉकेट बुक्स

केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 111 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगी रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाइम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. कानून की लोमड़ी
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी विधवा
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी लड़ेगी हाथी से
49. पगली माई बोले जयहिन्द
50. तू लोमड़ी मैं चाणक्य
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. गेम मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊंट पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. बब्बर शेर
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लोहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालम का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. केकड़ा
89. बारात जायेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊँचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीवाली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. केशव की शादी
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. दो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. ये पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह

112वां आगामी नया उपन्यास शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा

बन जाओ सजना तानाशाह

के कुछ प्रमुख पात्र

काला मदारी—आई.एस.आई. का रहस्यमयी मुखिया, जो कि हिन्दुस्तान में गड़बड़ियां फैलाने के लिये पूरे जोर लगा रहा है।

काले खां—'टेरर मूवमेंट फ्रन्ट' नामक आतंकी संगठन का सरगना, जिसे तबाही के खेल खेलने में मजा आता है।

जमाल खान—पाकिस्तानी मिलिट्री का लेफ्टीनेंट जनरल और आई.एस.आई. का संचालक, जो हर घड़ी हिन्दुस्तान से बदला लेने के ही ख्वाब देखता रहता है।

सुजाता भारती—जो कम उम्र में ही भारत की प्रधानमन्त्री बन गई और उसने ऐसे काम करने शुरू कर दिये कि उसके दुश्मन बौखलाकर उसकी हत्या की साजिश रचने लगे।

उदयराज—एनकाउन्टर-स्पेशलिस्ट के नाम से मशहूर रिटायर्ड पुलिस ऑफिसर, जो एक हादसे में अपाहिज होने पर घर में बैठने को मजबूर तो है, लेकिन बहुत कुछ करने को मचल रहा है।

वंशराज—उस पर एक लड़की की इज्जत लूटने की कोशिश करने का इल्जाम लगा तो उसने आत्महत्या कर ली, लेकिन जब दिमाग का जादूगर केशव पण्डित घटनास्थल पर पहुंचा तो मामला कुछ और ही निकला।

साथ में और भी कई पात्र, जो कि

बन जाओ सजना तानाशाह

के कथानक में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे!

"क्या केशव को उड़ाया नहीं जा सकता...काला मदारी?"

"अभी तो मुमकिन नहीं है हाजी साहब...कतई भी नहीं है। क्योंकि मिलिट्री और सभी सेनाओं के जवान पूरे मुस्तैद हैं। केशव की सिक्योरिटी के बन्दोबस्त अमेरिकी राष्ट्रपति की सिक्योरिटी को भी फेल कर रहे हैं। अभी तो केशव पर हमला करने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता है, लेकिन इसका मतलब ये भी नहीं कि काला मदारी हाथ-पर-हाथ रखकर बैठा रहेगा..." उसके मुंह से मानो आग की लपटें ही निकल रही थीं, "बहुत करारी चोट दी है केशव पण्डित ने मुझे। उससे खार खा गया हूं...खुन्नस खा गया हूं। उसका खात्मा किये बिना चैन से नहीं बैठूंगा। लेकिन ठण्डी करके खानी होगी। सब्र से...ठण्डे दिमाग से काम लेना होगा। कोई-न-कोई तरकीब तो निकलेगी ही, अगर केशव पण्डित ज्यादा दिनों तक तानाशाह बना रहा तो हमारा सत्यनाश कर देगा। उसकी तानाशाही के साथ-साथ उसकी जिन्दगी को भी खत्म करना होगा...।"

बन जाओ सजना तानाशाह

केशव पण्डित

"आपको इलेक्शन लड़ना होगा पण्डित जी! देश को आप जैसे ईमानदार, परोपकारी और देशभक्त की जरूरत है। इस इलाके से हमारी पार्टी आपको सांसद का चुनाव लड़वाने की सोच रही है।"

बंगले के ही एक हिस्से में बने शानदार ऑफिस में मौजूद केशव पण्डित!

दिमाग का जादूगर!

कानून का पुजारी।

उम्र—चालीस वर्ष!

रंग—जैसे दूध में गुलाब की पंखुड़ियां 'मिक्स' कर दी गई हों।

कद-काठी—छह फुट लम्बा व तन्दुरुस्त जिस्म!

चेहरा-अण्डाकार, चौड़े ललाट, लम्बी नाक, गुलाबी होंठ व झील-सी नीली आँखें।

अन्य वर्णन—सुनहरे रंग के अर्ध घुंघराले बाल, चौड़े सीने व गोल-मटोल कलाइयों पर हल्के सुनहरे रंग के बालों के घने गुच्छे, बायीं कलाई पर गोल्डन कलर की खूबसूरत घड़ी, दाहिनी कलाई पर सोने का कड़ा। हाथों की छह लम्बी, मोटी व गोरी-चिट्टी अंगुलियों में बेशकीमती नगीनों वाली अंगूठियां। जिस्म पर नेवी ब्लू कलर का हाफ बाजू वाला सफारी सूट—

जिसमें केशव के सुदर्शन व्यक्तित्व में चार चाँद लगे हुये थे।

चारमीनार की सिगरेट में कश लगाते हुये उसने हाथ जोड़े खड़े एक दर्जन छुटभैया किस्म के नेताओं को देखा, जो कि खादी के कुर्ते-पायजामों के साथ सिर पर गांधी टोपी पहने हुये थे।

फिर मेज के पार कुर्सी पर विराजमान सांवली रंगत वाले अधेड़ प्रभुनाथ जोगलेकर को देखा, जो कि सत्ताधारी पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष था।

"क्षमा चाहूंगा जोगलेकर साहब...," बहुत ही विनम्रता व शालीनता के साथ बोला केशव—"मैं आपके इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता।"

"क...क्यों...?" जोगलेकर को झटका-सा लगा।

चेहरे पर ऐसी मुर्दनी-सी छा गई कि मानो पूरा पेड़ पाने की पक्की उम्मीद से आया हो, लेकिन सूखे पत्तों के रूप में निराशा ही हाथ लगी हो।

"आप तो जानते ही हैं जोगलेकर साहब कि मैं एक वकील और इन्वेस्टीगेटर होने के साथ-साथ लेखक भी हूं। सारा दिन भागा-दौड़ी में निकल जाता है। कभी-कभी तो रात में भी जागरण हो जाता है। मैं जिस पेशे में हूं—उसी से सन्तुष्ट हूं। अपने तरीके से मजलूमों, कानून और देश की सेवा कर रहा हूं। राजनीति में मेरी जरा-सी भी दिलचस्पी नहीं है...कतई नहीं है। अपने कामों को ही कम्पलीट नहीं कर पाता हूं—फिर राजनीति के लिये कहां से टाइम निकालूंगा? सांसद को हफ्ते-महीने में दिल्ली जाकर पार्लियामेंट में हाजिरी लगानी पड़ती है। अपने क्षेत्र का पूरा ख्याल रखना पड़ता है। अगर मैं संसद में और अपने संसदीय-क्षेत्र के लोगों को समय नहीं दे सकता तो मुझे सांसद बनने का कतई भी हक नहीं है। आप ऐसे व्यक्ति को इलेक्शन लड़वाइये—जिसके पास वक्त-ही-वक्त हो। ईमानदार लोगों की कोई कमी नहीं है।"

"यूं तो बहुत से लोग टिकिट पाने को लाइन में लगे हुये हैं पण्डित जी! लेकिन उनमें से एक भी आपकी टक्कर का नहीं है। आपकी अलग ही छवि है। आपका रुतबा है। मुम्बई में

क्या पूरे देश में आपकी शोहरत है...नाम है। आपके आ जाने से हमें मुम्बई की तमाम सीटों पर फायदा होगा—बल्कि प्रदेश और देशभर में लाभ मिलेगा। हमारी पार्टी के दोबारा सत्ता में आने के पूरे चांसेज हैं। आपको मिनिस्टर बनवाने की मेरी फुल गारन्टी है।"

"मिनिस्टर बनकर तो मैं कतई बेकार हो जाऊंगा। अपने प्रोफेशन को जरा-सा भी वक्त नहीं दे पाऊंगा। नहीं...मुझे नहीं बनना मिनिस्टर और एम० पी०! मेरी जरा-सी भी दिलचस्पी नहीं है। सांसद या मन्त्री बनने का कतई भी मोह नहीं है। मैं अपनी ही दुनिया में मस्त हूं। क्षमा चाहूंगा! मुझे अफसोस है कि आपको निराश कर रहा हूं। मैं किसी भी कीमत पर इलेक्शन नहीं लडूंगा...राजनीति में नहीं आऊंगा।"

बेचारे जोगलेकर का चेहरा यूं ही मुरझा गया—जैसे सूरज के छिपते ही सूरजमुखी का फूल कुम्हला जाता है।



"वो तो आपका तुक्का लग गया था मम्मी जी...।" चौदह वर्षीय, लेकिन पूरा छह फुटा, तन्दुरुस्त, खूबसूरत और किसी हद तक केशव का हमशक्ल आशीर्वाद पण्डित!

केशव का लाडला बेटा!

सोफिया पण्डित के जिगर का टुकड़ा!

राजन, चांदनी, करतार सिंह और भी ना जाने किस-किस की आंखों का तारा।

चने कुटकुटाते हुये और सोफिया की 'खुश्की' लेते हुये बोला—"आपका आइडिया उसी तरह फिट बैठ गया था, जैसे अन्धे का तीर बिटोड़े में जा लगे! आपने यूं ही अन्दाजा लिया था कि खलीफा सिंगही है और जिस शख्स ने नकली सलमा आन्टी को कत्ल किया था, वो डैडी जी नहीं...बल्कि उनका क्लोन था। सुलेमान-बिन-तुगलक की फैमली आपके कब्जे में आ गई थी तो वो मजबूर हो गया था। आपको अपनी बीवी नूरजहां के रूप में सलमा जी और खलीफा के हैडक्वार्टर पर ले गया था। वहां आपने कुछ खास नहीं किया। अपनी बेवकूफी से ही सिंगही आपके कब्जे में आ गया था और आपने उससे

जिसमें केशव
थे।
चारमीनार
खड़े एवं दर्जन
खादी के कुर्ते-प
थे।
फिर मेज
अधेड़ प्रभुनाथ
प्रदेश अध्यक्ष
"क्षमा चा
व शालीनता के
स्वीकार नहीं क
"क...क
चेहरे पर
की पक्की उम्मी
निराशा ही हाथ
"आप तो
और इन्वेस्टीगेट
भागा-दौड़ी में
जागरण हो जात
अपने तरीके से
हूं। राजनीति में
है। अपने काम
राजनीति के
हफ्ते-महीने में
पड़ती है। अप
मैं संसद में औ
दे सकता तो मु
ऐसे व्यक्ति को
हो। ईमानदार
"यूं तो ब
हैं पण्डित जी!
है। आपकी अ

ही उसके तमाम आदमियों को मरवाकर उसका हैडक्वार्टर भी उड़वा दिया था। सिंगही की जादुई छड़ी और गैजेट आपके कब्जे में थे। वो मजबूर था। उसने आपको अपना सारा प्लान बतला दिया था—जिसे आपने अदालत को बतला दिया था। बेमतलब में ही आपको झांसी की रानी का खिताब मिल गया था।"

(अगर आपने केशव पण्डित का पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'मेरी बीवी झांसी की रानी' नहीं पढ़ा है तो आशीर्वाद पण्डित की बातें पल्ले नहीं पड़ रही होंगी। खलीफा, मैडम जी जैसे कई रहस्यमयी पात्र, खतरनाक सुलेमान बिन तुगलक आतंकी के कारनामों के साथ इस उपन्यास में केशव पण्डित एक ऐसे चक्रव्यूह में फंस जाता है कि उसे अपनी बीवी सोफिया पण्डित की मदद लेनी पड़ती है। एक शानदार, रोचक, रहस्यमयी व तेज रफ्तार आविस्मरणीय कथानक का लुत्फ लेने के लिये कृपया 'केशव पण्डित' द्वारा रचित 'मेरी बीवी झांसी की रानी' अवश्य ही पढ़ियेगा।)

स्वर्ग की अप्सरा-सी खूबसूरत सोफिया ने पन्ना-सी हरी आंखें तरेरते हुये आशीर्वाद से कृत्रिम क्रोध में कहा—"तेरा मतलब ये है लड़के कि हम औरतें बहादुरी और सूझबूझ के मामले में मर्दों से कम होती हैं?"

"बिल्कुल...इसमें शक वाली बात ही क्या माई लवली-लवली मम्मी जी! डैडी जी के मुकाबले में क्या आप ठहर सकती हैं?"

"बिल्कुल! क्यों नहीं? मौका मिलने पर मैं ये बात साबित कर सकती हूं। सिंगही का बैंड बजाकर मैंने इस बात को साबित भी किया है कि हम औरतें किसी भी मामले में मर्दों से कम नहीं होतीं। तुझे शक है तो मेरा एग्जाम ले सकता है।"

राजन शुक्ला, उसकी खूबसूरत पत्नी चांदनी और करतार सिंह मूक दर्शक बने, सिर्फ मुस्कराते हुये 'माँ-बेटे' की प्यारभरी तकरार का लुत्फ ले रहे थे।

(केशव पण्डित के नियमित पाठक जानते हैं कि राजन शुक्ला केशव पण्डित का असिस्टेंट है और अपनी पत्नी चांदनी के साथ केशव के बंगले में ही रहता है। पटियाला वाला करतार

सिंह केशव का ड्राइवर-कम असिस्टेंट है—लेकिन वो अलग किराये के मकान में रहता है।)

डेनिम की नीली जींस के ऊपर पहनी डेनिम की ही नीली शरकीन को जेब से भुने हुये चने के चन्द दाने निकालने पर नीलम-सी आंखों वाला 'मुण्डा' सोफिया की हरी व खूबसूरत आंखों में झांकते हुये बोला—"चलिये...आप भी क्या याद करेंगी प्यारी माता जी। अगर आपने अड़तालीस घण्टे के भीतर मेरे सवाल को हल कर दिया तो मान जाऊंगा कि आप जीनियस माइंड वाली हैं।"

"हां तो पूछ ना! मैं कौन-सा पीछे हटने वाली हूं। अड़तालीस घंटे की बजाय चौबीस घंटों के भीतर तेरे सवाल का जवाब ना दे दिया तो मेरा नाम भी सोफिया पण्डित नहीं। बतला—क्या सवाल है तेरा?"

□□□
□□□

चने के चन्द दाने मुंह में 'झोंकने' पर आशीर्वाद ने मुस्कराते हुये ड्राइंग रूम में मौजूद राजन, चांदनी व करतार सिंह पर दृष्टिपात किया, फिर सोफिया से सम्बोधित हुआ—

"एक बादशाह अपनी बेगम, वजीर, वजीरनी, दास व दासी के साथ जंगल में सैर-सपाटे के लिये गया। वो लोग रास्ता भटक गये। रथ में जोते गये घोड़ों को घास चरने के लिये खोल दिया गया—लेकिन वो घोड़े शेरों के झुंड के शिकार हो गये। अब बादशाह, बेगम, वजीर, वजीरनी, दास और दासी के सामने पैदल चलने के सिवाय दूसरा कोई विकल्प नहीं बचा था। सो वो छःओं पैदल ही आगे बढ़े।

ये बतला दूं कि दास और दासी आपस में पति-पत्नी थे और बेगम, वजीरनी, दासी तीनों ही बला की खूबसूरत थीं और उनके पति उन्हें अपनी जान से भी बढ़कर चाहते थे। खैर, आगे चलने पर एक तेज बहाव वाली गहरी और चौड़ी नदी आ गई और उन छःओं में से कोई भी तैरना नहीं जानता था। वो लोग कुछ दूर नदी के किनारे-किनारे चले तो उन्हें एक किश्ती और दो चप्पू मिल गये। लेकिन किश्ती पुरानी, कमजोर, जर्जर हालत वाली थी। उसमें हद से हद, ज्यादा से ज्यादा दो लोग ही बैठ

सकते थे। अब एक प्रॉब्लम क्रियेट होती है—वो ये कि तीनों मर्द यानि बादशाह, वजीर और दास अपनी बीवियों को अपने साथ ही रखना चाहते थे। तीनों को ही ये डर था कि अगर उसकी बीवी नदी के इधर या उस पार दूसरे मर्द के साथ रह गई तो वो उसे लेकर चलता बनेगा। तीनों को ये तो मन्जूर था कि उनकी बीवी दूसरी औरतों के साथ रह सकती है—लेकिन ये कतई मन्जूर नहीं था कि वो नदी के एक तरफ हो और उसकी बीवी दूसरी तरफ एक या दोनों मर्दों के साथ रह जाये।

इसी के साथ सबसे बड़ी प्रॉब्लम ये थी कि बादशाह, बेगम, वजीर और वजीरनी, दास या दासी के साथ किश्ती में बैठने में अपनी तौहीन मान रहे थे—यानि वो चारों दास या दासी में से किसी के साथ भी किश्ती में सवार होने को राजी नहीं थे। अब ऐसा कौन-सा रास्ता अपनाया जाये कि वो लोग नदी के पार भी पहुंच जायें और बेगम, वजीरनी और दासी में से कोई भी अपने पति से अलग होने पर दूसरे मर्द या दोनों मर्दों के साथ दूसरी तरफ हो। या तो औरतें अपने पति के साथ हों, या फिर दूसरी औरतों के साथ हो या फिर अपने पति के साथ हो, इसी के साथ बादशाह, बेगम, वजीर और वजीरनी दास-दासी के साथ किश्ती में नहीं बैठेंगे। बतालाइये मम्मा जी...वो लोग किस तरीके से नदी के पार पहुंच सकेंगे? जवाब देने के लिये आपके पास पूरे अड़तालीस घण्टे हैं। अड़तालीस घंटों में आपने इस सवाल को हल कर दिया तो आपको मान जाऊंगा मैं।"

"मैं चौबीस घंटे के भीतर ही तेरे इस सवाल का जवाब देकर रहूंगी बेटा।" सोफिया की आवाज में आत्म-विश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ था।

तभी केशव भी वहां आ पहुंचा—वो भी हँसते हुये!

"क्या हुआ पतिदेव?" सोफिया ने चंचल व शरारतपूर्ण मुस्कान के साथ पूछा—"किस बात पर हँसी आ रही है जनाब को...?"

□□□
□□□

पहले केशव ने चारमिनार की डिब्बी से एक धुम्रपान

दंडिका निकालकर गुलाबी होंठों के शिकंजे में उसका एक सिरा फंसाया।

सिगरेट की डिब्बी के जितना बड़ा ही गोल्डन कलर का लाइटर निकाल उसका 'खटका' दबाया और नीली लौ से सिगरेट के अगले सिरे का 'दाह-संस्कार' किया।

धुएं के छल्ले मुख से छोड़ने पर उसी मुख से शब्द निकाले—

"पूर्व सी० एम० प्रभुनाथ जोगलेकर अपने चमचों के साथ आये थे, वो चाहते थे कि मैं इस इलाके से एम० पी० यानि सांसद का इलेक्शन लड़ूं...।"

"तो आपने उनका ऑफर कबूल कर लिया ना...भाई साहब?" चांदनी मैना-सी चहकी।

"पागल हुई हो क्या तुम...?" केशव की आंखों व आवाज में चांदनी के लिये पिता का-सा स्नेह व प्यार था—"मुझे अपने काम से ही फुर्सत नहीं मिलती। ना ही मुझे राजनीति में जरा-सी भी दिलचस्पी है। मैं ये मानता हूं कि आजकल की राजनीति कीचड़ समान है।"

"लेकिन कमल के फूल भी कीचड़ में ही खिलते हैं केशव...!" सोफिया तपाक से बोली—"राजनीति में सभी बुरे या भ्रष्ट किस्म के नेता नहीं हैं—ईमानदार नेता भी हैं। फिर...गन्दगी को साफ करने के लिये तालाब में तो उतरना ही पड़ेगा। किनारे पर बैठकर तो तालाब की गन्दगी साफ नहीं की जा सकती है। देश को तुम जैसे ईमानदार और देशभक्त लोगों की सख्त जरूरत है। मेरे ख्याल से तो तुम्हें इलेक्शन लड़कर और जीतकर पार्लियामेंट में पहुंचना चाहिये। भले ही तुम कोई सी भी पार्टी ज्वॉइन करो—या फिर इंडीपेंडेंट लड़ो।"

"मैं अपने तरीके से समाज और देश की सेवा कर रहा हूं सोफी...।" गम्भीर होकर बोला केशव, "हमेशा मुजरिमों और देश के दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई लड़ता ही रहता हूं...फिर लेखन कार्य भी तो करना पड़ता है। राजनीति में घुस गया तो फिर वकालत, इन्वेस्टीगेशन और लेखन कार्य नहीं हो पायेगा। नहीं...मुझे नहीं लड़ना इलेक्शन-विलेक्शन! छोड़ो इस टॉपिक को! तुम बढ़िया-सी चाय पिलवाओ चांदनी...इलायची वाली।"

चांदनी तुरन्त ही उठकर किचन की तरफ चली गई। जबकि आशीर्वाद सोफिया से बोला—"योर टाइम इज स्टार्ट डियर मम्मी जी। अड़तालीस घन्टे में मेरे सवाल का जवाब देना...।"

"चौबीस घण्टे...!" सोफिया मुण्डे की बात काटकर तथा चुटकी बजाकर बोली—"चौबीस घण्टे के भीतर तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब मिल जायेगा।"

□□□

"मम्मी...मम्मी...मेरे साथ क्रिकेट खेलिये ना!" कोई पांच वर्षीय चुनमुन ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठकर कंघी से केश संवार रही सोनिया के गले में पीछे से नन्हीं-नन्हीं बांहें डालकर बोला—"आप बॉलिंग करेंगी और मैं धोनी बनकर सिक्सर लगाऊंगा।"

सोनिया ने पलटकर चुनमुन के कचौरियों से फूले गालों को चूमने पर बहुत ही लाड़-प्यार से कहा—"मम्मी को ऑफिस का पेंडिंग वर्क कम्पलीट करना है। तुम ऐसा करो कि आज रामू काका के साथ खेल लो। सुबह डैडी पुणे से आ जायेंगे तो कल उनके साथ खूब खेलना। नीचे लॉन में जाकर खेलना! टैरेस पर मत जाना। अभी रेलिंग नहीं बनी है ना।"

"नहीं...रामू काका के साथ नहीं...!" चुनमुन ठिनकते हुये बोला—"वो तो बहुत धीरे से बोलिंग करते हैं। सिक्सर क्या...बाउन्ड्री भी नहीं लगती। मैं ऐसा करता हूं कि ऊपर जाकर काइट उड़ाता...।"

"नो, बिल्कुल नहीं! कहा ना...ऊपर बाउन्ड्री वाल पूरी नहीं बनी है। तीन तरफा से दीवारें तो बन गईं—लेकिन फ्रन्ट पोर्सन पर रेलिंग नहीं लगी। या तो रामू काका के साथ नीचे लॉन में क्रिकेट खेलो या फिर अपने रूम में जाकर वीडियो गेम खेलो।"

"ओ० के०...मम्मी जी...।" कहने पर चुनमुन ने सोनिया के काश्मीरी सेब जैसे गाल पर 'पप्पी' ली और फिर कमरे से बाहर निकल गया।

सोनिया केशों में कंघी फिराने लगी और गीत गुनगुनाने

लगी—"मुलतानी कंगन पुआ दे रे ओ सैंया दीवाने...तैनू रब दा वास्ता...।"

□□□

□□□

बच्चे अगर बड़ों की बात मान लें तो फिर उन्हें नादान या मासूम कौन कहे?

चुनमुन ने 'मम्मी' की वार्निंग को नजर अन्दाज कर दिया और पतंग व डोरी वाला 'हुचका' लेकर ऊपर छत पर पहुंच गया।

ताजा-ताजा बने बंगले की छत पर तीन तरफा तो चार फुट ऊंची दीवार बन गई थी—लेकिन फ्रन्ट के लिये लोहे की ग्रिल वाली रेलिंग बनकर नहीं आई थी।

चुनमुन पतंग उड़ाने लगा।

पतंग उड़ाने में इतना मग्न हो गया कि उसे ख्याल ही ना रहा कि छत की एक साइड दीवार विहीन है। हवा में इधर से उधर चकराती पतंग पर नजरें जमाये हुये वो पीछे की तरफ हटने लगा।

हटता रहा...हटता ही चला गया।

जब हवा में उठाये गये बायें पैर को टिकाने के लिये धरातल ना मिला तो उसका सन्तुलन गड़बड़ा गया और नन्हें से दिमाग ने खतरे की घण्टी भी बजा दी।

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

एक लम्बी चीख के साथ चुनमुन कटी पतंग की मानिन्द ही हवा में चकराते हुये नीचे की तरफ गिरता चला गया।

□□□

□□□

चुनमुन की चीख ने तीस वर्षीय सोनिया को बुरी तरह चिहुंका दिया।

कंघी हाथ से छूट गई और दिल बन्दर के नटखट बच्चे की मानिन्द ही उछल-कूद मचाने लगा।

"मा...मालकिन...मालकिन...!"

नौकर रामू की घबराई हुई आवाज ने ब्लड प्रेशर को और भी ज्यादा बढ़ा दिया।

गिरती-पड़ती भागी वो!

एक-एक कदम में सीढ़ी के दो-दो पायदान लांघती सोनिया मन-ही-मन ईश्वर से अपने लाड़ले की कुशलता के लिये प्रार्थना किये जा रही थी।

बंगले से बाहर निकलने पर उसने चुनमुन को लॉन में बेजान-सा पड़े देखा तो मुख से लम्बी चीख उबल पड़ी।

दौड़कर चुनमुन के पास पहुंची, घास पर बैठकर चुनमुन के सिर को अपनी गोद में रखा और उसके गालों को थपथपाते हुये बोली—"चु...चुनमुन...मेरे बच्चे...आंखें खोल मेरे बेटे...चुनमुन...ये कुछ बोल क्यों नहीं रहा है काका? जवाब क्यों नहीं दे रहा है—आंखें क्यों नहीं खोल रहा है?"

"चुनमुन बाबा बेहोश हैं मालकिन...।" अधेड़ उम्र का नौकर घबराया-सा बोला—"वैसे मैंने धड़कनें और नब्ज जांची हैं...दोनों चल तो रही हैं...ले...लेकिन बहुत धीमी हैं!"

"हे भगवान...अब मैं क्या करूं?" सोनिया रो ही तो पड़ी और बोली—"इसके डैडी पुणे गये हैं। एक काम करो काका...सामने पण्डित जी का बंगला है! दौड़कर पण्डित जी को बुला ला...घर में जो कोई भी हो...उसी को बुला ला...जल्दी कर...।"

❑❑❑
❑❑❑

नये पड़ोसी के बच्चे के छत से गिरने की खबर ने केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी व करतार सिंह के हाथ-पैर फुला दिये।

करतार सिंह को छोड़ बाकी लोग दौड़कर सामने के बंगले में पहुंचे।

केशव ने बेहोश चुनमुन को चैक किया तो उसकी धड़कनों व नब्ज की रफ्तार बहुत कम पाकर चिन्तित हो चला। वो चुनमुन को सोनिया से लेकर बाहर की तरफ लपका।

रोती-बिलखती सोनिया गिरती-पड़ती केशव के पीछे लपकी तो उसे सोफिया व चांदनी ने सहारा देने को पकड़ लिया। दोनों के साथ-साथ आशीर्वाद व राजन भी सोनिया को तसल्ली देने लगे कि चुनमुन ठीक हो जायेगा, वो ईश्वर पर भरोसा रखे।

करतार सिंह लाल रंग की टाटा-सफारी को बंगले से बाहर ले आया था।

केशव बेहोश चुनमुन को गोद में लिये हुये अगली सीट पर बैठ गया।

सोफिया व चांदनी रोती-बिलखती सोनिया के साथ पीछे की सीट पर—जबकि आशीर्वाद व राजन सबसे पीछे वाली सीटों पर आमने-सामने बैठे।

करतार सिंह ने गाड़ी को हवाई जहाज बना दिया। बंगला नौकर रणछोड़ सिंह के हवाले था।

❑❑❑
❑❑❑

कैट स्कैन व अन्य टेस्ट करने पर डॉक्टर ने बतलाया कि चुनमुन के सिर व दिमाग में कोई खास चोट या सूजन नहीं है—लॉन की मुलायम घास ने उसकी जान बचा ली थी।

उसकी बेहोशी में घबराहट व सदमे का हाथ है और वो खतरे से बाहर है—लेकिन उसको होश में आने तक नर्सिंग होम में ही रखा जायेगा।

चुनमुन के दायें पैर की हड्डी में फ्रेक्चर आ गया था—सो पैर पर प्लास्टर चढ़ा दिया गया।

सोनिया मां थी! चुनमुन के होश में आने तक उसे चैन नसीब नहीं होने वाला था—लेकिन इस बात ने उसको थोड़ी तसल्ली पहुंचाई थी कि उसका बेटा खतरे से बाहर था।

वो केशव एंड फैमली की अहसानमन्द थी और सभी का शुक्रिया अदा करने पर भी मन-ही-मन उन सभी को दुआ दिये जा रही थी।

❑❑❑
❑❑❑

रात्रि के नौ बजे!

एक जरूरी काम से केशव राजन व करतार सिंह के साथ शाम को ही चला गया था। नर्सिंग होम में सोफिया, चांदनी व आशीर्वाद मौजूद थे।

"तुम्हें बुखार है!" सोफिया चांदनी से बोली—"कल

आशीर्वाद का बोर्ड टेस्ट है। तुम दोनों घर चले जाओ। यहां...सोनिया बहन के साथ मैं रह लेती हूं।"

"आप कल गुप्ता जी के यहां जागरण में गई थीं जीजी! दिन में भी आराम नहीं कर पाईं। आप घर जाकर आराम कीजिये—यहां मैं रुक जाती...।"

"नहीं! तुम घर जाओ और दवाई लेकर रेस्ट करना।" सोफिया अधिकारपूर्ण लहजे में बोली—"कमरे में एक्स्ट्रा बेड है। मैं यहीं पर रेस्ट कर लूंगी। टिफिन और खाली बर्तन ले जाओ।"

आशीर्वाद घर जाकर खाना ले आया था। उसने, सोफिया व चांदनी ने जिद करके सोनिया को भी अपने साथ खाना खिलवा दिया था।

आशीर्वाद व चांदनी चले गये।

"आप रातभर की जागी हुई हैं दीदी!" सोनिया याचना-भरे लहजे में बोली—"प्लीज, आप लेट जाइये। मुझे तो नींद आने वाली नहीं है। चुनमुन की देखभाल करती रहूंगी। अगर जरूरत पड़ी तो आपको जगा लूंगी।"

सोफिया ने आना-कानी की—लेकिन जब सोनिया ने उसे अपनी सौगन्ध दी तो उसे बेड पर लेटना ही पड़ा।

❑❑❑

❑❑❑

रात्रि के कोई बारह बजे सोनिया का पति हेमन्त आ गया।

सोनिया उसकी कोहली भरकर फूट-फूटकर रोने लगी।

उसके रुदन से सोफिया हड़बड़ाकर उठ बैठी।

हेमन्त ने सोनिया के आंसू पोंछे और समझा-बुझाकर शान्त करने पर बेहोश चुनमुन के करीब जा बैठा और पूछा कि चुनमुन की कैसी दशा है?

सोनिया ने बतलाया कि डॉक्टर के मुताबिक चुनमुन खतरे से बाहर है—साथ ही उसने ये भी बतलाया कि चुनमुन के छत पर से गिर जाने पर केशव, सोफिया और बाकी लोगों ने कैसे उसकी मदद की।

हेमन्त ने बेड से उठकर हाथ जोड़ दिये और सोफिया से

कृतज्ञताभरे लहजे में बोला—"मैं आपका...पण्डित जी और बाकी लोगों का जिन्दगीभर अहसानमन्द रहूंगा बहन जी! समझ में नहीं आ रहा है कि कैसे आपका शुक्रिया अदा करूं?"

"आप तो शर्मिन्दा कर रहे हैं हेमन्त भाई...।" मोहक मुस्कान के साथ बोली सोफिया, "ये तो इन्सानियत का तकाजा था। पड़ोसी ही पड़ोसी के काम आते हैं। हमने आप लोगों पर कोई अहसान नहीं किया। प्लीज, अब आप दोनों शुक्रिया जैसी कोई बात नहीं करेंगे।"

"आप रातभर की जागी हुई हैं। अब तो मैं भी आ गया हूं। चलिये, आपको घर छोड़ आता हूं। यहां पर घर जैसा आराम नहीं मिल पायेगा।"

"नहीं! अब मुझे घर पर भी नींद नहीं आने वाली...हेमन्त भाई! मन चुनमुन में ही पड़ा रहेगा। इसके होश में आने तक यहां से हिलूंगी भी नहीं। हां, आप केन्टीन से चाय मंगवा लीजिये।"

हेमन्त चाय के लिये यूं ही लपका कि मानो किसी देवी ने उसकी आराधना से प्रसन्न होने पर दर्शन दिये और चाय की मांग करके उसके जीवन को धन्य कर दिया हो।

❑❑❑

❑❑❑

सुबह-सवेरे ही चुनमुन को होश आ गया और डॉक्टर ने चैकअप करके उसे 'फिट-फोर' घोषित कर दिया। चालीस दिन बाद पैर का प्लास्टर काटने को कहा और प्रिस्क्रिप्शन पर दवाइयां लिखकर चुनमुन को घर ले जाने की इजाजत दे दी।

इतने में ही केशव, आशीर्वाद, राजन और करतार सिंह भी आ गये।

चुनमुन को प्यार किया!

हेमन्त ने चारों का आभार व्यक्त किया तो केशव ने वो ही बातें दोहरा दीं, जो रात में सोफिया ने बोली थीं।

खैर, हेमन्त और सोनिया नर्सिंग होम की एम्बूलेंस से, जबकि केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन व करतार सिंह अपनी गाड़ी से घर के लिये रवाना हुये।



बीस हजार की कैपेसिटी वाला मैदान खचाखच भरा हुआ था।

इतना ही नहीं, आस-पास की इमारतों की छतों और पेड़ों पर भी लोग-बाग चढ़े हुये थे।

पूरे मैदान में चारों तरफ तीन रंगों वाले झण्डे लगे हुये थे, जिन पर सूरज का निशान बना हुआ था।

उन्हीं रंगों की झण्डियों और बन्दनवार से पूरे मैदान पर छत-सी बना दी गई थी।

इतना ही नहीं, शेरगढ़ नाम के उस कस्बे की तमाम सड़कों को बन्दनवारों, छोटे-बड़े झण्डों व बैनरों से पाट दिया गया था।

कई स्थानों पर बड़े-बड़े होर्डिंग भी लगाये गये थे।

दीवारों को रंगीन पोस्टरों से पाट दिया गया था।

होर्डिंग व पोस्टरों पर चुनाव-चिन्ह 'सूरज' के साथ हिन्दुस्तान पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुजाता भारती की तस्वीरें छपी हुई थीं। कुछ तस्वीरों में सुजाता भारती हाथ जोड़े हुये थी तो कुछ में दायां हाथ उठाकर अभिवादन करने वाले पोज में थी।

सुजाता के स्वर्गीय पिता व देश के पूर्व प्रधानमन्त्री प्रभाकर भारती की भी तस्वीरें थीं—इसी के साथ हिन्दुस्तान पार्टी के वरिष्ठ नेता और संसद में विपक्ष के नेता सुन्दर लाल की भी तस्वीरें थीं।

कस्बे से कोई आधा किलोमीटर दूर हैलीपैड बनाया गया था, जहां पर सुजाता भारती का हैलीकॉप्टर उतरना था।

वहां पर हजारों की तादाद में हिन्दुस्तान पार्टी के नेता इलाके के सांसद बनवारी लाल के साथ मौजूद थे। अधिकांश नेता युवक थे।

हर किसी को बेताबी के साथ सुजाता भारती के आगमन का इन्तजार था।

आखिर इन्तजार की घड़ियां समाप्त हुई।

दूर आकाश में पीले रंग का हैलीकॉप्टर दिखलाई पड़ा! मानो बीमारों को संजीवनी बूटी मिल गई हो।

"सुजाता भारती...!"

"जिन्दाबाद...जिन्दाबाद...!"

"स्वर्गीय प्रभाकर भारती...!"

"अमर रहे...अमर रहे...!"

"हिन्दुस्तान पार्टी...!"

"जिन्दाबाद...जिन्दाबाद...!"

उत्साह व बुलन्द आवाज में नारे लगा रहे नेताओं व आम नागरिकों का मकसद अपनी आवाज को हैलीकॉप्टर में सवार सुजाता भारती के कानों तक पहुँचाना था।

हैलीकॉप्टर को देख हर किसी में चुस्ती-स्फूर्ति व उत्साह का संचार हो चला।

हथियारबन्द ब्लैक कमान्डोज व पुलिसवालों ने हैलीपैड को सुरक्षा घेरे में ले लिया।




हैलीकॉप्टर ने जैसे ही जमीन को स्पर्श किया, नारों-जयकारों की आवाजें लाउड हो गईं।

हैलीकॉप्टर का दरवाजा खुला और सुजाता भारती ने बाहर निकलकर तमाम लोगों का हवा में दायां हाथ लहराकर अभिवादन किया।

सुजाता भारती!

कोई पैंतालीस वर्षीय, गोरी-चिट्टी, खूबसूरत नैन-नक्श, लम्बे व छरहरे जिस्म वाली—जिसके चेहरे पर शाही परिवार के सदस्य जैसी ही कान्ति व आभा थी।

उसने पूरी बांहों वाले ब्लाऊज के साथ तीन रंगों वाली साड़ी पहनी हुई थी और सिर को साड़ी के पल्लू से ढांपा हुआ था।

लगता था कि कोई हस्ती है।

सबसे पहले इलाके के सांसद ने सुजाता भारती को गुलाब के फूलों का हार पहनाया और फिर उसके चरण स्पर्श किये—श्रद्धापूर्वक!

फिर तो बाकी नेताओं में भी सुजाता भारती को हार

पहनाकर उसका स्वागत करने की होड़ लग गई। गगनभेदी नारे-जयकारे लग रहे थे।

सुजाता भारती गंगाजल-सी पावन मुस्कान के साथ ही सभी लोगों से हार पहन रही थी और फिर हार निकालकर अगल-बगल में खड़े साथ आये पुरुष व महिला नेता को पकड़ा रही थी।

इतना शानदार व्यक्तित्व कि देखने वाला सम्मोहित-सा हो जाये, श्रद्धा से भर उठे।

साड़ी के साथ मांग में दमकता सिन्दूर, माथे पर चमचमाती बिन्दिया, गले में पड़े मंगल-सूत्र, हाथों की हरे कांच की चूड़ियों, पैरों की पायल व पैरों की अंगुलियों में पहने गये बिछुओं ने उसे भारतीय नारी का रूप प्रदान किया हुआ था।

कसम से...कोई देवी ही प्रतीत हो रही थी सुजाता भारती—जिसे देश की भावी प्रधानमन्त्री के रूप में देखा जा रहा था।

बल्कि देश की उलट-पुलट स्थिति को देखते हुये हर किसी को विश्वास था कि इलेक्शन के बाद वर्तमान सरकार 'धारो-धार' जायेगी और सुजाता भारती की पार्टी फुल मेजोरिटी के साथ सत्ता में आयेगी और सुजाता भारती ही प्रधानमन्त्री बनेगी।

उसी भावी प्रधानमन्त्री का जोरदार स्वागत किया जा रहा था।

❑❑❑
❑❑❑

तीन रंगों वाली तथा फूलों से दुल्हन की मानिन्द सजी खुली जीप में सुजाता भारती को सवार किया गया। उसके साथ स्थानीय सांसद भी था—कुछ अन्य नेता भी थे।

जीप से आगे कम-से-कम दो सौ मोटर साइकिलों व स्कूटरों पर युवा नेता पार्टी का झण्डा लिये सवार थे तो जीप के पीछे भी पचास गाड़ियों का काफिला था।

सभी वाहनों पर 'सूरज' के निशान वाले झण्डे लगे हुये थे।

कस्बा भले ही आधा किलोमीटर दूर था, लेकिन सड़क

के दोनों तरफ बेशुमार लोग जमा थे—जिनमें दूर-दराज के गांवों तक के लोग सम्मिलित थे। हर कोई सुजाता भारती की एक झलक पाने को बेताब था, व्याकुल था, लालायित था।

"सुजाता भारती...!"

"जिन्दाबाद...!"

"हिन्दुस्तान पार्टी...!"

"जिन्दाबाद...!"

"स्वर्गीय प्रभाकर भारती...!"

"अमर रहे...!"

"सुजाता भारती तुम संघर्ष करो...!"

"हम तुम्हारे साथ हैं...!"

"देश की नेता कैसी हो?"

"सुजाता भारती जैसी हो...!"

गगनभेदी नारों व जयकारों के साथ जुलूस ने कस्बे में प्रवेश किया—जहां पार्टी के झण्डे के रंग वाले कपड़ों से बड़ा व खूबसूरत स्वागत द्वार लगाया गया था और उसके ऊपर सुजाता भारती का रंगीन 'कट-आउट' भी लगाया गया था।

कस्बे में तो भीड़ बे-हिसाब थी।

खरगोश की रफ्तार से बढ़ते जुलूस की रफ्तार पहले कछुए की रफ्तार में और फिर चींटी की ही रफ्तार में परिवर्तित हो गई।

पुलिस फोर्स को जुलूस के लिये रास्ता बनाने को जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ रहा था। डांट-डपट के साथ लाठियों का भी इस्तेमाल करना पड़ रहा था। इमारतों की छतों पर से सुजाता भारती पर पुष्प-वर्षा हो रही थी।

सुजाता भारती कभी हाथ को हवा में लहराकर तो कभी हाथों को जोड़कर लोगों का अभिवादन कर रही थी। गले में पड़ी तथा जीप में रखी मालाओं के फूल तोड़कर लोगों की तरफ उछाल रही थी।

चेहरा खिला हुआ।

होठों पर पावन मुस्कान!

बड़ी-बड़ी व खूबसूरत आंखों में लोगों के प्रति अपनत्व व प्यार, मान व सम्मान के भाव हिल्लौरे मार रहे थे।

रैली स्थल पर पहुंचकर वह जीप से उतरी और भीड़ का अभिवादन करते हुये बल्लियों से बनाये गये गलियारे से होकर विशालकाय व ऊँचे मंच की तरफ बढ़ने लगी।

नारे-जयकारे, उद्घोष गूंज रहे थे।

लोग दोनों तरफ की बैरीकैटिंग तोड़कर सुजाता को छूने के लिये बावले हुये जा रहे थे—लेकिन सुरक्षाकर्मी उन्हें पीछे हटाने के लिये 'भागीरथ-प्रयास' कर रहे थे।

बीच में ठिठककर सुजाता भारती ने एक महिला की गोद से एक वर्षीय बालक को ले लिया और उसके गाल व ललाट को चूम लिया—तब उसकी आंखों में वात्सल्य छलक रहा था।

बच्चे की मां तो यूं निहाल हो उठी कि मानो दुनिया का सबसे अनमोल खजाना मिल गया हो।

छोटे-बड़े बच्चों के गालों व सिर पर स्नेह से हथेली फिराते हुये सुजाता आगे बढ़ती रही।

फिर स्टेज पर पहुंचकर उसने हाथ जोड़कर जनता-जनार्दन का अभिवादन किया तो तालियों, नारों व जयकारों से चारों दिशायें गूंज उठीं।



"मंच पर आसीन इस रैली के संयोजक, सभा की अध्यक्षता कर रहे चौधरी साहब...मंच संचालक और इस लोकसभा के सांसद बनवारी लाल जी! मैदान में उपस्थित मेरे बुजुर्गवार, भाइयों, बहनों, मातृशक्ति और नन्हें-मुन्ने बच्चों...," ढेरों लाउड-स्पीकर्स व कॉलम से उभरती सुजाता भारती की धीर-गम्भीर आवाज, "हिन्दुस्तान पार्टी और मैंने जो जन-सम्पर्क अभियान शुरू किया है, इसके पीछे चुनावी स्वार्थ कतई नहीं है। हालांकि चुनाव सिर पर हैं। वर्तमान सरकार का कार्यकाल पूरा हो चुका है। मेरी और आपकी पार्टी...हिन्दुस्तान पार्टी भी चुनाव के मैदान में उतरेगी और पार्टी के नेता, उम्मीदवार वोट भी मांगेंगे। मैदान में दूसरी पार्टियां भी होंगी। लेकिन मैं इस चुनाव को चुनाव के रूप में कतई नहीं देख रही हूं—ना ही मुझे सत्ता की लालसा है। आप मुझे भी जानते हैं और मेरे परिवार को भी जानते हैं। मेरे दादाजी ने प्रधानमन्त्री के रूप में देश

की सेवा की। उनके कार्यकाल में देश में चैन-ओ-अमन कायम रहा। महंगाई और भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण रहा और देश ने खूब तरक्की की। देश में विनाशकारी बाढ़ आई तो वो जान की परवाह किये बिना पीड़ितों के आँसू पोंछने गये थे। पड़ोसी मुल्क से युद्ध होने पर फौजी भाइयों का साहस बढ़ाने को सीमा पर गये। दुश्मनों द्वारा दागे तोप के गोले की चपेट में आने पर वो शहीद हो गये थे।

दादा जी के बाद मेरे ताऊजी ने देश की बागडोर सम्भाली और दादाजी के पद-चिन्हों पर चले। पूरब में ... की महामारी फैली। ना जाने कितने लोग मौत के मुंह में चले गये। पार्टी नेताओं और डॉक्टरों के मना करने पर भी ताऊजी मारे गये लोगों के परिजनों को सांत्वना और आर्थिक सहायता देने गये तो प्लेग की बीमारी उन्हें भी निगल गई। फिर चुनाव के पश्चात हिन्दुस्तान पार्टी पूर्ण बहुमत से सत्ता में आई तो मेरे पिता श्री प्रभाकर भारती जी को प्रधानमन्त्री पद का दायित्व सौंपा गया। जब तक पड़ोसी मुल्क की कृपा से अपने देश में आतंकवादियों ने अपने पैर जमाने शुरू कर दिये थे। पिताजी ने आतंकवाद के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। उन्हें एक आतंकी संगठन ने जान से मारने की धमकियां दीं—लेकिन वो नहीं डरे। उन्होंने आतंकियों के खिलाफ अभियान को और भी तेज कर दिया था। फिर वो भीषण त्रासदी हुई—जिसने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया था।

आतंकियों से सांठ-गांठ होने पर सुरक्षाकर्मियों ने ही पिताजी को गोलियों से छलनी-छलनी कर दिया था। लाख प्रयत्न करने पर भी डॉक्टर पिताजी को बचा नहीं पाये थे। आनन-फानन में मेरे भाई संजीव भारती को प्रधानमन्त्री पद की शपथ दिलवाई गई। इसके लिये उन्हें अमेरिकी कम्पनी से इंजीनियर की पोस्ट से रिजाइन करना पड़ा था। बड़े भइया को राजनीति का कोई अनुभव नहीं था। वो दूसरे मन्त्रियों, सचिव और राजनैतिक सलाहकारों पर निर्भर थे। उनमें से कई लोग स्वार्थी थे। उन्होंने भइया के भोलेपन का फायदा उठाते हुये गलत काम किये—अपनी तिजोरियां भरीं। भइया को जब तक उन स्वार्थी लोगों का खेल समझ में आया...तब तक काफी

देर हो चुकी थी। पार्टी की छवि खराब हो चुकी थी। परिणाम स्वरूप पार्टी को चुनाव में पराजय का मुंह देखना पड़ा और कई पार्टियों की मिली-जुली सरकार सत्ता में आ गई। इस गठबन्धन सरकार का हर कोई नेता अपनी तिजोरियां भर रहा था। मन्त्री और नेता आपस में ही लड़ते रहे। कई महत्वाकांक्षी नेता स्वयं प्रधानमन्त्री बनना चाहते थे—इसलिये प्रधानमन्त्री के खिलाफ साजिशें रचते रहे। देश की किसी को चिन्ता नहीं थी। देश की दशा बद से बदतर होती चली गई। चारों तरफ़ भ्रष्टाचार और महंगाई का बोल बोला था। ऐसे में भइया ने जन-सम्पर्क अभियान छेड़ दिया। देश की जनता जानती थी कि वो ईमानदार हैं और गलत लोगों से पल्ला भी झाड़ चुके हैं। उन्हें भारी जन-समर्थन मिलने लगा। लगने लगा कि गठबन्धन सरकार गिर जायेगी और भइया को सत्ता मिल जायेगी। भइया रैलियों में आतंकबाद के खिलाफ जमकर बोल रहे थे। ये बात आतंकियों को नागवार गुजरी। सो एक भीषण बम-विफोट में भइया और भाभी के परखच्चे उड़ गये थे...।"

सुजाता भारती का स्वर भर्रा उठा था।

आंखों में आंसू मचलने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

थोड़ा पानी पीने पर सुजाता भारती ने स्वयं को संयत किया और फिर गला खंखारने पर बोली—"हमारे परिवार ने ईमानदारी के साथ इस देश की सेवा की और अपने प्राणों का बलिदान किया। किसी पर भी भ्रष्टाचार या घोटाले का आरोप नहीं लगा। ईमानदारी और देशभक्ति हमारे खून में रची-बसी है। भइया की हत्या के बाद पार्टी के लोग चाहते थे कि मैं पार्टी की कमान सम्भाल लूं—लेकिन मैंने मना कर दिया था। मेरा बेटा वंशराज और भतीजी सुगन्धा छोटे थे। वंशराज से बढ़कर मुझ पर सुगन्धा की जिम्मेदारी थी—क्योंकि उसने अपने माता-पिता को खो दिया था। मेरे और मेरे पति के सिवाय उसका था ही कौन? मुझ पर मेरे पति की भी जिम्मदारी थी। आप तो जानते ही हैं कि मेरे पति श्री उदयराज मुम्बई क्राइम ब्रांच में ए०सी०पी० थे। वो एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट थे। सौ से भी

ज्यादा मुजरिमों को मुठभेड़ में उन्होंने मारा लेकिन कुछ अज्ञात मुजरिमों ने उन पर फायरिंग की। उनके दायें पैर में इतनी गोलियां लगी थीं कि डॉक्टरों को ऑपरेशन में पैर काटना पड़ा।

अपनी गृहस्थी के लिये मैंने राजनीति में आने से स्पष्ट इन्कार कर दिया था। हमारी पार्टी ने वो चुनाव वरिष्ठ नेता श्री सुन्दर सिंह जी के नेतृत्व में लड़ा था, जो कि वर्तमान में विपक्ष के नेता हैं। हमारी पार्टी की हार हुई थी और इन्डियन पब्लिक पार्टी सत्ता में आई। देवेन्द्र सिंह प्रधानमन्त्री बने। लेकिन पांच वर्षों में ही देश की हालत बद से बदतर हो गई। चारों तरफ भ्रष्टाचार और जुर्म का बोलबाला है। आतंकवाद चरम पर है। महंगाई ने गरीबों के साथ मध्यम वर्ग के लोगों की भी कमर तोड़कर रख दी है। सरकार के दावों के बाद भी हालात सुधरने की बजाय बिगड़ते ही जा रहे हैं।

हर कोई दुःखी है, परेशान है। मौज है तो सत्ताधारी पार्टी के मन्त्रियों और नेताओं की, कालाबाजारियों और सटोरियों की...मुजरिमों और भ्रष्टाचारियों की। लोग अपने घरों में भी सुरक्षित नहीं हैं। खेतों में अथक परिश्रम करके फसल उगाकर देश का पेट भरने वाले किसानों को भी आत्महत्या करने पर मजबूर होना पड़ रहा है। देश तरक्की करने की बजाय रसातल में ही समाता जा रहा है। मेरे पति श्री उदयराज जी ने मुझसे कहा कि वक्त की मांग यही है कि मैं राजनीति में उतरूं और देश की सेवा करूं। मेरे पिता समान श्री सुन्दर लाल और पार्टी के अन्य नेता तो न जाने कब से मुझे राजनीति में लाने को जोर लगा रहे थे। ईश्वर की कृपा से मेरा बेटा उदयराज और भतीजी सुगन्धा बड़े और समझदार हो चले हैं। दोनों कोटला के कॉन्वेन्ट स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। देश के हालात से दुःखी होकर ही मैंने राजनीति में आने का निर्णय लिया है।"

"सुजाता भारती तुम संघर्ष करो...!" मंच पर आसीन एक नेता चीखकर बोला तो तमाम श्रोता भी हाथों को हवा में लहराते हुये एक सुर में बोले—"हम तुम्हारे साथ हैं!"

"सुजाता भारती...!"

"जिन्दाबाद...जिन्दाबाद...!"

सुजाता भारती ने हाथों को उठाकर सभी को शान्त किया

और फिर माइक के माध्यम से बोली—"मेरा कोई स्वार्थ नहीं है...किसी किस्म का लालच नहीं है। कुर्सी या पद का भी मोह नहीं है। देश की सेवा करने के इरादे से ही मैंने राजनीति में कदम रखा है। आने वाला चुनाव मेरे लिये चुनाव नहीं बल्कि एक जंग है। मैंने इस भ्रष्ट और निकम्मी सरकार के खिलाफ बिगुल बजा दिया है और जंग की शुरुआत कर दी है। लेकिन ये जंग मेरी या मेरी पार्टी की जंग नहीं है। ये जंग तो देश की जनता की जंग है। उन लोगों की जंग है, जो गरीबी, महंगाई, जुर्म, भ्रष्टाचार, आतंकवाद से दुःखी और परेशान हैं। आप लोगों को मेरा और मेरी पार्टी का साथ देना होगा। एक-एक वोट हथियार के रूप में इस्तेमाल करनी होगी। सरकार को बनाने और गिराने की शक्ति आपके हाथों में है। आपको न्यायाधीश बनकर वैलेट पेपर पर मुहर के रूप में अपना फैसला सुनाना है।

इस बात की गारन्टी मेरी है कि अगर आप हिन्दुस्तान पार्टी को सत्ता में लाते हैं तो आपको कतई भी निराशा नहीं होगी। हमारी सरकार पूरी पारदर्शिता और निष्ठा के साथ काम करेगी। सबसे पहले महंगाई की कमर तोड़ी जायेगी। गरीबों व मध्यम वर्ग के लोगों के उपयोग में आने वाली तमाम वस्तुएं सस्ती की जायेंगी। काला बाजारियों, सटोरियों, मुनाफाखोरों को जेलों में ठूंसा जायेगा। भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिये भ्रष्टाचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी। कानून-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करके जुर्म का खात्मा किया जायेगा। मुजरिमों के तीन ही घर होंगे—जेल, श्मशान घाट और कब्रिस्तान! आतंकियों का खात्मा किया जायेगा। मैं अपने किसी अन्जाम से नहीं डरती। शहादत तो मेरे खून में रची-बसी है। देश की खातिर अगर प्राण भी गंवाने पड़े तो कोई चिन्ता नहीं। मेरे खून की एक-एक बूंद देश की धरोहर है, हिन्दुस्तान की अमानत है। वो लोग बड़े भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें अपनी मातृभूमि का कर्ज चुकाने का सौभाग्य मिलता है।"

"सुजाता भारती!"

"जिन्दाबाद!"

"सुजाता भारती...!"

"नहीं...कतई नहीं...!" सजाता भारती हाथों को उठाकर

बोली, "मेरे नाम के नारे मत लगाइये। बोलिये, भारत मां की जय...!"

"भारत मां की जय!"

"हिन्दुस्तान जिन्दाबाद!"

"जिन्दाबाद...जिन्दाबाद!"

"जयहिन्द...!" कहने पर सुजाता भारती ने हाथ जोड़ दिये और जनता जनार्दन का शीश झुकाकर अभिवादन किया।

□□□
□□□

पूजा-पाठ करने पर उदयराज बैसाखियों के सहारे उठा और पूजाघर से बाहर निकला।

खट...खट...खट...!

कुर्सी पर बैठने पर उसने कमरे में सफाई कर रहे अधेड़ नौकर से चाय लाने को कहा और गोल्ड फ्लेक की सिगरेट सुलगाकर कश लगाने लगा।

समीप ही स्टूल पर रखे सोनी इरेकसन की कॉलर ट्यून बजने लगी।

फोन उठाकर उसकी स्क्रीन पर उभरते नम्बर को देखने पर वह फोन बायें कान से लगाकर हर्षित भाव से बोला—"नमस्कार, पण्डित जी...!"

"नमस्कार, ए०सी०पी० साहब...!" दूसरी तरफ से केशव की आवाज आ रही थी—"और कैसे हालचाल हैं आपके?"

"बढ़िया हैं पण्डित जी! वो मजा तो नहीं रहा, जो सर्विस टाइम में था। अब तो ख्वाबों में ही मुजरिमों का एनकाउन्टर कर लेता हूं।" कहने पर वो हँस दिया...फिर थोड़ा गम्भीर होकर बोला, "विधि के विधान को भला कौन बदल सकता है पण्डित जी! भाग्य में सिर्फ एक सौ तीन मुजरिमों को लुढ़काना ही लिखा था—सो लुढ़का दिया। फिर मुजरिमों का दॉव लग गया—वो मेरा एनकाउन्टर ही कर देते—लेकिन किसी देवदूत की तरह आप आ पहुंचे थे। एक मुजरिम आपकी गोलियों से ढेर हो गया था—बाकी जान बचाकर भाग निकले थे। उस रात आप नहीं होते तो...मैं तो गया था। आप मुझे तुरन्त ही हॉस्पिटल

ले गये। बकौल डॉक्टर...अगर मुझे हॉस्पिटल पहुंचने में थोड़ी देरी हो जाती तो ब्लीडिंग की वजह से जान चली जाती। जिन्दगीभर आपका अहसानमन्द रहूंगा। उससे पहले भी आप मेरी मदद करते रहे। कई मुजरिमों को तो आपने ही पकड़कर मेरे हवाले किया। पता नहीं कि भगवान कभी आपका अहसान चुकाने का मौका देगा भी कि नहीं...।"

"फिर वो ही घिसा-पिटा रिकॉर्ड बजा दिया ए०सी०पी० साहब, और मुझे भी रिकॉर्ड बजाने को मजबूर कर रहे हो। मैं कानून का पुजारी और मुजरिमों का दुश्मन हूं। ईमानदार और जांबाज किस्म के पुलिस वालों के लिये मेरे दिल में पूरा सम्मान रहता है। मैंने आप पर कोई अहसान नहीं किया था। आईन्दा, आपने ये अहसान वाली बात की तो मैं आपसे बात भी नहीं करूंगा...।"

"नाराज मत होना पण्डित जी। आपका आदेश सिर माथे पर। वैसे भी एक प्रसिद्ध कहावत है कि सारी खुदाई एक तरफ और जोरू का भाई एक तरफ। संजीव भाई की हत्या के बाद सुजाता को तो भाई की कमी खलनी ही थी—मुझे भी साले की कमी महसूस होती थी। हॉस्पिटल में मेरी जान ही नहीं बची थी, बल्कि साले की कमी भी पूरी हो गई थी। सुजाता ने आपका शुक्रिया अदा किया था तो आपने कहा था कि भाई-बहन पर अहसान नहीं करता है। तब सुजाता ने अपनी चुनरी की कतर फाड़कर और आपकी कलाई पर बांधकर बहन-भाई के रिश्ते को मजबूत कर दिया था। मुझे अभी भी याद है...सुजाता ने मारे खुशी के रोते हुये कहा था कि भगवान ने उससे एक भाई छीना तो बदले में दूसरा भाई दे दिया। आपका जिक्र आते ही फूल-सी खिल जाती है आपकी बहना। आपकी तारीफों के पुल बांधने शुरू कर देती है। ये जरूर कहती है कि उसे गर्व है कि उसे केशव जैसा भाई मिला।"

"हां, रात फोन पर बातें हुई थीं बहन जी से। उन्होंने सुल्तान पुर से फोन किया था। राजनीति के कुरुक्षेत्र में कूद ही पड़ीं वो और कन्वेसिंग शुरू कर दी। बतला रही थीं कि आपने ही उन्हें प्रेरित किया।"

"हां, पार्टी के लोग हाथ धोकर पीछे पड़े हुये थे...खास करके सुन्दर लाल अंकल जी।" वह सिगरेट का धुआं उगलकर बोला, "उनका कहना था कि सुजाता के पार्टी में आये बिना पार्टी सत्ता में नहीं आ पायेगी। देवेन्द्र सिंह की पार्टी तो दोबारा सत्ता में आने से रही—लेकिन तीसरा मोर्चा सत्ता में आ जायेगा—जो कि एक दर्जन छोटी-बड़ी पार्टियों का बेमेल गठबन्धन है और जिसमें प्रधानमन्त्री पद के कई दावेदार हैं। वो लोग आपस में ही लड़ते रहेंगे और देश की हालत पहले से भी ज्यादा बिगड़ जायेगी। देश की दशा खराब तो है ही पण्डित जी। चारों तरफ जुर्म और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। नक्सली और आतंकी वारदातें बढ़ती ही जा रही हैं। आई०एस०आई० के लोगों ने देश के हरेक हिस्सों में घुसपैठ कर ली है। देश हित को ध्यान में रखते हुये मैंने सुजाता से कहा कि वो हिन्दुस्तान पार्टी का अध्यक्ष पद संभाल ले। सुन्दर लाल अंकल ईमानदार और राजनीति के पुराने खिलाड़ी हैं। अगर वो प्रधानमन्त्री बनते हैं तो देश की दशा सुधार देंगे। मैं सुजाता के साथ-साथ रहना चाहता था, लेकिन उसने मना कर दिया।"

"बहन जी बतला रही थीं ये बात। वो ये भी बतला रही थीं कि आजकल आप कोई किताब लिख रहे हैं।"

"हां! घर में पड़े-पड़े बोर हो गया था। फिर मन में आया कि राइटिंग ही शुरू कर लूं। पुलिस डिपार्टमेंट में रहते हुये जो कुछ भी किया...उसी पर लिख रहा हूं। यानि अपनी आत्मकथा लिख रहा हूं। लेकिन इसमें आपको भी मेरी हेल्प करनी होगी। मैं कोई राइटर तो हूं नहीं।"

"आप पहले लिख लीजिये ए०सी०पी० साहब। फिर पाण्डुलिपी...यानि मेन स्क्रिप्ट मुझे दे देना। मैं उसकी कमियां दूर कर दूंगा। अच्छा, अब इजाजत दीजिये। कोर्ट जाने का टाइम हो गया है।"

"ओ०के०, पण्डित जी! सोफिया भाभी को मेरी नमस्ते बोलना। आशीर्वाद को भी मेरा प्यार देना।"

"जरूर, ए०सी०पी० साहब! अच्छा, नमस्कार...।"

"नमस्कार पण्डित जी।"



"भाई साहब, देश का तो नाश पिट गया...पुच...पुच...!" पनवाड़ी की दुकान पर एक अधेड़ सज्जन पीक थूकने पर तथा फिर भैंस की मानिन्द ही जुगाली करते हुये बोले—"पांच साल पहले बहुत उम्मीदें करके इन्डियन पब्लिक पार्टी को वोट दी थी। पार्टी का झण्डा उठाये गुप्ता जी की कन्वेसिंग में रात-दिन लगे रहे—उन्हें एम०पी० भी बनवा दिया। आई०पी०पी० की सरकार बनी। देवेन्द्र सिंह से बहुत उम्मीदें थीं। जालिम ने पार्टी के मेनीफेस्टो में बड़े-बड़े वादे किये थे। यूं लगता था कि रामराज्य ही ले आयेगा। लेकिन आ गया रावणराज्य। गुन्डों-बदमाशों की चांदी कट रही है। दिन-दहाड़े जुर्म करते हैं। घर में घुसकर लूट-पाट करते हैं, बलात्कार करते हैं। सरेआम मर्डर हो रहे हैं। पुलिस भी कुछ नहीं करती। करे भी क्यों...थाने में हफ्ता पहुंच जाता है। गलती से कोई ईमानदार पुलिसवाला आ भी जाता है तो ये ससुरे नेता उस बेचारे को कुछ करने नहीं देते। अपनी बात मनवाते हैं—वरना ट्रांसफर करवा देते हैं...।"

"क्या बात है गुप्ता जी...?" एक गन्ने जैसा पतला युवक सिगरेट फूंकते हुये व्यंगभरे लहजे में बोला, "आप अपनी ही पार्टी की बुराई कर रहे हैं?"

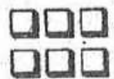
"कौन-सी मेरे बाप की पार्टी है बे? छह महीने पहले महामन्त्री पद से इस्तीफा देकर घर बैठ गया था। रोजाना घरवाली के ताने सुनने को मिलते थे। ऐ जी...तुम्हारी पार्टी ने गैस सिलेन्डर महंगा कर दिया—उस पर भी वक्त पर नहीं मिलता। लोग-बाग ब्लैक में खरीदने को मजबूर हैं। पप्पू के पिता जी...सब्जियां महँगी हो गईं। आटा, दाल, चावल, हल्दी, मिर्च, घी, तेल, सब महंगे हो गये। अब राशन के लिये दो हजार रुपये फालतू दिया करो। दूधवाले ने भी रेट बढ़ा दिये। तुम्हारी सरकार में गरीब तो गरीब...हम मध्यम दर्जे के लोगों का भी जीना मुहाल हो गया। पप्पू की कसम खाकर कहती हूं कि इस बार इन्डियन पब्लिक पार्टी को वोट नहीं दूंगी। मैंने भी घरवाली से बोल दिया था कि मैं ही कौन-सी देने वाला हूं।"

"तो क्या आप पार्टी बदल रहे हैं गुप्ता जी?" एक अधेड़ ने खुश्की लेने वाले अन्दाज में ही पूछा।

"हां, शर्मा जी! सोच रहा हूं कि हिन्दुस्तान पार्टी ज्वाइन कर लूं। जिला अध्यक्ष का फोन भी आया था। सुजाता भारती की रैली में बहुत जबरदस्त भीड़ थी। ना जाने कहां-कहां की पब्लिक आई थी। उस रैली ने तो अपने जिले का माहौल ही बदल दिया। हर किसी का रुझान हिन्दुस्तान पार्टी की तरफ हो चला है।"

"सुजाता भारती के आने से पार्टी में जान तो पड़ ही गई है साहेबान...।" एक मुल्ला जी पान चबाते हुये बोले, "हालांकि सुन्दर सिंह भी ईमानदार किस्म का नेता है। लेकिन हिन्दुस्तान पार्टी की पहचान तो भारती खानदान से ही थी। उन लोगों ने देश की खातिर कुर्बानियां भी दीं। देश को तरक्की की राह पर भी ले गये। उनके राज में ना तो महँगाई थी, ना ही गुन्डागर्दी थी। अब तो रोजाना बम फट रहे हैं। दहशतगर्दों की इतनी जुर्रत हो गई कि पुलिस और मिलिट्री वालों पर जानलेवा हमला करके फरार हो जाते हैं। रामपुर में कई जवान मार दिये। पहले पंजाब और काश्मीर में ही हाय-तौबा होती थी। अब तो दहशतगर्द पूरे मुल्क में फैल गये हैं। ट्रेनों में, बसों में...खूब धमाके हो रहे हैं। हमारा तो पूरा खानदान शुरू से ही हिन्दुस्तान पार्टी से जुड़ा हुआ है। अल्लाह करे कि अपनी पार्टी हुकूमत में आ जाये और सुजाता भारती प्रधानमन्त्री बन जाये। इन्शा अल्लाह...देश तबाह होने से बच जायेगा। महँगाई, गुन्डागर्दी और दहशतगर्दी पर लगाम कसी जायेगी। गरीबों को भी दोनों वक्त का खाना मयस्सर होने लगेगा।"

बाकी लोग भी मुल्ला जी की हां में हां मिलाने लगे। ऐसा नजारा सिर्फ पनवाड़ी की उस दुकान का या उस शहर का ही नहीं था—लगभग देश के हरेक हिस्से, गांवों, कस्बों, शहरों में यही चर्चायें थीं कि इस मर्तबा हिन्दुस्तान पार्टी सुजाता भारती के दम पर सत्ता में आयेगी और प्रधानमन्त्री के रूप में सुजाता भारती देश की बिगड़ी हालत को सुधार देगी। बहुत से लोग आशान्वित थे तो कुछ लोग परेशान भी थे—जैसे कि प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह और उसका बेटा वासुदेव सिंह।



"ये निकम्मी और भ्रष्ट सरकार देश के लिये घातक होती जा रही है, अमीरों की तो पौ-बारह है। उन्हें सफेद और काला धन कमाने की खुली छूट दी जा रही है। छूट इसलिये दी जा रही है, क्योंकि सभी मन्त्रियों को कमीशन मिल रहा है। प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह समेत सभी मन्त्री और बड़े-छोटे अधिकारी दोनों हाथों से दौलत समेट रहे हैं। करोड़ों की क्या अरबों-खरबों की प्रॉपर्टी बना ली। स्विस बैंक के एकाउन्ट में ढेर सारी दौलत जमा है। इतना ही नहीं, मिलिट्री के लिये खरीदे गये हथियारों, टैंक और हैलीकॉप्टर्स की खरीद पर बहुत मोटा कमीशन खाया गया। इस सरकार के मन्त्रियों ने अपनी तिजोरियां भरीं और देश को कंगाल करके रख दिया...।"

टी०वी० पर सुजाता भारती की स्पीच दिखलाई जा रही थी। साथ ही मैदान पर भी कैमरा डाला जा रहा था।

इतनी जबरदस्त भीड़ थी कि दूर-दूर तक इन्सानी सिर ही दिखलाई पड़ रहे थे।

लाल, हरे व सफेद रंग वाले झन्डे लहराते हुये लोग 'सुजाता भारती जिन्दाबाद...सुजाता भारती तुम संघर्ष करो...हम तुम्हारे साथ हैं' जैसे नारे लगा रहे थे।

चारमीनार की सिगरेट पीता केशव, चने के दाने कुटकुटाता आशीर्वाद, च्यूइंगम चबाता राजन, सोफिया, चांदनी, करतार सिंह और नौकर रणछोड़ सिंह...अर्थात् सम्पूर्ण कुनबा बड़ी ही तन्मयता के साथ सुजाता भारती को देख व सुन रहे थे–

"प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह और बाकी मन्त्रियों के पास इतनी दौलत है कि उससे हिन्दुस्तान का सारा कर्जा उतारा जा सकता है और कई विकास योजनाओं को मूर्त रूप दिया जा सकता है। अगर आने वाले इलेक्शन में जनता जनार्दन ने हिन्दुस्तान पार्टी को अपना आशीर्वाद दिया और हमारी पार्टी को सत्ता में आई तो हम प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह समेत तमाम मन्त्रियों और भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ जांच आयोग बिठायेंगे। कोशिश करेंगे कि उनका काला धन हासिल किया जाये और

देश के विकास कार्यों में लगाया जाये। सभी दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जायेगी और उनसे जेल की चक्की पिसवाई जायेगी।"

टी०वी० पर मौजूद श्रोताओं ने ही नहीं, बल्कि केशव एंड फैमली ने भी तालियां बजाईं।

"वाह...कमाल कर दिया बुआजी ने...।" आशीर्वाद उत्साह से भरा हुआ बोला–"उनके भाषण में कितना जोश और सच्चाई है। उनका एक-एक शब्द दिल को छूता है–दिमाग पर असर डालता है।"

"सुजाता दीदी तो कमाल ही कर रही हैं।" चांदनी भी हर्षित भाव से बोली–"जहां भी जा रही हैं, अपार भीड़ खींच रही हैं।"

"बहनजी के मैदान में आने से हिन्दुस्तान पार्टी को ही संजीवनी नहीं मिली है, बल्कि पूरे देश में भी उत्साह का संचार हुआ है। हताश, निराश, दुःखी, तंगहाल लोगों के दिलों में उम्मीदों के चिराग रोशन हुये हैं...।" 'चारमीनार' का धुआं...सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये बोला वो, जो दिमाग का जादूगर और झील-सी नीली आँखों वाला है–"सुजाता बहन के रूप में लोगों को अन्धेरे में उम्मीद की किरण नजर आने लगी है। इसमें कोई शक भी नहीं है कि अगर सुजाता बहन सत्ता में आती हैं तो देश की समस्याओं का निराकरण होगा। तमाम विकारों से मुक्ति मिलेगी और देश तरक्की की राह पर आगे बढ़ेगा।"

"हे ईश्वर...!" पन्ने जैसी हरी आँखों वाली सोफिया अपनी आवाज से माहौल में शहद की मिठास-सी घोलते हुये बोली–"चमत्कार कर दिखलाइये। बहन जी की पार्टी को जितवा दो।"

"बहनजी की पार्टी ही जीतेगी दीदी...।" पूरे आत्म विश्वास के साथ ही कहा राजन ने–"और बहनजी ही हमारे देश की अगली प्रधानमन्त्री होंगी।"

"फिर तो मजे ही आ जायेंगे।" गदगद भाव से बोला केशव व सोफिया का मुण्डा, "बुआजी के प्रधानमन्त्री बनने पर मैं प्रधानमन्त्री का भतीजा कहलाऊंगा। अपनी वैल्यू बढ़

जायेगी। देखो, भगवान हमारी इस इच्छा को पूरा करते हैं कि नहीं?"



प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह!

उम्र—साठ साल!

जंगली भैंसे जैसा काला रंग और डील-डौल भी उसके जैसा ही।

बड़ी-बड़ी सुर्ख आँखें, पहाड़ी आलू जैसी टेढ़ी-मेढ़ी व मोटी-सी ऐसी नाक कि मानो बनाने वाले ने जल्दबाजी में आधी-अधूरी ही बनाकर छोड़ दी हो। ज़ोंक जैसे मोटे-काले व भद्दे से होंठ।

सिर पर सफेद रंग के इतने छोटे-छोटे बाल कि पकड़ने के लिये चिमटी की ही जरूरत पड़े।

सफेद रंग के खादी के कुर्ते-पायजामे में वो यूं ही लग रहा था कि मानो सफेद रूई में कोयला लपेट दिया गया हो।

उसके सामने उसका तीस वर्षीय बेटा वासुदेव सिंह बैठा हुआ था जो कि उसकी कॉर्बन कॉपी लगता था। फर्क ये था कि वो क्रीम कलर के सफारी सूट में पैक था और उसके काले बाल छः-छः इंच लम्बे थे। हाव-भाव या भाव-भंगिमाओं से हरामी व धूर्त किस्म का लगता था।

दोनों शानदार फर्नीचर, कालीन वाले कमरे में मौजूद थे, जिसमें सोनी कम्पनी का बड़ी स्क्रीन वाला टी०वी०, डी०वी०डी०, फ्रिज, म्यूजिक सिस्टम के साथ एयर कन्डीशनर भी लगा हुआ।

कमरा भीतर से बन्द था—लेकिन ए०सी० की वजह से ठण्डा-ठण्डा कूल-कूल था।

कांच के टॉप वाली मेज पर विदेशी शराब की बोतल, सोडे की बोतलें, आइस क्यूब वाली तीन ट्रे, तले हुये मसालेदार काजू, मसाला छिड़के पनीर के टुकड़े, विल्स क्लासिक सिगरेट की डिब्बी, कॉपर कलर का लाइटर, पीतल के जूते वाली ऐश-ट्रे और एक वाकी फोन के साथ दो मोबाइल फोन भी रखे हुये थे।

शराब से अधभरे गिलास बाप-बेटे के हाथों में थे, जिन्हें बार-बार होंठों से लगाकर वो चुस्कियां ले रहे थे।

वासुदेव सिंह के चेहरे पर तनाव के कौओे-से उड़ रहे थे।

आंखों के पोखरों में चिन्ता के मेंढक उछल-कूद मचाये हुये थे।

"हालात बद से बदतर हैं डैड...।" कौओे-सी बेसुरी आवाज में बोला वासुदेव सिंह, "सत्ता हाथों से खिसकती नजर आ रही है। वो कुतिया...जहां-जहां भी जा रही है...बेहिसाब भीड़ खींच रही है। कम्बखत मीडिया वाले भी उसे हीरोइन बनाने पर तुले हुये हैं।"

"ये हिन्दुस्तान है वासु...।" शराब की घूंट भरकर देवेन्द्र सिंह भारी-भरकम आवाज में बोला, "यहां कोई भी सरकार चाहे जितना भी बढ़िया काम कर ले, लेकिन यहां की पब्लिक उससे खुश नहीं होती और दूसरी पार्टी को सत्ता में ले आती है। फिर अगले इलेक्शन में ठुकराई हुई पार्टी को वापिस सत्ता में ले आती है। यही सोचकर हमने जमकर धांधलियां कीं...दोनों हाथों से दौलत बटोरी। अगर ईमानदारी से काम करते...तो भी सत्ता परिवर्तन होना ही था। अगले चुनाव में फिर हम सत्ता में आ जायेंगे। यहां की जनता की याददाश्त कमजोर है। वर्तमान सरकार की कमियां ही याद रखती है, उससे पहले वाली सरकार की खामियों को भूल जाती है। दो-ढाई साल बाद ही हम मध्यावधि चुनाव करवा देंगे और सत्ता में लौट आयेंगे। उस कल की छोकरी को राजनीति का कोई एक्सपीरियंस नहीं है। बकरी बैलगाड़ी को ज्यादा दूर तक नहीं खींच पायेगी। फिर...हम भी तो खामोश नहीं बैठेंगे। सत्ता परिवर्तन के लिये तिकड़में भिड़ाते रहेंगे।"

"सुजाता भारती को इतना कमजोर करके मत आंकिये डैड।" खाली गिलास रखकर वासुदेव सिंह ने सिगरेट सुलगा ली और कश मारकर बोला, "राजनीति उसके खून में है। पढ़ी-लिखी भी है। फिर...उसके साथ सुन्दर सिंह जैसा राजनीति का पुराना खिलाड़ी भी है। सुन्दर सिंह उसे राजनीति के तमाम पैंतरे सिखला देगा। उस कुतिया के तेवर बहुत तीखे हैं। हमारे खिलाफ जांच आयोग बिठाने की...जेल भिजवाने

की बात कर रही है। हालांकि वो लाख कोशिश करके भी हमारी दौलत नहीं छीन सकती। तमाम प्रोपर्टी बेचकर स्विस बैंक में ही रकम जमा करवा देंगे। लेकिन उसने हमारे घोटाले साबित कर दिये तो मुसीबतें खड़ी हो जायेंगी। पॉलिटिकल कैरियर चौपट हो जायेगा। दोबारा सत्ता में आने के चांसेज नहीं रहेंगे। हां, एक काम हो सकता है।"

देवेन्द्र सिंह ने गिलास में बोतल से शराब डाल रहे हाथ को रोककर वासुदेव सिंह को सवालिया नजरों से देखा।

"आस्ट्रेलिया और अमेरिका में अपने बंगले हैं ही। सत्ता हाथ से निकलते ही ये देश छोड़ देंगे। स्विस बैंक में काफी माल होगा ही। विदेश में ही सैटल हो...।"

"बेवकूफों जैसी बातें मत कर...।" देवेन्द्र सिंह खीजकर बोला—"तेरा ये बाप क्या बला है ...ये तू भी नहीं जानता है—अगर जानता तो ऐसी टुच्ची बात नहीं करता। मैं यूं डरकर भाग जाने वालों में से नहीं हूं। मैं खतरनाक शेर हूं। जबकि शेरनी की तरह दहाड़ने वाली वो छोकरी मेरे लिये बकरी से ज्यादा अहमियत नहीं रखती। दावें करना और बात है—लेकिन दावों को अमली जामा पहनाना दूसरी बात है। जांच बैठाने से कुछ नहीं होता। जुर्म साबित होने से ही कुछ होता है। मैंने कभी भी अपने गुनाहों के सबूत नहीं छोड़े। जिस भी राह से गुजरता हूं...अपने कदमों के निशान मिटा दिया करता हूं। वो बकरी मुझसे पंगा लेगी तो पछतायेगी। उसे भी मालूम पड़ जायेगा कि देवेन्द्र सिंह क्या बला है। तू कतई फिक्र मत कर बेटे। कुछ नहीं होगा। कुछ भी नहीं होगा।"

देवेन्द्र सिंह ने तो लापरवाही वाले अन्दाज में बोल दिया—लेकिन वासुदेव सिंह के चेहरे पर अभी भी तनाव के कौअे उड़ रहे थे, आंखों में चिन्ता के मेंढक उत्पात मचा रहे थे।

❑❑❑
❑❑❑

लेफ्टिनेंट जनरल जमाल खान!

वर्दी की बजाय सफेद रंग का पठानी सूट, चमड़े की पीले रंग की जूतियां पहनी हुई थीं और गंजे सिर पर जालीदार गोल व सफेद टोपी ओढ़ी हुई थी। सुरक्षाकर्मियों ने उसके पद की

परवाह ना करते हुये पूरी बारीकी से उसकी तलाशी ली और मैटल-डिटेक्टर से भी चैक किया! राष्ट्रपति भवन के हथियारबन्द ब्लैक कमान्डोज के साथ वो विभिन्न हिस्सों से गुजरते हुये एक शानदार शीशे के दरवाजे पर पहुंचा।

दरवाजा अपने आप ही खुला और उसके भीतर दाखिल होते ही बन्द भी हो गया।

कमान्डोज बाहर ही रह गये थे।

बेहद शानदार, बेशकीमती फर्नीचर से सुसज्जित व एयर कन्डीशनर वाले ऑफिस की शानदार मेज के पार शानदार कुर्सी पर विराजमान जनरल का वर्दी वाला राष्ट्रपति।

"अस्सलाममुव अलैकुम, जनाब...!"

राष्ट्रपति ने सिर पीछे की तरफ झुकाकर चेहरा ऊपर उठाया और चश्मे के पीछे से गंजे व लाल दाढ़ी वाले जमाल खान को देखा—

"व अलैकुम अस्सलाम...!" धीर-गम्भीर स्वर था पाकिस्तानी राष्ट्रपति व सेना के जनरल का—"तशरीफ रखो...जमाल खान।"

"शुक्रिया, जनाब...!" कहने पर जमाल खान मेज के इधर रखी कुर्सी पर बैठ गया और बड़े ही अदब के साथ बोला—"तबियत थोड़ा, नासाज थी—लेकिन जनाब का फोन आते ही घर से रवाना हो गया। छोटा मुंह बड़ी बात हुजूर...अगर बुरा ना मानें तो एक बात कहनी चाहूंगा। जनाब का मूड ठीक नहीं लग रहा है। काफी संजीदा लग रहे हैं। क्या ये नाचीज...खाकसार जनाब की परेशानी का सबब जान सकता है?"

राष्ट्रपति ने 'मेड इन हवाना' वाला सिगार मेज पर से उठाकर उसके अगले सिरे को कटर से काटा तथा फिर लाइटर से सुलगा लेने पर कुर्सी छोड़ दी! शानदार खूबसूरत व कीमती ईरानी कालीन पर चहलकदमी करते हुये सिगार का कश लेकर खुशबूदार धुआं मुंह व नथुनों से खारिज करने पर जिव्हा व होंठ हिलाये—

"तुम्हें बतलाने को ही तो तलब किया है हमने...जमाल खान! काफी संजीदा मामला है...।"

उठ खड़े होकर खुशामदी लहजे में बोला जमाल ख.न—"खादिम हाजिर है जनाब! हुजूर की तमाम बलायें अपने सिर ले लेगा। इस खाकसार...नाचीज के होते जनाब को जरा-सी भी दिक्कत या तकलीफ हो जाये तो...मुझ पर लानत है।"

"मसला पर्सनल नहीं है जमाल मियां! मसले का ताल्लुक मुल्क से है। हमारे जानी दुश्मन हिन्दुस्तान से ताल्लुक रखता है।"

जमाल खान की बिल्लौरी आंखें सिकुड़ चलीं।

पेशानी पर बल पड़ गये।

"क्या हिन्दुस्तान ने कोई गड़बड़ी कर दी है...जनाब? हमारा वतन मुश्किल में है?"

"नहीं—मुश्किल में तो हिन्दुस्तान ही है। जब से हमने तुम्हें आई० एस० आई० की कमान सौंपी, तुम्हें आई० एस० आई० का चीफ बनाया है—हिन्दुस्तान का चैन-ओ-अमन खतरे में पड़ गया। बदअमनी कायम हो गई वहां पर! आई० एस० आई० से जुड़े लोगों ने और दहशतगर्दों ने वहां काफी दहशत फैलाई है। काफी खून-खराब किया है। हिन्दुस्तान को गोलियों की तड़तड़ाहट और बमों के धमाकों से गुंजाये रखा है। लाखों की तादाद में हिन्दुस्तानी हलाक कर दिये गये। हिन्दू-मुस्लिम फसाद किये गये। कुछ बड़े लीडर्स को भी मारा गया। तुम्हारी सुपरविजन में आई० एस० आई० ने अपने काम को बखूबी अन्जाम दिया है। तुमने कभी शिकायत का मौका नहीं दिया है। लेकिन...!"

"लेकिन...लेकिन जनाब?"

"लेकिन ये कि...अभी तक वहां पर देवेन्द्र सिंह की सरकार थी—इन्डियन पब्लिक पार्टी की गवर्नमेंट थी। आई० एस० आई० को अपनी कारगुजारियों को अमली जामा पहनाने में कोई खास दिक्कत नहीं हो रही थी। वहां की सरकार के ढीलेपन का खूब फायदा उठाते रहे हैं हम! जानलेवा फायरिंग और बम धमाके ही नहीं करवाये—बल्कि पाकिस्तान में तैयार कराई गई इन्डियन करेंसी को हिन्दुस्तान में फैलाया! मार्फीन, स्मैक, हेरोइन, मारिजुआना, एल० एस० डी० जैसी ड्रग्स भी

सप्लाई की और लाखों हिन्दुस्तानियों को नशेड़ी बना दिया गया। वहां के नौजवानों को बहला-फुसलाकर, भड़काकर या लालच देकर पाकिस्तानी ट्रेनिंग सैन्टर में ट्रेनिंग देकर टेररिस्ट बना दिया गया और हथियार थमा दिये—वो बेवकूफ अपनों का ही खून बहा रहे हैं। जिस मिट्टी में पैदा हुये उसी में बारूद बो रहे हैं।"

"ये खेल तो आगे भी मुसलसल चलता रहेगा जनाब!" जमाल खान जबड़ों की चक्की में शब्दों को [illegible] पीसते हुये ही बोला—"हम तबाह-ओ-बर्बाद कर देंगे हिन्दुस्तान को। बांग्ला देश वाले जख्म हरे-के-हरे हैं। जब तक इन्तकाम पूरा नहीं हो जाता...हमारे जख्म सूखेंगे नहीं। ले[illegible] आपकी परेशानी का सबब क्या है जनाब?"

जनरल की वर्दी वाले राष्ट्रपति ने सिगार म कश ल[illegible] पर कहा—"हिन्दुस्तान में इलेक्शन हो रहे हैं। देवेन्द्र सिं[illegible] [illegible] उसकी पार्टी के बैन्ड बजे हुये हैं। वो हारेगी। हुकूमत से बाहर हो जायेगी। हालांकि काफी सालों तक हुकूमत में रही हिन्दुस्तान पार्टी की हालत भी बढ़िया नहीं थी और कुछ नेताओं ने कई पार्टियों को मिलाकर तीसरा मोर्चा बनाया—जिसका नाम 'गरीब मजदूर किसान पार्टी' है। लेकिन अचानक ही सुजाता भारती पोलटिक्स में एक्टिव हो उठी। उसका भाई, बाप और ताऊ और दादा हिन्दुस्तान के प्रधानमन्त्री रहे हैं। हिन्दुस्तान की पब्लिक ने सुजाता भारती को सिर माथे पर बिठा लिया है। उसकी पब्लिक मीटिंग में बेहिसाब भीड़ शिरकत कर रही है। ये तय माना जा रहा है कि हिन्दुस्तान पार्टी फुल मेजोरिटी से इलेक्शन जीत जायेगी और सुजाता भारती देश की अगली प्रधानमन्त्री बन जायेगी।"

"माफी चाहूंगा जनाब! सुजाता भारती के हिन्दुस्तान की पी० एम० बनने से भला हम पर क्या फर्क पड़ जायेगा? हमारे आदमी पहले की तरह ही अपने काम को अन्जाम देते...।"

राष्ट्रपति ने इन्कार की मुद्रा में सिर हिला दिया और गम्भीर भाव से ही कहा—"गलतफहमी में मत रहो...जमाल खान! सुजाता भारती अपनी हरेक तकरीर में...स्पीच में दावा कर रही है कि वो अपने देश से दहशतगर्दी और आई० एस०

आई० का नामोनिशान मिटाकर रख देगी।"

"उसके कहने से होता क्या है जनाब? ये तो पब्लिसिटी और इलेक्शन स्टंट है। हुकूमत हासिल करने को सुजाता भारती ऐसे वादे और दावे तो करेगी ही—तभी तो उसे फायदा होगा। इलेक्शन के बाद कुर्सी मिलने पर वो सब भूल जायेगी! फर्ज कीजिये कि वो हमारे खिलाफ कोई मुहिम चलाती भी है तो क्या होगा? हमारे आदमी बाज नहीं आने वाले। वो गिरफ्तार होते रहेंगे, या एनकाउन्टर में हलाक होते रहेंगे—लेकिन नये लोग उनकी जगह लेते रहेंगे। उसके बड़ों को नहीं छोड़ा हमने। अगर वो हद से ज्यादा हाथ-पैर चलायेगी तो उसका भी इन्तजाम कर दिया जायेगा।"

अपनी कुर्सी पर बैठ राष्ट्रपति ने सिगार को 'ऐश-ट्रे' में ठूंस दिया। जमाल खान को बैठ जाने का इशारा किया और फिर संजीदा भाव से कहा—"अब पहले के से हालात नहीं रहे! पहले अमेरिका हमारा पूरा साथ देता था। हिन्दुस्तान के खिलाफ हम जो भी करते थे, उसके वास्ते अमेरिका ही सारा खर्चा उठाता था। हमें असलाह, गोला-बारूद मुहैया कराता था। खूब रुपया पैसा देता था। लेकिन...जब दहशतगर्दों ने अमेरिका के दो टॉवर प्लेन टकराकर जमींदोज कर दिये—कई अमेरिकियों को हलाक कर दिया, तब से अमेरिका की जहनियत बदल गई! वो ये मानने लगा कि उस वारदात के पीछे और दुनियाभर में हो रही दहशतगर्दी वाली वारदातों के पीछे पाकिस्तान का ही हाथ है।

अमेरिका ने हमसे दूरियां बढ़ानी शुरू कर दी और हिन्दुस्तान से नजदीकियां कायम की हैं। अमेरिका और हिन्दुस्तान के रिश्ते दोस्ताना होने लगे हैं। अमेरिका ने ये बोल दिया कि ओसामा-बिन-लादेन को हमने पनाह दे रखी हुई है, वो पाकिस्तान में ही कहीं छिपा हुआ है। अमेरिका ने हमें वार्निंग दी है कि अगर हमने ओसामा को पकड़कर उसके हवाले ना किया तो तमाम किस्म की इमदाद देनी बन्द कर देगा। हमारे मुल्क में अपनी मिलिट्री भी भेज सकता है। हालात पहले के जैसे नहीं रह गये जमाल मियां! अमेरिका के बिना हम हैं ही क्या? हमारा वजूद ही क्या रह जायेगा...?"

जमाल खान ने हौले-हौले सिर को जुम्बिश देकर स्वीकृति प्रदान की और बेहद गम्भीर हो चला।

"अगर हिन्दुस्तान हमारे मुल्क पर हमला बोल दे—लड़ाई छेड़ दे तो क्या हम उसके मुकाबले में टिक पायेंगे? पहले कभी टिके? नहीं टिके। जब-जब भी हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की जंग हुई—हमें शिकस्त का मुंह देखना पड़ा! हिन्दुस्तानी मिलिट्री के सामने हमारे जवानों ने घुटने टेके—सरेंडर कर दिया। बांग्ला देश वाली जंग में तो लाखों पाकिस्तानी फौजियों ने हथियार डालकर सरेंडर कर दिया था। हर बार हमारा ही ज्यादा नुकसान हुआ है—हमारे ही जवान हलाक हुये। अमेरिका की सरपरस्ती ना होती तो हाथों में भीख का कटोरा आ गया होता।"

जुबान को अल्प-विश्राम देकर तमतमाये चेहरे वाले राष्ट्रपति ने दूसरा सिगार सुलगा लिया और धुएं के साथ मानों दिल का गुब्बार भी निकालने लगा।

खामोश जमाल खान की आंखों व चेहरे पर कसमसाहट, छटपटाहट, परेशानी के भाव नुमाया हो रहे थे।

"सुजाता भारती अगर हिन्दुस्तान की प्राइम मिनिस्टर बन गई तो...काम खराब हो जायेगा। बना-बनाया खेल बिगड़ जायेगा! वो आई०एस०आई० और सभी दहशतगर्दों के खिलाफ मुहिम चलायेगी। पुलिस और मिलिट्री को खुली छूट दे सकती है। अगर बात ना बनी तो वो जंग भी छेड़ सकती है। हम एक और जंग को झेल पाने की कन्डीशन में नहीं हैं। ऐसे ही मुल्क के भीतर बवाल मचा हुआ है। धमाकों पर धमाके हो रहे हैं। बागी किस्म के दहशतगर्द अपने ही मुल्क में बदअमनी फैला रहे हैं। मिलिट्री भीतर के हालात सम्भालेगी कि सरहद पर हिन्दुस्तानी फौज से लड़ेगी? कुछ करो जमाल खान! सुजाता भारती किसी भी कीमत पर हिन्दुस्तान की वजीरे-आला नहीं बननी चाहिये। भले ही हिन्दुस्तान पार्टी हुकूमत में आ जाये और उसका दूसरा कोई लीडर पी०एम० बन जाये। उसे तो देख लेंगे हम! उससे तो निपट लेंगे।"

"ठीक है जनाब! आपका हुक्म सिर माथे। आप नहीं चाहते तो सुजाता भारती हिन्दुस्तान की वजीरे आला नहीं बनेगी। भले ही इसके वास्ते कुछ भी करना पड़े। मैं ऐसा करता

हूं कि हुलिया बदलकर नेपाल के रास्ते हिन्दुस्तान की ओर रवानगी करता हूं और काला मदारी से मुलाकात करता हूं। काफी माइंडेड है काला मदारी। तभी तो उसको हिन्दुस्तान का आई०एस०आई० मुखिया बनाया हुआ है। जरूरत पड़ेगी तो वो काले खां की मदद ले लेगा। या फिर दूसरा कोई रास्ता अख्तियार करेगा। ये काला मदारी की सिरदर्दी रहेगी कि वो सुजाता भारती को हिन्दुस्तान की वजीरे आला बनने से कैसे रोकता है? उसको जिन्दा रखकर कोई खेल खेलता है– या फिर उसको हलाक करके किस्सा ही तमाम कर देता है? जनाब की इजाजत हो तो मैं हिन्दुस्तान जाने की तैयारी करूं? काला मदारी से मिलकर कोई सैटिंग कर आऊं?"

राष्ट्रपति ने हामी भर दी!

❑❑❑
❑❑❑

नेपाल के रास्ते हिन्दुस्तान पहुंचा लेफ्टिनेंट जनरल और आई०एस०आई० चीफ जमाल खान!

पट्ठे ने हुलिया ही चेंज कर लिया था।

दाढ़ी मुंडवाकर चेहरे पर मास्क चढ़वा लिया था और सिर पर नकली बालों वाली विग भी फिट करा ली थी।

कान्टेक्ट लैंसेज से आंखों का रंग बिल्लौरी से काला कर लिया था।

जींस व टी शर्ट में कम उम्र का लग रहा था।

ऐसा लगता था कि उसका ताल्लुक किसी रईश खानदान से हो।

नया व ग्रे कलर का 'वी०आई०पी०' का ब्रीफकेस लिये हुये वो दिल्ली के 'मुगल-दरबार' होटल में पहुंचा और एक दिन के लिये एक ए०सी० रूम बुक करवाया! अपना नाम अमित रस्तौगी बतलाया और रजिस्टर में अहमदाबाद का काल्पनिक पता लिखने के साथ-साथ ये भी लिखा कि वो सोने-चांदी का व्यापारी है तथा उसी सिलसिले में दिल्ली आया है।

कमरे में पहुंचने पर आई०एस०आई० के इन्डियन चीफ काला मदारी का इन्तजार करने लगा, जिससे पहले ही ट्रांसमीटर के जरिये कॉन्टेक्ट करके सारा प्रोग्राम सैट कर चुका था।

कमरे में ही कपड़ा बिछाकर उसने नमाज अदा की और रूम सर्विस को फोन पर दो कॉफी का ऑर्डर दे दिया।

वेटर दो मग कॉफी के रखकर गया ही था कि काले ओवरकोट, काली पैन्ट, काले हैट व काले जूते वाला शख्स आ पहुंचा–जिसने आंखों पर काला चश्मा लगाया हुआ था और बाकी चेहरे को गले में पड़े काले मफलर से छिपाया हुआ था।

"सलाम...हाजी साहब...!" कौओ जैसी कर्कश आवाज थी उसकी।

"व अलैकुम सलाम। दरवाजा बन्द कर दो काला मदारी।"

काले ओवरकोट वाले ने दरवाजा बन्द कर दिया और फिर जमाल खान के सामने सोफे पर बैठने पर उसने हैट, चश्मा व मफलर उतारकर मेज पर रख दिये और बोला–"अगर मैंने पहले आपको इस रूप में नहीं देखा होता तो पहचानने का सवाल ही नहीं उठता था।"

जमाल खान ने कॉफी का मग उठाकर सामने बैठे रहस्यमयी काला मदारी को पकड़ाया और फिर दूसरा मग अपने लिये उठाकर बोला–"हुलिया बदलना तो जरूरी था काला मदारी। हम ना सिर्फ आई०एस०आई० के मुखिया हैं, बल्कि पाकिस्तानी मिलिट्री के लेफ्टीनेंट जनरल भी हैं। हमें असली शक्ल-सूरत में तो यहां पहचान लिया जाता। तुम भी तो खुद को छिपाकर आये हो कि नहीं?"

"हां, मेरी भी मजबूरी थी। सभी जानते-पहचानते हैं मुझे। इसलिये हुलिया बदलना पड़ा। वरना लोग ये सोचते कि मैं यहां क्यों, किसलिये आया हूं? लोगों की भीड़ जमा हो जाती। मीडिया वाले भी आ धमकते। छिपकर...चुपचाप आना मजबूरी थी। खैर, आपने ट्रांसमीटर पर किसी गम्भीर समस्या के बारे में 'हिन्ट' दिया था। ऐसी कौन-सी प्रॉब्लम क्रियेट हो गई कि आपको हिन्दुस्तान आने की तकलीफ उठानी पड़ी?"

जमाल खान ने गरमा-गर्म कॉफी की घूंट भरी और फिर बोला–"हमारी दुश्वारी का सबब है सुजाता भारती।"

"सुजाता...?" चौंका काला मदारी और सवालिया निगाहों से जमाल खान को देखने लगा।

"हां, सुजाता भारती! उसके बारे में तुम्हें बतलाने की जरूरत नहीं है। उसके तेवर बहुत ही खतरनाक हैं। इरादे भी खतरनाक हैं। वो आई० एस० आई० और हमारे वास्ते काम करने वाले दहशतगर्दो के खिलाफ मुहिम चलाने...खात्मा करने का दावा कर रही है। वो हिन्दुस्तान से गरीबी, महंगाई, जुर्म और करप्शन का नामोनिशान मिटाने की बात भी कर रही है। जबकि हमारे आका और हमारा मुल्क नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान में चैन-ओ-अमन कायम हो, ये मुल्क तरक्की करे। हम चाहते हैं कि ये मुल्क मुसलसल कमजोर होता चला जाये—ताकि हम मजबूत हो जायें और अपने मन्सूबे पूरे कर सकें। हिन्दुस्तान के टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते हैं हम! ख्वाब तो ये देखते हैं कि हिन्दुस्तान हमारा गुलाम हो जाये—यहां पर हमारी हुकूमत कायम हो जाये। तुम्हें ऐसा कुछ करना था कि सुजाता भारती पोलटिक्स में आती ही नहीं।"

"मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि उसे इतनी कामयाबी मिल जायेगी। वो जहां भी जाती है...भीड़ का सैलाब-सा उमड़ आता है।"

"अगर ऐसा ही चलता रहा तो सुजाता भारती हिन्दुस्तान की अगली प्रधानमन्त्री होगी। जबकि हम और हमारे आका नहीं चाहते कि ऐसा हो। हमारी बात समझ रहे हो ना...काला मदारी?"

"जी हां—समझ रहा हूं हाजी साहब! सुजाता पी० एम० नहीं बनेगी। ये मेरा आपसे प्रॉमिस है।"

"लेकिन उसे पब्लिक की फुल सपोर्ट मिल रही है। हिन्दुस्तानी उसके लिये पागल हुये जा रहे हैं। उसे पी० एम० की कुर्सी पर पहुंचने से कैसे रोकोगे? तुम्हारे कहने पर वो चुपचाप घर में बैठ जायेगी?"

"नहीं, कोई सवाल ही नहीं बनता।"

"तो फिर काले खां से बात करो और सुजाता भारती का काम तमाम करा दो। उसी से तो तुमने सुजाता भारती के भाई को भी उड़वाया था।"

"काले खां आतंकवादियों का सरगना है। बड़ी हस्ती का खात्मा वो ही सही तरीके से कर सकता है। क्योंकि उसके पास

'मानव बम' हैं। लेकिन मैं काले खां का इस्तेमाल तब करूंगा, जब कोई रास्ता नहीं बचेगा। सी० बी० आई० का इतना डर नहीं मुझे जितना केशव पाण्डेत से है। वो सुजाता का धर्म भाई है। कहीं ऐसा ना हो कि वो छानबीन करे और उसके हाथ मेरे गले तक पहुंच जायें। मजबूरी हुई तो काले खां को बोलकर सुजाता का काम तमाम कराना ही होगा। लेकिन उससे पहले मैं ऐसी कोई तरकीब निकालूंगा कि सुजाता भारती पी० एम० ना बनने पाये।"

"तुम कोशिश करोगे तो कामयाब हो जाओगे...तुम ब्रिलियंट माइंड वाले हो—जीनियस हो। तुम्हारे प्लॉन सॉलिड होते हैं और कामयाब भी हो जाते हैं। तुम चाहे जो करो काला मदारी, बस, सुजाता भारती वजीरे आला नहीं बननी चाहिये।"

"नहीं बनेगी! आप निश्चिंत रहिये, हाजी साहब।"

"तुमने बोल दिया तो हम बेफिक्र हो गये। हमें तुम पर पूरा ऐतबार है...भरोसा है। तुम चाहो तो अभी निकल सकते हो। हमें भी आज ही वापस लौटना है। जरूरत पड़ने पर ट्रांसमीटर पर गुफ्तगू होती रहेगी।"

❑❑❑

❑❑❑

"होली आई रे कन्हाई होली आई रे...बजा दे जरा बांसुरी...होली आई रे...।"

"होलिया में उड़े रे गुलाल, कहियो रे मंगेतर से—म्हारी ये मंगेतर चूड़णा वाली...गढ़िया वालो नवाब...कहियो रे मंगेतर से।"

"होली के दिन दिल खिल जाते है, रंगों में रंग मिल जाते हैं—गिले-शिकवे भूल के दोस्तों दुश्मन भी गले मिल जाते हैं।"

"रंग बरसे भीगे चुनर वाली—अरे किसने मारी पिचकारी तोरी भीगी अंगियां—रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे...सोने की थारी में जूना परोसा...खाये गोरी का यार...बलम तरसे...रंग बरसे...भीगे चुनर वाली...रंग बरसे...।"

"ताल से ताल मिले मोरे बबुआ—बाजे ढोल-मृदंग, मन से मन जो हो तो...रंग से मिल जाये रंग...होरी खेले रघुवीरा

अवध में...होरी खेले रघुवीरा...हिल-मिल आवे लोग-लुगाई...भई महलन में भारा...होरी खेले रघुवीरा...।"

"आयो रे...आयो रे...आली आली रे होली—आई मस्तानों की टोली...तूफान दिल में रिये...जख्मी दिलों का बदला चुकाने...आये हैं दीवाने...आ ली रे...।"

कोटला का कॉन्वेंट स्कूल!

रंगोंवाली होली के दिन स्कूल के तमाम कायदे-कानून उठाकर ताक पर रख दिये गये थे।

लड़कों व लड़कियों को एक-दूसरे के साथ होली खेलने की छूट मिल गई थी।

सो गर्ल्स हॉस्टल का ब्वाय हॉस्टल के बीच वाला लम्बा-चौड़ा लॉन होली का अखाड़ा बना हुआ था। बिना किसी भेद-भाव के लड़के-लड़कियां एक दूसरे के साथ होली खेल रहे थे। एक-दूसरे को गुलाल व अबीर के साथ-साथ रंग भी लगा रहे थे।

पिचकारियों से एक-दूसरे को रंग रहे थे।

डी० जे० सिस्टम पर होली के रिमिक्स सॉंग्स बज रहे थे।

नाचने-गाने के शौकीन लड़के-लड़कियां नाच-गा रहे थे। लगभग सभी ने भांग वाली ठन्डाई का सेवन किया हुआ था।

एक तो होली के रंगों का आत्मिक नशा...ऊपर से भांग का सरूर—सभी मस्त थे।

शोर-शराबे व मस्ती का माहौल था।

इस जश्न में वंशराज, सुगन्धा व शुभम भी सम्मलित थे।

वंशराज—हिन्दुस्तान पार्टी की अध्यक्ष सुजाता भारती व रिटायर्ड ए० सी० पी० उदयराज का इकलौता व लाड़ला बेटा।

सुगन्धा—वंशराज की फुफेरी बहन, सुजाता भारती के स्वर्गवासी भाई व पूर्व प्रधानमन्त्री संजीव भारती की बेटी। बम धमाके में मां-बाप के मारे जाने पर सुगन्धा को सुजाता व उदयराज ने ही मां-बाप बनकर परवरिश दी और किसी भी मामले में उसे वंशराज से कम नहीं चाहते। सुगन्धा व वंशराज के बीच सगे भाई-बहन से भी बढ़कर प्यार व आत्मीयता है।

शुभम—हिन्दुस्तान पार्टी के वरिष्ठ नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता सुन्दर लाल का बेटा है। बचपन में ही वंशराज और सुगन्धा के साथ खेला-कूदा, पढ़ाई की और दोनों का पक्कम-पक्का दोस्ताना है।

तीनों ही हम उम्र यानि अठारह वर्ष के हैं और इन्टर मीडियेट अर्थात् टेन प्लस टू में एक ही क्लास में पढ़ा करते हैं।

तीनों का ताल्लुक बड़े, राजनैतिक व नामचीन परिवारों से था—लेकिन तीनों में चींटी बराबर भी घमण्ड नहीं था—सुई की नोक जितनी भी बू नहीं।

सभी स्टूडेन्टस् से घुल-मिलकर रहते हैं और सभी के सुख-दुःख में काम आने वाले हैं।

हालांकि माहौल मस्ती, उमंग व उत्साह भरा हुआ था, लेकिन वंशराज टेंशन में था।

उसके दिमाग में उथल-पुथल-सी मची हुई थी।

वास्तविकता तो ये है कि वो होली खेल रहा था और खुश होने का नाटक भी कर रहा था—लेकिन भीतरी तौर पर वो व्याकुल था।

बार-बार उसकी नजरें मान्यता नाम की लड़की पर जा रही थीं।

कोई अट्ठारह वर्षीय मान्यता फिलहाल रंगों से पुती होने के कारण 'भूतनी-सी' लग रही थी—लेकिन वास्तविकता ये थी कि वो बला की खूबसूरत थी। नैन-नक्श ही खूबसूरत नहीं थे, बल्कि उसका जिस्म, रूप-यौवन भी लाजवाब था।

अचानक ही मान्यता ने होली खेलना बन्द कर दिया और टोंटी पर पहुंचकर साबुन से हाथ-मुंह धोने लगी।

वंशराज को छोड़ किसी का ध्यान मान्यता की तरफ नहीं था।

साबुन से धुलाई होने पर हालांकि रंग पूरी तरह तो नहीं छूटे—लेकिन चेहरा 'भूतनी-सा' से 'अप्सरा-सा' अवश्य हो गया था।

मान्यता गर्ल्स हॉस्टल की तरफ बढ़ी तो वंशराज की धड़कनें तेज होने लगीं—ना जाने क्यों?



मान्यता पर भांग का असर था, वो लापरवाह रही, या फिर उसने जानबूझकर अपने रूम का दरवाजा बन्द तो किया, लेकिन सिटकनी ना लगाई। भांग की तरंग में झूमते हुये और फिल्मी गीत गुनगुनाते हुये उसने जिस्म पर से तमाम कपड़े उतार कर फर्श पर ही इधर-उधर फेंक दिये।

निःवस्त्र अवस्था में उसने आलमारी खोलकर दूसरे वस्त्र व टॉवल निकाला।

फिर वो अटैच्ड बाथरूम में पहुंची।

बाथरूम का दरवाजा भी उसने भीतर से बन्द ना किया और शावर खोलकर स्नान करने लगी।

उधर—

वंशराज ने होली खेलना बन्द किया और टोंटी पर पहुंचकर साबुन से हाथ-पैर, सिर व चेहरा धोने लगा।

"ये क्या वंशराज!" एक लड़का वीडियो कैमरा लिये हुये उसके करीब पहुंचकर बोला, "तुम अभी से हाथ-मुंह धोने लगे। अभी तो दो ही बजे हैं। हमें कम-से-कम पांच बजे तक तो होली खेलनी चाहिये ही।"

"नहीं सोमेश! मेरी तबियत खराब है।"

"क्या हुआ? मुझे बतलाओ! अभी डॉक्टर के पास चलते हैं।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है सोमेश भाई! पहली मर्तबा—भांग की ठण्डाई पी है। सिर चक्करा रहा है। दिमाग घूम रहा है। अपने कमरे में जाकर ठन्डे पानी से नहाऊंगा और फिर लेटूंगा। शायद सोने पर तबियत सुधर जाये।"

"लेकिन हम लोगों ने खाने-पीने का काफी सामान मंगवाया हुआ है।"

"अगर तबियत ठीक हो गई तो फिर नीचे आ जाऊंगा। एक बार फिर से होली खेलूंगा। तभी खाना-पीना भी हो जायेगा। वो देखो, दिव्या कितना बढ़िया डांस कर रही है। तुम उसकी फिल्म शूट करो।"

सोमेश नामक लड़का कैमरा सम्भाले हुये उस तरफ

लपका, जिधर दिव्या नाम की लड़की 'झलक दिखला जा...झलक दिखला जा—एक बार आ जा आ जा...आ जा' वाले हिमेश रेशमिया के गाने पर शानदार डांस कर रही थी।

वंशराज ने होली के हुड़दंगियों की तरफ देखा तो पाया कि किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं था। वो मेहन्दी, गुलाब, चमेली, गेंदा की बाड़ की ओट लेते हुये गर्ल्स हॉस्टल के बरान्डे तक पहुंच गया। पलटकर फिर हुड़दंगियों की तरफ देखा और किसी का ध्यान अपनी तरफ ना पाने पर सीढ़ियों पर तेजी से चढ़ता चला गया।

लेकिन वो गलतफहमी का शिकार था कि किसी ने उसे देखा नहीं था।

वीडियो कैमरे से फिल्म शूट कर रहे सोमेश नामक लड़के की नजरें अन्त तक उसे 'फालो' करती रही थीं।



अचानक ही डी० जे० सिस्टम बन्द हो गया। उस पर चलता गाना और उस गाने की लय पर थिरकते स्टूडेन्टस् के कदम भी रुक गये।

"बन्द करो...मैं कहती हूं कि...ये सब बन्द करो...।"

सभी ने आवाज की दिशा में देखा तो बुरी तरह चौंके।

कइयों के मुख से तो सिसकारी-सी छूट गई।

कइयों की आंखें फैलती चली गईं।

नजारा था भी स्तब्ध करने वाला।

डी० जे० सिस्टम के करीब खड़ी मान्यता की आंखों में आंसू भरे हुये थे।

उसके दायें गाल पर किसी की उपड़ी हुई उंगलियों के सुर्ख निशान इस बात की चुगली खा रहे थे कि किसी ने जोरदार थप्पड़ मारा था।

निचले होठ पर खून के साथ दांतों के निशान भी स्पष्ट दिखलाई पड़ रहे थे।

होठ सूजकर काफी मोटा हो गया था।

मान्यता का सफेद रंग का कुर्ता ऊपर से लेकर पेट तक

फटा हुआ था और ब्रा समेत सीने के उभारों का काफी हिस्सा अनावृत था।

"मा...मान्यता...!"

"ये क्या हुआ मान्यता को...?"

"लगता है कि किसी ने मान्यता के साथ जोर-जबरदस्ती की है।"

बोलते हुए सभी स्टूडेन्ट्स लपके और मान्यता को घेर लिया।

"क...क्या हुआ मान्यता?" एक लड़के ने पूछा, "ये सब तुम्हारे साथ किसने किया?"

कोई जवाब देने की बजाय मान्यता ने हथेलियों से चेहरा ढांप लिया और बैठकर रोने लगी।

तब उसकी पीठ नजर आई।

पीठ पर से भी कुर्ता कमर तक फटा हुआ था और ब्रा की स्ट्रेप भी टूटी हुई थी।

कई लड़के-लड़कियों ने पूछा कि क्या हुआ—लेकिन वो जवाब देने की बजाय फफक-फफककर रोती रही। ये नजारा स्कूल की गर्ल्स हॉस्टल को महिला चपरासी ने देखा तो एक दिशा को लपक पड़ी।

वो कॉलेज के उस हिस्से में पहुंची, जहां पर प्रिंसिपल, टीचर्स, गर्ल्स व ब्वाय हॉस्टल के वार्डन और स्कूल के बाकी स्टाफ के लोग होली खेल चुकने पर चाय के साथ पकौड़ियां, गुंजियां व पकवान खा रहे थे।

चपरासन ने बतलाया कि स्कूल की एक स्टूडेन्ट के साथ कोई गड़बड़ी हुई है और वो कुछ बतलाने की बजाय रोये जा रही है—सभी स्टूडेन्टस् उसे घेरे खड़े हैं।

प्रिंसिपल हरीश सिंह समेत स्कूल का पूरा स्टाफ चाय-नाश्ता छोड़कर लॉन की तरफ दौड़ पड़े।

हर किसी के चेहरे पर चिन्ता की घटायें घिर आई थीं और आंखों में आशंका की बिजली-सी कौंध रही थीं।

सभी लॉन में पहुंचे।

"क्या हो रहा है...क्या हुआ?"

प्रिंसिपल हरीश सिंह की आवाज पर कुछ स्टूडेन्ट्स ने मान्यता तक पहुंचने के लिये रास्ता छोड़ दिया।

"सर...ये मान्यता...!" रंगों से पुता शुभम दबी हुई आवाज में बोला, "ऐसा लगता है कि इसके साथ किसी ने बदतमीजी की है।"

"व्हाट हैपंड...मान्यता बेटी...?" प्रिंसिपल रोती हुई मान्यता के हिलते सिर पर स्नेह से हाथ रखकर अपनत्वभरे भाव से बोला—"क्या हुआ? रोना बन्द करो और बतलाओ कि क्या हुआ?"

एक झटके के साथ उठ खड़ी हुई मान्यता।

उसकी आंसूभरी आंखों में खून के कतरे से भरते चले गये और चेहरा लाल-भभूका हो चला।

क्रोध की अधिकता से थर-थर कांपते हुये वो जख्मी नागिन की मानिन्द ही फुंफकारते हुये बोली—"उस...नीच...कमीने...कुत्ते ने मेरे साथ बदतमीजी की...मेरे साथ रेप करने की कोशिश की...सर...।"

"रेप?"

"रेप...?"

कई मुखों से आश्चर्य के साथ निकला।

प्रिंसिपल यकायक ही गम्भीर होकर बोला—"तुम किसकी बात कर रही हो मान्यता बेटी? किसने तुम्हारे साथ बदतमीजी करने की जुर्रत की? उसका नाम बतलाओ बिटिया?"

"वंशराज!"

❑❑❑

❑❑❑

"क...क्या?"

"व्हाटऽऽऽ?"

"व...वंशराज...?"

"अपना वंशराज...?"

लगभग सभी स्टूडेन्ट्स और साथ ही प्रिंसिपल समेत स्कूल स्टाफ के लोग भी चौंके...चिहुंके! हर किसी के चेहरे पर आश्चर्य व अविश्वास के भाव परिलक्षित होने लगे।

सबसे ज्यादा सुगन्धा व शुभम चौंके और परेशानी में पड़े नजर आये।

"न...नहीं...ये नहीं हो सकता...!" सुगन्धा मानो तड़फकर बोली—"मेरा भाई ऐसी नीच हरकत कतई नहीं कर सकता...।"

"तुम...तुम होश में तो हो ना मान्यता...?" शुभम बौखलाया-सा बोला, "जानती हो कि इतना गन्दा और घिनौना इल्जाम किस पर लगा रही हो?"

"हां, जानती हूं।" सुगन्धा की आवाज भभकी हुई थी।

"नहीं...कुछ नहीं जानती तुम! बकवास कर रही हो तुम! लगता है कि तुम्हें भांग चढ़ गई है। तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।"

"दिमाग मेरा नहीं...तुम्हारा खराब हुआ है शुभम...जो तुम मेरी बात पर यकीन नहीं कर रहे हो...।" अब मान्यता के मुख से शब्द नहीं मानो आग की लपटें ही निकल रही थीं, "मैंने भांग वाली ठन्डाई पी जरूर थी—लेकिन अपने कमरे में जाकर ठन्डे पानी से नहाई तो एकदम नॉर्मल और फ्रेश हो गई। अब मुझ पर भांग का कोई असर नहीं है। अगर थोड़ा-बहुत था भी तो...वंशराज की नीच हरकत ने उसे भी दूर कर दिया! ये तो मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं कलंकित होने से बच गई। अपनी इज्जत बचाने को जी-तोड़ संघर्ष किया मैंने। किसी तरह उस कमीने से बचकर यहां तक पहुंच पाई—वरना उसने मुझे किसी को भी मुंह दिखलाने के काबिल ना छोड़ा था।"

"नहीं, ये...ये नहीं हो सकता।" सुगन्धा रूआंसी-सी होकर बोली—"बिल्कुल नहीं हो सकता! सिर्फ मैं और शुभम ही नहीं, बल्कि पूरा स्कूल जानता है कि मेरा भाई किस नेचर का है। वो अच्छे संस्कारों और धार्मिक प्रवृत्ति वाला है। किसी भी लड़की को नजरें उठाकर नहीं देखा उसने! यहां मौजूद एक भी आदमी नहीं मानेगा कि वंशराज ऐसी नीच हरकत कर...!"

"तो क्या मैं झूठ बोल रही हूं?" मान्यता विक्षिप्त भाव से चीखकर बोली—"मेरा दिमाग खराब हुआ है कि मैं खामख्वाह ही किसी पर झूठा इल्जाम लगाऊंगी? क्या मैंने अपने कपड़े खुद ही फाड़े हैं? अपने गाल पर चांटा मारा है? अपने बाल

खींचे हैं? अपना होठ जख्मी किया है? वो कमीना तुम्हारा भाई है। तुम तो उसका फेवर लोगी ही...।"

"ये फेवर करने वाली बात नहीं है मान्यता!" शुभम धैर्य और समझाने वाले भाव के साथ बोला, "वंशराज को सभी जानते हैं। वो स्कूल का सबसे होनहार, शरीफ, शिष्टाचार और संस्कारों वाला लड़का है! उसने हरेक रक्षा बन्धन पर स्कूल की तमाम लड़कियों से राखियां बन्धवाई हैं—उनमें तुम भी हो। सभी लड़कियों को उसने उनके नाम के साथ बहन या सिस्टर जोड़कर ही पुकारा! तुम्हें भी हमेशा मान्यता बहन ही कहा होगा।"

"मैं भी उसे शरीफ समझती थी! लेकिन आज उसका असली रूप सामने आया है। वो कमीना भेड़ की खाल में छिपा भेड़िया निकला! हो सकता है कि उस पर भांग का नशा चढ़ा हो—लेकिन उसकी नीयत हमेशा ही मुझ पर खराब रही। वो कभी मेरे साथ ऐसी-वैसी हरकत करने की हिम्मत नहीं कर पाया—लेकिन आज उसने मेरी इज्जत पर हाथ डालने की हिम्मत कर डाली। अगर मेरी बात पर यकीन नहीं होता तो सोमेश से पूछ लो। वो वंशराज की नीच हरकत का गवाह है।" फिर मान्यता इधर-उधर देखते हुये तेज आवाज में बोली—"सोमेश...सोमेश! कहां हो तुम? आकर इन लोगों को बतलाओ कि वो कमीना वंशराज मेरे साथ क्या नीच हरकतें कर रहा था?"

❑❑❑
❑❑❑

हाथ में छोटे वाला वीडियो कैमरा या हैन्डी कैम लिये हुये सोमेश गर्ल्स हॉस्टल के बरान्डे की सीढ़ियां उतरता दिखलाई दिया और सभी नजरों के निशाने पर आ गया।

जब वो करीब आया तो मान्यता उसकी तरफ लपकी और उसका हाथ पकड़कर बोली—"इन लोगों को बतलाओ कि वंशराज मेरे साथ क्या हरकतें कर रहा था?"

सोमेश ने हतप्रभ से खड़े सुगन्धा व शुभम को देखा—फिर दुविधा की मकड़ी उसके चेहरे पर हिचकिचाहट की तारों से जाल-सा बुनती चली गई।

'कुछ बोलूं कि नहीं बोलूं' जैसे भाव आंखों में छलकने लगे।

"तुम खामोश क्यों हो सोमेश...?" मान्यता उसे झिंझोड़ते हुये चीखें-सी—"इन लोगों को वो सब बतलाते क्यों नहीं...जो तुमने अपनी आंखों से देखा?"

"बोलो...जवाब दो सोमेश!" प्रिंसिपल हरीश सिंह आदेश भरे लहजे में बोला—"तुमने अगर कुछ देखा है तो...बतलाओ! झिझकने या डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

"सर...!" सोमेश के होंठ हिलने से पहले ही शुभम बोल उठा—"सबसे पहले सोमेश से ये पूछिये कि ये गर्ल्स हॉस्टल में क्या कर रहा था? ये गर्ल्स हॉस्टल से निकलकर आया है।"

"हां, बोलो सोमेश...!" गर्ल्स हॉस्टल की अधेड़ वार्डन रौबीले लहजे में बोली—"तुम गर्ल्स हॉस्टल में क्या करने गये थे?"

❑❑❑
❑❑❑

"वो...बात ऐसी है मैडम कि...मैंने वशंराज को गर्ल्स हॉस्टल में जाते देखा था। उससे पहले वो हाथ-मुंह धो रहा था तो मैं उसके पास गया था कि वो इतनी जल्दी होली का प्रोग्राम क्यों छोड़ रहा है? उसने बतलाया कि उसे भांग चढ़ गई है और वो अपने कमरे में जाकर आराम करेगा। लेकिन मैंने उसे चोरों की तरह गर्ल्स हॉस्टल की तरफ जाते देखा तो मुझे अजीब लगा। समझ में ना आया कि वंशराज ब्वाय हॉस्टल की बजाय गर्ल्स हॉस्टल में क्यों जा रहा है? तब दिव्या डांस कर रही थी और मैं कैमरे से उसकी फिल्म शूट कर रहा था। लेकिन मेरा दिमाग वंशराज की तरफ ही था! मेरे दिमाग में ये बात आई कि शायद भांग के नशे में वो गलत हॉस्टल में चला गया और उसे मदद की जरूरत हो। तब मैं गर्ल्स हॉस्टल में गया और वंशराज को ढूंढने लगा। उसे पुकारा...आवाजें दीं! थर्ड फ्लोर पर पहुंचा तो किसी के चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ीं। मुझे लगा कि वो आवाज मान्यता की है। मैं दौड़कर मान्यता के कमरे पर पहुंचा तो पाया कि दरवाजा भीतर से बन्द था—लेकिन लोहे के सींखचों वाली खिड़की के पल्ले खुले हुये थे। वहां से भीतर

का दृश्य देखा तो बुरी तरह चौंक गया...हैरानी में पड़ गया।"

इतना बोलने पर सोमेश खामोश हो गया तो चश्माधारी एक अध्यापक ने कौतूहलताभरे लहजे में पूछा—"क्या देखा तुमने? कमरे के भीतर क्या हो रहा था?"

हिचकिचाया सोमेश, फिर बोला—"वंशराज मान्यता के साथ जबरदस्ती कर रहा था...उसकी इज्जत से खेलने की कोशिश...!"

"झूठ...!" सुगन्धा विक्षिप्त भाव स... उठी, "झूठ बोल रहे हो तुम सोमेश.. बकवास कर रहे हो। मेरा भाई ऐसी नीच हरकत नहीं कर सकता...।"

सकपकाया सोमेश, उसने कन्धों को उचकाया और निरीह व बेबस भाव से बोला—"भ...भला मैं झूठ क्यों बोलूंगा? मेरी वंशराज से कोई दुश्मनी तो है नहीं! मैं जो भी बतला रहा हूं वो एकदम सच है।"

"सच यही है...!" मान्यता सुगन्धा का मुंह खुलने से पहले ही एक-एक शब्द पर जोर देते हुये बोली, "मैं बाथरूम से नहाकर निकली तो कमरे में वंशराज को पाकर चौंक उठी थी। भीतर से दरवाजा बन्द पाकर और वंशराज के हाव-भाव देखकर मैं घबरा गई थी। इससे पहले कि कुछ पूछ पाती...वंशराज भूखे भेड़िये की तरह ही मुझ पर झपट पड़ा। मुझे दबोच लिया उसने। धक्का देकर बेड पर गिरा दिया! बोला था कि उसकी मुझ पर ना जाने कब से नीयत खराब थी—लेकिन वो कुछ कर पाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। मैंने उसकी पकड़ से निकलने की कोशिश की...लेकिन कामयाब ना हो पाई। उसने मुझे थप्पड़ मारा! मेरा कुर्ता फाड़ डाला। फिर उसने बड़ी ही बेरहमी के साथ मेरे लिप पर किस किया। मेरे होंठ की हालत देख ही रहे हैं आप लोग। तभी सोमेश वहां पहुंचा तो मुझे मदद की उम्मीद जगी। मैंने सोमेश से मदद मांगी। सोमेश ने दरवाजा तोड़ने की कोशिश की...लेकिन दरवाजा मजबूत था और भीतर से सिटकनी और कुन्डी भी लगी हुई थी।"

"मैंने वंशराज से कहा था कि वो मान्यता को छोड़ दे, लेकिन वो तो जैसे पागल हो गया था। मेरी सुन ही नहीं रहा था।" मान्यता की बात को काटकर सोमेश बोला—"तब मैंने

उसे धमकी दी कि अगर उसने मान्यता को नहीं छोड़ा तो मैं कैमरे से फिल्म बना लूंगा और... ।"

"तुम झूठ बोल रहे हो...!" शुभम सोमेश को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरते हुये बोला, "मनघड़न्त किस्सा सुना रहे हो। ये मान्यता भी झूठा इल्जाम लगा रही है वंशराज पर। तुम दोनों आपस में मिले हुये हो और वंशराज के खिलाफ कोई गहरी साजिश रच रहे हो। लेकिन तुम दोनों की साजिश कामयाब नहीं होगी। पहले ये बतलाओ कि वंशराज कहां है?"

"वो कमीना मेरे कमरे में बेहोश पड़ा है।" मान्यता की आवाज में जहर-सी कड़वाहट थी।

"बेहोश...!" सुगन्धा घबराकर बोली, "मेरा भाई बेहोश है? लेकिन वो बेहोश कैसे हो गया?"

"मैंने किया!" मान्यता की आवाज में क्रोध व घृणा कूट-कूट कर भरी हुई बोली, "क्या मैं अपनी इज्जत बचाने को कुछ करती नहीं? उसे जोर से धक्का दिया था मैंने! उसका सिर दीवार से टकराया और वो बेहोश हो गया। तभी मैं दरवाजा खोलकर भागने में कामयाब हो पाई और यहां तक पहुंच पाई... ।"

"वंशराज मेरा भाई...!" कहने पर घबराई हुई सुगन्धा गर्ल्स हॉस्टल की तरफ दौड़ पड़ी।

शुभम भी उसके पीछे दौड़ा!

कुछ अन्य स्टूडेन्टस् भी दोनों के पीछे लपके।

❑❑❑
❑❑❑

मान्यता के कमरे में दीवार के करीब फर्श पर पड़ा वंशराज कराह रहा था। उसके माथे पर अंडे के साइज का गूमड़ उभरा हुआ था और समूचा माथा नीला पड़ने के साथ-साथ सूजा हुआ भी था।

"व...वंशराज...मेरे भाई... ।" सुगन्धा लपककर फर्श पर बैठी। कराहते वंशराज के सिर को अपनी गोद में रखने पर रूआंसी-सी होकर बोली, "तुम ठीक तो हो ना मेरे भाई?"

"ज्यादा दर्द तो नहीं हो रहा है?" शुभम चिन्तित भाव

से बोला, "चलो, पहले तुम्हें डॉक्टर के पास लेकर चलते हैं—बाकी की बातें बाद में होंगी।"

"न...नहीं...मैं ठीक हूं...आह!" उठ बैठा वंशराज और हथेलियों से माथा दबाते हुये बोला—"कोई कपड़ा या रूमाल हो तो मेरे माथे पर बांध दो।"

सुगन्धा ने जरा-सा भी विलम्ब किये बिना अपनी रंग से रंगी चुनरिया को वंशराज के माथे व सिर पर दो बार लपेटने पर सिर के पीछे कसकर गांठ लगा दी।

वंशराज ने इधर-उधर देखने पर पीड़ायुक्त स्वर में पूछा—"मान्यता कहां है?"

"वो नीचे है!" शुभम वंशराज के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—"वो तुम्हारे बारे में बहुत बकवास कर रही है। घिनौना इल्जाम लगा रही है तुम पर! हुआ क्या था?"

"क्या बोल रही है वो?" वंशराज ने जवाब देने की बजाय सवाल कर दिया।

"वो ?...वो कह रही है कि... ।"

"हां, बोलो सुगन्धा, तुम रुक क्यों गई?"

सुगन्धा के मुंह में मानो किसी ने 'फेवीकोल' भर दिया हो। उससे बोला ना गया। उसने शुभम की तरफ यूं देखा कि मानो कह रही हो कि वो ही बतलाये।

"मान्यता तुम पर इल्जाम लगा रही है कि...तुमने उसकी इज्जत लूटने की कोशिश... ।"

"व्हाट ऽऽऽ?" चिहुंक कर बोला वंशराज—"ऐसा बोल रही है वो? झूठ...मक्कार...कमीनी! कहां है वो? मुझे उसके पास लेकर चलो। मैं बतलाऊंगा कि वो कितनी गन्दी लड़की है—हकीकत क्या है!"

❑❑❑
❑❑❑

सुगन्धा, शुभम व अन्य कई स्टूडेन्टस् के साथ आये वंशराज को देखकर मान्यता की आंखों से ऐसी चिंगारियां-सी छूटने लगीं, जैसे कि वेल्डिंग करते वक्त उठा करती हैं।

क्रोधातिरेक चेहरा सुर्ख पड़ गया, जिस्म थरथराने लगा।

गुलाबी होंठ तूफान की चपेट में आए किसी वृक्ष की शाखाओं की मानिन्द ही कंपकंपाने लगे।

फूलते-पिचकते नथुनों से फूटती सांसें जख्मी नागिन की फुंफकारों के जैसी ही आवाजें उत्पन्न कर रही थीं।

"आ गया ये महावीर...!" वह प्रिंसिपल से मुखातिब होकर बोली—"इसी ने मेरे साथ बदतमीजी की...मेरे साथ रेप करने की कोशिश...।"

"क्या बकवास कर रही तू मान्यता...?" वंशराज की आंखों में अविश्वास, चेहरे पर आश्चर्य तथा आवाज में क्रोध झलक रहा था, "झूठ बोलते हुये शर्म नहीं आती तुझे? सभी लोगों को सच्चाई क्यों नहीं बतलाती है तू...?"

"सच्चाई ही बयान कर रही हूं मैं...कमीने।" वह जख्मी नागिन की मानिन्द ही बल खाकर फुंफकारी-सी—"मेरा ये फटा हुआ कुर्ता...मेरा जख्मी होंठ तेरी नीच हरकत का प्रमाण है...।"

"क्या ये सच है वंशराज?" प्रिंसिपल वंशराज के करीब पहुंचने पर उसकी आंखों में झांकते हुये शुष्क भाव से बोला, "तुमने मान्यता की इज्जत पर हाथ डाला...?"

"स...सर...ये...ये आप क्या कह रहे हैं?" वंशराज मानो कसमसाकर बोला, "मान्यता मुझ पर झूठा इल्जाम लगा रही है।"

"हम मान्यता की हालत देख रहे हैं।" प्रिंसिपल हरीश सिंह गम्भीर भाव से बोला—"इसकी दशा बतला रही है कि किसी ने इसके साथ जोर-जबरदस्ती करने की कोशिश की है, तुम कोई आम स्टूडेन्ट नहीं हो। तुम पूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय प्रभाकर भारती के नाती, स्वर्गीय संजीव भारती के भान्जे और हिन्दुस्तान पार्टी की अध्यक्ष सुजाता भारती के बेटे हो। हमारा स्कूल टाइट रूल्स और डिसिप्लीन के लिये जाना जाता है। आज तक यहां पर ऐसी कोई वारदात नहीं हुई। मामला पुलिस तक जायेगा तो स्कूल की बदनामी होगी। तुम्हारी मम्मी की इज्जत और शोहरत पर भी आंच आयेगी। सत्ता की ओर कदम बढ़ा रही हिन्दुस्तान पार्टी को भी नुकसान उठाना पड़ेगा। अभी मामला स्कूल के भीतर ही है। कोशिश की जायेगी कि मामला

यहीं पर निपटा दिया जाये। गलती किसी से भी हो सकती है। लेकिन गलती करने वाला अपने किये पर पछताये और अपनी गलती स्वीकार करके माफी मांग ले तो वो दिक्कतों से बच सकता।"

"यानि आपने मान्यता की बात पर विश्वास कर लिया है सर...?" वंशराज मानो रो पड़ने को तैयार था, वो तड़फकर बोला, "आप मेरी बात भी तो सुनिये। सच्चाई कुछ और ही है।"

"ठीक है बोलो। हम तुम्हारी बात भी सुनेंगे। लेकिन एक बात याद रखना कि अगर तुम्हारी बात झूठी निकली तो हमसे बुरा कोई ना होगा। तुम्हारे साथ जरा भी रिआयत नहीं होगी और तुम्हारे खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी। अब बोलो...क्या कहना चाहते हो तुम?"

❑❑❑
❑❑❑

"मैं सबके साथ मिलकर होली खेल रहा था सर! एक लड़का मेरे पास आया! एक तो वह रंगों से रंगा हुआ था और एक्सक्यूज मी सर! मुझे भांग भी चढ़ी हुई थी—इसलिये मैं उस लड़के को पहचान नहीं सका। उसने मेरे कान में धीमे से कहा कि मान्यता अपने कमरे में है और किसी गहरी मुसीबत में है—उसे मेरी मदद की जरूरत है—मैं तुरन्त ही उसके पास पहुंच जाऊं...लेकिन सबसे छिपकर...।"

"झूठ...झूठ बोल रहा है ये, मैंने इसे नहीं बुलवाया था। ये बकवास कर...!"

मान्यता चीखी ही थी कि प्रिंसिपल ने दाहिना हाथ उठाकर उसकी बोलती बन्द कर दी और फिर वंशराज को बोलने का इशारा किया।

"मैं चिन्तित हो गया था कि मान्यता ना जाने किस मुसीबत में फंस गई है। हाथ-मुंह धोने पर मैं सबकी नजरें बचाते हुये मान्यता के कमरे में पहुंचा। मान्यता का कुर्ता आगे और पीछे से फटा हुआ देख मैं चौंका। शर्म भी आई और घबराहट भी हुई। मान्यता की तरफ पीठ करके मैंने पूछा—क्या बात

है—मुझे क्यों बुलाया है? मान्यता मेरे सामने आ गई और मेरे गले में बाहें डाल दीं।"

"झूठ...बकवास कर रहा है ये...।"

"इसके हाव-भाव ठीक नजर नहीं आ रहे थे। होठों पर गन्दे अन्दाज में जीभ फिराकर बोली...मैंने जान-बूझकर फटा हुआ कुर्ता पहना है और चाहती हूं कि तुम इसे पूरी तरह फाड़कर मेरे जिस्म से अलग कर...।"

"झूठे कहीं के...तेरी तो...!" मान्यता बिफरी शेरनी-सी वंशराज पर झपटी ही थी कि उसे शुभम ने पकड़ लिया और कड़वाहट भरे लहजे में बोला, "आपे से बाहर होने की जरूरत नहीं है। तेरी बात को सुन लिया गया है। अब वंशराज की बात को भी पूरा होने दे। सच-झूठ का फैसला 'सर' करेंगे। ज्यादा ड्रामा करने की जरूरत नहीं है।"

मान्यता ने शुभम को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरने पर झटके के साथ उसके हाथों को अपने जिस्म से हटा दिया—फिर जबड़ों के साथ मुट्ठियों को भींचे हुये वंशराज को घूरने लगी।

"भगवान की सौगन्ध, सर—मैं एकदम सच बोल रहा हूं सर...!" वंशराज प्रिंसीपल हरीश सिंह से सम्बोधित होकर बोला, "मैं घबरा गया था...पसीने छूट चले थे! मैं मान्यता से बोला था...ये क्या बकवास कर रही हो तुम...लगता है कि होश में नहीं हो तुम! मान्यता मुझसे लिपटकर बोली कि...हां, मैं वास्तव में ही होश में नहीं हूं, लेकिन नशा भांग का नहीं, सेक्स का है, तुम पर ना जाने कब से मरी-मिटी हुई हूं—लेकिन बोलने की हिम्मत ना कर पा रही थी, आज भांग ने मेरी हिम्मत बांध दी...मैं खूबसूरत और सेक्सी हूं...तुम भी खूबसूरत और ही-मैन हो वंशराज, सभी लोग होली की मस्ती में डूबे हुये हैं, किसी को कुछ पता नहीं चलेगा, आओ...प्यार करें, दोनों सेक्स करते हैं, मैंने मान्यता को थप्पड़ मार दिया और कहा कि हम लोग यहां एजुकेशन के लिये आये हैं, ना कि सेक्स का गन्दा खेल खेलने के लिये...हमें अपनी मर्यादा में रहना चाहिये। मान्यता फिर मुझसे लिपट गई और सेक्स के लिये जोर देने लगी। मैंने इसे धक्का दे दिया तो ये बेड पर जाकर गिरी।

मैंने क्रोध में आकर इसे भला-बुरा कहा। ये कहा कि...मैं तुझे शरीफ और इज्जतदार लड़की समझता था, लेकिन नहीं जानता था कि इतने नीच ख्यालों वाली होगी। बस...ये क्रोध से पागल-सी हो गई और इसने मुझे इतने जोर से धक्का दिया कि मेरा माथा दीवार से टकराया और मैं बेहोश हो गया! मैंने इसकी बात नहीं मानी, भला-बुरा कहा—इसी से किलसकर ये मुझ पर गन्दा और झूठा इल्जाम लगा रही है।"

"तो फिर मान्यता का होठ जख्मी कैसे हो गया?" हाथ में कैमरा लिये हुये सोमेश आगे बढ़कर वंशराज से बोला—"इसके होठ पर दांतों का निशान साफ देखा जा सकता है! झूठ मत बोल वंशराज। तेरी नीच हरकत का मैं भी गवाह हूं।"

"व्हाटऽऽ?" चिंहुका वंशराज। कुछ पलों तक तो सोमेश को आश्चर्य व अविश्वासभरी नजरों से देखता रहा, फिर बोला—"यानि तू भी मान्यता के साथ मिला हुआ है? ओह! वो लड़का तू ही था, जिसने मुझे मान्यता के पास भेजा था, हां—वो तू ही है कमीने! तुम दोनों मिले हुये हो। ना जाने कौन-सी दुश्मनी निकालने के लिये मुझ पर झूठा इल्जाम लगा रहे हो तुम दोनों? मुझे फंसाने के लिये तूने ही मान्यता के होंठ पर जख्म किया है। क्या बिगाड़ा है मैंने तुम्हारा?"

उम्मीद के मुताबिक सोमेश ने ना तो बुरा माना—ना ही वो भड़का—बल्कि वो तो मुस्कराया।

उसकी मुस्कराहट ऐसी थी कि मानो वंशराज पर तरस खा रहा हो और उसका मखौल भी उड़ा रहा हो!

"तू एक्टिंग तो कर रहा है, लेकिन ओवर एक्टिंग कर रहा है।" वह वंशराज की आंखों में झांकते हुये सर्द-से लहजे में बोला, "मैंने तुझे चेतावनी दी थी कि अगर तूने मान्यता को नहीं छोड़ा तो वीडियो फिल्म बनाकर तेरी करतूत का भांडाफोड़ दूंगा। लेकिन तुझ पर तो मान्यता के साथ मुंह काला करने का भूत सवार था। मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया तूने! ये भी नहीं देखा कि मैंने खिड़की के बाहर से फिल्म बनानी शुरू कर दी थी। वो फिल्म अभी भी मेरे इस कैमरे में कैद है। वो फिल्म

साबित कर देगी कि तूने मान्यता की इज्जत लूटने की कोशिश की थी। देखना चाहेगा अपनी गन्दी करतूत वाली फिल्म?"

□□□
□□□

अचानक ही वंशराज का चेहरा गुलाब के फूल से गैंदे के फूल में परिवर्तित हो गया।

आंखों की कटोरियों में चिन्ता की मछलियां तैरती दिखलाई पड़ने लगीं।

चेहरे पर भय के पीले-पीले बादल घुमड़ने लगे।

"तु...तुमने..." थूक-सा सटककर फंसी-फंसी-सी आवाज में बोला—"फिल्म बनाई थी?"

"हां...!" सोमेश उसे क्रोध व घृणाभरी नजरों से घूरते हुये बोला, "फिल्म बनाई थी मैंने तेरी! तुझे कॉलेज का सबसे अच्छा लड़का समझता था मैं—लेकिन तू तो बहुत ही नीच...!"

"ऐ...खबरदार...!" सुगन्धा सोमेश की आंखों के सामने तर्जनी उंगली तानकर सुलगती आवाज में बोली—"मेरे भाई के बारे में अपशब्द बोले तो...!"

"तो क्या करेगी तू? तेरे इस भाई ने कोई बहादुरी भरा कारनामा नहीं किया! मान्यता की इज्जत लूटने की कोशिश की इसने। ये तो मान्यता ने हिम्मत से काम लिया और अपनी इज्जत बचाने के लिये संघर्ष किया। अगर वंशराज को धक्का देकर बेहोश ना कर देती तो तेरा भाई इस बेचारी को बर्बाद कर डालता। इस बलात्कारी पर बहुत लाड़...ई...ई...।"

शुभम ने चौड़ी हथेली से सोमेश का गला दबोच लिया और भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राते हुये बोला—"लिमिट में बात कर सोमेश! वंशराज ऐसी नीच हरकत नहीं कर...।"

तभी प्रिंसिपल हरीश सिंह ने शुभम की कलाइयों को पकड़कर उसके हाथों को सोमेश के गले से अलग किया और डांटते हुये कहा—"कन्ट्रोल योर सेल्फ! क्या कर रहे थे तुम...नॉनसेंस?"

"बट सर—ये वंशराज पर झूठा इल्जाम...।"

"झूठ-सच का फैसला हम करेंगे...तुम नहीं! पीछे हटो! दोबारा ऐसी हरकत ना होने पाये...।" फिर प्रिंसीपल ने गले

को मसल रहे सोमेश से सम्बोधित होकर पूछा—"तुमने वीडियो फिल्म बनाई थी?"

"यस...सर...!" सोमेश के जवाब में उत्साह था।

जबकि वंशराज को उत्साह ने मानो तलाक दे दिया था और हताशा, निराशा, चिन्ता, घबराहट ने हमला बोलकर आंखों व चेहरे पर कब्जा कर लिया था। पसीने-पसीने था वो।

"हमें दिखलाओ...वो फिल्म...!"

"अभी लीजिये...सर...!" उत्साह से भरे सोमेश ने हैन्डी कैम के बटनों के साथ छेड़छाड़ की और फिर उसकी साइड स्क्रीन को प्रिंसीपल हरीश सिंह की तरफ कर दिया।

स्कूल के टीचर्स, स्टाफ के लोग—बहुत से स्टूडेन्टस् भी हरीश सिंह की अगल-बगल में और पीछे खड़े हो गये—ताकि वो भी फिल्म देख सकें।

सुगन्धा व शुभम भी उन सभी में शामिल थे। दोनों के हाव-भाव इस बात की चुगली कर रहे थे कि चिन्ता व आशंका के दैत्यों ने उन्हें दबोचा हुआ था।

प्रत्येक के दिमाग में यही कौतूहलता टेनिस बॉल की मानिन्द उछल-कूद मचा रही थी कि फिल्म में क्या देखने को क्या मिलेगा?

□□□
□□□

कैमरे की स्क्रीन पर मान्यता के कमरे का दृश्य था—लेकिन फिल्म के बीचो-बीच एक लकीर भी दिखलाई पड़ रही थी, जो कि खिड़की की सलाख थी।

"मान्यता को छोड़ दे वंशराज...!" वो आवाज सोमेश की थी—"मैं फिल्म बना रहा हूं। इसे सभी को दिखलाकर तुम्हारी करतूत का भांडा फोड़ दूंगा। तुम्हें स्कूल से रेस्टीकेट कर दिया जायेगा। मामला पुलिस में पहुंचेगा तो तुम्हें सजा हो जायेगी। मत भूलो कि तुम हिन्दुस्तान पार्टी की अध्यक्ष के बेटे हो। तुम्हारी मम्मी की भी बदनामी होगी...मैं प्रिंसीपल साहब को बुला लाऊंगा...मान्यता को छोड़ दो, वंशराज...हे भगवान...ये क्या हो गया इसे—ये तो मेरी बात सुन ही नहीं रहा है।"

कमरे के भीतर वंशराज ने मान्यता को पीछे से दबोचा हुआ था और कन्धों के ऊपर से बारी-बारी से दोनों तरफ के कान व गाल चूम रहा था। मान्यता का कुर्ता आगे से फटा हुआ था। वो वंशराज के चंगुल से निकलने की भरसक चेष्टा करते हुये फरियाद कर रही थी—"न...नहीं...छोड़ दो मुझे वंशराज...प्लीज! तुम्हें भगवान की...तुम्हारे मां-बाप की कसम है। छोड़ दो। मैं बर्बाद हो जाऊंगी...किसी को मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह जाऊंगी। मैं मर जाऊंगी...आह...!"

वंशराज ने मान्यता को बेड पर गिरा दिया और दोनों हाथों को मोड़कर बायें हाथ से दोनों कलाइयां पकड़ लीं, फिर दायीं हथेली से कुर्ते का ऊपरी सिरा पकड़कर तेज झटका मारा—

झिर्र की आवाज के साथ कुर्ता गर्दन व पीठ से लेकर कमर तक दो हिस्सों में विभक्त होता चला गया।

फिर वंशराज ने ब्रॉ की स्ट्रेप के भीतर हथेली डाली और झटका मार उसे तोड़ दिया।

उसने रोती, चीखती, चिल्लाती, गिड़गिड़ाती मान्यता को पलटकर सीधा कर दिया और होठों पर जीभ फेरकर बोला—"तेरी खूबसूरती का दीवाना था मैं। तेरा कुर्ता फाड़ने पर तेरे हुस्न के अनमोल खजाने के दीदार होने लगे हैं। साथ ही तेरे जिस्म से फूटती खुशबू मेरे नशे को बढ़ा रही है...मेरी भूख को भड़का रही है।"

फिर वो मान्यता के आंसुओं से भीगे चेहरे पर झुकता चला गया और बोला—"आह...तेरी सांसें कितनी गर्म-गर्म हैं। पत्थर को भी मोम की तरह पिघलाकर रख दें। तेरी सांसों में नशीली खुशबू भी है मेरी जान! और तेरे ये होठ...उफ्...गुलाबी-गुलाबी...कोमल-कोमल...गीले-गीले...शहद जैसे मीठे होंगे...सुगर जितने मीठे तो होंगे...चखकर देखता हूं...।"

"न...नहीं...!" वंशराज के होठों से अपने होठ बचाने के लिये मान्यता चेहरे को इधर-उधर करने लगी।

लेकिन वंशराज ने उसकी कनपटियों व सिर को हथेलियों के शिकंजे में दबोच लिया और फिर उसके होठ को दांतों के शिकंजे में जकड़ लिया। मान्यता मारे पीड़ा के चीखने व कराहने

लगी। सोमेश के भी चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

फिर अप्रत्याशित रूप से मान्यता ने पैरों को सिकोड़कर घुटने वंशराज के पेट पर सटाकर उसे अपने ऊपर से धकेला और इसी के साथ उठकर वंशराज को जोर से धक्का दे दिया।

सन्तुलन कायम ना रख पाया वह और कटी पतंग की मानिन्द ही चकराते हुये दीवार से टकराया और फिर भरभराकर फर्श पर गिर पड़ा।

स्क्रीन से मान्यता गायब हो गई और सिटकनी व कुन्डी खुलने के साथ दरवाजा खुलने की भी आवाज सुनाई दी।

फिर कैमरा खिड़की से हटकर दरवाजे से कमरे में दाखिल हुआ...वो भी हिलते हुये।

"वंशराज...वंशराज!" सोमेश की आवाज के साथ उसका हाथ भी वंशराज के कन्धों व चेहरे पर दिखलाई दिया—"तुम ठीक तो हो ना...आंखें खोलो...उठो...वंशराज...ओह...लगता है कि ये बेहोश हो गया है...क्या करूं मैं? इसके मुंह पर पानी के छींटे मारता हूं...।"

इसी के साथ स्क्रीन से फिल्म गायब हो गई और सोमेश प्रिंसीपल हरीश सिंह से बोला—"फिर मैंने बाथरूम से पानी लाकर वंशराज के चेहरे पर छींटे मारे थे...सर! लेकिन इसे होश नहीं आया था...फिर मैं यहां चला आया...।"

आंखों में क्रोध व घृणा के भाव लिये हुये प्रिंसीपल हरीश सिंह सिर झुकाये खड़े वंशराज के करीब पहुंचकर बोला—"वीडियो फिल्म ने तुम्हारी काली करतूत की पोल खोल दी। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम इतने नीच और कमीने होंगे। छिः, शर्म नहीं आई ऐसी गन्दी हरकत करते हुये? ये भी नहीं सोचा कि तुम हिन्दुस्तान के कितने नामचीन, मशहूर और इज्जतदार घराने से ताल्लुक रखते हो? मीडिया में तुम्हारी मम्मी छाई हुई हैं। लोगों की जुबान पर उन्हीं की चर्चायें हैं। लोग ये मानकर चल रहे हैं कि सुजाता जी ही हमारे देश की अगली पी० एम० होंगी। लेकिन तुम्हारी इस गन्दी करतूत का खुलसा हो जाये तो...तुम्हारी मम्मी और डैडी की क्या इज्जत रह जायेगी? किसी

को मुंह दिखलाने लायक नहीं रह जायेंगे वो! अगर हमें अपने स्कूल की रेप्युटेशन का ख्याल ना होता तो अभी पुलिस को बुलाकर तुम्हें गिरफ्तार करा देते। अभी तो तुम अपने रूम में जाओ! कल सुबह आठ बजे हमारे ऑफिस में आ जाना। स्कूल का सारा स्टाफ भी वहां मौजूद रहेगा। तब तुम्हारे बारे में डिसीजन लिया जायेगा। अभी तो हमारी आंखों के सामने से दफा हो जाओ...गेट आउटऽऽऽ!"

हरीश सिंह के मुंह से निकले अन्तिम दो लफ्ज 'गेट आउट' दूर-दूर तक गूंजे।

❑❑❑

❑❑❑

"न...नहीं सर...नहीं...!" सुगन्धा प्रिंसीपल हरीश सिंह के पीछे लपकते हुये और रोते हुये बोली, "मेरा भाई ऐसी नीच हरकत नहीं कर सकता। वो अपनी मर्यादा जानता है। उसे अच्छे-बुरे की तमीज है। बुआजी और फूफाजी की इज्जत का ख्याल है। उसने हमेशा दूसरे लड़कों को शिक्षा दी कि वो अपना ध्यान लड़कियों से हटाकर पढ़ाई पर लगायें—सभी लड़कियों को बहन समान समझें। वो रोजाना हनुमान चालीसा पढ़ता है। मंगलवार को फास्ट रखता है।"

"वो फिल्म देखने पर भी तुम ऐसी बात...!"

"वो फिल्म एक धोखा है सर! उसमें ट्रिक फोटोग्राफी का इस्तेमाल किया गया है। मेरे भाई के खिलाफ कांसपरेसी रची गई है। मान्यता और सोमेश आपस में मिले हुये हैं।"

"यस...सर...!" लपककर करीब आया शुभम भी सुगन्धा के सुर-में-सुर मिलाते हुये बोला—"हो सकता है कि उन दोनों के साथ कुछ और लोग भी इन्वॉल्व हों। इलेक्शन सिर पर है। हिन्दुस्तान पार्टी सत्ता में आती दिख रही है। शायद किसी अपोजिशन पार्टी वाले ने ये साजिश रची हो—ताकि हिन्दुस्तान पार्टी और भारती आन्टी जी की बदनामी हो। प्लीज, सर! आप वंशराज के खिलाफ कोई एक्शन मत लेना। वो निर्दोष है।"

ठिठका प्रिंसीपल!

वापिस पलटा और गला फाड़कर चीखा—"शटअप! गेट आउट आई से...गेट आउट फ्रॉम हियर!"

शुभम व सुगन्धा सहमकर रह गये।

❑❑❑

❑❑❑

उधर ढेर सारे स्टूडेन्ट से घिरा वंशराज सिर झुकाये हुये ब्वाय हॉस्टल की तरफ बढ़ रहा था और उसके पीछे-पीछे चल रही मान्यता क्रोध से बावली-सी हुई चीख-चीखकर बोल रही थी—"बहुत दूध का धुला हुआ बनकर दिखा रहा था कमीने! लेकिन फिल्म के सामने आने पर तेरी नानी क्यों मर गई? क्या सोचकर मेरे कमरे में आया था? तेरी खूबसूरती, तेरे नामी-गिरामी खानदान पर रीझकर अपनी इज्जत की बोटियां तेरी हवस के जबड़ों में डाल दूंगी...खुश कर दूंगी तुझे? क्या सोचकर मेरी इज्जत पर हाथ डाला था तूने नाशपीटे? तब अपनी मां और बहन का ख्याल नहीं आया था तुझे कुत्ते? अगर इतनी ही आग लगी थी तो सुगन्धा की इज्जत पर हाथ डालता। वो तो मुझसे भी ज्यादा सुन्दर है। तेरी सगी बहन तो है नहीं वो। तेरे मामा की लड़की ही तो है।"

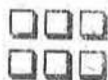
"तूने बहुत ही नीच हरकत की...वंशराज!" एक लड़की हिकारतभरे लहजे में बोली—"अगर कोई लड़का तेरी बहन सुगन्धा की इज्जत पर हाथ डाले तो तुझे कैसा लगेगा?"

"हो सकता है कि सुगन्धा भी अय्याश हो...वो भी किसी के साथ मुंह काला करती फिरती हो...।" एक लड़का जहरीले-से लहजे में बोला—"वो दिखने में जितनी भोली लगती है—उससे ज्यादा तो ये भोला लगता था। लेकिन कितना बड़ा कमीना निकला ये। अगर मान्यता ने हिम्मत और बहादुरी से काम ना लिया होता तो...ये बलात्कारी बन जाता।"

"इसके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट कर तू मान्यता।" एक चश्मे वाली मोटी लड़की बोली, "इसकी मम्मी हीरोइन बनी फिर रही है। जगह-जगह पुज रही है। मीडिया वालों को इसकी करतूत बतला। फिर देख कि इसकी और इसकी मां की कैसे मिट्टी पलीद होती है। वो प्रधानमन्त्री तो क्या...किसी स्कूल की चपरासन भी नहीं बन पायेगी...कमीने का मुंह काला करके

और जूतों-चप्पलों का हार पहनाकर गधे पर बिठाना चाहिये और पूरे कोटला में जुलूस निकालना... ।"

वंशराज ने कानों में उंगलियां डालीं और हॉस्टल की तरफ यूं दौड़ा, जैसे रेसकोर्स में दरवाजा खुलते ही घोड़ा दौड़ लगाता है।



शुभम के साथ पहुंची सुगन्धा ने वंशराज को कमरे का दरवाजा खोलने को बहुत कहा, अपनी सौगन्ध भी दी—लेकिन वंशराज ने साफ-साफ बोल दिया कि वो किसी भी कीमत पर दरवाजा नहीं खोलेगा और अगर उसे ज्यादा परेशान किया तो वह दीवार से सिर फोड़ लेगा। वो ये भी बोला कि उसने सिर-दर्द की टेबलेट ली है और वो सोना चाहता है।

जब रात हो गई तो वार्डन ने सुगन्धा से उसके हॉस्टल में जाने को बोल दिया।

सुगन्धा ने वंशराज को अपनी सौगन्ध देकर कहा कि वो ऐसा-वैसा कुछ ना करेगा—और फिर वो अनिच्छा से अपने हॉस्टल को चली गई।

सुबह फिर सुगन्धा वहां आ पहुंची। शुभम वहां पहले से मौजूद था और दरवाजा पीटते हुये वंशराज को पुकार रहा था।

बहुत देर तक कोई जवाब ना मिलने पर वार्डन ने प्रिंसीपल को सूचित किया और प्रिंसीपल ने पुलिस को फोन कर दिया।

पुलिस आई और दरवाजा तोड़ दिया।

भीतर का नजारा देख सुगन्धा व शुभम समेत कई छात्र-छात्राओं की चींख निकल गई।

सुगन्धा तो बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ी।

पहले कॉलेज में और फिर पूरे देश में ही हड़कम्प मच गया।



"कहत शिवानन्द स्वामी...मन वांछित फल पावै...ओम जय जगदीश हरे...!"

आरती के पश्चात् केशव तथा सोफिया ने चन्दन की

लकड़ी के बने मन्दिर के समक्ष शीश नवाया ही था कि चांदनी की घबराई व चीखती आवाज ने चिहुंका दिया—

"भ...भाई साहब...दीदी...!"

दोनों पूजाघर से निकलकर लपकते हुये चांदनी के पास पहुंचे—

"क्या बात है चांदनी?"

"क्या हुआ चांदनी?"

बुरी तरह घबराई व बौखलाई-सी चांदनी ने हाथ में पकड़े रिमोट से टी० वी० की तरफ इशारा किया और साथ ही रिमोट से वॉल्यूम भी बढ़ा दिया।

टी० वी० स्क्रीन पर इन्सैट में वंशराज की तस्वीर दिखलाई जा रही थी और बाकी स्क्रीन पर मौजूद समाचार वाचिका जोशीली आवाज में बोले जा रही थी—"हिन्दुस्तान पार्टी की अध्यक्ष सुजाता भारती का इकलौता बेटा था वंशराज! उसकी आत्महत्या से समूचा देश स्तब्ध रह गया है।"

"केशव...!" सोफिया स्तब्ध भाव से बोली—"ये...ये क्या अनर्थ हो गया? अपने वंशराज ने खुदकुशी कर ली...?"

"हे भगवान! ये तो बहुत बड़ा अनर्थ हो गया।" केशव भी लुटा-पिटा-सा बोला, "बहन जी और ए० सी० पी० साहब पर तो दुःखों का पहाड़ ही टूट पड़ा होगा।"

"ले...लेकिन भला वंशराज खुदकुशी क्यों करेगा केशव...?" सोफिया रोते हुये बोली, "वो तो बहुत समझदार लड़का था। पढ़ाई-लिखाई में अव्वल था। उसे किसी भी किस्म की दिक्कत नहीं थी—कोई टेंशन नहीं थी।"

"देखना होगा टी० वी० पर क्या बतलाते हैं...?"

"हमें बहनजी को फोन करना चाहिये। उन पर तो गमों की बिजली ही टूट पड़ी है। ना जाने उन पर कैसी बीत रही होगी? उन्हें तसल्ली और हिम्मत बन्धाने की जरूरत है।"

केशव ने तुरन्त ही मेज पर से फोन उठाकर सुजाता भारती के मोबाइल फोन का नम्बर मिलाया और फोन कान से लगाकर व्याकुलता के साथ चहलकदमी-सी करने लगा।

"ओम जय जगदीश हरे...स्वामी जय जगदीश हरे..."

दूसरी तरफ से आरती सुनाई पड़ी...फिर किसी मर्द की भर्राई-सी आवाज सुनाई पड़ी—"हैलो...!"

"हां, कौन? मैं केशव पण्डित बोल रहा हूं। मुम्बई से। बहनजी से बात करनी है। कहां हैं वो?"

"नमस्कार, पण्डित जी! मैं बहनजी का सैक्रेटरी अविनाश मिश्रा बोल रहा हूं। अपने वंशराज जी ने सूसाइड कर ली...।" इतना बोलने पर अविनाश मिश्रा फफक-फफककर रोने लगा।

"हां, बिल्कुल अभी-अभी टी० वी० पर देखा! पूरी न्यूज नहीं सुनी! बहनजी कहां हैं?"

"बहनजी बहादुरगढ़ की रैली में भाषण दे रही थीं...पण्डितजी...!" दूसरी तरफ से मिश्रा रोते हुये बोला—"तभी कोटला से फोन आ गया कि वंशराज ने खुदकुशी कर ली! बहनजी ने सुना तो गश खाकर गिर पड़ीं। उनकी तबियत बिगड़ गई। उन्हें एम्बूलेंस से दिल्ली लाया जा रहा है। एम्बूलेंस में डॉक्टर्स हैं, जो उनका ट्रीटमेंट कर रहे हैं। वो होश में नहीं हैं।"

"कोई बात नहीं! मैं दिल्ली पहुंच रहा हूं। बहनजी का पूरा ख्याल रखना मिश्रा जी...!"

केशव फोन काटने पर तुरन्त ही सुजाता भारती के पति रिटायर्ड ए० सी० पी० उदयराज का नम्बर लगाने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

"सबसे पहले हमारे चैनल ने ही आपको मान्यता नाम की उस लड़की का इन्टरव्यू दिखलाया था, जिसके साथ हिन्दुस्तान पार्टी की अध्यक्ष सुजाता भारती के बेटे वंशराज ने बलात्कार की कोशिश की थी। इसी के साथ इस शर्मनाक काण्ड के चश्मदीद गवाह सोमेश का भी हमारी कोटला में मौजूद रिपोर्टर शालिनी चड्ढा ने इन्टरव्यू लिया। अब हम आपको उस फिल्म के कुछ दृश्य दिखलाने जा रहे हैं, जो कि सोमेश ने बनाई थी। फिल्म के कुछ दृश्य ऐसे हैं कि उन्हें देखकर शर्म आ जाये! सो उन दृश्यों को हमने जानबूझकर धुंधला कर दिया है। लेकिन बाकी दृश्यों और आवाजें से आपको वंशराज की नीच हरकतों का आभास हो जायेगा। अब आप जो दृश्य देख रहे हैं, वो सिर्फ हमारे ही चैनल पर दिखलाये जा रहे हैं।"

फिर टी० वी० पर फिल्म दिखलाई जाने लगी। आपत्तिजनक या अश्लील हिस्सों को धुंधला करके दिखलाया जा रहा था, लेकिन आवाजें सुनवाई जा रही थीं।

"चियर्स...!" भैंसे जैसे तन्दुरुस्त व काले-कलूटे देवेन्द्र सिंह ने हॉल में मौजूद दर्जनभर केन्द्रीय मन्त्रियों और अपने बेटे वासुदेव सिंह के हाथ में थमे शराब से भरे गिलासों से अपना गिलास टकराया और फिर गिलास को मोटे व स्याह होंठों से लगाकर एक ही सांस में 'गट-गट' की आवाज के साथ सारी शराब को वाया कण्ठ उदरस्थ कर गया! अति उत्साह में उसने गिलास को फर्श पर पटककर चूरम-चूर कर दिया और मेज पर से बोतल ही उठा ली और उसे हवा में लहराते हुये चीख-चीखकर बोला—"इसी को कहते हैं...बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना...अन्धे के हाथ बटेर लगना और खुदा मेहरबान तो गधा पहलवान! भई इसमें तो कोई शक ही नहीं कि हमारी पार्टी के बैंड-बाजे बजे हुये थे। इस इलेक्शन में अपनी हार साफ दिखलाई पड़ रही थी। लग रहा था कि अधिकांश प्रत्याशियों की जमानतें जब्त हो जायेंगी। लेकिन वाह...रे...वंशराज... सुजाता भारती के बेटे! क्या खूब कारनामा कर गया! अपनी माँ और हिन्दुस्तान पार्टी के मुंह पर कालिख पोत गया और हमारे लिये उम्मीदों के चिराग रोशन कर गया। भगवान तेरी आत्मा को शान्ति दे। हमारे नसीब के दरवाजे खोल गया तू...।"

"ल...लेकिन डैडी जी!" उसकी कार्बन कॉपी जैसा बेटा वासुदेव सिंह झिझकते हुये बोला, "क्या ये जरूरी है कि इस घटना से हमारी पार्टी को ही फायदा मिले? कई छोटी-बड़ी पार्टियों ने मिलकर 'गरीब- मजदूर किसान पार्टी' नाम का मोर्चा बनाया है। इस घटना का बेनीफिट उस मोर्चे को भी तो मिल सकता है।"

देवेन्द्र सिंह ने बोतल मुंह से लगाकर शराब की घूंट भरी और फिर हर्षित भाव से बोला,

"हमारे सामने मोर्चा टिकने वाला नहीं है। मोहन लाल ने हमसे गद्दारी की थी और पार्टी छोड़कर कुछ सांसदों के साथ मिलकर नई पार्टी बना ली थी। तब हमने कुछ नहीं किया था!

क्योंकि उसके जाने से हम पर कोई फर्क नहीं पड़ा था—क्योंकि हमने ...ी निर्दलीय सांसदों को खरीद लिया था। लेकिन मोहन लाल नहीं जानता कि हम क्या बला हैं। उस हरामी की अय्याशियों की हमने गुपचुप तरीके से फिल्म बनवा ली थी! उसने जब-जब भी घोटाले किये और मोटी रकम ली...उसकी फिल्म बना ली गई थी। मोर्चे का संयोजक वो ही है। इलेक्शन के दौरान देशभर में उसकी करतूतों वाली फिल्म दिखलाई जायेगी तो उसके साथ-साथ मोर्चे का भी नाश पिट जायेगा। मोर्चे में शामिल जगदीश कुमार पर पार्टी की एक महिला नेता ने बलात्कार का इल्जाम लगाया था। भले ही वो इल्जाम साबित ना हुआ था—लेकिन लोगों को यकीन है कि जगदीश कुमार ने बलात्कार किया था, क्योंकि उस महिला नेत्री ने खुदकुशी कर ली थी और सूसाइड नोट में भी जगदीश पर बलात्कार का इल्जाम लगाया था। हम इस मुद्दे को भी उठा देंगे।"

"यानि तीसरा मोर्चा तो गया...!" वासुदेव सिंह खुश होकर बोला, "वंशराज की करतूत से हिन्दुस्तान पार्टी का तो कबाड़ा हो ही गया समझो। यानि हमारी पार्टी के दोबारा सत्ता में आने के चांस बन रहे हैं।"

"बिल्कुल...मेरे लाल...!" देवेन्द्र सिंह ने वासु के स्याह गाल चूम लिये और बोला, "बाकी हम मेहनत भी करेंगे। कसमें खाकर कहेंगे कि हम पर भ्रष्टाचार और घोटालों के इल्जाम झूठे हैं। बढ़ी हुई महंगाई और आतंकवाद के पीछे भी ऐसे मुल्क का हाथ है, जो हमारी पार्टी को पसन्द नहीं करता और अपने फायदे के लिये दूसरी पार्टी को सत्ता में लाना चाहता है। हम जनता से बोलेंगे कि अगर दूसरी पार्टी सत्ता में आई तो उस दूसरे मुल्क का परोक्ष रूप से हमारे मुल्क का कब्जा हो जायेगा। देर से ही सही...लेकिन उस मुल्क की मंशा हमें मालूम हो चुकी है। हम इस बार उस मुल्क से होशियार रहेंगे और दो-तीन महीनों के भीतर ही देश की तमाम समस्याएं दूर कर देंगे। तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर कसम खा लेंगे वासु कि अगर हमने अपने वादे पूरे ना किये तो तीन महीने बाद ही इस्तीफा दे देंगे—झूठी कसम खाने से कौन-सा तुम मर जाओगे।"

वासुदेव सिंह हंसा!

बाकी के मन्त्री भी हंसने लगे और शराब की चुस्कियों के साथ जश्न मनाने लगे।



केशव ने पहली ही फ्लाइट पकड़ी और सोफिया, राजन व करतार सिंह के साथ दिल्ली पहुंचा।

आशीर्वाद को बुखार था। ब्लड-टेस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक उसे डेंगू था। सो उसे नर्सिंग होम में एडमिट किया गया और चांदनी को उसके पास उसकी देखभाल के लिये छोड़ दिया गया।

केशव ने फोन पर ही उदयराज को बोल दिया था कि वो तुरन्त ही दिल्ली पहुंच रहा है और फिर उसके साथ कोटला चलेगा।

केशव, सोफिया, राजन व करतार सिंह एयरपोर्ट से सीधे उस हॉस्पिटल में पहुंचे जहां सुजाता भारती को एडमिट किया गया था।

पहले सामना हुआ उदयराज से।

जवान व इकलौते बेटे की मौत ने उसे बुरी तरह तोड़कर रख दिया था। गम्भीर बीमारी से ग्रस्त महीनों के मरीज सरीखा ही लग रहा था वो!

भीड़ के घेरे से निकलकर उसने केशव की कोहली भर ली और दहाड़े मार-मारकर रोने लगा। उसकी बैसाखियां बगलों से निकलकर फर्श पर जा गिरीं।

सोफिया राजन व करतार सिंह ही नहीं बल्कि केशव की भी आंखें भर आईं।

बड़ी मुश्किल से केशव ने उदयराज को धीरज बंधाया, समझा-बुझाकर और ये बोलकर शान्त किया कि अगर वो हिम्मत हार देगा तो फिर सुजाता को कौन सम्भालेगा?

फिर वो लोग उदयराज के साथ सुजाता भारती के पास पहुंचे।

किसी लाश की मानिन्द ही बेड पर लेटी सुजाता ने केशव, सोफिया, राजन व करतार सिंह को देखा तो उठ खड़ी हुई और चारों के गले लगकर...कोहली भरकर खूब रोई...खूब विलाप

किये—फिर सोफिया की बांहों में अचेत हो गई।

डॉक्टर ने आकर ट्रीटमेंट दिया तो आधे घण्टे पश्चात होश में आई और रोते हुये बोली—"मेरे बेटे पर झूठा इल्जाम लगाया जा रहा है। वो ऐसी नीच हरकत नहीं कर सकता था। झूठे इल्जाम को बर्दाश्त नहीं कर पाया वो—इसीलिये उसने खुदकुशी कर ली! हाय...अपनी मम्मी और डैडी का भी ख्याल ना किया उसने। ये ना सोचा कि उसके बिना उसके मम्मी-डैडी कैसे जी पायेंगे! तुम तो अपने भान्जे को खूब अच्छी तरह से जानते थे...पण्डित भाई...सोफी भाभी! क्या वो ऐसी नीच हरकत कर सकता है? बोलो...क्या वो किसी लड़की की इज्जत पर हाथ डाल सकता था?"

"नहीं...वंशराज ऐसा लड़का कतई नहीं था...बहन जी...।" केशव बेड पर लेटी सुजाता भारती के आंसू पोंछते हुये बोला—"सच्चाई का पता कोटला जाकर ही लग पायेगा। मैं ए० सी० पी० साहब के साथ तुरन्त ही कोटला के लिये रवाना हो रहा हूं।"

"मैं भी चलूंगी! अपने लाल की सूरत देखनी है मुझे।"

"हम उसके पार्थिव शरीर को यहीं लायेंगे बहन जी! आपकी तबियत ठीक नहीं है और कोटला में कोई बड़ा डॉक्टर या हॉस्पिटल नहीं है। आपको ट्रीटमेंट की जरूरत है।"

"क्या करूंगी इलाज कराकर! भगवान मुझे भी मौत दे दे तो...!"

"भगवान के लिये ऐसा मत बोलिये बहन जी! आपको जीना है। इस देश को...ए० सी० पी० साहब को आपकी सख्त जरूरत है। सोफिया यहीं...आपके पास रहेगी।"

"पण्डित जी ठीक बोल रहे हैं सुजाता...।" बैसाखियों को बगलों के नीचे से हटाकर उदयराज बेड के किनारे बैठा और अवरुद्ध कण्ठ से बोला—"तुम्हें जीना ही होगा...मेरी खातिर! अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं...मैं भी जिन्दा नहीं रह पाऊंगा। यूं ही दम निकल जायेगा मेरा...या फिर खुदकुशी कर लूंगा मैं। हम अभी कोटला जा रहे हैं। पण्डित जी साथ हैं तो हकीकत खुलकर सामने आ जायेगी। तुम्हारा विश्वास तो ये है कि अपना वंशराज किसी लड़की की इज्जत पर हाथ

नहीं डाल सकता था—जबकि मेरा ये भी विश्वास है कि वो खुदकुशी करने वाला बुजदिल लड़का भी नहीं था। वो शेर का बच्चा था। मुझे शक है कि उसकी हत्या करके आत्महत्या का रूप दिया गया है। बाकी हमारे पण्डित जी के कोटला पहुंचने पर ही पता चलेगा कि हकीकत क्या है!"

❑❑❑
❑❑❑

छोटी-छोटी आंखों वाले, थोड़ा छोटे कद लेकिन गठीले जिस्म वाले व्यक्ति ने स्कूल के गेट पर ही हाथ जोड़कर तथा सिकुड़ी-सी आंखों में श्रद्धा व सम्मान सजाये हुये केशव का स्वागत किया—"नमस्कार पण्डित जी! शुभम और सुगन्धा नामक बच्चों ने मुझे बतलाया कि आप यहां आ रहे हैं तो आपसे मिलने को व्याकुल हो चला था। बहुत बड़ा फैन हूं आपका! आपके तमाम उपन्यास पढ़े! आपका हुलिया दिमाग में रचा-बसा हुआ था—इसीलिये आपको देखते ही पहचान लिया! मुझे बताया गया कि वंशराज आपकी धर्म बहन का बेटा यानि आपका भान्जा था। माहौल नहीं है—वरना आपका जोरदार स्वागत करता। ओह सॉरी, मैंने अपने बारे में तो बताया ही नहीं। मैं इन्सपेक्टर सतपाल नेगी...कोटला का एच० एस० ओ०!"

केशव ने उससे हाथ मिलाकर राजन, करतार सिंह व उदयराज का परिचय दिया तो इन्सपेक्टर सतपाल नेगी ने हाथ जोड़ तीनों का अभिवादन किया!

"नमस्कार पण्डित जी...!" स्कूल के पूरे स्टाफ समेत गेट पर मौजूद प्रिंसीपल हरीश सिंह ने भी हाथ जोड़कर स्वागत किया—"आपके बारे में सुनते तो रहे थे—आज दर्शन भी हो गये।"

स्कूल के पूरे स्टाफ और सभी स्टूडेन्ट्स ने भी केशव का अभिवादन किया! वो केशव को यूं ही देख रहे थे कि मानो वो कोई अजूबा हो।

तभी सुगन्धा व शुभम आते दिखलाई दिये। सुगन्धा को शुभम ने पकड़ा हुआ था।

दोनों के चेहरे, सुर्ख आंखें और सूजे हुये पपोटे इस बात

को प्रदर्शित कर रहे थे कि वंशराज की मौत ने उन्हें बुरी तरह से तोड़ दिया था और वो बेहद दुःखी थे।

"फू...फूफाजी।"

"सु...सुगन्धा...!" बैसाखियों की परवाह ना करते हुये उदयराज ने दोनों हाथ फैला दिये और एक टांग पर किसी तरह सन्तुलन बनाये हुये रोने लगा।

सुगन्धा उसकी बांहों में समा गई और फूट-फूटकर, बिलख-बिलखकर रोने लगी।

शुभम भी उदयराज के कन्धे पर सिर रखकर हिचकियां ले-लेकर रोने लगा।

प्रिंसीपल हरीश सिंह, स्कूल स्टाफ और तमाम स्टूडेन्ट्स खामोश थे। उनके चेहरों पर उदयराज, सुगन्धा व शुभम के प्रति सहानुभूति तो थी, लेकिन दुःख नहीं था—क्योंकि उनके मन में वंशराज के लिये कोई सहानुभूति या दुःख नहीं था, बल्कि उसके प्रति क्रोध व नफरत के ही भाव थे।

राजन व करतार सिंह ने रोते हुये उदयराज व सुगन्धा को अलग किया तो सुगन्धा 'अंकल जी' बोलकर केशव के सीने से लगकर रोने लगी। केशव ने उसकी पीठ थपथपाते हुये सांत्वना दी, धीरज बंधाया और फिर आंसू पोंछे।

राजन व करतार सिंह ने बैसाखियां उठाकर रोते हुये उदयराज की बगलों में लगाई—फिर उसके आंसू पोंछे।

"मु...मुझे अपने बेटे को...वंशराज को देखना है।" उदयराज इन्सपेक्टर सतपाल नेगी से बोला—"कहां है मेरा बेटा?"

□□□
□□□

पुलिस वालों ने तमाम स्कूल स्टाफ व स्टूडेन्ट्स को नीचे ही रोक लिया—इन्सपेक्टर सतपाल नेगी की अगुवाई में केशव, राजन, करतार सिंह, उदयराज व प्रिंसीपल हरीश सिंह, सुगन्धा व शुभम ही ब्वाय हॉस्टल में दाखिल हुये।

सीढ़ियां आने पर राजन व करतार सिंह ने उदयराज को सहारा दिया।

"इन्सपेक्टर साहब फोटो खिंचवाने पर वंशराज की डैड-

बॉडी को उतरवाने जा रहे थे, लेकिन मैंने मना कर दिया था।" सीढ़ियां चढ़ती सुगन्धा केशव से बोली—"मैंने कहा कि पहले मुझे केशव अंकल जी से फोन पर बात करने दें। फिर मैंने आपसे फोन पर बातें की थीं। आपने बोल दिया था कि डैडबॉडी को आपके यहां पहुंचने तक ना छेड़ा जाये। मैंने इन्सपेक्टर साहब से बात की तो ये मान गये थे। अगर नहीं मानते तो आपको दोबारा फोन करती।"

"भला मैं सुगन्धा की बात कैसे नहीं मानता पण्डित जी!" सतपाल नेगी तपाक से बोला—"इसने आपका नाम जो ले दिया था। फिर तो मैंने डैडबॉडी को यूं ही छोड़ दिया था।"

"आपने एक्सपर्ट टीम को बुलवाया था नेगी साहब?"

"कोटला में तो एक्सपर्ट टीम नहीं है। मोहन नगर से एक्सपर्ट टीम को बुलवाया था—लेकिन किसी को भी कमरे में दाखिल ना होने दिया। मैं ही भीतर गया था। हालांकि वंशराज के जीवित होने के चांसेज नहीं थे—लेकिन फिर भी उसे चैक करना था। मैंने भी जूते कमरे से बाहर निकाल दिये थे और इस बात का पूरा ख्याल रखा कि फिंगर प्रिंटस् या फुटमार्क्स ना मिटने पायें।"

"ये तो आपने सूझ-बूझ से काम लिया नेगी साहब...!"

"मुझे इन्वेस्टीगेशन का शौक शुरू से ही है और आपके उपन्यासों से काफी कुछ सीखा। अब तो अपनी आंखों से इन्वेस्टीगेशन करते देखूंगा। लेकिन...।"

"लेकिन...," केशव झील-सी नीली आंखों को सिकोड़कर बोला—"लेकिन क्या नेगी साहब?"

झिझका नेगी, हिचकिचाया!

फिर केशव के कान के पास मुंह करके फुसफुसाती-सी आवाज में बोला—"मुझे नहीं लगता कि इस केस में गड़बड़ी की जरा-सी भी गुंजाईश है। ये ओपन एंड शट केस है—सूसाइड केस! दरवाजा भीतर से बन्द था। ना सिर्फ सिटकनी बन्द थी, बल्कि कुन्डी भी लगी हुई थी। कमरे में दाखिल होने या बाहर निकलने के लिये दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। एक खिड़की है, लेकिन उस पर लोहे की फिक्स ग्रिल फिट है। वैसे भी वो खिड़की बैक साइड में है और उस तक पहुंचने के लिये बहुत

लम्बी सीढ़ी की जरूरत पड़ेगी। मैंने खुद पूरा स्कूल चैक किया। कोई बड़ी या छोटी सीढ़ी नहीं है। खिड़की की अगल-बगल में कोई रेन वाटर पाइप भी नहीं है। मेज पर वंशराज का सूसाइड नोट मिला—उसके ऊपर कांच का पेपर वेट रखा हुआ है। बिना छूअे ही मैंने सूसाइड नोट को पढ़ा...। खैर, आप खुद ही सब कुछ देख लेंगे। उस लड़की मान्यता और वीडियो फिल्म बनाने वाले लड़के से भी मिलेंगे! वीडियो फिल्म भी देखेंगे। आपके सामने कोई दावा करना मेरी बेवकूफी होगी। इन्वेस्टीगेशन के मामले में भला मैं आपके सामने हूं ही क्या? ये तो आप ही बतलायेंगे कि वास्तविकता क्या है।"

❑❑❑
❑❑❑

दो सीढ़ियां चढ़ने पर वो लोग हॉस्टल की तीसरी मन्जिल पर पहुंचे।

अब कमरे के बाहर दो पुलिसवाले तैनात थे। उन्होंने सतपाल नेगी को देखते ही बीड़ियां फेंक दीं और अटेंशन की पोजीशन में खड़े हो गये।

केशव, राजन व करतार सिंह को कोई बड़े अफसर समझ उन्हें सैल्यूट मारा दोनों ने।

"व...वंशराजऽऽऽ!" खुले दरवाजे के सामने पहुंचते ही उदयराज चीखा और कमरे के भीतर दाखिल होना चाहा—लेकिन राजन व करतार सिंह ने उसे पकड़ लिया।

"छोड़ो मुझे...!" वह रोते हुये बोला—"मुझे अपने बच्चे के पास जाना है। वंशराज...मेरे बेटे!"

सुगन्ध व शुभम भी रोने लगे।

"रिलेक्स, ए० सी० पी० साहब!" केशव उसके कन्धे पर हथेली रखकर विनम्रता से बोला—"प्लीज, धीरज से काम लीजिये...।"

"धीरज...कैसी बात करते हो पण्डित जी! मेरे जवान और इकलौते बेटे की लाश सामने है। क्या मुझे अपने बच्चे की लाश से लिपटकर रोने का भी हक नहीं है।"

"प्लीज, ए० सी० पी० साहब! थोड़ी देर के लिये सब्र रखिये! आप पुलिस ऑफिसर रहे हैं। जानते हैं कि फिंगर प्रिंट्स

और फुट मार्क्स, सबूत वगैरा की कितनी अहमियत होती है! मुझे पहले मेरा काम कर लेने दीजिये। फिर वंशराज को नीचे उतार लिया जायेगा। ऐसा कीजिये कि आप उधर...बेंच पर जारूर बैठिये। राजन, करतार सिंह...ए० सी० पी० साहब को उस बेंच पर बिठाओ। सुगन्धा, शुभम...तुम दोनों को इनका ख्याल रखना है। इन्हें पानी वगैरा पिलवाओ! मैं अपना काम जल्द-से-जल्द निपटाने की कोशिश करता हूं।"

राजन व करतार सिंह रोते-बिलखते उदयराज को गलियारे में रखी लकड़ी की बेंच के पास ले गये और उसे बिठाया।

सुगन्धा व शुभम उसकी अगल-बगल में बैठ गये और स्वयं रोते हुये उसे तसल्ली देने की चेष्टा करने लगे!

केशव ने कोट की भीतरी जेब से रबर के पतले व पारदर्शी ग्लव्ज निकालकर हथेलियों पर चढ़ा लिये। फिर उसने जूते व जुर्राबें भी उतार दीं।

राजन व करतार सिंह ने भी उसका अनुसरण किया! इन्सपेक्टर सतपाल नेगी के पास दस्ताने तो नहीं थे, लेकिन उसने जूते व जुर्राबें उतार दीं!

फिर चारों कमरे में दाखिल हुये।

❑❑❑
❑❑❑

लगभग बारह बाई बारह फुट का कमरा, जिसमें अटैच्ड बाथरूम भी था।

कमरे के बीचों-बीच सिंगल बेड था, जिस पर लकड़ी का स्टूल लेटी अवस्था में पड़ा हुआ था।

बेडशीट पर हल्के गुलाबी रंग के पंजों के निशान अंकित थे, जो कि स्टूल के टॉप पर भी थे।

स्टूल का टॉप एकमात्र दरवाजे की तरफ से देखने पर बायीं साइड वाली दीवार की तरफ था, जिधर बाथरूम भी था। जबकि स्टूल के चारों पाये बांयी साइड की दीवार की तरफ थे।

स्टूल भारी और बड़े साइज का था। उसका ऊपरी हिस्सा आयताकार था—डेढ़ फुट चौड़ा और तीन फुट लम्बा!

ऊपर सिलिंग फैन था, जिस पर सफेद व नीले प्रिन्ट वाले कॉटन के दुपट्टे का सिरा बंधा हुआ था।

दुपट्टे का दूसरा सिरा फांसी के फन्दे के रूप में था और वो फन्दा वंशराज के गले पर कसा हुआ था।

वंशराज की फट पड़ने को तैयार आंखों में तथा चेहरे पर पीड़ा के भाव अभी भी बरकरार थे। चेहरा विकृत भी था।

नाक से खून रिसकर होठों को सानते हुये ठोडी तक एक लकीर के रूप में था, जो कि सूखकर स्याह पड़ने लगी थी।

गर्दन खिंचकर लम्बी हो गई थी।

घुटनों से मुड़े हुये पैरों का निचला हिस्सा पंजों समेत पीछे की तरफ मुड़ा हुआ था—पीठ की तरफ!

पंजों के तलुओं पर गुलाबी रंग लगा हुआ था।

लाश का चेहरे, सीने व पेट वाला हिस्सा दरवाजे की तरफ था।

गौर करने के काबिल ये बात थी कि वंशराज के हाथ गले पर कसे फन्दे पर थे—मानो मरते वक्त उसने फन्दे को खोलने या गले से निकालने की चेष्टा की हो।

लाश का बारीकी से मुआयना करने पर केशव ने बेड, बेडशीट, बेडशीट पर पड़े स्टूल को ध्यान पूर्वक देखा—जिसके लिये उसने मैग्नीफाइंग ग्लास का सहारा लिया।

राजन, करतार सिंह व सतपाल मूकदर्शक बने केशव की क्रिया-कलापों को देखे जा रहे थे।

केशव ने मेग्नीफाइंग ग्लास से फर्श बारीकी के साथ देखना शुरू किया! कुछ इस अन्दाज में कि मानो सुई की टूटी नोक खोज रहा हो।

प्रिंसीपल हरीश सिंह दरवाजे के बाहर से ही भीतर चल रहे क्रिया-कलापों को अवलोकन कर रहा था। वो कभी हवा में लटके वंशराज के शव को तो कभी बेड को देख रहा था—उस बेड को, जिसका सिरहाना बाथरूम वाले दरवाजे की तरफ तथा पायताना ग्रिल लगी खिड़की की तरफ था।

केशव मेग्नीफाइंग से फर्श को देखते हुये खुले दरवाजे से बाथरूम के भीतर चला गया।

पांच मिनट तक उसने बाथरूम के भीतर ना जाने क्या किया।

❑❑❑
❑❑❑

बाथरूम से निकलने पर केशव मेग्नीफाइंग ग्लास से फर्श देखते हुये दरवाजे तक पहुंचा। उसने दरवाजे के दोनों पल्ले भीतर से बन्द किये। पहले ऊपर की तरफ लगी सिटकनी को ध्यानपूर्वक देखा, जिसकी ऊपर की तरफ निकली ग्रिल में वो हिस्सा भी फंसा हुआ था, जो कि दरवाजे के ऊपर की दर पर से कीलों समेत उखड़ा हुआ था।

"ये सिटकनी भीतर से बन्द थी पण्डित जी!" इंस्पेक्टर सतपाल नेगी केशव के करीब पहुंचकर बोला, "जोर-जोर से धक्का मारने पर सिटकनी का वो ऊपरी हिस्सा उखड़ा, जिसमें सिटकनी की ग्रिल फंसी हुई थी। दरवाजे में एक इंच की झिर्री बन गई थी, लेकिन कुण्डी की वजह से खुल नहीं रहा था। फिर आरी का ब्लेड मंगवाकर कुन्डी को काटा गया और दरवाजा खोला गया।

केशव ने दरवाजे के बीचो-बीच लगी उस कुन्डी को देखा, जो कि लोहे के मजबूत छल्लों वाली चेन की बनी हुई थी।

कुन्डी दाहिने पल्ले में फिक्स लोहे की मोटी व दोहरी कील से जुड़ी हुई थी, जिसके दोनों हिस्सों को दरवाजे के पास यानि बाहरी तरफ विपरीत दिशा में मोड़कर पल्ले के साथ कसकर भिड़ा दिया गया था—ताकि वो कील या कुन्डी पल्ले से मजबूती के साथ जुड़ी रहे।

बायें पल्ले पर मोटी कील का गोल हिस्सा लगा था, जिसमें कुन्डी की आगे वाली इंग्लिश के 'ओ' आकार की कड़ी को फंसाकर कुन्डी लगाई जाती थी। आरी से काटे जाने की वजह से दोनों पल्लों पर ही आधी-आधी कुन्डी या जंजीर लटकी हुई थी।

केशव ने कुन्डी के दोनों हिस्सों को भी ध्यानपूर्वक देखा!

फिर वो बाथरूम के ठीक सामने वाली दीवार के करीब पहुंचा, जो कि दरवाजे के कमरे में दाखिल होने पर बायें हाथ की तरफ पड़ती थी।

वहां चार बाई चार फुट की लोहे के फ्रेम वाली खिड़की लगी थी। खिड़की पर भीतर की तरफ लकड़ी का दरवाजा लगा था, जिसके दोनों पल्ले खुले हुये थे।

खिड़की पर लोहे की डिजाइनदार वाली मजबूत जाली या ग्रिल लगी हुई थी, जो कि इतनी मजबूती के साथ फ्रेम के साथ फिट की गई थी कि पूरे जोर लगाये जाने पर भी हिलने वाली नहीं थी।

बाहर की तरफ देखने पर लॉन का थोड़ा हिस्सा और बाउन्ड्री वाल नजर आ रही थी।

खिड़की का निचला हिस्सा फर्श से चार फुट की ऊंचाई पर था।

खिड़की के ठीक नीचे वाली दीवार से सटी एक मेज और मेज के इधर कुर्सी रखी हुई थी।

मेज पर टेबल लैम्प, कोर्स की किताबें व नोट बुक रखी हुई थी।

वहीं एक रफ रजिस्टर का पन्ना कांच के पेपर वेट से दबा हुआ रखा था। उसी कागज पर 'सूसाइड नोट' लिखा गया था।

करीब ही सेलो जेल का नीले रिफिल वाला पेन भी रखा हुआ था, जिसकी कैप अलग पड़ी हुई थी।

केशव ने मेग्नीफाइंग ग्लास से पहले पेन और पेन की कैप को देखा, फिर सूसाइड नोट बिना स्पर्श किये हुये सिर्फ उसके ऊपर झुककर पढ़ने लगा।



"मैं अपनी इच्छा से, बिना किसी के दबाव के सूसाइड कर रहा हूं। खुदकुशी करने की वजह ये है कि भांग के नशे में मैं अपने होशो-हवास खो बैठा था और मैंने मान्यता की इज्जत पर हाथ डाल दिया—उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की।

बहुत दिनों से मान्यता पर मेरी नीयत खराब थी। लेकिन मैंने स्कूल में अपनी रेप्युटेशन बनाई हुई थी। सभी लड़कियों समेत मान्यता को भी बहन बोलता था और उससे राखी भी

बंधवाई थी। सो उससे लव-अफेयर नहीं चला सकता था। वैसे भी मान्यता इस टाइप की लड़की नहीं है।

मान्यता ने मेरी करतूत सभी को बतला दी। साथ ही सोमेश ने सबूत के रूप में वीडियो फिल्म भी दिखला दी! अगर सोमेश ने फिल्म ना बनाई होती तो मैं इस इल्जाम को झुठला देता—भले ही झूठी कसमें खानी पड़ती। मेरी ऐसी रेपुटेशन बनी हुई थी कि हर कोई मेरी बात पर ही यकीन करता।

लेकिन मेरी असलियत सबके सामने आ गई। कल प्रिंसीपल साहब ने ऑफिस में बुलवाया है। वो मुझे सजा देंगे। स्कूल की रेपुटेशन की खातिर इस मामले को पुलिस में तो नहीं ले जायेंगे—लेकिन मुझे रेस्टीकेट कर देंगे—कॉलेज से निकाल देंगे। मुझे किसी दूसरे स्कूल में भी एडमिशन नहीं मिल पायेगा। यानि मेरा कैरियर तो चौपट हो चुका है। मेरे माथे पर बदनामी का धब्बा लग गया।

मैं सारी दुनिया से निगाहें मिला लूंगा, लेकिन अपने मम्मी-डैडी का सामना नहीं कर पाऊंगा। मेरी इस गन्दी करतूत का खामियाजा मम्मी को भुगतना पड़ेगा। वो प्रधानमन्त्री बन सकती हैं। लेकिन मेरी वजह से उनकी और उनकी पार्टी की बदनामी हो जायेगी। बहुत सोच-विचार करने पर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मुझे सूसाइड कर लेनी चाहिये।

मेरे सूसाइड कर लेने से मम्मी जी और उनकी पार्टी को इतना नुकसान नहीं उठाना पड़ेगा। उन्हें मेरी मौत की सिम्पैथी मिलेगी। लोग यही कहेंगे कि भले ही बेटा नालायक था, लेकिन बेचारी मां की तो कोई गलती नहीं है। वो तो शरीफ और अच्छे गुणों वाली है। सुगन्धा...मेरी बहन...मम्मी-डैडी जी का ख्याल रखना! मेरे बाद तुम ही उनका एकमात्र सहारा होगी...वंशराज।"



सूसाइड नोट पढ़ने पर केशव ने दीर्घ श्वांस खींचकर फेफड़ों तक पहुंचाई!

"राजन...करतार सिंह...!"

राजन व करतार सिंह लपककर उसके पास पहुंचे।

केशव ने दोनों को इशारे से सूसाइड नोट पढ़ने को कहा और फिर एक नोट बुक उठा ली, जो कि वंशराज की लिखी हुई थी।

इन्सपेक्टर सतपाल नेगी भी केशव के करीब पहुंच गया और बोला—"दरवाजा भीतर से बन्द था...पण्डित जी! आपने देखा ही कि दरवाजे की सिटकनी उखड़ी हुई है और कुन्डी को भी आरी से काटा गया है। कमरे में दाखिल होने या बाहर निकलने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। बाथरूम में कोई खिड़की या रोशनदान नहीं है। सिर्फ ये खिड़की है। लेकिन इस पर लोहे की मजबूत जाली लगी है। जाली को फ्रेम के साथ वैल्ड किया गया है। अगर स्क्रू लगे होते तो एक बार को सोचा भी जा सकता था कि शायद किसी ने स्क्रू खोलकर जाली हटाई हो और फिर फिट कर दी हो। फिर ये सूसाइड नोट...ये खुदकुशी का और वंशराज की हरकत का पुख्ता सबूत है। सबसे बड़ा सबूत वो वीडियो फिल्म है, जिसे सोमेश ने तैयार किया। मेरे ख्याल से आपको वो वीडियो फिल्म देख लेनी चाहिये! आप चाहें तो सोमेश और उस लड़की मान्यता से भी पूछताछ कर सकते हैं।"

"मैं फिल्म भी देखूंगा नेगी साहब और पूछताछ भी करूंगा। लेकिन पहले आप एक्सपर्ट टीम को बुलवा लीजिये! फोटो खिचेंगे फिर एक्सपर्ट फिंगर-प्रिंट्स और फुटमार्क्स उठायेगा! फिर डॉक्टर चैक करके अपनी राय देगा और डैड-बॉडी को पोस्टमार्टम के लिये भेजा जायेगा। सारे काम झट-पट होने हैं। हमें वंशराज की डैडबॉडी दिल्ली ले जानी है। वहीं पर अन्तिम-संस्कार होगा।"

सतपाल नेगी ने एक सिपाही को एक्सपर्ट टीम को बुला लाने के लिये भेज दिया।

❑❑❑

❑❑❑

"प्राहवा जी...!" एक नोट बुक की राइटिंग को ध्यान पूर्वक देखने पर करतार सिंह बोला, "एह राइटिंग वंशराज दी हैगी। लेकिन सूसाइड नोट दी राइटिंग तो इसतो अलग हैगी।

मैनू नी लगदा कि सूसाइड नोट वंशराज दा लिखा हुआ है।"

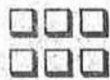
"नहीं, करतार सिंह...ये सूसाइड नोट वंशराज का ही लिखा हुआ मालूम पड़ता है। हालांकि पक्की रिपोर्ट तो एक्सपर्ट से हो मिलेगी।"

"ल...लेकिन नोट बुक और सूसाइड नोट की राइटिंग में काफी फर्क नजर आ रहा है गुरुवर...!"

"फर्क तो आ ही जाता है...।" केशव से पहले ही सतपाल नेगी बोल उठा—"वंशराज टेंशन में था और वो खुदकुशी करने जा रहा था। ऐसे में किसी के भी हाथ-पैर फूले हुये होंगे। कैसे भी सूसाइड नोट लिखने वाला राइटिंग की खूबसूरती पर कतई भी ध्यान नहीं देगा। वो जल्दी-जल्दी शब्दों को लिखता चला जायेगा। आयम सॉरी...मैं आप लोगों की भावना को समझता हूं। वंशराज आपका करीबी था। लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि उसने खुदकुशी की। खुदकुशी करने की वजह आप लोगों के सामने है ही। पण्डित जी...मैं आपका तो फैन हूं ही—इसी के साथ मैं और मेरा परिवार हिन्दुस्तान पार्टी का सपोर्टर है। वंशराज के नानाजी और मामाजी हमारे लिये पूजनीय हैं। जब से सुजाता भारती जी राजनीति में सक्रिय हुई...बहुत खुशी हो रही थी। ये उम्मीद बंध गई कि उनके पी० एम० बनने पर देश की बिगड़ी हुई दशा सुधर जायेगी। काश...काश कि ये झूठ होता कि वंशराज ने मान्यता की इज्जत पर हाथ डाला था। वंशराज के किये का खामियाजा बेचारी सुजाता भारती जी को और उनकी पार्टी को भुगतना पड़ेगा। जवान बेटे की मौत से पिता का इतना बुरा हाल है तो...भारती जी के दिल पर कैसी बीत रही होगी?"

केशव कुछ बोले बिना दरवाजे की तरफ बढ़ा तो राजन, करतार सिंह व सतपाल नेगी भी उसके पीछे-पीछे चल दिये।

दरवाजे पर ही खड़े प्रिंसीपल हरीश सिंह ने कौतूहलता भरे लहजे में पूछा—"किस नतीजे पर पहुंचे आप पण्डित जी? ये बात तो तय है कि वंशराज ने मान्यता के साथ रेप करने की कोशिश की थी। उसने सूसाइड नोट में क्या लिखा है? उसने खुदकुशी ही की है ना?"



काफी देर पश्चात केशव ने चारमीनार की डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर निकालकर एक सिगरेट सुलगाई।

दो तृप्तिपूर्ण कश मारने पर हरीश सिंह से बोला—"मैं इन्वेस्टीगेटर हूं प्रिंसीपल साहब! कामयाब और काबिल इन्वेस्टीगेटर वो ही होता है, जो सिक्के के सिर्फ एक हिस्से को देखकर किसी परिणाम पर न पहुंचे—बल्कि सिक्के के दूसरे रुख को भी देखे। जो दिखलाई पड़ रहा है, उस पर आंखें मूंदकर विश्वास ना करे—बल्कि अपने दिमाग का भी इस्तेमाल करे।"

"क...क्या मतलब? मैं कुछ समझा नहीं...पण्डित जी!"

सतपाल नेगी भी केशव का जवाब सुनने को उतावला व लालायित दिखलाई पड़ा।

मुख से सिगरेट के दो दर्जन के लगभग छल्ले छोड़ने पर कहा केशव ने—"चालाक किस्म के मुजरिम दो प्रकार के होते हैं। पहली कैटेगिरी में वो मुजरिम आते हैं, जो जुर्म करते वक्त इस बात का ख्याल रखते हैं कि उनसे कोई गलती ना हो जाये—उनसे कोई सबूत ना छूट जाये। लेकिन दूसरी कैटेगिरी के मुजरिम इससे भी बढ़कर दिमाग खर्च करते हैं। वो अपनी तरफ से...अपनी समझ में इस बात की गुंजाईश नहीं छोड़ते कि किसी को लगे कि जुर्म हुआ है।"

"क...क्या मतलब...?" दुविधा व कौतूहलता के जंजाल में फंसा सतपाल नेगी बोला—"भगवान के लिये इस बात को समझाकर बतलाइये पण्डित जी! ये बातें मेरे बहुत काम आयेंगी। ये...दूसरी कैटेगिरी के मुजरिमों वाली बात समझ में नहीं आई।"

"बहुत से मुजरिम ये सोचकर चलते हैं नेगी साहब कि भले ही वो अपने खिलाफ कोई सबूत या गवाह ना छोड़ें—लेकिन पुलिस छानबीन तो करेगी ही...मुजरिम की तलाश तो करेगी ही। सो ऐसा क्यों ना किया जाये कि पुलिस मुजरिम की तलाश ही ना करे और वह सेफ रहे।"

"ल...लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? जब कोई जुर्म होगा तो पुलिस मुजरिम की तलाश तो करेगी ही...!"

"लेकिन हत्या को आत्महत्या या हादसे का रूप दे दिया जाये तो? पुलिस ये मान ले कि मृतक ने आत्महत्या की थी—या मृतक किसी एक्सीडेन्ट की वजह से मरा है...तो? फिर पुलिस क्या करेगी? केस को क्लोज करके फाइल को दफ्तर की आलमारी में रखकर ताला ही लगा देगी?"

"ओह...ओह! कहीं आप ये तो नहीं कहना चाहते हैं कि वंशराज ने खुदकुशी नहीं की...बल्कि किसी ने उसको मारकर खुदकुशी का रूप दे दिया है? लेकिन ऐसा कैसे हो सकता?"

"मैं कुछ नहीं कहना चाह रहा हूं। मैंने अभी अपना डिसीजन नहीं दिया है। अभी मेरी इन्वेस्टीगेशन अधूरी है। मैं ये कह रहा हूं कि मैं सिर्फ उस पर आंखें मूंदकर यकीन नहीं कर लेता—जो कि दिखलाई पड़ रहा हो, या दिखलाये जाने की कोशिश की जा रही हो। जैसे कि वंशराज वाले केस को ही ले लो नेगी साहब! देखने पर ये सूसाइड का मामला नजर आता है। लेकिन मैं हमेशा की तरह...हर केस की तरह ये मानकर भी चलूंगा कि जरूरी नहीं है कि वंशराज ने खुदकुशी ही की हो—ये भी हो सकता है कि किसी ने उसे मारकर खुदकुशी का रूप दे दिया हो...।"

"ले...लेकिन इस बात की गुंजाइश तो नजर नहीं आ रही है...पण्डित जी...!"

"आपमें और पण्डित जी में यही तो फर्क है नेगी साहब...!" राजन च्विंगम चबाते हुये बोला, "आपने जो देखा, उसी पर यकीन कर लिया और मान लिया कि ये सूसाइड का केस है। लेकिन...अगर आगे चलकर ये केस मर्डर का निकला तो...फिर आप क्या करेंगे? या पता नहीं चल पाता...तो क्या वो कातिल बचा नहीं रह जायेगा? मृतक के साथ उसके परिजनों के साथ अन्याय नहीं होगा? क्या ये कानून की तौहीन नहीं होगी? पण्डित जी ने ऐसे बहुत से केस सोल्व किये, जो सूसाइड के या एक्सीडेन्ट के लग रहे थे, लेकिन फिर पता चला कि कत्ल के थे—इन्होंने कातिल को पकड़कर उसे सजा दिलवाई। बहुत से केस ऐसे भी थे, जिनमें कोई व्यक्ति मुजरिम साबित हो रहा था, लेकिन इन्वेस्टीगेशन के बाद मालूम पड़ा कि उस बेचारे को तो बलि का बकरा बनाया जा रहा था। असली

खिलाड़ी तो कोई और ही था। सही रिजल्ट तभी निकल सकता है, जब इन्वेस्टीगेटर केस की बाबत पोजेटिव और निगेटिव...दोनों प्वाइंट ऑफ व्यू से सोचकर चले। भले ही ये मामला वंशराज की खुदकुशी का साबित हो—लेकिन पण्डित जी ये सोचकर भी इन्वेस्टीगेशन करेंगे कि ये मामला हत्या का भी हो सकता है। यही तो इनकी कामयाबी का 'मूल-मन्त्र' है।"

"समझ गया...बात समझ में आ गई।" सतपाल नेगी उत्साह से भरा हुआ बोला—"आप लोगों से बहुत काम की बात सीखने को मिली है। ये बातें आगे मेरे बहुत काम आयेंगी। हरेक केस में इन बातों को दिमाग में रखते हुये ही मैं इन्वेस्टीगेशन करूंगा। आप लोगों के आने से मुझे बहुत फायदा हुआ है। मुझे बहुत कुछ सीखने को मिल रहा है। वास्तव में ही ये मेरी गलती थी कि मैंने एकदम से फैसला कर लिया कि वंशराज ने खुदकुशी की है! मुझे ये भी सोचना चाहिये था कि शायद किसी ने वंशराज को कत्ल करके खुदकुशी का रूप दे दिया हो। मैं शर्मिन्दा हूं। अपनी गलती महसूस कर रहा हूं।"

"पण्डित जी...!" बेंच पर सुगन्धा व शुभम के साथ निढाल-से बैठे उदयराज ने कमजोर-सी आवाज में कहा, "अब तो मुझे मेरे बेटे के पास जाने दीजिये।"

"थोड़ा-सा सब्र और रखिये ए० सी० पी० साहब!" केशव रिक्वेस्ट भरे लहजे में बोला, "एक्सपर्ट टीम का काम निबट जाने दीजिये। बस...थोड़ा-सा इन्तजार और कर लीजिये... प्लीज...!"

तभी एक्सपर्ट टीम आ पहुंची।

□□□

□□□

सबसे पहले फोटोग्राफर ने केशव के निर्देशानुसार विभिन्न कोणों से ना सिर्फ वंशराज की लाश की तस्वीरें लीं, बल्कि बाथरूम, कमरे के फर्श समेत उसके तमाम हिस्सों की भी तस्वीरें लीं।

फिर केशव ने दूसरे एक्सपर्ट को समझाया कि उसे कहां-कहां से फुट मार्क्स और किन-किन जगहों व सामानों पर

से फिंगर प्रिंट्स उठाने हैं और वंशराज के भी फिंगर प्रिंट्स लेने हैं, उसके पैरों, जूतों व चप्पलों की भी छाप लेनी है।

एक्सपर्ट अपने काम में जुट गया।

केशव ने चारमीनार की एक सिगरेट और सुलगा ली और प्रिंसीपल हरीश सिंह से मुखातिब होकर बोला—

"ऐसा लगता है कि मैंने आपको पहले भी कभी देखा है प्रिंसीपल साहब...!"

"मेरे ख्याल से तो ये हमारी पहली ही मुलाकात है पण्डित जी! हां, मैंने आपको टी० वी० पर, अखबारों और पत्रिकाओं में जरूर देखा है।"

"नहीं...मेरा दिमाग धोखा नहीं खा सकता। मुझे लग रहा है ...अवश्य ही पहले भी कहीं देखा...ओ...याद आ गया। बात पुरानी है। पांच साल पुरानी। जब इन्डियन पब्लिक पार्टी ने इलेक्शन में जीत हासिल की थी तो प्रधानमन्त्री पद के दावेदार देवेन्द्र सिंह को टी० वी० वालों ने खूब दिखलाया था। आप भी उनके साथ दिखलाई दिये थे। इलेक्शन से पहले भी रैलियों और कन्वेसिंग में भी आप देवेन्द्र सिंह के साथ थे। जब वो प्रधानमन्त्री बने थे तो शपथ-ग्रहण समारोह में भी आप थे। उनके घर पर और पार्टी ऑफिस में मनाये गये जश्न में भी शामिल थे आप!"

"ओह, अच्छा-अच्छा...!" हरीश सिंह हंसकर बोला, "आपकी याददाश्त की दाद देनी होगी पण्डित जी! आपने पांच साल बाद भी मुझे पहचान लिया। एक्चुअली...देवेन्द्र सिंह मेरे बहनोई हैं। उनका साला हूं मैं। मेरी बड़ी और इकलौती बहन से उनकी शादी हुई थी। चार साल पहले बहनजी का देहान्त हो गया था। उसके बाद मैं दिल्ली नहीं गया। क्योंकि वहां जाने पर बहनजी की याद सताती...!"

"हुम्म...तो आप प्रधानमन्त्री जी के साले साहब हैं?"

"हां...पण्डित जी! जीजाजी तो चाहते थे कि मैं सर्विस से रिजाइन देकर राजनीति में घुस जाऊं। वो मुझे कहीं से भी इलेक्शन लड़वाकर मन्त्री भी बना देते। लेकिन मैंने ही मना कर दिया था। राजनीति पसन्द नहीं है मुझे। नेताओं के हथकन्डे पसन्द नहीं मुझे। ऊपर से रात-दिन की भागा-दौड़ी, रैलियां,

उदघाटन, वगैरा! आजादी नाम की चीज तो रहती ही नहीं। चौबीस घण्टों सुरक्षाकर्मियों से घिरे रहो। मुझे सादगीपूर्ण जीवन पसन्द है। यहां का माहौल खूब रास आता है। यहां पर कोई प्रादूषण नहीं! खुशनुमा वातावरण और स्वास्थ्य देने वाली जलवायु। तो क्या ऐसा हो सकता है कि वंशराज ने खुदकुशी ना की हो? उसको किसी ने मारकर खुदकुशी का नाटक रच दिया हो?"

"जरूरी नहीं! लेकिन नामुमकिन भी नहीं! इन्वेस्टीगेशन के कम्पलीट होने पर ही कुछ बता पाऊंगा। जो भी हकीकत होगी—आपके सामने आ जायेगी। राजन...!"

"जी, गुरुवर!"

"करतार सिंह...!"

"आहो...प्राहवा जी...!"

राजन और करतार सिंह केशव के करीब चले आये और उसे सवालिया निगाहों से देखने लगे।

"उस लड़की मान्यता और उस लड़के सोमेश को यहीं पर बुला लाओ। सोमेश उस फिल्म को भी साथ लेकर आये। दोनों से पूछताछ कर ली जाये। सुन लेते हैं कि वो दोनों क्या कहते हैं?"

❑❑❑
❑❑❑

"ठहरो...!"

कुछ सोचकर केशव तेज आवाज में बोला और फिर लपककर राजन व करतार सिंह के समीप पहुंचकर बोला—"मेरे ख्याल से मान्यता और सोमेश को यहां पर बुलाना ठीक नहीं होगा। यहां पर ए० सी० पी० साहब हैं। वो ये मानने को कतई भी तैयार नहीं हैं कि वंशराज किसी लड़की की इज्जत लूटने की कोशिश कर सकता है। यानि उनकी समझ में मान्यता ने वंशराज पर झूठा इल्जाम लगाया है और सोमेश ने भी वीडियो फिल्म में हेराफेरी करके वंशराज को फंसाने की साजिश में मान्यता का साथ दिया है। सुगन्धा और शुभम के हाव-भावों से भी ऐसा ही लगता है। सो मान्यता और सोमेश को यहां बुलवाना ठीक नहीं होगा। मैं नहीं चाहूंगा कि दोनों का ए० सी० पी० साहब से सामना हो! वो दुखी तो हैं ही—उनके मन में मान्यता और सोमेश के प्रति क्रोध भी जरूर होगा। वो उत्तेजित हो सकते हैं...।"

"तो फिर...?" पूछा करतार सिंह ने—"असा की करां?"

"तुम दोनों यहीं रुको! एक्सपर्ट टीम से काम कराओ। मुझे फिंगर प्रिंटस् और फुट मार्क्स की रिपोर्ट फौरन से पेशतर चाहिये! डॉक्टर्स से ये भी पूछना है कि वंशराज की मृत्यु कितने बजे हुई थी। मैं ऐसा करता हूं कि प्रिंसीपल साहब को अपने साथ ले जाता हूं और मान्यता, सोमेश से मिलता हूं। एक्सपर्ट टीम का काम निपटने पर वंशराज की डैडबॉडी नीचे उतरवा लेना। तब ए० सी० पी० साहब को सम्भाल लेना। जवान बेटे की लाश उन्हें विचलित कर सकती है। वैसे तो वो रिटायर्ड पुलिस अफसर हैं। लेकिन ये मामला जवान और इकलौते बेटे की मौत का है। एक पिता कमजोर पड़ सकता है। मैं मान्यता और सोमेश से बात करके जल्दी ही वापिस लौटता हूं।"

"चंगी गल ए प्राहवा जी!" करतार सिंह ने कहा—"तुस्सी मान्यता ते सोमेश दे नाल पूछताछ करो। एत्थो असी मामले नूं सम्भाल लेवांगे। मान्यता तो सोमेश तो मिलने पर तुहान्नू मलूम पे जावेगा कि...हकीकत की है। उन दोनों दे दिल वे दिमाग विच कोई छल-कपट होवेगा तो तुस्सी उस छल-कपट नूं फड लोगे! मलूम पे जावेगा कि हकीकत की है।"

❑❑❑
❑❑❑

प्रिंसीपल हरीश सिंह केशव को अपने क्वार्टर में ले गया। ड्राइंग रूम में केशव को आदर सहित बिठाकर नौकर को कॉफी व नाश्ता लाने को कहा और चपरासी को भेजकर मान्यता व सोमेश को बुलवा लिया। दोनों नर्वस तो पहले से ही थे—केशव से सामना होने पर तो पसीने ही छूट चले।

थूक-सा सटकते हुये हाथ जोड़ दिये।

"बैठो...!" केशव बहुत ही विनम्रता से बोला—"तुम दोनों को घबराने की जरूरत नहीं है। शायद तुम दोनों के दिमाग में ये बात है कि वंशराज से मेरे सम्बन्ध थे—मेरे सुजाता भारती और ए० सी० पी० उदयराज के साथ फैमली टर्मस् हैं तो तुम

दोनों के प्रति क्रोध होगा...ऐसा कुछ नहीं है। मैंने हमेशा सच्चे और ईमानदार लोगों का सम्मान किया है। पीड़ित या मजलूमों का साथ दिया है। बस, तुम दोनों को ईमानदारी और सच्चाई से काम लेना है। जो कुछ भी हुआ था, उसके बारे में बिना कुछ छिपाये सब कुछ बतलाना है और झूठ नहीं बोलना है। बैठो, मेरे सामने बैठो! डोन्ट नर्वस...डोन्ट होपलेस...।"

दोनों डरे-सहमे से केशव के सामने रखी कुर्सियों पर बैठ गये।

मान्यता ने जख्मी व सूजकर मोटे हो चले होठ पर जिव्हा फेरी और फिर हथेलियों को परस्पर मसलने लगी।

"वो फिल्म इसी कैमरे में है?" चारमीनार की सिगरेट सुलगाने पर सोमेश से पूछा केशव ने।

"जी...जी...!" कैमरे को गोद में रखकर किसी नवजात शिशु की मानिन्द सहलाते हुये सोमेश फंसी फंसी-सी आवाज में बोला—"मैं इससे होली का प्रोग्राम शूट कर रहा था।"

"तुम्हारा अपना कैमरा है ये?" केशव की झील-सी नीली व उस्तरे की धार-सी पैनी आंखें सोमेश के साथ-साथ सुगन्धा की हरकतों व हाव-भाव का भी जायजा ले रही थीं।

"जी...जी हां! डैडी जी ने पिछले बर्थ डे पर मुझे गिफ्ट में दिया था।"

"हुम्म...क्या करते हैं तुम्हारे डैडी?"

"वो दिल्ली के एक बैंक में सर्विस करते हैं।"

"हुम्म...यानि तुम दिल्ली के रहने वाले हो। और तुम कहां की रहने वाली हो मान्यता?"

"जी...नोयडा...!"

"नोयडा दिल्ली से ही लगा हुआ है। तुम्हारे मम्मी-डैडी क्या करते हैं?"

"जी...वो नोयडा के एक स्कूल में सर्विस करते हैं।"

"क्या मैं ये कैमरा देख सकता हूं सोमेश?"

सोमेश ने चुपचाप कैमरा केशव की तरफ बढ़ा दिया। हाथ में कम्पन था।

केशव ने कैमरे के बटनों से छेड़छाड़ की और फिर उसकी साइड स्क्रीन पर फिल्म देखने लगा।

फिल्म के आधे से ज्यादा पार्ट में होली के दृश्य थे! छात्र-छात्रायें आपस में होली खेल रहे थे। हंसी-ठिठोली कर रहे थे और म्यूजिक सिस्टम पर डांस कर रहे थे।

फिर वो दृश्य शुरू हुये, जो कि मान्यता के कमरे की खिड़की के बाहर से फिल्माये गये थे और कमरे के भीतर वंशराज मान्यता के साथ जोर-जबरदस्ती कर रहा था।

केशव ने फिल्म को रिवाइंड करके दोबारा देखा—ध्यानपूर्वक देखा।

फिर उसने कैमरा बन्द करके मेज पर रख दिया! उसी वक्त नौकर बड़ी ट्रे लिये हुये आ गया, जिसमें केतली, दो कप, नमकीन व बिस्किट की प्लेटे थीं।

"दो कप और लेकर आना काका...।" बोला केशव, "इन दोनों ने भी चाय पीनी है।" उसका इशारा मान्यता व सोमेश की तरफ था।

"आपने फिल्म देखी पण्डित जी...!" प्रिंसीपल हरीश सिंह लक्की स्ट्राइक ब्रांड वाली सिगरेट सुलगा लेने पर बोला, "क्या ख्याल है आपका—क्या ये फिल्म ओरिजनल है? या फिर इसमें कोई गड़बड़ी है? फिल्म के साथ कोई छेड़छाड़ की गई है? मेरा मतलब है कि फिल्म में ट्रिक फोटोग्राफी या कम्प्यूटर के जरिये कोई चालाकी तो नहीं की गई है?"



केशव ने पहले सिगरेट के टोटे को मेज पर रखी ऐश-ट्रे में ठूंसा—फिर जवाब दिया—"नहीं, मेरे ख्याल से तो नहीं! इस फिल्म के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है। किसी ट्रिक फोटोग्राफी का इस्तेमाल नहीं किया गया है। ये ओरिजनल फिल्म है...।"

मान्यता व सोमेश ने राहत की सांसें लीं।

उनके चेहरों पर व्याप्त तनाव के बादल छंटने लगे और आंखों की कटोरियों में तैरती घबराहट की मछलियों की संख्या भी तेजी से कम होने लगी।

अफसोस के साथ ही बोला केशव—"कई वर्षों से जानता था मैं वंशराज को! वो धार्मिक प्रवृत्ति का संस्कारवान् लड़का

था! कभी कल्पना भी नहीं की थी...सोचा भी नहीं था कि वो ऐसी हरकत कर जायेगा।"

"किसी ने भी नहीं सोचा था पण्डित जी! स्कूल का सबसे बुद्धिमान, मिलनसार, संस्कारवान्, बड़ों का मान-सम्मान करने वाला लड़का था! मेरे ख्याल से भांग की ठन्डाई ने उसके होशो-हवास छीन लिये थे—उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी। बाद में भांग का नशा उतरने पर उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तो...उसने खुदकुशी कर ली। सोचा भी नहीं था कि वो अपनी जान दे देगा। मैंने उसे अगले दिन यानि आज सुबह अपने ऑफिस में हाजिर होने को कहा था। लेकिन मेरा इरादा उसे रेस्टीकेट करने या कोई ऐसी सजा देने का नहीं था कि उसका कैरियर चौपट हो जाता! उससे मान्यता से माफी मंगवाई जाती और फिर स्कूल के मन्दिर में ये सौगन्ध दिलवाई जाती कि आईन्दा वो ऐसी कोई हरकत नहीं करेगा। लेकिन...अफसोस कि उसने सूसाइड कर ली...।"

कहने पर हरीश सिंह दुःखी भाव से सिगरेट में कश लगाने लगा।

नौकर दो कप रखकर चला गया।

केशव ने केतली उठाकर चारों कपों में चाय उंडेली और पहले मान्यता व सोमेश को पकड़ाकर बोला—"चाय पीओ! नर्वस होने की जरूरत नहीं। ये बतलाओ कि कल क्या हुआ था? पहले तुम ही बतलाओ मान्यता! मैं पहले ही वार्न कर चुका हूं कि कोई बात छिपाना नहीं...झूठ नहीं बोलना है।"

मान्यता ने चाय की सिप ली और फिर बतलाने लगी कि होली खेलने पर जब वो अपने कमरे में पहुंची तो उसके पश्चात् क्या-क्या हुआ—वंशराज ने उसके साथ क्या-क्या किया था।

❑❑❑
❑❑❑

केशव ने ध्यानपूर्वक, पूरी तन्मयता से मान्यता की बातें सुनीं। बीच में कोई टोका-टोकी नहीं की। मान्यता चुप हुई तो उसने खाली कप मेज पर रखकर सवाल किया—"एक बात बताओ मान्यता...तुम होली का प्रोग्राम बीच में ही छोड़कर क्यों चली गई थीं?"

"पहली बार ठन्डाई पी थी मैंने। सिर घूम रहा था—चक्कर आ रहे थे। मैंने ये सोचा था कि स्नान करके सो जाऊंगी तो तबियत ठीक हो जायेगी। नहाने के बाद मैं सोने जा रही थी कि वंशराज आ पहुंचा था...।"

"दरवाजा बन्द नहीं किया था तुमने?"

"नहीं! दरवाजा बन्द करने का ख्याल ही नहीं आया था। भांग की गफलत में थी ना। नहाने पर थोड़ा नशा उतरा तो था—लेकिन घुमेर बनी हुई थी। दरवाजा बन्द किये बिना ही बेड पर लेट गई थी।"

"अब तुम बोलो सोमेश...!" चारमीनार की डिब्बी व लाइटर कोट की जेब से निकालने पर केशव बोला, "क्या-क्या हुआ था?"

सोमेश बोलने लगा।

केशव ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

हरीश सिंह भी सुन रहा था।

"ठीक है!" सोमेश के चुप होते ही केशव ने कहा, "तुम दोनों जा सकते हो। पढ़ाई-लिखाई करो। अगर जरूरत पड़ी तो बुलवा लूंगा।"

मान्यता व सोमेश उठकर यूं ही वहां से गये—मानो शेर के पिंजरे से सही-सलामत निकलने में कामयाब हो गये हों।

"प्रिंसीपल साहब!" केशव हरीश सिंह की आंखों में झांकते हुये बोला, "अब आपसे भी कुछ जानकारियां लेनी चाहूंगा मैं।"

हरीश सिंह थोड़ा विचलित दिखलाई दिया।

❑❑❑
❑❑❑

एक्सपर्ट टीम का काम निबट जाने पर वंशराज की लाश को नीचे उतारा गया।

तब सुगन्धा व शुभम के साथ उदयराज कमरे में दाखिल हुआ।

राजन व करतार सिंह भी साथ थे।

जवान व इकलौते बेटे की लाश से लिपटकर उदयराज फूट-फूटकर रो पड़ा—उसके दर्दभरे विलाप ने एक्सपर्ट टीम और

इन्सपेक्टर सतपाल नेगी समेत राजन-करतार सिंह को भी द्रवित कर दिया। सुगन्धा व शुभम भी वंशराज की लाश पर सिर व माथा पटक-पटककर रो रहे थे, विलाप कर रहे थे।

फिर उदयराज अचेत हो गया।

एक पुलिस वाला दौड़कर पानी लाया।

राजन ने उदयराज के सिर, माथे व चेहरे को पानी से भिगोया और उसकी चेतना लौटने पर दो घूंट पानी पिलाया भी।

इतने में ही हरीश सिंह के साथ केशव भी आ गया! उसने बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर उदयराज, सुगन्धा व शुभम को शान्त किया—लेकिन चाहकर भी उनकी आंखों से रिसते आँसुओं को नहीं बांध पाया। केशव ने हरीश सिंह से बात करके उदयराज को उसके क्वार्टर में आराम करने को भेज दिया—साथ ही उसने सुगन्धा व शुभम को ये जिम्मेदारी सौंपी कि वो उदयराज का हर तरह से ख्याल रखें।

फिर केशव ने राजन व करतार सिंह के साथ वंशराज की लाश का मुआयना किया—विशेषकर उसके गले को देखा—जिसके लिये लाश को उलटकर गर्दन का पिछला हिस्सा भी देखा गया, फिर लाश को सीधा कर दिया गया।

"क्या ख्याल है आपका पण्डित जी...?" प्रिंसीपल हरीश सिंह ने पूछा—"ये सूसाइड का ही मामला है ना? या किसी ने वंशराज का गला घोटने पर हत्या को आत्म-हत्या का रूप देने के लिये फांसी वाला ड्रामा रचा है? वैसे तो दरवाजा भीतर से बन्द था! पुलिस को दरवाजा तोड़ने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। कुन्डी को आरी के ब्लेड से काटना पड़ा था। कमरे में आने-जाने के लिये सिर्फ एक ही दरवाजा है। वंशराज ने सूसाइड नोट भी छोड़ा है। इन्सपेक्टर साहब ने मुझे बतलाया था कि सूसाइड नोट में वंशराज ने लिखा है कि...।"

"गले पर सिर्फ एक ही निगेचर मार्क है।" केशव हरीश सिंह की बात काटकर बोला—"जो कि फांसी के फन्दे या दुपट्टे के बने फन्दे का है। इसके अलावा किसी डोरी या उंगलियों के निशान नहीं हैं।"

"यानि वंशराज का गला नहीं घोंटा गया...!" तपाक से बोला सतपाल नेगी—"वंशराज की मौत फांसी के फन्दे पर लटकने से ही हुई है?"

"हां, बिल्कुल! वंशराज की जान फांसी के फन्दे से दम घुटने से ही हुई है। डॉक्टर साहब कहां हैं?"

एक अधेड़ उम्र का अधगंजा व्यक्ति आगे आया।

"आपने लाश का मुआयना किया डॉक्टर साहब?"

"जी पण्डित जी!"

"क्या ओपीनियन है आपकी?"

"ये सूसाइड केस है!"

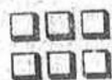
"मौत का समय क्या होगा?"

"ये तो पोस्टमार्टम करने पर ही ठीक-ठीक बतला सकूंगा पण्डित जी। लेकिन डैड-बॉडी की कन्डीशन देखने पर मेरा अन्दाजा ये है कि इस लड़के की मौत रात को दो या तीन बजे के बीच हुई होगी।"

केशव ने सोचने वाले अन्दाज में आंखें सिकोड़कर हौले-हौले सिर हिलाया, फिर सतपाल नेगी से बोला—"डैड-बॉडी को पोस्टमार्टम के लिये भिजवाइये। मैं चाहता हूं कि जल्दी से पोस्टमार्टम हो और उसकी रिपोर्ट मिल जाये।"

"पंचनामे की कार्रवाई पूरी करवाकर मैं डैड-बॉडी को भिजवाता हूं। ये डॉक्टर साहब के हाथ में है कि ये कितनी जल्दी पोस्टमार्टम करके रिपोर्ट तैयार करते हैं। डैड-बॉडी को जिला हॉस्पिटल भिजवाना पड़ेगा। वहीं पर पोस्टमार्टम होगा। शहर हालांकि यहां से साठ किलोमीटर दूर है। लेकिन पहाड़ी इलाका होने की वजह से आने-जाने में ही आठ-दस घण्टे लग...।"

"डोन्ट वरी! हम लोग यहां जिस हैलीकॉप्टर से आये हैं, उसी से डैड-बॉडी को डॉक्टर साहब के साथ भेजा जायेगा। यहां के चीफ मिनिस्टर साहब ने मुझे पूरी सुविधा मुहैया करवाई है। पोस्टमार्टम के बाद डैड-बॉडी को वापिस यहां नहीं लाया जायेगा। डैड-बॉडी को हॉस्पिटल में छोड़कर हैलीकॉप्टर वापिस आयेगा...हम लोग यहां से जायेंगे और फिर बाई प्लेन डैड-बॉडी के साथ दिल्ली को रवाना हो जायेंगे! फिंगर प्रिंट्स और फुटमार्क्स एक्सपर्ट कहां हैं?"



छोटे कद व मोटे पेट वाला एक्सपर्ट केशव के सामने हाजिर हो गया!

"आपने सभी जगहों से फिंगर प्रिंट्स और फुटमार्क्स ले लिये गुप्ता जी?"

"जी, पण्डित जी! काफी जगहों और चीजों पर फिंगर प्रिंट्स मिले हैं। मैंने मृतक के भी फिंगर प्रिंट्स और फुटमार्क्स ट्रेस किये हैं। लेकिन सभी फिंगर प्रिंट्स का मिलान नहीं कर पाया हूं।"

"कोई बात नहीं! अब कर लेना। फुटमार्क्स के बारे में बात करते हैं।" केशव चारमीनार की सिगरेट में कश लगाकर बोला, "वंशराज के पैरों पर गुलाबी रंग लगा हुआ था। उसके पंजों के निशानों की डायरेक्शन देखने पर मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि कमरे में दाखिल होने पर वो सीधा बाथरूम गया था। वहां कपड़े उतारकर स्नान किया और फिर सफेद रंग का कुर्ता-पायजामा पहना! वहां से वो टेबल तक पहुंचा, जहां सूसाइड नोट रखा हुआ था। उसने सूसाइड नोट लिखा। फिर वो उधर उस कोने में पहुंचा। वहां पर स्टूल के पायों के निशान हैं। वहां से स्टूल उठाकर वो बेड तक आया और स्टूल बेड पर रखा, फिर वो बेड पर चढ़ा और फांसी में लिये लेडिज दुपट्टे को सिलिंग फेन के साथ बांधा। उसके बाद वो स्टूल से नीचे नहीं उतरा था।"

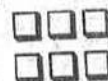
एक्सपर्ट ने हैरानी के साथ देखा केशव को और फिर प्रशंसाभरे लहजे में बोला—"आपने तो पूरा नक्शा ही खींच दिया...पण्डित जी! बिल्कुल...मेरा भी यही ख्याल है।"

"क्या फर्श पर किसी अन्य के फुटमार्क्स मिले हैं?"

"जी नहीं! वंशराज के अलावा किसी दूसरे के फुटमार्क्स नहीं मिले हैं। हां, दरवाजे के बाहर हरे और लाल रंग के पैरों के पंजों के निशान।"

"वो सुगन्धा और शुभम के हैं। मैंने सुगन्धा के पैर लाल रंग से और शुभ के पैर हरे रंग से रंगे देखे हैं। वो दोनों कल वंशराज के कमरे तक आये थे। लेकिन वंशराज ने भीतर से

दरवाजा बन्द किया हुआ था और दोनों के बहुत कहने, समझाने-बुझाने पर भी दरवाजा नहीं खोला था। सुगन्धा ने मुझे फोन पर सारी बातें बतला दी थीं। वंशराज ने दोनों को यहां से लौट जाने पर मजबूर कर दिया था। दरवाजे के बाहरी हिस्से पर वंशराज के साथ-साथ सुगन्धा और शुभम के भी फिंगर प्रिंट्स मिले होंगे। खैर, आप जल्द से जल्द फिंगर प्रिंट्स के बारे में रिपोर्ट दीजिये। खास तौर पर मैं ये जानना चाहता हूं कि सूसाइड नोट, पेन और स्टूल पर वंशराज के ही फिंगर प्रिंट्स हैं, या किसी दूसरे के फिंगर प्रिंट्स हैं। उस रजिस्टर पर किसके फिंगर-प्रिंट्स हैं, जिसमें से सूसाइड नोट वाला पन्ना फाड़ा गया?"



इन्सपेक्टर सतपाल नेगी को कागजी कार्रवाई करने व वंशराज की लाश को पोस्टमार्टम के लिये भिजवाने को बोलकर केशव राजन व करतार सिंह सहित प्रिंसीपल हरीश सिंह के क्वार्टर पर पहुंचा।

रोते हुये सुगन्धा व शुभम रो रहे उदयराज को धीरज बंधा रहे थे।

केशव को देख उदयराज सुबकते हुये बोला—"क्या पता लगाया है पण्डित जी? मुझे पूरा विश्वास है कि मेरा बेटा किसी लड़की की इज्जत पर हाथ नहीं डाल सकता—ना ही वो आत्महत्य, जैसा बुजदिली भरा कदम उठा सकता था। उसके खिलाफ किसी ने साजिश रची थी ना? कौन है वो नीच इन्सान, जिसने मेरे बेटे पर घिनौना दाग लगाया और उसकी जान ली? उसे छोड़ूंगा नहीं मैं—जान से मार दूंगा।"

"रिलेक्स, ए० सी० पी० साहब...!" केशव उसके कन्धे पर हथेली रखकर बोला, "अभी मेरी छानबीन पूरी नहीं हुई है। अभी वक्त लगेगा। प्लीज, आप ऐसा कीजिये, लेट जाइये।"

केशव ने उदयराज को पकड़कर बेड पर लिटा दिया और फिर सुगन्धा व शुभम से मुखातिब होकर बोला—"वंशराज की मौत लेडिज दुपट्टे के बने फन्दे से हुई है। तुम दोनों ने उस

दुपट्टे को देखा ही होगा। क्या बतला सकते हो कि वो दुपट्टा किसका है?"

"वो दुपट्टा वंशराज का तो होने से रहा।" शुभम ने कहा—"वो लेडिज दुपट्टे को अपने कमरे में क्यों रखेगा? कमरे में दाखिल होने के बाद वो बाहर नहीं निकला होगा! वैसे भी स्कूल का मेनगेट रात आठ बजे बन्द हो जाता है। वार्डन और प्रिंसीपल साहब की परमिशन पर ही कोई इमरजेंसी काम होने पर ही कोई स्टूडेन्ट बाहर जा सकता है। अगर वंशराज बाहर जाता भी तो फांसी के लिये डोरी खरीद कर लाता—ना कि लेडिज दुपट्टा! लेकिन मैंने वो दुपट्टा किसी भी लड़की के पास नहीं देखा। क्या तुमने देखा सुगन्धा?"

सुगन्धा की आँखें सिकुड़ चलीं तथा पेशानी पर यूं बल पड़ गये कि मानो वो दिमाग पर जोर डालकर सोचने की...याद करने की चेष्टा कर रही हो।

चहलकदमी-सी करते हुये हरीश सिंह ने सिगरेट सुलगा ली।

"नहीं...मुझे याद नहीं पड़ता! मैंने उस दुपट्टे को पहले कभी नहीं देखा। वैसे ये आश्चर्य वाली बात है कि फांसी के लिये लेडिज दुपट्टे का इस्तेमाल हुआ। भला वो दुपट्टा वंशराज भाई के कमरे में क्या कर रहा था? वो किसका है और वंशराज के कमरे में कैसे पहुंचा?"

□□□

□□□

सुगन्धा के सवाल का जवाब किसी के भी पास नहीं था—अगर होगा भी तो उसने दिया नहीं।

चारमीनार की सिगरेट सुलगा लेने पर केशव हरीश सिंह से बोला—"मैं वंशराज वाले कमरे की खिड़की को नीचे से...बाहर से देखना चाहता हूं।"

"हां, चलिये। आइये जी।" कहने पर हरीश सिंह बाहर की तरफ चल दिया।

केशव, राजन व करतार सिंह भी उसके साथ चल दिये।

हरीश सिंह तीनों को उस हिस्से में ले गया, जहां से वंशराज के कमरे वाली खिड़की दिखलाई पड़ रही थी।

उस खिड़की के जैसी ही खिड़कियां अगल-बगल के दो कमरों में भी थीं—एक ही सीध में! लेकिन उनके नीचे या ऊपर की मंजिल के कमरों में उस दिशा में कोई खिड़की नहीं थी।

वंशराज के कमरे वाली खिड़की के अगल-बगल में तो क्या...पूरे हिस्से में ही कोई रेन वाटर पाइप नहीं था। ऐसा कोई माध्यम नजर नहीं आया कि कोई उस खिड़की तक पहुंच पाता।

"ये खिड़की जमीन से लगभग चालीस फुट के करीब ऊंचाई पर होगी।" बोला हरीश सिंह, "पूरे कॉलेज में कोई सीढ़ी ही नहीं है। मैं नहीं समझता कि पूरे कोटला में इतनी लम्बी सीढ़ी मिल पायेगी। वैसे भी खिड़की की जाली इतनी मजबूत और फ्रेम के साथ वेल्ड है कि कोई भीतर दाखिल नहीं हो सकता—बाहर नहीं निकल सकता। ऐसा कुछ हुआ होता तो जाली उखड़ी हुई होती! ये सूसाइड केस ही है।"

"हमें छत पर जाना है प्रिंसीपल साहब।"

"छत पर...?" चौंका हरीश सिंह और फिर दुविधा में पड़ा हुआ बोला—"लेकिन आप छत पर क्यों जाना चाहते हैं?"

"शायद कोई पतंग कटकर छत पर गिरी हो। मुझे बचपन से ही पतंग लूटने का शौक रहा है। शायद वहां कोई पतंग मिल जाये। आइये, हमें छत पर लेकर चलिये।"

केशव की बात अटपटी-सी थी, लेकिन उसकी आवाज में गम्भीरता का पुट था।

हरीश सिंह समझ नहीं सका कि केशव की उस बात के पीछे कोई खास मतलब छिपा हुआ था कि...केशव ने यूं ही बोल दिया था?

□□□

□□□

ब्वाइज हॉस्टल की छत पर से केशव राजन, करतार सिंह व हरीश सिंह के साथ वंशराज वाले कमरे पर पहुंचा।

पुलिसवाले वंशराज की लाश को सफेद कपड़े में लपेटकर गर्म लाख से सील लगा रहे थे।

केशव ने फिंगर प्रिंट्स एक्सपर्ट को बुला लिया और उससे पूछा—"फिंगर प्रिंट्स की रिपोर्ट क्या कहती है?"

"सभी जगहों पर वंशराज के ही फिंगर प्रिंट्स पाये गये हैं पण्डित जी! सूसाइड नोट, पेन पर, स्टूल पर, उस रजिस्टर पर भी, जिससे सूसाइड नोट वाला पेज फाड़ा गया था। दरवाजे पर, भीतर की सिटकनी और कुन्डी पर भी वंशराज के ही फिंगर प्रिंट्स हैं। कहीं पर भी किसी दूसरे के फिंगर प्रिंट्स नहीं मिले हैं।"

राजन व करतार सिंह हताश दिखलाई दिये।

लेकिन केशव का चेहरा कोरे कागज-सा सपाट था। नीली आँखें भी किसी किस्म की चुगली नहीं खा रही थीं।

"नेगी साहब!" वह इन्सपेक्टर से बोला—"आप डॉक्टर साहब और डैड-बॉडी को हैलीकॉप्टर तक भेजने की व्यवस्था कीजिये—ताकि पोस्टमार्टम होने पर जल्द-से-जल्द रिपोर्ट मिल सके।"

"ठीक है...पण्डित जी।"

"प्रिंसीपल साहब...!" केशव फिर हरीश सिंह से बोला—"हमने जिस मैदान में जाकर उस खिड़की का अवलोकन किया था, वो मैदान मिट्टी वाला है। वहां पर घास वगैरा नहीं है। चपरासी और एक-दो अन्य आदमियों को बोलकर सारे मैदान पर पाइप वगैरा से इतना पानी डलवा दीजिये कि जमीन गीली हो जाये। लेकिन इतना पानी भी ना डाला जाये कि वहां पर कीचड़ हो जाये। ये काम जितनी जल्दी हो जाये...उतना ही बेहतर होगा।"

बेचारे हरीश सिंह, इंस्पेक्टर सतपाल नेगी, बाकी एक्सपर्ट टीम की तो क्या बिसात थी, राजन व करतार सिंह भी नहीं समझ पाये कि केशव मैदान को गीला क्यों करवा रहा है—इसके पीछे उसकी मंशा क्या है?

❑❑❑

❑❑❑

"दूर के ढोल और दूर से पहाड़ सुहाने लगते हैं। दूर से देखे जाने पर रेत भी पानी का भ्रम पैदा करती है। पीतल के गहने भी सोने के मालूम पड़ते हैं। हिन्दुस्तान पार्टी के बैन्ड बजे हुये थे—सो मामले को जमाने के लिये सुजाता भारती को लाया गया। उसके दादा, पिता, भाई देश के बड़े नेता रहे और देश

के लिये शहीद हो गये। सो लोगों ने सुजाता भारती को सिर माथे पर लिया—पलकों पर बिठा लिया। कुछ लोग उसे देश की भावी प्रधानमन्त्री भी बताने लगे।"

"तो क्या अब आपको नहीं लगता कि सुजाता भारती देश की अगली प्रधानमन्त्री होगी?"

अपने शानदार बंगले के लॉन में मीडिया वालों से रू-ब-रू हो रहे प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह ने सवाल करने वाली रिपोर्टर को देखा और मुस्कराने पर बोला—"कोई सवाल ही नहीं बनता मैडम! अभी तो सुजाता भारती के पी० एस० बनने के कयास लगाये जा रहे थे कि उसके बेटे ने एक मासूम लड़की की इज्जत पर हाथ डाल दिया। फिर सजा के डर से खुदकुशी कर ली।"

"लेकिन इसमें सुजाता भारती का भला क्या दोष है सर?"

"दोष क्यों नहीं है? बच्चों को अपनी मां से ही संस्कार मिलते हैं। सुजाता भारती ने अपने बेटे को अच्छे संस्कार और माहौल दिया होता तो उसका बेटा ऐसी नीच हरकत नहीं करता। अभी से ये हाल है। अगर हिन्दुस्तान पार्टी सत्ता में आ गई और सुजाता भारती प्रधानमन्त्री बन गई तो उसकी पार्टी के नेता ना जाने कौन-कौन से कुकर्म करेंगे। जो अपने बेटे को नहीं रोक पाई—वो पार्टी के नेताओं पर कैसे लगाम लगा पायेगी? उसे राजनीति का कोई अनुभव नहीं है। राजनीति के खेल में वो अनाड़ी है। जो अपना घर नहीं सम्भाल पाई—इतना बड़ा देश कैसे सम्भाल पायेगी भला?"

"लेकिन देश को तो आप भी नहीं सम्भाल पाये सर! देश में जुर्म भी बढ़ा है, महंगाई भी बढ़ी है। आतंकी घटनायें भी बढ़ी हैं। क्या आप समझते हैं कि देश की जनता आपको एक और मौका देगी?"

देवेन्द्र सिंह ने प्रश्नकर्ता रिपोर्टर को भस्म कर देने वाली नजरों से देखा—उसका काला चेहरा सुर्ख पड़ यूं ही लगने लगा कि मानो बुझ रहे कोयले को फूंक मारकर फिर से सुलगा दिया गया हो।

लेकिन!

रंग बदलने में गिरगिट को भी शर्मिन्दा करके रख दिया देवेन्द्र सिंह ने।

सामान्य होने के साथ स्याह व मोटे होठों पर उसने कृत्रिम मुस्कान का मुलम्मा चढ़ाया और विनम्रता व गम्भीर भाव से बोला–"हिन्दुस्तान पार्टी को एक शक्तिशाली देश पसन्द करता है। वो हिन्दुस्तान पार्टी को सत्ता में लाकर अपना फायदा करना चाहता है। उसी देश ने साजिश रचकर देश के हालात खराब किये और हमारी सरकार को बदनाम किया।"

"यानि आप दोबारा सत्ता में आते हैं तो वो देश गड़बड़ियां करता रहेगा और देश रसातल में चला...।"

"जी नहीं! हमें कुछ दिनों पहले ही उस देश की साजिश के बारे में जानकारी मिली, अब हम उससे होशियार हो गये हैं। दोबारा सत्ता में आने पर उसका इलाज बांध देंगे। उसे मुंह-तोड़ जवाब देंगे। देश के हालातों में सुधार किया जायेगा। आतंकी घटनाओं, भ्रष्टाचार और जुर्म पर लगाम कसी जायेगी। महंगाई घटायेंगे! गरीबों और मध्यम दर्जे के लोगों के इस्तेमाल में आने वाली तमाम वस्तुओं को सस्ता किया जायेगा। सभी को रोजगार दिया जायेगा। किसानों के कर्जे माफ कर दिये जायेंगे। हम आप लोगों के माध्यम से देश की जनता से अपील करना चाहते हैं कि हमारी पिछली कमियों को नजर अन्दाज करके सिर्फ एक मौका दें–वो भी सिर्फ एक साल के लिये। अगर सालभर में हमने देश में रामराज्य ना ला दिया तो इस्तीफा दे देंगे–साथ ही राजनीति से हमेशा के लिये संन्यास भी ले लेंगे।"

इतना बोलने पर देवेन्द्र सिंह ने हाथ जोड़ दिये।

□□□

□□□

हिन्दुस्तान पार्टी का वरिष्ठ व संसद में विपक्ष का नेता सुन्दर लाल पार्टी मुख्यालय के प्रेस-कॉन्फ्रेंस हॉल में मौजूद था।

कोई पैंसठ वर्षीय सुन्दर लाल हमेशा की तरह सफेद रंग की खादी की पैन्ट व बन्द गले के कोट में था।

गोरा चेहरा क्लीन शेव्ड!

सिर पर हंस जैसे सफेद-बुर्राक लम्बे बाल–जो फुटभर लम्बे थे।

उसने सामने मौजूद मीडिया वालों को यूं देखा कि मानो सवाल करने के लिये बोल रहा हो।

"सर! सुजाता भारती के बेटे वंशराज ने जो हरकत की है, क्या उससे सुजाता भारती के साथ-साथ आपकी पार्टी की छवि खराब नहीं हुई है? क्या सत्ता के नजदीक पहुंची पार्टी सत्ता से दूर नहीं चली गई है?"

"पहली बात तो ये कि वंशराज सुजाता भारती का बेटा जरूर था, लेकिन उसका हिन्दुस्तान पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं था। वो पार्टी का नेता या कार्यकर्ता नहीं था! दूसरी बात ये कि उसने जो कुछ भी किया, उसके लिये सुजाता भारती या पार्टी कतई भी जिम्मेदार नहीं है। वंशराज वाले मामले को पार्टी के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिये। सुजाता भारती समेत पार्टी के तमाम नेता निर्दोष, जिम्मेदार और समझदार हैं। सभी देश की वर्तमान स्थिति से व्यथित हैं...दुखी हैं और देश के हालात सुधारने को कृत संकल्प हैं। देश की जनता नादान नहीं है कि वंशराज के कृत्य के लिये हिन्दुस्तान पार्टी या सुजाता भारती को दोषी मानेगी! इन्डियन पब्लिक पार्टी से तो हर कोई दुखी है ही! रहा सवाल तीसरे मोर्चे का...तो उसके कई नेता दागी हैं। कई नेता अभी से खुद को प्रधानमन्त्री पद का दावेदार बताने लगे हैं। अगर वो सत्ता में आ गये तो प्रधानमन्त्री पद के लिये ही झगड़ेंगे। प्रधानमन्त्री तो एक ही व्यक्ति बन सकता है। बाकी के लोग उसकी टांग खींचेंगे। उसे अयोग्य और निकम्मा साबित करने के लिये साजिश रचेंगे। यानि किसी का ध्यान भी देश की समस्याओं की तरफ ना होगा। कुल मिलाकर हमारी पार्टी के अलावा देश की जनता के सामने दूसरा कोई विकल्प ही नहीं है।"

"आपकी पार्टी में भी प्रधानमन्त्री पद के लिये दो नाम उछल रहे हैं। आप पार्टी के सांसदों के नेता हैं और सबसे वरिष्ठ और अनुभवी नेता हैं। लेकिन लोग सुजाता भारती जी को पसन्द कर रहे हैं। उनकी रैलियों में भीड़ का सैलाब उमड़ा है। पार्टी किसे प्रधानमन्त्री के रूप में चुनेगी? आपको...या सुजाता भारती जी को?"

एकदम से जवाब ना दिया सुन्दर लाल ने!

कुछ पलों तक विचार-मग्न रहने पर वो विनम्रता व शालीनता के साथ बोला—"मैं पद का लालची नहीं हूं। मैं तो सिर्फ देश हित चाहता हूं। पार्टी के सांसद जिसे भी नेता के रूप में चुनेंगे—वो ही प्रधानमन्त्री बन जायेगा। फिलहाल तो जवान और इकलौते बेटे की मौत से सुजाता भारती की तबियत बहुत खराब है। उसे आराम की सख्त जरूरत है। पार्टी की तमाम जिम्मेदारियां मैं अपने कंधों पर लेने जा रहा हूं। वंशराज के अन्तिम-संस्कार के बाद प्रचार-प्रसार के लिये निकल जाऊंगा। बाकी...होगा वो ही...जो देश की जनता चाहेगी। जनता ही जज है। अब मैं इजाजत चाहूंगा। सुजाता बेटी के पास जाना है! आप लोग भी ईश्वर से प्रार्थना कीजिये कि वो जल्दी ही स्वस्थ हो जायें और इस सदमे से जल्द-से-जल्द उबर जायें।"





हॉल कमरे में तीसरे मोर्चे 'मजदूर, गरीब, किसान पार्टी' में सम्मलित तमाम छोटी-बड़ी पार्टियों के अध्यक्ष जमा थे।

सभी पी रहे थे—

शराब भी...सिगरेट भी।

इन्डियन पब्लिक पार्टी से निकलकर आया और मोर्चे का संयोजक मोहन लाल शराब की घूंट के साथ सिगरेट का भी कश मारने पर बोला—"हम लोगों ने जश्न की शुरूआत कर दी है। ये जश्न कम-से-कम पांच साल तक चलेगा।"

"मोहन लाल जी! क्या वाकई में हमारा मोर्चा सत्ता में आने वाला है...हमारी सरकार बनने जा रही है?"

"तुम्हें अभी भी कोई शक है काली चरण? कौन माई का लाल हमें सत्ता में आने से रोक सकता है? देवेन्द्र सिंह के तो बाजे बजे हुये हैं। देशभर में उसका और उसकी पार्टी का विरोध हो रहा है। हिन्दुस्तान पार्टी पर सुजाता भारती के आने से बहार आई थी! लेकिन उसके बेटे ने सारा खेल बिगाड़ दिया।"

"कहीं ऐसा ना हो कि वो बेटे की मौत से सिम्पैथी वोट लेकर सत्ता में पहुंच जायें?"

"क्या जगदीश भाई...!" बुरा-सा मुंह बनाकर बोला

मोहनलाल, "राजनीति के पुराने खिलाड़ी होने पर भी बच्चों के जैसी बात कर रहे हो। सुजाता भारती के लौंडे ने सरहद पर जंग लड़कर शहादत हासिल नहीं की है कि उसे सिम्पैथी मिलेगी। वंशराज ने बलात्कार की कोशिश की थी और भांडा फूटने पर खुदकुशी कर ली। सारा देश सुजाता भारती पर थू-थू करेगा। उसे बलात्कारी की मां बोलकर दुत्कारेगा। हिन्दुस्तान पार्टी के तमाम प्रत्याशियों की जमानत जब्त होगी। फिर हमारा मोर्चा ही तो बचता है। सारा दूध और दूध पर जमी मलाई हमी को मिलेगी। पूर्ण बहुमत मिलेगा हमें। हमारे प्रत्याशी दूसरी पार्टी के प्रत्याशियों का सूपड़ा साफ कर देंगे। दो-तिहाई से ज्यादा बहुमत मिलेगा और देश में वो ही होगा, जो हम चाहेंगे। संसद के दोनों सदनों में हमारे तमाम प्रस्ताव बिना किसी रुकावट के पास होंगे। हम पुराने कानूनों की जगह नये कानून भी बना सकेंगे। विपक्ष इतना कमजोर होगा कि कोई 'चू...चा' नहीं होगी। जश्न मनाओ...यारो...।"

"ल...लेकिन...," एक नेता झिझकते हुये बोला—"अगर ये तय हो जाये कि प्रधानमन्त्री कौन बनेगा...तो ज्यादा बेहतर होगा। बाद में झगड़े होंगे तो ये हम सभी के लिये नुकसानदायी होगा।"

माहौल में खामोशी छा गई।

"लॉटरी सिस्टम से तय कर लेते हैं।"

"नहीं, बिल्कुल नहीं!" मोहन लाल तपाक से बोला—"ये तो जुए वाली बात होगी।"

"तो फिर एक काम करते हैं।" एक नेता ने प्रस्ताव रखा—"मोर्चे में पांच पार्टियां हैं। पांचों के नेताओं को थोड़े-थोड़े समय के लिये प्रधानमन्त्री बनने का मौका दिया जाये। पर्चियां डालकर तय कर लिया जाये कि पहले कौन प्रधानमन्त्री बनेगा, उसके बाद कौन बनेगा।"

"नहीं भई...ये बच्चों का खेल नहीं है। प्रधानमन्त्री के कन्धों पर पूरे देश की जिम्मेदारी होती है।" बोतल से गिलास में शराब उंडेलते हुये बोला मोहनलाल—"हम लोग ये तो तय कर ही चुके हैं कि किस पार्टी के कितने कन्डीडेट चुनाव लड़ेंगे और कहां से लड़ेंगे। जिस पार्टी के सबसे ज्यादा सांसद

बनेंगे—उसी पार्टी का नेता देश का प्रधानमन्त्री बनेगा। दूसरे नम्बर की पार्टी का नेता उप-प्रधानमन्त्री बनेगा, तीसरी पार्टी का नेता होम मिनिस्टर बनेगा! चौथी का रेल मन्त्री और पांचवीं का नेता रक्षा मन्त्री बन जायेगा। सांसदों के अनुपात से ही बाकी के मन्त्री पदों का बंटवारा हो जायेगा। कोई प्रधानमन्त्री बने या दूसरा कोई मन्त्री—लेकिन कमाई में सभी का हिस्सा होगा। सांसदों के अनुपात से ही कमाई का बंटवारा होगा। हम सभी की सातों पुश्तें तक तर जायेंगी। इतना कमा लेंगे कि आने वाली पीढ़ियां घर में बैठकर खायेंगी...ऐश करेंगी, अब कमर कस लें और मैदान में कूद पड़ो! जरा-सी भी लापरवाही नहीं करनी है। ज्यादा-से-ज्यादा सीटें हासिल करने के लिये पूरी भागा-दौड़ी करनी होगी। अभी तो जश्न मनाओ। खाओ-पीओ...मौज उड़ाओ।"

❑❑❑
❑❑❑

प्रिंसीपल हरीश सिंह ने मैदान को गीला करने के लिये स्कूल के चार कर्मचारियों को लगाया था।

पूरे मैदान को गीला होने में घण्टाभर लगा। इस बीच वंशराज की लाश को डॉक्टर के साथ हैलीकॉप्टर द्वारा पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया गया था—साथ में एक सब-इन्सपेक्टर और एक सिपाही भी गया था।

मैदान के गीला हो जाने पर केशव ने हरीश सिंह से कहा कि वो कॉलेज के तमाम टीचर्स, स्टाफ के लोगों के साथ सभी स्टूडेन्ट्स को भी मैदान में बुलवा लें। हरीश सिंह ने अपने ऑफिस से माइक पर बोलकर सभी को ब्वाय हॉस्टल के पीछे वाले मैदान में चले आने को बोल दिया।

स्कूल के तमाम हिस्सों में लगे स्पीकर्स के जरिये सभी तक उसका मैसेज पहुंच गया।

टीचर्स समेत स्कूल का समूचा स्टाफ और तमाम स्टूडेन्ट्स आने लगे।

सुगन्धा व शुभम के साथ उदयराज भी आ पहुंचा!

मान्यता व सोमेश भी थे।

केशव ने सभी छात्र-छात्राओं से कहा कि वो एक-एक

मीटर के गैप पर लाइन बनाकर खड़े हो जायें। सभी स्टूडेन्ट्स बीस कतारों में खड़े हो गये। उनके सामने भी एक कतार थी, जिसमें केशव, राजन, करतार सिंह, उदयराज, हरीश सिंह, इन्सपेक्टर सतपाल नेगी और स्कूल के तमाम टीचर्स व अन्य कर्मचारी सम्मलित थे।

किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। केशव ने मैदान को गीला करवाकर सभी लोगों को वहां क्यों इकट्ठा किया है?

उसकी मंशा क्या है?

उसके इरादे क्या हैं?

मामला तो राजन व करतार सिंह की भी समझ में नहीं आ रहा था—लेकिन इतना अन्दाज तो दोनों ने लगा ही लिया था कि 'दिमाग का जादूगर' कोई धमाका करने जा रहा है।

ये मालूम नहीं कि वो धमाका क्या होगा?

❑❑❑
❑❑❑

चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली केशव ने और कश लगाते हुये मौजूद तमाम लोगों के चेहरों का अध्ययन-सा करने लगा।

कई लोगों के चेहरों पर तनाव व्याप्त था।

कौतूहलता व दुविधा की 'गैस' ने माहौल को काफी बोझिल कर दिया था।

कई दिलों की धड़कनें अनियन्त्रित थीं।

कई कनपटियों पर डंके की चोट-सी पड़ रही थी।

कई जिव्हायें बार-बार मुंह से बाहर निकलकर सूखते होठों को गीला करतीं और वापिस मुंह में चली जातीं।

ज्यों-ज्यों वक्त बीत रहा था, त्यों-त्यों व्यग्रता, दुविधा व व्याकुलता बढ़ी जा रही थी।

केशव ने अपनी अगल-बगल में खड़े लोगों से कहा—"सभी एक-एक कदम पीछे हट जायें।"

बोलने के साथ वो स्वयं भी एक कदम पीछे हट गया।

फिर राजन, करतार सिंह, उदयराज, हरीश सिंह, सतपाल नेगी समेत सभी लोग एक-एक कदम पीछे हट गये।

कोई नहीं समझ पा रहा था कि झील-सी नीली आँखों वाला क्या 'खेल' खेल रहा था?

"आप सभी लोग...!" केशव तेज आवाज में सामने मौजूद स्टूडेन्ट्स से बोला—"अपने बायें हाथ की तरफ एक-एक कदम सरक जायें।"

सभी स्टूडेन्ट्स ने केशव की आज्ञा का पालन किया।

कतारें अभी भी बीस ही थीं, लेकिन उनका स्थान परिवर्तित हो गया था।

केशव ने कोट की भीतरी जेब से मेग्नीफाइंग गिलास निकाला और गीली जमीन पर उभरे सभी फुटमार्क्स को ध्यान पूर्वक देखने लगा।

राजन व करतार सिंह मुस्कराये।

मुस्कराने की वजह ये थी कि उनकी समझ में केशव का 'खेल' आ गया था।

सभी के पैरों या जूते-चप्पलों, सैन्डलों की छाप देख चुकने पर केशव ने हाथ के इशारे से राजन व करतार सिंह को अपने पास बुलाया और फिर दोनों की गर्दनों में बाहें डालकर फुसफुसाते हुये ना जाने क्या बात करने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

केशव की बात पूरी होने पर राजन व करतार सिंह ने यूं सिर हिलाये कि केशव की बातों को बढ़िया तरीके से समझ चुके हों।

फिर राजन और करतार सिंह वहां से चले गये।

किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

"आप लोगों को थोड़ा वक्त यहीं पर गुजारना होगा...!" केशव तेज आवाज में सभी से बोला—"मैंने राजन और करतार सिंह को जरूरी काम से भेजा है। आप लोग चाहें तो दूसरे लॉन में चलकर बैठ सकते हैं। इस गीले मैदान में तो बैठा नहीं जा सकता। चलिये, उस लॉन में चलते हैं, जो दोनों हॉस्टल्स के बीच है।"

"ल...लेकिन...!" प्रिंसीपल हरीश सिंह झिझकते हुये बोला—"ये सब हो क्या रहा है पण्डित जी? मेरी समझ में कुछ

भी नहीं आ रहा है। आपने पहले मैदान को गीला करवाया और फिर सभी को यहां बुलवा लिया। सभी को खड़ा किया, फिर जगह बदलकर खड़े होने को कहा। आपने मेग्नीफाइंग ग्लास से सभी के पैरों के जूतों, चप्पलों या सैन्डल्स के निशान देखे!"

केशव ने पहले चारमीनार मार्का वाली सिगरेट सुलगाकर गहरा कश खींचा, फिर मुंह से धुएं के ढेर सारे छल्ले उगले, फिर हरीश सिंह की व्याकुलताभरी आंखों में देखते हुये बोला—"इतना तो आपको समझ ही जाना चाहिये कि मैंने सभी के फुटमार्क्स लेने और देखने के लिये मैदान को गीला करवाया था और सभी को यहां बुलवाया था।"

"ल...लेकिन फुटमार्क्स क्यों? मेरा मतलब है कि ये बात तो साबित हो चुकी है कि वंशराज ने मान्यता की इज्जत पर हाथ डाला था और फिर उसने खुदकुशी कर ली। दरवाजा भीतर से बन्द था। आपने ये भी माना कि सूसाइड नोट वंशराज का ही लिखा हुआ है। एक्सपर्ट के मुताबिक कमरे में सिर्फ वंशराज के ही फिंगर प्रिंट्स और फुटमार्क्स हैं। वंशराज के गले पर सिर्फ फांसी के फन्दे वाले ही निशान पाये गये हैं। फिर ये फुटमार्क्स वाला खेल किसलिये...पण्डित जी...?"

"क्योंकि मुझे एक खास फुटमार्क की तलाश थी। जैसी कि मुझे उम्मीद भी थी...मुझे वो फुटमार्क्स मिल भी गया है।"

बहुत से लोग चौंके।

"लेकिन...उस फुटमार्क्स का वंशराज की खुदकुशी से क्या मतलब-वास्ता हो सकता है पण्डित जी...?"

इस बार सवाल किया सतपाल नेगी ने!

सिगरेट में कश लगाकर और धुएं के छल्ले छोड़ने पर केशव अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ बोला—"अगर मतलब-वास्ता ना होता तो...मुझे इतनी कवायद करने की भला क्या जरूरत थी नेगी साहब?"

"मतलब?"

"मतलब ये कि!" तेज आवाज में ही बोला केशव, "वंशराज ने खुदकुशी नहीं की—उसकी हत्या की गई है...उसका कत्ल हुआ है।"



केशव के मुख से मानो शब्द नहीं, जहरीले बिच्छू ही निकले हों—

हर कोई चौंका—सभी चिंहुके!

आंखें फटी-की-फटी—

मुंह खुले-के-खुले—

आँखें मानो तालाब बन गईं और उनमें आश्चर्य की मछलियां, अविश्वास के कछुए छप्पक-छप्पक करने लगे।

सबसे बुरा हाल था मान्यता व सोमेश का—

उनके चेहरों पर पतंगें-सी उड़ने लगीं।

आँखों में ऐसे ही भाव थे कि मानो किसी मुर्दे को कब्र फाड़कर बाहर निकलते देख रहे हों। जिस्म के तमाम रोम-छिद्र मानो पसीने से होली खेल रहे थे।

जिस्म यूं कांप रहे थे कि मानो उन्हें काफी देर तक बर्फ में दबाकर रखा गया हो।

सूख चले होठों को जिव्हा ने सहलाकर मानो सांत्वना देने की चेष्टा की हो।

मानो अचानक ही शेरों के झुन्ड से आमना-सामना हो गया हो और दिल ने थैली में बन्द कर दिये गये बन्दर के बच्चे की मानिन्द उछल-कूद मचानी शुरू कर दी हो।

नसों में कछुए की रफ्तार से रेंगता लहू मानो हिरण की मानिन्द ही कुलांचें भरने लगा हो।

"ये...ये आप...क...क्या कह रहे हैं प...पण्डित जी...!" हक्का-बक्का-सा हरीश सिंह रूमाल से पेशानी का पसीना पोंछते हुये बोला, "कहीं आप...मजाक तो नहीं कर रहे...?"

"ये माहौल मजाक करने का नहीं है प्रिंसीपल साहब!" केशव कांच के पिसे हुये चूरन जैसी खुरदुरी व सूखी-सी आवाज में ही बोला, "एक जवान लड़के की मौत हुई है, जो मुझे 'मामा जी' बोला करता था। मुझे अपने बेटे के जितना ही प्यारा था।"

"तो कहीं...आप भावुक होकर ही तो...।"

"मैं भावुक होकर उल्टी-सीधी बात करने वालों में से नहीं

हूं प्रिंसीपल साहब! मैं हकीकत के धरातल पर खड़ा होकर बोलने वाला बन्दा हूं। मुझसे ऐसी उम्मीद नहीं करनी चाहिये कि मैं ऐसे ही झूठा दावा कर दूंगा। अगर मैंने कहा है कि वंशराज का कत्ल हुआ है...तो हुआ है...।"

"मैं...मैं जानता था कि...मेरा बेटा खुदकुशी नहीं कर सकता...।" उदयराज रोते हुये बोला, "वो...वो बुजदिल नहीं था। वो कठिन-से-कठिन हालातों का सामना करने में सक्षम था। मेरा ये भी विश्वास है कि उसने उस लड़की की इज्जत पर हाथ नहीं डाला होगा। इस लड़की को मेरे हवाले कर दो—उस लड़के को भी...।" वह मान्यता व सोमेश को जलाकर राख कर देने वाली नजरों से घूरते हुये बोला—"इन्हें बैसाखियों से ठोकूंगा तो ये हकीकत उगल देंगे।"

मान्यता व सोमेश सहमकर कई कदम पीछे हट गये और थूक-सा सटकने लगे।

"नहीं ए० सी० पी० साहब!" केशव उदयराज के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—"मत भूलिये कि आप एक पिता होने के साथ-साथ रिटायर्ड पुलिस अफसर भी हैं।"

"भगवान के लिये तो बोल दीजिये पण्डित जी...कि मेरे बेटे ने बलात्कार की कोशिश नहीं की थी—वो वीडियो फिल्म झूठी है...नकली है।"

"अभी मैंने राजन, करतार सिंह को भेजा है। उन्हें जरूरी काम सौंपा है। कुछ सवालों के जवाब मेरे पास भी नहीं हैं। लेकिन ये तय है कि वंशराज ने खुदकुशी नहीं की थी।"

"ल...लेकिन...ऐसा कैसे हो सकता है पण्डित जी...?" इंस्पेक्टर सतपाल नेगी दुविधा व कौतूहलता के झूले झूलते हुये बोला—"कमरा भीतर से बन्द था और आपने ये भी माना कि सूसाइड नोट वंशराज का ही लिखा हुआ है। फिर ये कैसे हो सकता है कि उसका कत्ल हुआ है? उसके गले पर सिर्फ फांसी वाले फन्दे के ही निशान हैं।"

केशव ने पहले चारमीनार वाली सिगरेट सुलगाई और फिर कहा—"बस...थोड़ा-सा इन्तजार कीजिये नेगी साहब! आपके सामने मुजरिम को पेश करूंगा मैं। फिर वो स्वयं अपने श्री मुख से सभी सवालों के जवाब देगा! वो बतलायेगा कि उसने वंशराज

के साथ यह सारा खेल क्यों, किसलिये...और कैसे खेला? उसका प्लान क्या था?"

❑❑❑

❑❑❑

"फिर तो मैं इस लड़की मान्यता और उस सोमेश को गिरफ्तार कर लेता हूं। दो-चार हाथ लगते ही ये अपना जुर्म कबूल कर लेंगे और सारी बातें बताते चले जायेंगे।"

कहने पर सतपाल नेगी ने मान्यता व सोमेश को अंगारा-सी दहकती आँखों से देखा तो दोनों के चेहरों पर मुलतानी मिट्टी का लेप-सा चढ़ता चला गया। दोनों की नजरें ही नहीं, सिर भी झुक गये।

कभी वो थूक सटकते—कभी सूखते जा रहे होठों पर जुबान फिराते।

"नहीं, अभी कुछ नहीं करना है...!" दोनों की तरफ बढ़ने को आतुर सतपाल नेगी का हाथ पकड़कर बोला केशव—"ये दोनों तो मोहरे हैं, इनके जरिये खेल खेलने वाला खिलाड़ी तो कोई और ही है। ये दोनों तो स्क्रिप्ट के मुताबिक अपने-अपने रोल प्ले कर रहे थे। स्क्रिप्ट राइटर और इस वारदात की पूरी फिल्म का निर्माता-निर्देशक तो कोई और ही है।"

सभी चौंके!

मान्यता व सोमेश को छोड़कर बाकी लोग दूसरे लोगों की तरफ यूं देखने लगे कि मुजरिम को पहचानने की चेष्टा कर रहे हों।

लेकिन मुजरिम भी पूरा शातिर था, घाघ था! दूसरे लोगों की मानिन्द वो भी दूसरों की तरफ यूं देख रहा था कि मानो मुजरिम को पहचानने की चेष्टा कर रहा हो।

यानि वो केशव को छोड़ किसी दूसरे की पकड़ाई में आकर नहीं दे रहा था।

"मैं...मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा...।" बैसाखियों के सहारे खड़े उदयराज की आँखों के आँसू मानो लावे में परिवर्तित हो गये और चेहरा ज्वालामुखी का मुहाना बन गया हो। मुट्ठियों को कसकर भींचे हुए वो मुंह से अंगारे-से दहकते शब्द उगलने

लगा, "उसकी बोटी-बोटी कर डालूंगा और गिद्धों को खिला दूंगा। उसके गन्दे खून की एक-एक बूंद को निचोड़कर नाली में बहा दूंगा। उसकी हड्डियों तक का चूरा करके गटर में बहा दूंगा। वो हरामजादा मेरे कहर और इन्तकाम से नहीं बच पायेगा। भगवान के लिये मुझे उसकी शक्ल दिखला दो पण्डित जी जो राक्षस बनकर मेरे बच्चे को खा गया। मुझे बतलाइये कि मेरे वंशराज का कातिल कौन है?"

❑❑❑

❑❑❑

उदयराज का रौद्र रूप देखकर केशव को छोड़ हर कोई सहम-सा उठा।

क्रोधातिरेक थर-थर कांपते उदयराज के चेहरे पर मानो लावे की सुनामी ने आक्रमण बोल दिया था।

उसकी आँखों में साक्षात मौत ही नाच रही थी। फूलते-पिचकते नथुनों से मानो तबाही का तूफान ही निकल रहा था।

केशव ने उसके बुरी तरह कांपते कन्धों को पकड़ा और समझाने वाले अन्दाज में बोला—"कन्ट्रोल योर सेल्फ...ए० सी० पी० साहब! खुद पर नियन्त्रण...मैं जानता हूं कि आपके दिल और दिमाग पर कैसी बीत रही हैं। वंशराज मुझे भी प्यारा था! उसकी मौत...हत्या ने मुझे भी हिलाकर रख दिया है। मेरा भी दिल चाह रहा है कि वंशराज के कातिल को बुरी मौत मार डालूं। लेकिन...हमें दिल पर सब्र का पत्थर रखना ही होगा—कानून का सम्मान करना ही होगा। वो मेरे आसपास ही है...बहुत करीब है। लेकिन मैं खून की घूंट-सी भर रहा हूं। उसे कानून के हवाले किया जायेगा...।"

"नहीं! उसे मेरे हाथों मरना होगा।"

"नहीं! उसे कानून ही सजा देगा ए० सी० पी० साहब!"

"ये...ये नहीं होगा! उसने मेरे बेटे की जान ली है—कानून के बेटे की नहीं...!" क्रोधातिरेक उदयराज दमे के मरीज की मानिन्द ही हांफ रहा था।

"आपको वंशराज की सौगन्ध है। आप अपना आपा नहीं

खोयेंगे। कातिल को स्पर्श भी नहीं करेंगे। मैं आपको वंशराज की सौगन्ध दे रहा हूं।"

यकायक ही फफक-फफककर रो दिया उदयराज और केशव की कोहली भर ली।

उसकी बैसाखियां नीचे जा गिरीं!

केशव उसकी पीठ सहलाते हुये तसल्ली देने लगा! स्वयं उसकी भी आंखें गीली थीं।

बाकी लोग अचम्भित थे—सस्पैंस की झील में 'छप्पक-छप्पक' करते दिमाग से परेशान थे—केशव ने दावा किया था कि वंशराज ने खुदकुशी नहीं की, बल्कि उसका कत्ल किया गया है।

कातिल कौन है—ये सवाल तो था ही- साथ ही ये भी सवाल व्याकुल कर रहा था कि कातिल ने किस तरीके से वंशराज को कत्ल किया कि हर कोई ये मानने को मजबूर हो गया कि वंशराज ने खुदकुशी ही की है?

❑❑❑
❑❑❑

कातिल को छोड़ बाकी सभी व्याकुलता के साथ उन लम्हों का इन्तजार कर रहे थे—जब कातिल को सामने आना था और तमाम पहेलियां हल हो जानी थीं।

कुछ देर पश्चात् ही राजन व करतार सिंह वापिस लौट आये।

उन्होंने फुसफुसाती आवाज में केशव को कुछ बतलाया तो केशव ने यूं चुटकी बजाई कि मानो उसके दिमाग में घुमड़ रही कोई पहेली सोल्व हो चुकी हो।

उसने चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली तथा एक कश मारने पर बोला—"मान्यता, सोमेश! इधर मेरे करीब आओ।"

दोनों यूं ही सहम उठे कि मानो कसाई ने उन्हें हलाल करने के लिये अपने पास बुलाया हो।

"जाते क्यों नहीं हो कमीनों...?" काफी देर से दोनों को

घूर रहा शुभम सुलगी-सी आवाज में बोला, "पण्डित जी बुला रहे हैं। जाते क्यों नहीं हो?"

शुभम के पीछे ही खड़ी सुगन्धा आँखों में लावा-सा भरे हुये बोली—"अब गूंगी का गुड़ खाये क्यों खड़े हो कमीनों? कल तो कुत्ते-कुत्ती की तरह भौंक-भौंककर मेरे भाई पर इल्जाम लगा रहे थे।"

"मैंने...मैंने वंशराज पर कोई झूठा इल्जाम नहीं लगाया था।" मान्यता सिर झुकाये हुये बोली, "सोमेश की बनाई वो फिल्म इस बात का सबूत है कि...!"

"बिल्कुल...!" सोमेश भी तपाक से बोला—"मैंने खिड़की के बाहर से वो फिल्म बनाई थी! अगर कोई भी उस फिल्म को नकली साबित कर दे तो...मैं कोई भी सजा भुगतने को तैयार हूं।"

"तुम दोनों अगर सच्चे हो तो इतनी हालत खराब क्यों है तुम दोनों की? पसीने क्यों छूट रहे हैं?"

कहने पर शुभम ने सोमेश व मान्यता के हाथ पकड़े और उन्हें खींचते हुये केशव के पास ले गया और क्रोध से भरा हुआ बोला—"इन दोनों से सख्ती से पेश आइये पण्डित जी! मुझे शुरू से ही लग रहा था कि कोई-ना-कोई गड़बड़ी है। मेरा यार, मेरा भाई ऐसी नीच हरकत कर ही नहीं सकता था! हां, उस फिल्म ने मुझे थोड़ा विचलित जरूर कर दिया था! ये दोनों भी साजिश के भागीदार हैं। इनसे पूछिये कि इन्होंने किसके कहने पर वंशराज के खिलाफ गन्दा खेल खेला? ये दोनों ही बतलायेंगे कि असली मुजरिम कौन है?"

❑❑❑
❑❑❑

चारमीनार की सिगरेट सुलगा लेने पर केशव डरी-सहमी-सी मान्यता की परिक्रमा करते हुये सर्द से लहजे में बोला—"प्रिंसीपल साहब से मैंने तुम्हारे और सोमेश के बारे में जानकारी ली। तुम्हारे मम्मी-डैडी नोयडा के स्कूल में चपरासी और चपरासिन हैं। वो गाजियाबाद की एक बस्ती में किराये के छोटे से...एक कमरे वाले मकान में रहते हैं। तुम पिछड़े वर्ग से हो। आरक्षण

के तहत ही तुम्हारा इस स्कूल में एडमिशन हुआ था। एन्ट्रेस टेस्ट में कम मार्क्स लाने पर भी तुम्हें एडमिशन मिल गया था। दिल्ली की एक सरकारी संस्था तुम्हारी पढ़ाई का खर्चा उठाती है। वरना तुम्हारे मां-बाप तो तुम्हें आगे पढ़ाना ही नहीं चाहते थे—उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। राजन और करतार सिंह ने तुम्हारे कमरे की तलाशी ली। आलमारी में एक लाख रुपये रखे हुये हैं। पांच-पांच सौ के नोटों वाली दो नई-नकोर गड्डियां! ये मत कहना कि किसी ने वो गड्डियां रख दी होंगी। उन पर तुम्हारे और तुमको रकम देने वाले के फिंगर प्रिंट्स मिल जायेंगे। क्या बतला सकती हो कि इतनी बड़ी रकम तुम्हारे पास कहां से आ गई? झूठ मत बोलना। तुम्हारे जवाब की पुष्टि के लिये छानबीन करूंगा तो झूठ सामने आ जायेगा।"

मान्यता की हालत खराब!

पसीने से जिस्म तो पसीजा हुआ था ही—अब तो कपड़े भी तर-ब-तर हो चले।

चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"साढ़े गुरु जी दा नां केशव पण्डित है ऐ मुटियार।" करतार सिंह मानो गुर्राकर बोला "इनके सामणे वड्डे-वड्डे मुजरिम नी टिक सकदे—फेर तेरी की बिसात है? क्यों फजीता करा रही है? बोल दे, बतला दे, सस्ते में छूट जायेगी। हुण बचणे दा कोई रास्ता नी बचया है।"

मान्यता हथेलियां में चेहरा ढांपकर रोने लगी!

"बोलती क्यों नहीं हरामजादी?" काफी देर से सब्र की घूंट भर रहे उदयराज ने मान्यता की गर्दन दबोच ली और उसे झूला-सा झुलाते हुये दहाड़ा—"मेरे बच्चे को खा गई तू कमीनी! बोल...नहीं तो यहीं पर तेरा खात्मा कर...छोड़ो...छोड़ो मुझे...।"

केशव का इशारा होने पर राजन व करतार सिंह ने उदयवीर को मान्यता से अलग किया और खींचते हुये परे ले गये।

मान्यता खांसते हुये गला मलने लगी।

उसकी सुर्ख हो चली आंखों में पानी भर आया।

"ए० सी० पी० साहब को प्रिंसीपल साहब के क्वार्टर में ले जाओ शुभम! उन्हें आराम की जरूरत है।"

"जी, पण्डित जी...!" कहने पर शुभम ने जमीन पर पड़ी बैसाखियां उठाकर उदयवीर की बगलों में लगाईं और फिर उसे प्रिंसीपल हरीश सिंह के क्वार्टर की तरफ ले गया।

"तुमने स्कूल के स्टूडेन्ट्स और टीचर स्टाफ के सामने वंशराज पर इल्जाम लगाया था मान्यता!" केशव सिगरेट का धुंआ उड़ाते हुये बोला—"बचने की जरा-सी भी गुंजाईश नहीं रही! तुम सभी के सामने बतलाओगी कि असल किस्सा क्या है?"

❑❑❑

❑❑❑

"ओ...ओह...!" अचानक ही हरीश सिंह ने हथेलियों से पेट दबोच लिया और कराहते हुये बोला, "पेट में तेज दर्द उठा है। पहले भी उठता रहा है। दवाई है। मैं दवा लेकर आता हूं।"

"हां, आप जाइये प्रिंसीपल साहब! जब तक रिलीफ ना मिले...आराम कीजिये। मैं आपको इस केस की सारी जानकारी बाद में दे दूंगा।"

हरीश सिंह पेट पकड़े हुये और कराहते हुये वहां से चला तो केशव राजन से बोला—"प्रिंसीपल साहब के साथ जाओ। इनकी तबियत ज्यादा खराब लग रही...।"

"न...नहीं...मैं चला जाऊंगा।"

"कोई बात नहीं प्रिंसीपल साहब!" राजन हरीश सिंह को पकड़कर बोला—"मैं आपके साथ चलता हूं। अगर तबियत ठीक ना हुई तो फोन करके डॉक्टर को बुला लूंगा। वहां पर ए० सी० पी० साहब भी हैं। उन्हें भी धैर्य बन्धाना है—समझाना है।"

हरीश सिंह मना करता रहा, लेकिन राजन उसके साथ जाकर ही माना।

केशव ने मान्यता की ठोडी पकड़कर उसका चेहरा ऊपर

उठाया और बोला—"नजरें चुराने से बात नहीं बनने वाली। इधर...मेरी तरफ देखो।"

मान्यता ने केशव की तरफ देखा तो झील-सी नीली आंखों का सम्मोहन चल गया! उसे लगा कि वो अपनी सुध-बुध खो रही है—उसका अपने दिमाग पर कन्ट्रोल नहीं रहा है।

वो गैस के गुब्बारे की मानिन्द हल्की होकर हवा में उड़ रही है।

"तुम्हें एकदम सच बोलना है।" मान्यता की आंखों में झांकते केशव की आवाज मानो किसी गहरे कुएं से निकल रही थी—"बोलो, सच्चाई क्या है? क्या वंशराज ने तुम्हारी इज्जत लूटने की चेष्टा की थी?"

"न...नहीं...!"

मान्यता के जवाब ने सोमेश को ही नहीं, बाकी लोगों को भी चिहुंका दिया...हैरानी में डाल दिया।

"क्या बोल रही है ये लड़की...?" इन्सपेक्टर सतपाल नेगी हैरान-परेशान-सा बुदबुदाया, "अगर वंशराज ने इसके साथ बलात्कार की कोशिश नहीं की थी तो...क्या वो वीडियो फिल्म नकली थी?"

"तो फिर...!" खोई-खोई उनींदी-सी मान्यता से पूछा केशव ने—"हकीकत क्या है?"

मान्यता बतलाने लगी।

सोमेश लुटा-पिटा-सा नजर आने लगा।

जबकि बाकी लोग हैरानी के तालाब में डुबकियां लगा रहे थे।

सुर्ख चेहरे वाली सुगन्धा मुट्ठियों के साथ जबड़ों को भी भींचे हुये मान्यता को यूं घूर रही थी कि मौका मिलते ही उसका कत्ल कर देगी।

❑❑❑

❑❑❑

"तुम्हारे बारे में भी जानकारी निकाली मैंने।" केशव लुटे-पिटे से सोमेश के सामने पहुंचकर बोला, "तुम्हारे डैडी बैंक में क्लर्क हैं। चार बेटियां होने की वजह से वो तुम्हें इस

स्कूल में पढ़ाने की हैसियत नहीं रखते थे! लेकिन तुम मान्यता से मुहब्बत करते थे और मान्यता ने यहां एडमिशन ले लिया था, तुमने यहीं पढ़ने की जिद की—आत्महत्या करने की धमकी तक दे डाली थी। तब तुम्हारे पिता ने मजबूर होकर बैंक से लोन लेकर तुम्हें यहां एडमिशन दिलाया और अपने खर्चों में कटौती की। चारों बेटियों को इंग्लिश मीडियम स्कूल से हटाकर सरकारी स्कूल में एडमिशन दिलाया। घर का खर्चा बामुश्किल चलता है जबकि तुमने ये बतलाया था कि चालीस हजार रुपये कीमत का वो हैन्डीकैम तुम्हारे मम्मी-डैडी ने तुम्हें बर्थ डे पर गिफ्ट किया था। स्कूल के कागजों के मुताबिक तुम्हारी डेट ऑफ बर्थ उन्नीस मई है। यानि तुम्हारा बर्थ डे दस महीने पहले पड़ा था। जबकि वो कैमरा एकदम नया है। हफ्ते-दस दिन के भीतर ही खरीदा गया है। इसके अलावा तुम्हारे कमरे में साठ हजार रुपये भी रखे मिले हैं। वैसे भी मान्यता ने सब कुछ बतला दिया है। फिर भी मैं तुम्हारे मुंह से सुनना चाहूंगा।"

"बोलता है कि नहीं...?" करतार सिंह सोमेश का गिरेहबान पकड़कर गुरार्या-सा, "नी तो तेरा बूथा भन्न देवांगा। मेरा मतलब है कि तेरा थोबड़ा तोड़ दूंगा। पटियाला मार्का दो-चार हत्थ पे गये तो हड्डी ते पसली दा कबाड़ा हो जावेगा। छेती करी ओये कुक्कड़ा एफ० एम० रेडियो की तरह बोलता चला जा...।"

"मा...मान्यता ने जो भी बतलाया, वो सच है...!" सोमेश घबराकर बोला—"मैं और मान्यता एक-दूसरे से मुहब्बत करते हैं। हम दोनों के बीच जिस्मानी ताल्लुकात बन गये थे। मौका मिलने पर हम दोनों...ना जाने उस नकाबपोश ने कैसे हम दोनों की बी० एफ० बना ली थी। सन्डे के दिन हम दोनों पिक्चर देखने गये थे। सिनेमा हॉल के भीतर वो हमारे आगे आकर बैठ गया था। उसने कपड़े की काली थैली जैसी नकाब में चेहरा छिपाया हुआ था। वहीं पर उसने कैमरे की साइड स्क्रीन पर हमारे मिलन की फिल्म दिखाई तो...मेरे और मान्यता के होश फाख्ता हो गये थे।

फिर उसने धमकी दी कि उस फिल्म को सभी स्टूडेन्ट्स,

टीचर्स और प्रिंसीपल को दिखलायेगा तो हम किसी को मुंह दिखलाने के काबिल ना रहेंगे। हमें कॉलेज से रेस्टीकेट कर दिया जायेगा। हमारा कैरियर और फ्यूचर चौपट हो जायेगा। हम दोनों घबरा गये थे। मान्यता तो रोने ही लगी थी। पिक्चर हॉल में बहुत कम ओडियंस थी। हम दोनों ने जान-बूझकर एकान्त वाली सीटें चुनी थीं। इसलिये बाकी फिल्म देखने वालों का ध्यान हमारी तरफ ना होकर पर्दे पर चलती फिल्म की तरफ ही था।

फिर उस नकाबपोश ने शर्त रखी कि अगर हम दोनों उसके कहे मुताबिक काम करेंगे तो वो हमारी फिल्म को नष्ट कर देगा। इतना ही नहीं...वो हमें एक-एक लाख रुपये भी देगा। उसने तभी हमें एक-एक लाख रुपये दे दिये थे। रुपयों का लालच तो कम था–लेकिन उस फिल्म का डर ज्यादा था। उसकी बात मान लेना हमारी मजबूरी थी। नहीं मानते तो वो हम दोनों का कैरियर बर्बाद कर देता। अगर उसके पास वो फिल्म ना होती तो हम रुपयों के लालच में कतई भी उसका साथ नहीं देते। भगवान की कसम...अगर वो दस-बीस लाख रुपये भी देता...तो भी हम उस नीच काम के लिये कतई भी तैयार नहीं होते।"

इतना बोलने पर सोमेश रोने लगा।

केशव के सम्मोहन से मुक्त हो चुकी मान्यता भी गीली जमीन पर उकड़ू अवस्था में बैठी हथेलियों से चेहरा ढांपे हुये रोये जा रही थी।

बाकी लोग स्तब्ध से थे और उनकी कौतूहलता घटने की बजाय बढ़ती ही जा रही थी।

"हुम्म...!" केशव सोमेश के कन्धे पर हाथ मारकर बोला–"क्या बोला था वो नकाबपोश?"

❑❑❑
❑❑❑

"वो नकाबपोश बोला था कि होली के दिन सभी स्टूडेन्टस् होली खेलेंगे! होली के प्रोग्राम में ठन्डाई भी चलेगी। वंशराज ठन्डाई के साथ भांग की भी व्यवस्था करेगा। वो स्वयं भी ठन्डाई पीयेगा और हम दोनों को...मुझे और मान्यता को भी पीनी

होगी। फिर मान्यता हाथ मुंह धोयेगी और तबियत खराब होने का बहाना करके अपने कमरे में चली जायेगी। ये स्नान करके दूसरे कपड़े चेंज कर लेगी। कमरे का दरवाजा खुला छोड़कर बेड पर लेट जायेगी। फिर वहां पर वंशराज पहुंच जायेगा।

वंशराज मान्यता की इज्जत पर हमला बोलेगा। वो सिर्फ एक्टिंग करेगा। उसका इरादा मान्यता की इज्जत लूटने का कतई नहीं होगा। लेकिन मान्यता को ऐसा ही जाहिर करना होगा कि वंशराज उसकी इज्जत से खेलना चाह रहा है और वो अपनी इज्जत बचाने को संघर्ष कर रही है। मान्यता को चीखना-चिल्लाना था। रोते-गिड़गिड़ाते हुये इज्जत की भीख मांगनी थी। उस नकाबपोश ने ये भी बतला दिया था कि वंशराज मान्यता का कुर्ता आगे और पीछे से फाड़ेगा। मान्यता का होंठ जख्मी करेगा। फिर मान्यता को उसे धक्का देने का नाटक करना था और वंशराज को ऐसा नाटक करना था कि मानो दीवार से माथा या सिर टकराने पर वो बेहोश हो गया हो...।"

"तुमने या मान्यता ने उस नकाबपोश से पूछा नहीं था कि वंशराज ऐसा नाटक क्यों, किसलिये करेगा?" पूछा केशव ने, "तुम दोनों को ये बात अटपटी नहीं लगी थी?"

❑❑❑
❑❑❑

"बहुत अटपटी लगी थी! यकीन नहीं हो रहा था कि वंशराज भांग पीयेगा और फिर मान्यता के साथ बलात्कार करने का नाटक करेगा। मान्यता के होठ पर काटेगा...उसका कुर्ता फाड़ेगा...!" सिर व नजरें झुकाये हुये बोलता चला गया सोमेश–"क्योंकि वंशराज अलग नेचर का था। वो रोमांटिक या लव-स्टोरी वाली फिल्में नहीं देखता था–पत्रिकायें नहीं पढ़ता था। टी० वी० नहीं देखता था। किसी लड़की से बात नहीं करता था। करता भी था तो नजरें झुकाकर और बहन-बहन या सिस्टर-सिस्टर बोलकर! रक्षा बन्धन पर सभी से राखियां बन्धवाता था वो। मान्यता से भी राखी बन्धवाता था। मान्यता ने कहा भी था कि वंशराज इसके साथ ऐसी नीच हरकत किसी भी कीमत पर नहीं करेगा। लेकिन उस नकाबपोश ने...

था कि वंशराज उसके प्लान पर काम करने को राजी है। वो मान्यता के साथ बलात्कार करने का नाटक करेगा।"

"तुमने उस नकाबपोश से पूछा था कि वंशराज ऐसा क्यों करेगा? वंशराज अपनी इच्छा से करेगा, या उसे मजबूर किया गया है?" पूछा केशव ने और फिर सिगरेट में कश लगाया।

"हां, पूछा था! मैंने भी और मान्यता ने भी।"

"क्या जवाब दिया उस नकाबपोश ने?"

"वो थोड़ा क्रोधित होकर बोला था कि तुम दोनों को इस बात से कोई मतलब नहीं होना चाहिये। ना ही तुम दोनों को वंशराज से इस बारे में कोई बात करनी है! उसने मुझसे फिल्म बनाने को कहा तो मैंने बनाई और ऐसा नाटक किया कि मानो मैं मान्यता के साथ हो रही ज्यादती से परेशान हूं...दुःखी और क्रोधित हूं। मान्यता ने भी उस नकाबपोश के बताये प्लान के मुताबिक ही सारे काम किये थे।"

"ये बात तो जाहिर है कि वो नकाबपोश इसी कॉलेज से सम्बन्ध रखता है। भले ही वो आवाज बदलकर बोल रहा होगा—लेकिन दिमाग पर जोर डालकर बतलाओ कि वो आवाज किसकी हो सकती है?"

"नहीं! हम उसकी आवाज नहीं पहचान पाये थे पण्डित जी! वो बलगमी-सी आवाज में बोल रहा था। हां, ऐसा लगता था कि वो अधेड़ उम्र का होना चाहिये।"

ना जाने क्यों मुस्कराया केशव।

"हमने जो भी किया मजबूरी में किया...पण्डित जी!" हाथों को जोड़े हुये और रोते हुये बोला सोमेश—"हमें उस कमीने ने पैसे दिये और हमने रख भी लिये। मैंने चालीस हजार का कैमरा भी खरीदा। लेकिन मैंने और मान्यता ने जो भी किया—वो उस फिल्म की ही वजह से किया। उस फिल्म के जाहिर होने पर हमें स्कूल से निकाल दिया जाता। इससे हमारा कैरियर तो चौपट होता ही—साथ ही हमारे मां-बाप को भी सदमा लगता...उनकी निगाहों से गिर जाते। हमारे सामने खुदकुशी के सिवाय कोई रास्ता ना बचता। लेकिन हमें जरा-सा भी अहसास होता कि वंशराज खुदकुशी कर लेगा...हम उस नकाबपोश की बात कतई नहीं मानते—भले ही हमारा कोई भी अन्जाम होता। हमने कल्पना भी नहीं की थी...वंशराज खुदकुशी कर लेगा।"

"ये...ये बिल्कुल सच है।" रोते हुये मान्यता भी बोली—"भगवान की कसम! हमें अन्दाजा नहीं था कि वंशराज खुदकुशी कर लेगा। वो बहुत अच्छा लड़का था। उसकी मौत का हमें बहुत दुःख है। अन्जाने में ही हम दोनों वंशराज की मौत का कारण बन गये। इसके लिये भगवान हमें कभी माफ नहीं करेगा।"

"वंशराज ने खुदकुशी नहीं की थी। उसको मारा गया है—उसको कत्ल किया गया है।" केशव सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये बोला—"उस कम्बख्त का खेल काफी हद तक समझ में आ रहा है। उसका मकसद ये था कि वंशराज की मौत हो और मौत खुदकुशी लगे। सवाल ये उठता कि वंशराज ने खुदकुशी क्यों की? इसके लिये उसने तुम दोनों का ही इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि वंशराज का भी इस्तेमाल किया। तभी वंशराज ने मान्यता के साथ बलात्कार करने का नाटक किया था। मैंने तुम्हारी बनाई वो फिल्म देखी सोमेश! कोई भी उस फिल्म को ध्यान से देखे तो समझ जायेगा कि मान्यता के साथ वंशराज भी नाटक कर रहा था। अगर कोई आदमी किसी लड़की की इज्जत लूटने की कोशिश करता है तो उसके चेहरे पर हिंसक किस्म के भाव होंगे और आंखों में वासना भरी होगी। वंशराज ने मान्यता का कुर्ता फाड़ा, होठ जख्मी किया—लेकिन उसके चेहरे और आँखों के भाव एकदम सपाट थे। बलात्कारी वाला कोई भाव उसके चेहरे पर या आँखों में नहीं था।"

"लेकिन...वंशराज किसी के कहने पर ऐसा नाटक करने को राजी कैसे हो गया था अंकल जी...?" सुगन्धा दुविधा व कौतूहलता में पड़ी हुई बोली—"उस नकाबपोश ने कोई आम नाटक करने के लिये नहीं कहा था कि वंशराज तैयार हो गया था। उसे मान्यता के साथ रेप का नाटक करना था। सिर्फ नाटक ही नहीं करना था, बल्कि कुर्ता फाड़ना था और होठ...भी जख्मी करना था। उसके बाद मान्यता को उस पर इल्जाम लगाना

था—पूरे स्कूल के सामने जलील करना था। सोमेश को वीडियो फिल्म भी दिखलानी थी। हर किसी को उससे नफरत होनी थी—उस पर गुस्सा आना था। उसका रेस्टीकेट हो जाना था। फिर भी वो नाटक के लिये तैयार हो गया। उसने नाटक किया भी। सबके सामने जलील भी हुआ। ये बात समझ में नहीं आ रही कि वो तैयार क्यों हो गया था?"

"जाहिर है कि वंशराज भी मान्यता और सोमेश की तरह ही मजबूर था सुगन्धा! उस नकाबपोश शातिर के हाथों में वंशराज की ऐसी कोई कमजोर नस थी कि उसने वंशराज को मजबूर कर दिया।"

"ल...लेकिन वंशराज की ऐसी कौन-सी मजबूरी हो सकती है? उसकी कमजोर नस क्या हो सकती है?"

केशव का दायां हाथ उठा और तर्जनी उंगली सुगन्धा की तरफ तनती चली गई—

"तुम! हां, सुगन्धा! वो कमजोर नस तुम हो।"

□□□

□□□

सभी चौंके।

चिहुंके!

टीचर्स समेत स्कूल का पूरा स्टाफ!

पुलिस वालों समेत इन्सपैक्टर सतपाल नेगी!

मान्यता व सोमेश!

अगर नहीं चिहुंकी तो सुगन्धा नहीं चिहुंकी।

मानो पत्थर की प्रतिमा में परिवर्तित हो चुकी थी वह!

जिस्म में कोई हरकत नहीं!

आँखों की पुतलियां और पलकें तक जाम!

देखने से तो यूं लगता था कि उसके दिल ने धड़कना बन्द कर दिया हो और शिराओं में भरे रुधिर ने भी थककर गर्दिश करना बन्द कर दिया हो।

आश्चर्य वाली बात ही थी कि वो खड़ी हुई थी—

भरभराकर गिर नहीं पड़ी थी।

वह मानो दूसरे लोक का भ्रमण करके लौटी!

झुरझुरी-सी ली, विस्फारित नजरों से केशव को देखा और फिर यूं फंसे-फंसे से स्वर में ही बोली कि मानो सूखी रेत ने कण्ठ का रास्ता, अवरुद्ध कर दिया हो—

"वो...कमजोर न...नस मैं हूं? मैं? क...क्या मतलब...अंकल जी? मैं...कुछ समझी न...नहीं...मैं. मैंने तो ऐसा कु...कुछ भी नहीं किया। वंशराज की खुदकुशी...या रेप वाले नाटक...के बारे में मु...मुझे कुछ भी...मालूम...नहीं था। मैं अपने भाई के बारे में...बुरा सोच भी नहीं... सकती।"

"मैं तुम्हें दोषी या जिम्मेदार नहीं बतला रहा हूं सुगन्धा! तुम्हें वंशराज की कमजोर नस बतलाया है मैंने। वो तुम्हें बहुत चाहता था। तुम्हारा अहित नहीं चाहता था वो। मुजरिम ने इसी बात का फायदा उठाया। उसने वंशराज को धमकी दी होगी कि अगर उसने उसकी बात नहीं मानी तो वो तुम्हें नुकसान पहुंचायेगा। वंशराज को ये कबूल नहीं था। उसने तुम्हें सेफ रखने के लिये ही मुजरिम के बनाये प्लान पर अमल किया और मुजरिम ने उसकी जान ले ली।"

"यानि मुजरिम ने मुझे जान से मारने की धमकी देकर मेरे भाई को मजबूर किया?"

"नहीं! बात कुछ और हैं। सबके सामने नहीं बतला सकता हूं। मुजरिम ही अपने मुंह से पूरा किस्सा बतलायेगा।"

"कौन...कौन है वो कमीना?"

"वो आ रहा है। राजन उसे साथ लेकर आयेगा! लो...राजन आ रहा है।"

सभी की नजरें राजन की तरफ उठ गईं—जिसके साथ शुभम और प्रिंसीपल हरीश सिंह चले आ रहे थे।

राजन के हाथ में वीडियो कैमरा भी था—जो कि सोमेश का था।

"अब कैसी तबियत है?" केशव ने हरीश सिंह से पूछा, "क्या पेटदर्द दूर हुआ?"

"जी, पण्डित जी! दवा के लेते ही ठीक हो गया। आप कातिल के बारे में बताने को बोल रहे थे।"

"हां—अब कातिल का ही नम्बर है। हमें यहां से चलना

है। मेरे साथ राजन, करतार सिंह, सुगन्धा और इन्सपैक्टर नेगी चलेंगे। अं...तुम भी चलना चाहो तो चल सकते हो शुभम?"

"कहां?"

"मालूम पड़ जायेगा। .. साथ चलो।"

"ऐ सुनो!" सतपाल नेगी बाकी पुलिस वालों से बोला—"इस लड़की मान्यता और सोमेश पर नजर रखना! ये कहीं जाने न पायें। ये कानून की हिरासत में हैं। मैं पण्डित जी के साथ जाता हूं और वंशराज के कातिल को लेकर लौटता हूं।"

पुलिस वालों ने सोमेश व मान्यता की घेराबन्दी कर ली! जिनके चेहरों पर चिता की सी राख उड़ती नजर आ रही थी।

"ये...पण्डित जी...कहां चले गये?" एक अध्यापिका ने अध्यापक से पूछा।

"मालूम नहीं।" अध्यापक कन्धे उचकाकर बोला—"मेरे ख्याल से वंशराज का कातिल वहीं पर छिपा हुआ है—उसी को पकड़ने गये हैं। लेकिन मेरी समझ में अभी तक ये बात नहीं आ रही कि कातिल ने वंशराज को क्यों और किस तरीके से मारा? सारे सबूत तो यही दर्शाते हैं कि वंशराज ने खुदकुशी की है। पण्डित जी लौटकर आयेंगे तो ही सारी पहेलियां हल होंगी। तभी ये मालूम पड़ेगा कि वंशराज का कातिल कौन है?"

□□□

□□□

"सिर में दर्द हो रहा है।" तीसरी मन्जिल के एक ओर से खुले गलियारे से गुजरते हुये और माथे को सहलाते हुये केशव बोला, "चाय पीने से ही मामला जमेगा...सिरदर्द ठीक होगा।"

हरीश सिंह ठिठका और केशव की तरफ पलटकर बोला—"मेरे क्वार्टर में चलिये। वहां चाय बनवाता हूं।"

"वहां भी चलेंगे। ए० सी० पी० साहब तो वहीं पर हैं। तुम्हारा कमरा कहां है शुभम?"

"इसी फ्लोर पर ही तो है पण्डित जी। वो...सामने ही तो है।"

"शुभम के कमरे में गैस स्टोव और चाय का सामान भी

है।" सुगन्धा बोली, "ये चाय बहुत बढ़िया बनाता है।"

"तो ठीक है! हम शुभम के कमरे में ही चलते हैं। लेकिन पहले छत पर हो आयें। वहां से शुभम के कमरे में लौटेंगे।"

"आप लोग छत पर हो आइये। मैं तब तक चाय बना लेता हूं।"

"नहीं! चाय की इतनी जल्दी नहीं है। पहले छत पर ही चलते हैं।"

वो लोग छत पर पहुंचे।

"वो देखिये...नेगी साहब।" केशव एक तरफ इशारा करके बोला—"वहां छत के फर्श पर थोड़ी गहराई है—इसीलिये वहां बरसात का पानी भरा हुआ है। मुजरिम वंशराज का कत्ल करने के लिये छत पर आया तो उस पानी पर से गुजरा था। इसी पानी की वजह से उसके जूतों के निशान फर्श पर छप गये। सोल का डिजाइन और शूज नम्बर साफ-साफ देखा जा सकता है। उस ममटी पर सैनेट्ररी पाइप है, जिससे ट्वायलेट की बदबू और गैस निकलती है। मुजरिम ने उसी पाइप पर डोरी बांधी थी और डोरी को नीचे लटकाकर उस खिड़की तक पहुंचा था, जो कि वंशराज के कमरे में है। झांककर देखोगे तो पीछे की दीवार पर खिड़की तक जूतों के वो ही निशान नजर आयेंगे—जो कि इस छत पर भी मौजूद हैं। मुजरिम भले ही कितना भी चालाक क्यों ना हो—लेकिन उससे गलती जरूर होती है। तभी तो उसने छत पर और पीछे की दीवार पर फुटमार्क्स छोड़ दिये। दूसरी गलती उसने ये कि उस सैनेट्री पाइप से डोरी को खोला नहीं, बल्कि जल्दबाजी या हड़बड़ाहट में चाकू से डोरी काटी। सो डोरी की गांठ अभी भी उस पाइप पर मौजूद है।"

सतपाल नेगी ने आगे बढ़कर छत को ध्यानपूर्वक देखा—फिर पीछे की तरफ वाली दीवार को भी देखा!

"ठीक बोले आप पण्डित जी!" वह पलटकर बोला, "छत पर और पीछे वाली दीवार पर मुजरिम के जूतों के निशान हैं। कातिल के पास कोई सीढ़ी नहीं थी, जो वह नीचे से वंशराज के कमरे की खिड़की तक पहुंच पाता। सो उसने छत का रास्ता इस्तेमाल किया। उस पाइप से डोरी बांधकर पीछे की तरफ

लटकाई और खिड़की तक पहुंच गया। लेकिन उसने खिड़की से वंशराज की हत्या कैसे की? खिड़की पर तो मजबूत ग्रिल लगी है। वो खिड़की से भीतर तो गया नहीं होगा।"

"सारी बातें मुझसे पूछोगे क्या? मेरे सिर में ऐसे ही दर्द है। कुछ बातें उस मुजरिम को भी तो बतलानी हैं। चलो, नीचे चलते हैं। देखते हैं कि शुभम कैसी चाय बनाता है? वो पाइप निकाल लो करतार सिंह।"

"जी...प्राहवा जी...!" कहने पर करतार सिंह ने बाउन्ड्री में लोहे की क्लिप्स में फिट लोहे के उस पाइप को टी० वी० एन्टीना समेत निकाल लिया, जिसका इस्तेमाल वाटर सप्लाई की फिटिंग में किया जाता है।

"ये एन्टीना तो वार्डन के कमरे में लगे टी० वी० के लिये है...।" हरीश सिंह बोला—"इसे आपने क्यों निकलवाया है पण्डित जी?"

"थोड़ी देर में मालूम पड़ जायेगा प्रिंसीपल साहब!" केशव चारमीनार ब्रांड वाली सिगरेट में कश मारकर बोला, "ये पाइप टी० वी० एन्टीना लगाने के लिये था। लेकिन इस पर और एन्टीना पर रंग लगा हुआ है। इसी पाइप को हथियार बनाकर तो वंशराज की जान ली गई है।"

"इस पाइप से!" चौंका सतपाल नेगी और हैरानी व कौतूहलता में फंसा हुआ बोला—"क्या मतलब? कातिल ने इस पाइप का कत्ल में कैसे इस्तेमाल किया?"

"थोड़ा धीरज रखिये नेगी साहब! थोड़ी देर में ही रहस्योद्घाटन हो जायेगा। अभी नीचे चलते हैं।"

कारतार सिंह ने वायर समेत एन्टीना को पाइप से निकालकर छत पर रख दिया और पाइप को हनुमान जी की गदा की मानिन्द ही कन्धे पर रखकर सीढ़ियों की तरफ बढ़ चला।

बाकी लोग उसके पीछे-पीछे थे।

सीढ़ियां उतरने पर करतार सिंह, राजन, केशव, हरीश सिंह, शुभम व सतपाल नेगी शुभम के कमरे पर पहुंचे।

"अरे!" शुभम चिहुंका तथा हैरान-परेशान-सा बोला—"मैंने

तो ताला लगाया था। अब ताला नहीं है। कुन्डी भी खुली हुई है। मेरे कमरे का ताला किसने तोड़ दिया?"

"मैंने...!" बोला राजन, "मेरे साथ करतार भाई भी थे।"

"आपने? लेकिन...क्यों?"

"सबूत हासिल करने थे।"

"स...सबूत? कैसे सबूत...आह!"

राजन ने बहुत जोर का थप्पड़ मारकर शुभम को चीख के साथ नीचे गिरने पर मजबूर कर दिया और गुर्राकर बोला, "अभी भी एक्टिंग कर रहा है? क्या तू अभी भी किसी गलतफहमी में है कि हमें मालूम नहीं कि तू ही वंशराज का कातिल है?"

❑❑❑

❑❑❑

मानो अचानक ही फर्श विशालकाय अजगर में तब्दील हो गया हो—इसी अन्दाज में ही सतपाल नेगी और हरीश सिंह चौंके।

सुगन्धा की दशा तो ऐसी कि मानो वह किसी इन्सान को रामायण सीरियल के हनुमान जी की मानिन्द विशालकाय रूप में परिवर्तित होते देख रही हो!

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं शुक्ला जी? आप शुभम पर मेरे भाई के कत्ल का इल्जाम लगा रहे हैं?"

"ये इल्जाम नहीं है सुगन्धा...!" राजन की बजाय केशव ने जवाब दिया, "हकीकत यही है कि शुभम ही वंशराज का कातिल है।"

फर्श पर पड़े शुभम का चेहरा ऐसा हो चला कि मानो मुल्तानी मिट्टी घोलकर पोत दी गई हो।

"न...नहीं...ये नहीं हो सकता!" मानो सुगन्धा के किसी जख्म को कुरेद दिया गया हो, ऐसे ही तड़फकर बोली—"शु...शुभम वंशराज का कातिल नहीं हो सकता! ये तो वंशराज का दोस्त था। दोनों में सगे भाइयों से भी बढ़कर प्यार था। कभी मन-मुटाव नहीं हुआ, कहा-सुनी नहीं हुई। तू-तड़ाक नहीं हुई। दोनों में पूरा ताल-मेल था। फिर शुभम वंशराज की जान क्यों

लेगा? नहीं...आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है अंकल जी! शुभम वंशराज का कातिल नहीं हो...।"

"मैं अंधेरे में तीर नहीं चलाया करता सुगन्धा। पहले पूरी बारीकी के साथ इन्वेस्टीगेशन करता हूं। सबूतों को ठोक-बजाकर देखता हूं! हर तरह से तसल्ली कर लेता हूं—उसके बाद ही मुजरिम पर हाथ डाला करता हूं। छत पर और पीछे की दीवार पर वंशराज के कमरे की खिड़की तक जो फुटमार्क्स यानि जूतों के निशान हैं—वो उन्हीं जूतों के हैं जो इस वक्त भी शुभम के पैरों में हैं। एक्सपर्ट की रिपोर्ट साबित कर देगी कि छत पर और दीवार पर शुभम के ही जूतों के मार्क्स हैं।"

"न...नहीं...मैं निर्दोष हूं।" उठ खड़ा हुआ शुभम और सूजे हुये गाल पर हथेली रखे हुये बोला, "हां, ये हो सकता है कि किसी ने मेरे जूते चुराकर इस्तेमाल किये हों। कल होली थी तो मैं नंगे पैर था। ये जूते आज सवेरे ही पहने मैंने। मैं भला वंशराज को कत्ल क्यों करूंगा? वो तो मेरा दोस्त था—मेरा भाई था। उसके साथ मेरी कोई दुश्मनी नहीं थी। भगवान की सौगन्ध...वंशराज की मौत में मेरा कोई हाथ नहीं है।"

केशव ने शुभम का हाथ पकड़कर उठाया और खींचते हुये कमरे में ले गया।

पीछे-पीछे सुगन्धा, राजन, करतार सिंह, हरीश सिंह व सतपाल नेगी भी दाखिल हुये।

केशव ने शुभम को धकेलकर बेड पर बिठा दिया और फिर बोला—"मेरे सामने जरा-सा भी ड्रामा करने की जरूरत नहीं है। ये तय है कि तू ही वंशराज का कातिल है। तेरे कमरे से पचास हजार रुपये की गड्डी मिली है। उसकी सीरीज ऊपर-नीचे की है। यानि तूने ही उन दोनों को रुपये दिये थे। तेरे कमरे से दो सी० डी० भी मिली हैं। एक सी० डी० में सोमेश और मान्यता की आपत्तिजनक फिल्म है—जिसे दिखलाकर तूने उन दोनों को अपने प्लान में शामिल होने के लिये मजबूर किया था।"

"किसी ने वो गड्डी और सी० डी० मेरे कमरे में प्लांट कर दी होगी। कोई मुझे फंसाने की कोशिश कर...।"

चटाक...चटाक!

"आ...आह...!"

करतार सिंह के दो 'पटियाला मार्का' थप्पड़ खाकर चीखा शुभम और होठों से रिसते खून को हथेली से पोंछकर कराहने लगा।

"ड्रामा नी ओये मुण्डेया...!" कहरभरे लहजे में ही बोला करतार सिंह, "साडे प्राहवा जी ने दस दिया तो तू ही कातिल है। ज्यादा वड्डा एक्टर बनने दी लोड़ नी है। नई तो इन्ना कूट दूंगा कि अपणा बूथा खुद ... पचाहण सकेगा।"

"तेरे बचने का कोई रास्ता नहीं है शुभम।" केशव उसकी आँखों में झांकते हुये सर्द लहजे में बोला, "सोमेश और मान्यता से बरामद गड्डियों के साथ तेरे कमरे से मिली गड्डी और दोनों सी० डी० पर तेरे फिंगर प्रिंट्स मिल जाने हैं। इस एन्टीने वाले पाइप पर भी तेरे फिंगर प्रिंट्स मिलेंगे। उस चुम्बक पर भी...जो तूने इस पाइप के साथ जोड़ी थी। चुम्बक के साथ वो डोरी भी तेरे कमरे से बरामद हुई है, जिसके सहारे तू उस खिड़की तक पहुंचा था।"

राजन ने एक आलमारी से डोरी और एक चुम्बक का टुकड़ा हाथों पर दस्ताने चढ़ाने पर निकालकर स्टूल पर रख दिये।

चुम्बक का वो टुकड़ा एक तरफ से गोल छड़ के जैसा था, जो कि अगले हिस्से पर जाकर इंग्लिश के 'जे' 'J' या आम छतरियों के हैण्डल की मानिन्द ही मुड़ा हुआ था।

राजन ने चुम्बक के छड़ वाले हिस्से को पाइप के भीतर डाल दिया और उसे खींचने को थोड़े जोर लगाकर बोला—"चुम्बक पाइप के भीतरी साइज की है। दूसरे चुम्बक है तो लोहे के साथ चिपक जाती है।"

"मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है...!" सुगन्धा मानो कसमसाकर बोली—"आप कह रहे हैं कि शुभम ने वंशराज की जान ली। आप ये भी बोले थे कि मैं वंशराज की कमजोर नस हूं—यानि मेरी वजह से ही वंशराज मुजरिम की बात मानने को मजबूर हो गया था। अगर शुभम मेरे भाई का कातिल है

तो इसने वंशराज को कैसे मजबूर किया था? क्या मुझे जान से मारने की धमकी दी थी? दूसरी बात ये कि शुभम या कातिल ने ग्रिल वाली खिड़की के बाहर से वंशराज की जान कैसे ली?"

❑❑❑
❑❑❑

पहले केशव ने 'चारमीनार' वाली सिगरेट सुलगाई और कश मारकर मुंह से धुएं के छल्ले छोड़े।

सुगन्धा की 'प्रश्न-सूचक' भाव वाली आँखों में झांकते हुये बोला—"मजबूरी है। मुझे बतलाना ही पड़ेगा। शुभम के कमरे से जो दूसरी सी० डी० मिली है—उसमें भी गन्दी फिल्म है। उस फिल्म में एक नकाबपोश है और...और...तुम हो।"

चिहुंकी सुगन्धा!

चेहरा फक्क ही नहीं पड़ा, बल्कि उस पर हवाइयां-सी भी उड़ने लगीं।

उसने आश्चर्य, अविश्वास तथा शिकायत के भाव आँखों में भरकर शुभम की तरफ देखा तो शुभम ने नजरें झुका लीं।

"वो नकाबपोश शुभम ही था ना...सुगन्धा?" पूछा केशव ने।

"हां...!" सुगन्धा की आवाज मानो किसी गहरे कुएं से ही निकली हो—वो नजरें नहीं उठा पा रही थी।

"क्या तुम्हें मालूम था कि शुभम ने सी० डी० बनाई हुई है?"

"न...नहीं!"

"तुम शुभम से मुहब्बत करती हो?"

"हां, हम दोनों ही...मुहब्बत करते हैं। हम दोनों ने अपनी-अपनी मर्यादा तोड़ डाली थी। एक दिन शुभम ने कहा कि वो नकाबपोश बनकर ही...मुझे अटपटा लगा था लेकिन...मुझे ये मालूम नहीं था कि ये वीडियो फिल्म बना रहा है।"

"जानबूझकर ही ये नकाबपोश बना था और तुम्हें बताये बिना ही इसने फिल्म बनाई। फिर नकाबपोश बनकर ही इसने वंशराज को ब्लैक मेल किया। उसे धमकी दी है ी कि अगर

उसने इसकी बात ना मानी, उसके बनाये प्लान पर काम ना किया तो ये तुम्हारी फिल्म को लोगों को दिखलायेगा। वंशराज को ये कतई मन्जूर नहीं होगा कि उसकी बहन की फिल्म सार्वजनिक हो—तुम्हारे साथ उसकी, उसके मम्मी डैडी की बदनामी हो। सो उसने वो ही किया, जो ये...!" केशव शुभम की तरफ इशारा करके बोला, "ये चाहता था!"

"ये...ये मैं क्या सुन रही हूं शुभम? क्या तुमने ऐसा किया? चुप क्यों हो? सिर को झुकाया हुआ है? मुझसे नजरें मिलाकर जवाब दो।"

"ये क्या बोलेगा सुगन्धा? बोलने लायक रहा ही कहां है कि ये ही वंशराज का कातिल है।"

"ले...लेकिन ये ऐसा क्यों करेगा? ये बात मेरी समझ से परे है कि इसने वंशराज की...मेरे भाई की जान क्यों ली? इतना बड़ा प्लान क्यों बनाया? किस बात की दुश्मनी निकाली इसने मेरे भाई के साथ? क्या बिगाड़ा था मेरे भाई ने इसका?"

❑❑❑
❑❑❑

सुगन्धा के सवालों का जवाब देने की बजाय केशव ने शुभम को अपनी आँखों में झांकने के लिये कहा और उसके आँखों में झांकते ही उसे हिप्नोटाइज्ड कर दिया।

सम्मोहित!

सम्मोहित शुभम के हाव-भाव ही परिवर्तित हो गये।

चेहरा मुर्दे का-सा बेजान—जिस पर किसी किस्म का भाव मौजूद नहीं था।

बोझिल पलकों वाली आंखों में मानो कम-से-कम महीने भर की नींद इकट्ठा हो गई थी।

उसका अपने मस्तिष्क पर कोई नियन्त्रण नहीं रहा था—उसके दिमाग का चालाकी, धूर्तता व छल-कपट वाला हिस्सा केशव की मुट्ठी में कैद था मानो!

"तुम जो भी बोलोगे...एकदम सच बोलोगे...!" केशव उसकी भाव शून्य आंखों में झांकते हुये बर्फ से भी ठन्डी आवाज में बोला, "झूठ नहीं बोलोगे। कोई भी बात छिपाओगे नहीं।

तुमने वंशराज की जान क्यों ली? तुम्हारा प्लान क्या था? तुमने वंशराज के साथ क्या-क्या किया और उससे क्या-क्या कराया? सब कुछ बतलाते चले जाओ! कुछ भी छिपाना मत। बिना रुके बोलते चले जाओ। बोलो...खामोश मत रहो! अपना जुर्म कबूल करो और ये भी बतलाओ कि तुमने सारे काम कैसे और क्यों किये?"

इतना बोलने पर केशव ने अपने गुलाबी होठों पर उंगली रखकर राजन, करतार सिंह, सुगन्धा, हरीश सिंह व सतपाल नेगी को खामोश रहने का इशारा किया।

वो लोग भी जवाब सुनने की लालसा में शुभम की तरफ देखने लगे।

शुभम सोया-सोया-सा, खोया-खोया-सा, उनींदी आंखें शून्य में स्थिर किये हुये बोला—

"मैं और सुगन्धा प्यार करते थे। तीन महीने पहले मैंने वंशराज को अपना दोस्त मानकर ये बात बतला दी। मुझे उम्मीद ये थी कि वो खुश हो जायेगा और मुझे सीने से लगाकर बोलेगा कि...सुगन्धा के लिये तुझसे अच्छा जीवन साथी कोई और हो ही नहीं सकता...। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वो तो यूं भड़क गया था कि जैसे मैंने उसे मां-बहन की गालियां दे डाली हो। उसने मेरा गिरेहबान पकड़कर कई तमाचे जड़ दिये थे और क्रोध से बावला होकर चीख-चीखकर बोला था—

"तेरी इतनी जुर्रत कैसे हुई कमीने...मेरी बहन के बारे में ऐसा सोचने की? तू है ही क्या—तेरी औकात ही क्या है? हमारी जातियां अलग-अलग हैं और तू नीची जाति वाला है। हमारे यहां गैर बिरादरी में रिश्ते नहीं होते। गैर जाति तो दूर की बात रही...अपने गोत्र में भी शादी नहीं करते।"

"ल...लेकिन...मैं तुम्हारा दोस्त हूं वंशराज! मेरे डैडी के तुम्हारे परिवार से मधुर सम्बन्ध हैं। तुम्हारे मम्मी-डैडी उन्हें अपना बुजुर्ग मानते हैं। वैसे भी मेरे डैडी जी जाने-माने नेता हैं। आने वाले इलेक्शन के बाद देश के प्रधानमन्त्री बन सकते हैं।"

"तेरे डैडी को प्रधानमन्त्री की कुर्सी मिले चाहे देवराज

इन्द्र का सिंहासन! लेकिन इससे उनकी जाति पर फर्क नहीं पड़ेगा। वो हमसे नीची जाति के ही रहेंगे—वो प्रधानमन्त्री बनने पर भी हमारे परिवार की मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा और सम्मान का मुकाबला नहीं कर सकते। ये मेरे परिवार का बड़प्पन है कि तेरे डैडी को सम्मान दिया जाता है और हरेक काम में उनकी सलाह ली जाती है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि हम अपने परिवार की बेटी को उनके घर की बहू बना देंगे। तूने ऐसा सोचा भी कैसे कमीने? सोचने से पहले अपनी नीची जाति का ख्याल क्यों नहीं किया तूने? तेरा खून हमारे खून का मुकाबला नहीं कर सकता। दोस्ती और रिश्तेदारी में जमीन-आसमान का फर्क होता है। आईन्दा सुगन्धा का ख्याल भी दिमाग में मत लाना—वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। मेरी बहन की शादी किसी बड़े घराने में और हमारी जाति के लड़के से ही होगी। अभी तो वो छोटी है। पहले उसे पढ़ाई पूरी करनी है। अगर सुगन्धा के बारे में सोचा तो...अपनी दोस्ती खत्म हो जायेगी। पारिवारिक सम्बन्ध भी टूट जायेंगे।"

"सॉरी, यार...गलती हो गई...।" मैं हाथ जोड़कर बोला था—"मुझे माफ कर दो। आईन्दा सुगन्धा के बारे में सोचूंगा भी नहीं।"

"गुड...ये हुई ना बात...!" वंशराज ने मुझे सीने से लगा लिया और खुश होकर बोला, "तूने समझदारी की बात की। तभी तो हमारी दोस्ती कायम है। गुस्से में कुछ गलत बोल गया हूं तो माइंड मत करना...मुझे माफ कर देना।"

लेकिन मैंने उसे माफ नहीं किया था—क्योंकि उसके चलाये जहरीले तीर मेरे दिल और दिमाग में ही नहीं गड़े थे, बल्कि मेरी आत्मा को भी छलनी-छलनी कर गये थे। मेरे भीतर इन्तकाम का जहर भर गया था और वंशराज को सबक सिखलाने का फैसला कर लिया था। सुगन्धा ने छिपकर मेरी और वंशराज की बातें सुनी थीं और वो काफी निराश थी। मैंने उसे तसल्ली दी कि हमारी मुहब्बत कामयाब होगी और हमारी शादी भी होगी। मैंने सुगन्धा की मासूमियत का फायदा उठाते हुये उसके दिमाग में ये बात भर दी थी कि अगर हमारे बीच

जिस्मानी ताल्लुकात बन जायेंगे तो फिर वंशराज, सुजाता भारती और उदयराज के सामने हमारी शादी करने की मजबूरी होगी। सुगन्धा ने ना-नुकर की थी—लेकिन मैंने उसके साथ जिस्मानी ताल्लुक बना लिये थे। फिर तो हमें जब भी मौका मिलता, तभी हमबिस्तर हो जाते थे।

राजन कैमरा ऑन कर चुका था और शुभम के बयान की मूवी तैयार कर रहा था।

शुभम 'नान-स्टॉप' बोले जा रहा था—

"फिर अचानक ही सुजाता भारती राजनीति में एक्टिव हो गई। वो हिन्दुस्तान पार्टी की अध्यक्षा बन गई। उसने रैलियों का आयोजन किया और उसकी रैलियां कामयाब होने लगीं। उसे भारी जनसमर्थन मिलने लगा। लोग ये कहने लगे कि सुजाता भारती ही देश की प्रधानमन्त्री बनेगी। ये मेरे लिये झटका था। क्योंकि मैं चाहता था कि मेरे डैडी सुन्दर लाल प्रधानमन्त्री बनें। प्रधानमन्त्री का बेटा बनने पर मेरा रुतबा बढ़ जाता। जिधर से भी निकलता...लोग कहते कि...वो देखो, प्रधानमन्त्री ज़ी का बेटा जा रहा है। बड़े-बड़े अफसर मुझे सलाम ठोकेंगे। आम लड़कियां तो क्या...बड़े-बड़े घराने की लड़कियां, मॉडल, टी० वी० और फिल्म एक्ट्रेस मेरे आगे-पीछे घूमेंगी। लेकिन सुजाता भारती मेरा खेल खराब कर [illegible] थी—मेरे ख्वाबों पर तेजाब छिड़क रही थी। मुझे ऐसा कुछ करना था कि मेरे डैडी ही देश के अगले प्रधानमन्त्री बनें। दिमाग दौड़ाना शुरू किया कि ऐसा कैसे हो सकता है?"

❑❑❑

❑❑❑

शुभम बोलते-बोलते चुप हो गया।

सुगन्धा मुंह खोले, आंखें फैलाये हुये उसे बावली-सी देखे जा रही थी।

शुभम के मुख से निकला एक-एक शब्द जहर बुझे तीर-सा उसके कलेजे में धंस गया था।

दिल में सुलगती आंच पर चढ़े दिल के बर्तन में आश्चर्य, अविश्वास, दुःख व क्रोध के किटाणु उबले जा रहे थे।

"हुम्म...आगे क्या हुआ...?" केशव की आवाज, "चुप क्यों हो गये? आगे के बारे में भी बतलाओ।"

"दिमाग के घोड़े दौड़ाये तो एक प्लान बनकर तैयार हो गया।" बोलना शुरू किया शुभम ने, "उस प्लान को खूब ठोक-बजाने पर [illegible]ने उस पर अमल किया! सबसे पहले सुगन्धा से कहा कि सिर्फ मनोरंजन के लिये मैं नकाबपोश [illegible] उसके साथ प्यार करूंगा। [illegible]। सुगन्धा राजी हो गई थी और मैंने उन पलों की मूवी तैयार कर ली थी। उस मूवी में मैं एक शब्द भी नहीं बोला था। सुगन्धा भी मुझसे बोली तो मुझे 'मिट्ठू' ही कहा। मैंने ही सुगन्धा से कहा था कि वो प्यार के लम्हों में मुझे 'मिट्ठू' कहा करेगी तो मुझे अच्छा लगेगा। सुगन्धा नहीं जानती थी कि मेरे दिमाग के बर्तन में क्या खिचड़ी पक रही है।

फिर एक दिन सन्डे को वंशराज मूवी देखने गया। मैं भी पहुंच गया! पिक्चर हॉल में दाखिल होने पर मैंने काले कपड़े की बनी थैली-नुमा नकाब ओढ़ ली थी। वंशराज को अपनी और सुगन्धा की मूवी दिखलाई। आवाज बदलकर बोला था—वंशराज मुझे पहचान नहीं पाया था। मैंने वंशराज को कहा था कि अगर उस मूवी की सी० डी० बनवाकर कॉलेज में बंटवा दूं—दिल्ली में उदयराज और सुजाता भारती के जान-पहचान वालों, रिश्तेदारों और अपोजिशन पार्टी के लोगों तक पहुंचा दूं तो पूरा परिवार किसी को भी मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह पायेगा। चारों तरफ 'थू-थू' होगी। मामूली आदमी भी गाली देगा और मजाक उड़ायेगा। वंशराज की रूह कांप गयी थी। रोने लगा था। हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा था कि मैं वो मूवी उसे दे दूं और बदले में मुंह मांगी कीमत ले लूं। लेकिन मैंने मना कर दिया था और बोल दिया था कि अपनी बहन और परिवार की इज्जत बचाने के लिये उसे कुर्बानी देनी होगी—अपनी जान की कुर्बानी। उसे पहले अपने माथे पर बदनामी का दाग लगाना होगा और फिर खुदकुशी करनी होगी।"

"वंशराज ने तुमसे पूछा नहीं कि तुम ऐसा क्यों चाहते हो? तुम्हें उसको बदनाम करके...उससे खुदकुशी करवाकर

क्या मिलेगा?"

"हां, पूछा था...!" शुभम मानो गहरी नींद में ही बोल रहा था, "मैंने बोल दिया था कि मेरा ताल्लुक अपोजिशन पार्टी से है और मैं नहीं चाहता कि उसकी मां प्रधानमन्त्री बने। उस पर बलात्कार का इल्जाम लगेगा तो उसकी मां सुजाता भारती की बदनामी होगी और उसका राजनैतिक कैरियर चौपट हो जायेगा। ये भी बोला था मैं कि उससे खुदकुशी इसलिये करवाना चाहता हूं कि वो जिन्दा रहा तो अपनी मां को प्रधानमन्त्री बनाने के लिये और खुद को बदनामी के साये से निकालने को सच्चाई उगल देगा, और मेरे बारे में जानकारी निकालकर मुझे मारकर या मरवाकर सुगन्धा वाली सी० डी० या मूवी को हासिल कर सकता है। लेकिन जब वो सूसाइड नोट में मान्यता की इज्जत लूटने की कोशिश करने की बात कबूल करके मरेगा तो सभी ये मानेंगे कि उसने मान्यता के साथ बलात्कार की कोशिश की थी और फिर शर्मिन्दा होकर खुदकुशी कर ली।"

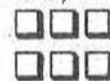
"यानि वंशराज तैयार हो गया था?"

"हां—वो तैयार हो गया था। उधर मैंने मान्यता और सोमेश को भी मजबूर करके तैयार कर लिया था। फिर मेरे प्लान के मुताबिक ही वंशराज ने होली पर भांग की ठन्डाई का बन्दोबस्त किया! उसने भी पी और मान्यता ने भी पी थी। मान्यता अपने कमरे में गई तो उसके पीछे-पीछे वंशराज भी पहुंच गया था और मान्यता के साथ रेप करने का नाटक किया। मान्यता ने भी ऐसी एक्टिंग की कि मानो वो अपनी इज्जत बचाने के लिये पूरा संघर्ष कर रही थी। सोमेश बाहर खिड़की पर से मूवी बना रहा था और चीख-चिल्लाकर वंशराज से मान्यता को छोड़ने को कह रहा था, मूवी के जरिये उसका भान्डा फोड़ने की धमकियां दे रहा था। फिर मान्यता ने वंशराज को धक्का दिया और वंशराज ने दीवार से टकराकर बेहोश होने का नाटक किया था।

मान्यता ने बाहर जाकर सभी को बतलाया कि वंशराज ने उसकी इज्जत लूटने की कोशिश की। सोमेश ने प्रिंसीपल समेत सभी को वीडियो कैमरे पर फिल्म दिखलाई तो सभी को

मान्यता के इल्जाम पर यकीन हो गया था। फिर वंशराज वहां से भागा और अपने कमरे में बन्द हो गया था। मैंने और सुगन्धा ने वंशराज का फेवर लिया था। उसके कमरे पर गये। उसे दरवाजा खोलने को कहा—लेकिन मेरे प्लान के मुताबिक उसे दरवाजा नहीं खोलना था—उसने खोला भी नहीं। हमें यानि मुझे और सुगन्धा को कसम देकर जाने को कहा था। मैंने सुगन्धा को समझाया था कि वंशराज को परेशान करेंगे तो उसकी टेंशन ही बढ़ेगी। उसे अकेला छोड़ देते हैं और सुबह उसे समझा-बुझा देंगे। तब सुगन्धा अपने कमरे में चली गई थी।"

"हुम्म...फिर...?" केशव बोला, "रुको मत! बतलाते चले जाओ, फिर क्या हुआ था?"



कुछ पलों के लिये कमरे में इतना गहन सन्नाटा व्याप्त हो गया कि अगर कोई मक्खी चक्कर खाकर फर्श पर गिरती तो लगता कि मानो छत ही टूटकर गिर पड़ी हो।

शुभम की जुबान ने ही तलवार बनकर सन्नाटे का पेट चीरा—

"मुझे आशंका थी कि वंशराज खुदकुशी करने से पीछे हट सकता है। क्योंकि जान देना इतना आसान नहीं होता। हुआ भी ऐसा ही...वंशराज ने सूसाइड नोट लिखने पर खुदकुशी करने से मना कर दिया था। कहने लगा था कि उसकी मौत को उसके मां-बाप बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे।"

"यानि तब तुम उसी कमरे में थे?"

"हां, मैं वहीं था! चेहरे को नकाब से ढांपकर गया था। पैरों में जूते नहीं पहने थे, सिर्फ जुरबें ही पहनी हुई थी—ताकि फर्श पर मेरे फुटमार्क्स ट्रेस ना होने पायें। मेरे पास दस्ताने नहीं थे। इसलिये ये सावधानी बरती थी कि किसी भी जगह पर मेरे हाथ ना लगें—मेरे फिंगर प्रिंट्स ना छूटें।"

"जब वंशराज ने खुदकुशी करने से मना कर दिया था तो...!" केशव उसकी खोई-खोई-सी आंखों में झांकते हुये बोला—"तो तुमने क्या किया?"

"मैंने वंशराज को धमकी दी कि सुगन्धा वाली मूवी की [illegible] और दिल्ली में [illegible] ढेर सारी सी० डी० तैयार कराके पूरे स्कूल और दिल्ली में बटवा दूंगा...लेकिन वो मौत के करीब पहुंचकर घबरा गया था...नर्वस हो गया था। उसमें खुदकुशी करने की हिम्मत ना हो रही थी।"

"तब तुमने क्या किया...?"

"मैं एक बोतल में ठन्डाई ले गया था। उसमें भांग तो थी ही...साथ ही नशे की कुछ गोलियां भी घोल दी थीं। मैंने वंशराज से कहा कि वो पहले ठन्डाई पीये—फिर कोई फैसला करे। उसने ठन्डाई पी और नशे में हो गया। मैंने सुगन्धा को गिफ्ट करने को एक दुपट्टा खरीदा था। बेड पर दो रूमालों से पकड़कर स्टूल रखा। फिर उस पर चढ़कर दुपट्टे से बने फन्दे को सीलिंग फैन से बांधा था। लगभग बेहोश हो चुके वंशराज को उठाकर स्टूल पर खड़ा करके उसके गले में फन्दा डाल दिया था।"

"फिर?"

"फिर रूमालों की मदद से दरवाजे के दोनों पल्ले भिड़ाकर अपने कमरे में गया था। ठन्डाई वाली बोतल फ्रिज में रखकर चुम्बक ली थी और जूते भी पहन लिये थे। क्योंकि खाली जुर्राबों में अजीब-सा लग रहा था। फिर मैं छत पर गया था। मेरे पास डोरी थी। उस डोरी में बीच-बीच में गांठें लगा दी थीं—ताकि उतरने या चढ़ने में कोई दिक्कत ना हो। डोरी को फ्लश वाले पाइप से बांधने पर डोरी को पीछे की तरफ लटका दिया था। फिर टी० वी० एन्टीना वाला पाइप निकालकर उसके ऊपर चुम्बकर फिट की थी, जो कि ऊपर से मुड़ी हुई थी।

बड़ी मुश्किल से डोरी से उतरकर खिड़की तक पहुंचा था। खिड़की के प्रोजेक्शन पर पैर टिकाकर मैंने पाइप को भीतर डाला था और उससे उस स्टूल को धकेलकर गिराया था। बेहोश वंशराज कुछ सेकेंड तक तड़फा और फिर मर गया था। फिर मैंने पाइप के आगे लगी चुम्बक से दरवाजे की सिटकनी और कुन्डी बन्द कर दी थी। चुम्बक कुन्डी और सिटकनी से चिपक

गई थी—इसलिये उन्हें बन्द करने में कोई खास दिक्कत नहीं आई थी। इस तरह मैंने वंशराज को मारकर उसकी मौत को खुदकुशी का रूप दे दिया था। चूंकि उसने सूसाइड नोट भी लिख दिया था, इसलिये मैं निश्चिंत था कि किसी को भी मुझ पर शक नहीं...।"

"नीच...कमीने...कुत्ते...!" घायल शेरनी-सी सुगन्धा शुभम पर झपटी। उसके गालों पर तड़ातड़ थप्पड़ जड़ते हुये विक्षिप्त भाव से चीखते हुये बोली, "तूने मेरे भाई की जान ले ली। उस पर बलात्कार की कोशिश का इल्जाम लगवाया। मेरी बुआ जी और फूफा जी का इकलौता बेटा छीन लिया! उनके घर का इकलौता चिराग बुझा दिया। तुझे देवता समान समझती थी—तभी तो तुझसे मुहब्बत की थी और अपना तन-मन तुझे सौंप दिया था। लेकिन नहीं जानती थी कि तू राक्षस निकलेगा। मेरी फिल्म बनाकर मेरे भाई को मजबूर किया। जिन्दा नहीं छोडूंगी तुझे कुत्ते! जान से मार डालूंगी तुझे...।" सुगन्धा ने हथेलियों से शुभम का गला दबोच लिया और उसे दबाने के लिये जबड़ों को भींचकर पूरे जोर लगाने लगी।

तकलीफ होने से शुभम का सम्मोहन टूटा और वो सुगन्धा के हाथों को पकड़कर अपने गले से हटाने की चेष्टा करने लगा।

केशव का इशारा होने पर करतार सिंह व राजन ने सुगन्धा को शुभम से अलग किया और उसे समझाने-बुझाने लगे।

□□□

□□□

चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली दिमाग के जादूगर ने। कश लगाकर लुटे-पिटे से शुभम के चेहरे पर धुएं का गोला दागा और फिर उसकी आंखों में झांकते हुये बोला—"हरेक मुजरिम अपनी समझ में शानदार प्लान तैयार करता है। प्लान बनने पर वो सन्तुष्ट और खुश होता है कि उसने लंका जीत ली, वो अपने मकसद में कामयाब हो जायेगा और उस पर जरा-सी भी आंच नहीं आयेगी! लेकिन हर मुजरिम से कहीं-ना- कहीं गलती होती है। पूरी होशियारी और सावधानी बरतने पर भी वो कोई-ना-कोई चूक अवश्य करता है। तूने भी की। चूक या

गलती नहीं...महाबेवकूफी की तूने! दिमाग के एक हिस्से का तो बढ़िया तरीके से इस्तेमाल किया, लेकिन दिमाग के दूसरे हिस्से का इस्तेमाल ही नहीं किया। तेरी एक गलती की वजह से कमरे में दाखिल होते ही मैं समझ गया था कि वंशराज ने खुशकुशी नहीं की है, बल्कि उसकी हत्या की गई है। ये बात दूसरी थी कि मैंने इस बात को जाहिर नहीं किया था। क्योंकि मैं कातिल या मुजरिम को होशियार नहीं करना चाहता था।"

दुविधा व कौतूहलता में फंसे शुभम ने केशव को यूं देखा कि मानों ये पूछने को मरा जा रहा हो कि आखिर उससे ऐसी कौन-सी गलती हो गई थी कि वो समझ गया था कि वंशराज का कत्ल किया गया है?

ये बात जानने को तो हरीश सिंह, सतपाल नेगी और सुगन्धा भी बेकरार थे।

सिगरेट के धुएं को फेफड़ों की गलियों का भ्रमण कराने पर केशव ने उसे नथुनों की राह बाहर भगा दिया और शुभम की आंखों से आँखों के पेंच लड़ाते हुये बोला—"तूने जिस स्टूल का इस्तेमाल किया था, वो साइज में काफी बड़ा था और चौड़ाई के मुकाबले लम्बाई में ज्यादा बड़ा था। तूने वंशराज का मुंह दरवाजे की तरफ करके खड़ा किया और स्टूल का लम्बे वाला रुख बाथरूम और खिड़की की तरफ रखा। अगर वंशराज ने खुदकुशी की होती तो उसने स्टूल को आगे या पीछे की तरफ गिराया होता! क्योंकि आयताकार स्टूल को तभी गिराया जा सकता है, जब खुदकुशी करने वाले के पैर स्टूल के लम्बे हिस्से की तरफ हों—लम्बे हिस्से की तरफ उसकी उंगलियां और एड़ियां हों। लेकिन स्टूल खिड़की की विपरीत दिशा में गिरा हुआ था—क्योंकि खिड़की से उसे पाइप से बाथरूम वाली साइड में ही जोर लगाकर धकेला सकता था, गिरा सकता था। जबकि तुझे पाइप को वंशराज के चेहरे या पीठ की तरफ वाले हिस्से के स्टूल के हिस्से से सटाकर स्टूल को आगे की तरफ या पीछे की तरफ गिराना था। ताकतवर-से-ताकतवर आदमी भी स्टूल को पैरों के जोर से बाथरूम या खिड़की की तरफ गिरा ही नहीं

सकता था। तेरी उसी गलती को पकड़कर मैंने इन्वेस्टीगेशन की और तुझे पकड़ लिया।"

शुभम को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसके चेहरे पर पछतावे व झुंझलाहट के भाव परिलक्षित होने लगे।

"तूने वंशराज की जान ले ली। सुजाता बहन जी, ए० सी० पी० उदयराज जी और सुगन्धा को गम के समन्दर में डुबो दिया। लेकिन तुझे भी अपने किये की सजा भोगनी होगी। तू नाबालिग है। शायद फांसी की सजा ना मिले। लेकिन उम्र कैद तो पक्की है। बाकी जिन्दगी जेल में सड़ेगी। तेरा कैरियर और फ्यूचर खराब हो जायेगा। तेरी ज़िन्दगी मौत से भी बदतर हो जायेगी। तू अपनी करनी पर पछतायेगा—खून के आंसू रोयेगा।"

"सजा तो मुझे भी मिलनी चाहिये...!" सुगन्धा रोते हुये बोली—"मैंने एक राक्षस को देवता समझने की गलती की। एक नीच आदमी को अपना तन-मन सौंप दिया, जो भेड़िया बनकर मेरे भाई को खा गया। अगर मैंने इस कुत्ते के साथ मुंह काला ना किया होता तो ये मेरी फिल्म ना बना पाता और मेरे भाई को ब्लैकमेल नहीं कर पाता। कौन-सा मुंह लेकर बुआजी और फूफाजी के सामने जाऊंगी? जिन्होंने...जिन्होंने मुझे मां-बाप से भी बढ़कर प्यार दिया, मेरी परवरिश की...उनके बेटे की मौत की वजह बन गई मैं। कानून मुझे सजा नहीं देगा। लेकिन मैं स्वयं को तो सजा दे सकती हूं न?"

कहने पर सुगन्धा बाहर को दौड़ी।

"सुगन्धा को पकड़ो...!" कहते हुये केशव बाहर को लपका।

उससे आगे-आगे राजन व करतार सिंह थे।

लेकिन!

तब तब देर हो चुकी थी।

रेलिंग पर चढ़कर सुगन्धा नीचे कूद गई थी।

पक्के फर्श से टकराने से उसका सिर तरबूज की मानिन्द फट गया था और वो अपने ही खून में नहाकर दम तोड़ चुकी थी।

पोस्टमार्टम के पश्चात् केशव, राजन, करतार सिंह व उदयराज वंशराज व सुगन्धा के शव लेकर दिल्ली आ गये।

दिल्ली पुलिस ने वंशराज मर्डर केस को कोर्ट के माध्यम से दिल्ली ट्रांसफर कर लिया और शुभम के साथ-साथ मान्यता व सोमेश को भी गिरफ्तार करके दिल्ली ले आई।

वंशराज की हत्या और सुगन्धा की आत्महत्या!

उदयराज व सुजाता भारती को सुगन्धा भी अपने बेटे के बराबर प्यारी थी—सो दोनों की मौत ने दोनों को तोड़ दिया।

सुजाता तो पहले से ही हॉस्पिटल में थी—उदयराज को भी बेहोशी का दौरा पड़ने पर कुछ समय के लिये हॉस्पिटलाइज्ड करना पड़ा।

सुन्दर लाल को जब अपने बेटे शुभम की करतूत का पता चला तो उसे दिल का दौरा पड़ गया और उसे हॉस्पिटल के इन्सेंटिव केयर यूनिट में एडमिट करना पड़ा।

इन घटनाओं से पूरा देश स्तब्ध था।

वंशराज की हत्या और सुगन्धा की आत्महत्या से सिर्फ हिन्दुस्तान पार्टी से जुड़े लोग ही नहीं, बल्कि आम नागरिक भी दुःखी थे—हर किसी की सहानुभूति सुजाता भारती के साथ थी।

शोक प्रकट करने वालों में दूसरी पार्टी के नेता ही नहीं, बल्कि विदेशों के राष्ट्रपति व प्रधानमन्त्री भी शामिल थे। उन्होंने अपने देशों में स्थित भारतीय दूतावास में जाकर शोक पुस्तिका में शोक सन्देश लिखे।

वंशराज व सुगन्धा के अन्तिम संस्कार में कई देशों के राजदूत सम्मलित हुये।

शव-यात्रा में इतनी भीड़ शामिल थी कि कई किलोमीटर लम्बा जुलूस बन गया।

मीडिया वालों ने शव-यात्रा व अन्तिम संस्कार का लाइव टेलीकास्ट किया।

वंशराज व सुगन्धा की चिताओं को मुखाग्नि देते वक्त उदयराज फफक-फफककर रो दिया तो ना जाने कितने लोग भी दहाड़े मारकर रोने लगे।

ऐसी कोई आंख ही नहीं थी, जिसमें आंसू ना हो।

उदयराज अचेत हो गया तो वहां पहले से ही मौजूद डॉक्टरों ने उसका ट्रीटमेंट किया।

आशीर्वाद की तबियत में सुधार था तो वह भी चांदनी के साथ दिल्ली आ गया था।

आशीर्वाद ने उदयराज व सुजाता भारती को सांत्वना दी और ये बोला कि वंशराज व सुगन्धा नहीं रहे तो वो उनकी कमी को पूरा करने की चेष्टा करेगा और बेटे वाले तमाम फर्ज निभायेगा। उदयराज व सुजाता आशीर्वाद के सीने से लगकर रो दिये—और कर भी क्या सकते थे वो दोनों?

❑❑❑
❑❑❑

श्मशान घाट पर और मीडिया वालों के सामने घड़ियाली आंसू बहाने के बाद इन्डियन पब्लिक पार्टी का अध्यक्ष व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह घर पहुंचकर अपने बेटे वासुदेव सिंह के साथ जश्न मनाने लगा।

भैंसे जैसे काले-कलूटे व तगड़े बाप-बेटों ने बोतल खोल ली और लगातार कई 'पटियाला पैग' डकार गये।

सिगरेट सुलगा ली देवेन्द्र सिंह ने और बोला—"कितनी जल्दी-जल्दी घटनायें बदली हैं। पहले ये खबर आई कि सुजाता भारती के लौंडे ने एक लड़की के साथ बलात्कार की कोशिश की और फिर खुदकुशी कर ली। लेकिन फिर ये भेद खुला कि वंशराज को कत्ल करने को सुन्दर लाल के लौंडे शुभम ने सारी साजिश रची थी और...!"

"जब हरीश मामा का फोन आया था तो मारे खुशी के मैं तो पागल-सा ही हो गया था डैड...!" वासुदेव सिंह बाप की बात बीच में ही काटकर बोला—"लगा था कि हम हारी हुई बाजी जीत गये। क्योंकि सुजाता भारती के माथे पर कलंक का टीका लग जाना था। वो बलात्कारी की मां कहलाती। लेकिन उस साले केशव पण्डित ने पकी-पकाई खीर में थूक दिया। उसने वंशराज को ना सिर्फ निर्दोष साबित कर दिया—बल्कि ये भी साबित कर दिया कि वंशराज का कत्ल हुआ है। अब तो सारे देश की सहानुभूति सुजाता भारती के साथ हो गई है। वैसे भी

वो उल्लू की पट्ठी हास्पिटल में एडमिट है। ठीक-ठाक होगी—लेकिन हॉस्पिटल में रहकर ड्रामा करेगी कि जवान बेटे की मौत ने उसे तोड़कर रख दिया। अब तो उसे रैलियां या कन्वेसिंग करने की भी जरूरत नहीं है। घर बैठे ही सारी वोट मिल जायेंगी। आप मुस्करा रहे हैं डैड—जबकि यहां जान निकली जा रही है। अपनी सरकार तो गई। सत्यानाश हो गया।"

"कोई सत्यानाश नहीं हुआ मेरे लाल...।" देवेन्द्र सिंह वासुदेव सिंह के गाल पर हाथ फिराकर बोला, "तू तो नाहक ही हलकान हुआ जा रहा है।"

"हलकान होने वाली बात तो है ही...।" वासुदेव सिंह शराब की लम्बी घूंट भरकर बोला—"अब हमारे लिये बचा ही क्या है भला? कौन ससुरा हमें वोट देगा?"

"सभी देंगे—पूरा देश देगा।" पूरे आत्म-विश्वास के साथ ही बोला देवेन्द्र सिंह।

"लगता है कि आपको चढ़ गई है...।" वासुदेव सिंह खीजकर बोला, "तभी उटपटांग बातें कर रहे हैं। दिमाग के अन्धे को भी नजर आ रहा है कि हिन्दुस्तान पार्टी सत्ता में आ रही है। अपने देश के लोग दिमाग की बजाय दिल का इस्तेमाल करते हैं। भावनाओं में बह जाते हैं। किसी नेता की मौत हो जाने पर पार्टी उसकी बीवी या बच्चे को इलेक्शन लड़वा देती है तो वह बिना मेहनत करे ही जीत जाता है। किसी पार्टी के बड़े नेता का कोई घर का मेम्बर मर जाये, या उसकी हत्या हो जाये तो लोग इलेक्शन में उसे जिताने को बावले हो जाते हैं।"

"सुजाता भारती को बेटे की मौत ने तोड़ दिया है। उसने एक इन्टरव्यू में ये कहा है कि वो इस्तीफा दे देगी और राजनीति से दूर चली जायेगी।"

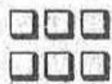
"स... सच बोल रहे हैं आप डैडी?"

"बिल्कुल! भारत चैनल के रिपोर्टर ने फोन पर मुझे ये बात बतलाई। ठीक भी तो है। सुजाता भारती का इकलौता बेटा मर गया। अब वो प्रधानमन्त्री बनकर क्या करेगी? उसकी भतीजी ने भी आत्महत्या कर ली। किसके लिये नोट कमायेगी

वो? किसके लिये खजाना इकट्ठा करेगी? उसकी तबियत खराब है। दिल के दो दौरे पड़ चुके हैं। कभी भी टें बोल सकती है। अब वो भागा-दौड़ी करने लायक नहीं रही। बेटे और भतीजी की मौत ने उसे जीते जी मार दिया है। रहा सवाल पार्टी के सबसे बड़े नेता और नेता प्रतिपक्ष सुन्दर लाल का—तो वो ऐसे ही लोगों से मुंह छिपाता फिर रहा है। उसके बेटे ने ही वंशराज को कत्ल किया और शुभम की वजह से [illegible] ने खुदकुशी की है। लोगों के दिलों में सुन्दर लाल के प्रति नफरत [illegible] पड़ी है। कौन उसे वोट देगा? अगर हिन्दुस्तान पार्टी सत्ता में आ भी जाये तो उसकी पार्टी के सांसद भी उसे प्रधानमन्त्री नहीं बनने देंगे। सुजाता भारती का प्रधानमन्त्री बनना ही नहीं है। दोनों के बाद पार्टी में प्रधानमन्त्री पद के काबिल कोई नहीं है। कई-कई दावेदार खड़ हो जायेंगे और आपस में ही लड़ेंगे। कुल मिलाकर आज की तारीख में हिन्दुस्तान पार्टी का कोई खेवनहार नहीं है। बिना नेता के कोई भी पार्टी कामयाब नहीं हो पाती है।"

"लेकिन तीसरा मोर्चा? गरीब मजदूर किसान पार्टी?"

"हमने तुम्हें बतलाया तो था कि मोर्चे के संयोजक मोहनलाल के खिलाफ हमारे पास वीडियो फिल्म है, जिसमें वो बड़े-बड़े घोटाले करते हुये और मोटी-मोटी रकम लेते हुये दिखलाई पड़ेगा। जगदीश कुमार पर तो बलात्कार का इल्जाम लगा ही है। हम अब मोहनलाल वाली फिल्म का देशभर में प्रदर्शन करेंगे, मीडिया वालों को भी दे देंगे तो तीसरे मोर्चे का तो सत्यानाश ही हो जायेगा। इलेक्शन में हमारी और हिन्दुस्तान पार्टी की ही टक्कर होनी है। अगर हिन्दुस्तान पार्टी सत्ता में आ भी गई तो सुजाता भारती और सुन्दर लाल प्रधानमन्त्री बनने वाले नहीं। उनके अलावा तीसरा कोई प्रधानमन्त्री बनेगा तो उससे इतना बड़ा देश सम्भलने वाला नहीं। उसकी राह में हम भी कांटे बोयेंगे। सालभर में ही मध्यावधि चुनाव करा देंगे। तब देश की जनता के सामने हमारी पार्टी के सिवाय दूसरा कोई विकल्प ही नहीं बचेगा। सो फिक्र करने वाली कोई बात नहीं है। जश्न मनाओ...जश्न!"



हॉस्पिटल से अपने घर पहुंचा सुन्दर लाल तो मीडिया वाले वहां पहले से ही मौजूद थे।

सुन्दर लाल के सैक्रेटरी ने कहा कि सर की तबियत खराब है, वो टेंशन में भी हैं, वो उन लोगों से बातें नहीं कर पायेंगे।

लेकिन मीडिया वाले कहां मानने वाले थे! हॉल के सोफों व कुर्सियों पर यूं ही चिपके रहे, मानो उन्हें 'फेवीकोल' से चिपकाया गया था।

सैक्रेटरी उनसे झड़प ही रहा था कि भीतर से सुन्दर लाल आ पहुंचा।

काला शॉल ओढ़े हुये सुन्दर लाल कमजोर और गमजदा नजर आ रहा था।

"सर...आपको यहां नहीं आना चाहिये।"

"कोई बात नहीं...रमेश...।" वह कमजोर-सी आवाज में सैक्रेटरी से बोला सुन्दर लाल—"इन लोगों से कब तक बचा जा सकता है? आज नहीं तो कल इनका सामना करना होगा। आज ही सही। कुछ नहीं होगा। अगर हो भी जाये तो कोई गम नहीं। उस कमीने ने हमें जीने के काबिल छोड़ा ही कब है...! खों...खों...खों।"

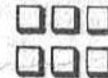
खांसते हुये सुन्दर लाल खाली कुर्सी पर बैठ गया और मीडिया वालों से बोला—"हां, पूछिये—क्या पूछना चाहते हैं आप लोग? क्या जानना चाहते हैं?"

"आपका अपने बेटे शुभम के बारे में क्या विचार है सर?"

"मेरा कोई बेटा नहीं है...!" सुन्दर लाल मानो तड़फकर बोला—"एक बेटा था, वो मर गया! दिल के आंगन में चिता बनाकर उस कम्बख्त का दाह-संस्कार कर दिया। शुभम नाम का जो लड़का पुलिस की हिरासत में है, वो वंशराज और सुगन्धा का कातिल है। उसके साथ हमारा कोई रिश्ता है तो...नफरत और हिकारत का। बहुत बड़ा गुनाह किया उस कमीने ने। उस कुत्ते का जुर्म माफी के काबिल नहीं है। उसे तुरन्त ही गोलियों से भून देना चाहिये। भगवान करे कि उसे फांसी की सजा हो।

कोई भी उसका अन्तिम संस्कार नहीं करेगा। पुलिस को ही उसे लावारिश कराकर देकर फूंकना पड़ेगा। अगर कोई वकील अदालत में उसकी पैरवी करेगा तो वो हमारा सबसे बड़ा दुःश्मन होगा। कमीने ने बेचारी सुजाता और उदयराज का वंश ही मिटा दिया। उनके घर का इकलौता चिराग बुझाकर उनकी जिन्दगी को अन्धेरे में धकेल दिया। सुगन्धा भी तो नहीं रही। शुभम ही उसकी मौत का जिम्मेदार है। कुत्ते से भी बदतर मौत मारना चाहिये उसे। उसका गन्दा जिस्म सड़-गल जाये और उसमें कीड़े पड़ जायें। तड़फ-तड़फकर...एड़ियां रगड़-रगड़कर ही मरना चाहिये वो कुत्ता! हम तो सुजाता बेटी और दामाद जी को मुंह दिखलाने के भी काबिल नहीं रहे। कौन-सा मुंह लेकर उनके सामने जायेंगे? भगवान किसी दुःश्मन को भी ऐसी औलाद ना दे। ऐसी औलाद से तो बे-औलाद रहना ही बेहतर है।"

कहने पर सुन्दर लाल फूट-फूटकर रोने लगा और फिर कुर्सी से कालीन पर गिरकर अचेत हो गया।



समय कभी भी किसी के रोके नहीं रुका है और ना ही रुकेगा।

घड़ी की सुईयां अपनी निश्चित रफ्तार से बढ़ती ही रहेंगी।

सेकंड मिनट में, मिनट घण्टे में, घण्टे दिन में, दिन हफ्ते में, हफ्ते महीने में, महीने साल में, साल दशक में, दशक शताब्दी में और शताब्दी सहस्रताब्दी में बदलती जायेंगी।

लेकिन यहां बात सिर्फ हफ्ते तक ही सीमित है। वंशराज व सुगन्धा की तेरहवीं हफ्तेभर में ही कर दी गई।

तब तक केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी व करतार सिंह दिल्ली में ही रहे और सुजाता भारती के साथ उदयराज को भी सम्भालते रहे।

सुजाता भारती की तबियत इतनी सुधर गई कि वो हॉस्पिटल से घर आ गई। चल-फिर भी सकती थी, लेकिन उसे कुछ दवाइयां नियमित रूप से लेनी थीं, अधिक-से-अधिक आराम करना था।

विदाई के समय केशव ने सुजाता को धार्मिक ग्रन्थ "श्री मद भगवत गीता" दिया और कहा कि उसके पठन से उसे आत्मिक बल मिलेगा और दुःख से उबरने में मदद मिलेगी।

फिर केशव और बाकी लोगों ने मुम्बई के लिये प्रस्थान किया।

मीडिया वाले ना जाने कब से सुजाता का इन्टरव्यू लेने को व्याकुल थे और बार-बार उससे समय मांग रहे थे।

आखिरकार सुजाता भारती ने मीडिया वालों को बुलवा ही लिया और उनके सवालों के जवाब देने के साथ-साथ इस बात की भी घोषणा कर दी कि तबियत ठीक ना होने की वजह से वो राजनीति में सक्रिय नहीं रहेगी और अध्यक्ष पद भी छोड़ देगी।

इस पर एक रिपोर्ट ने कहा—"देश की दशा बहुत खराब है भारती जी! चारों तरफ महंगाई और भुखमरी है। गरीब, मजदूर...यहां तक कि किसान भी खुदकुशी कर रहे हैं। जुर्म और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आतंकी घटनायें चर्मोत्कर्ष पर हैं। आपके राजनीति में सक्रिय होने से लोगों को उम्मीदें बंधी थीं। आपके साथ जो कुछ भी हुआ, उससे तो सारा देश ही दुःखी है। लेकिन सभी यही चाहते हैं कि आप देश की बागडोर सम्भालें।"

"न...नहीं...ये मुझसे नहीं होगा।" सुजाता भारती गम्भीर भाव से बोली, "इतने बड़े देश की जिम्मेदारी उठाने के लिये मजबूत कन्धे, मजबूत इरादे चाहिये। जबकि मैं जिस्मानी तौर पर ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी कमजोर हो गई हूं। भागा-दौड़ी करने की सामर्थ्य नहीं रही मुझमें लेकिन देशवासियों को निराश होने की जरूरत नहीं। वो हिन्दुस्तान पार्टी पर भरोसा करके वोटिंग करें! हिन्दुस्तान पार्टी देश को एक मजबूत और ईमानदार सरकार देगी।"

"लेकिन...सरकार तो प्रधानमन्त्री के दम पर चलती है भारती जी...।" एक लेडी रिपोर्टर बोली, "आपके पीछे हटने पर लोग किस पर भरोसा करके हिन्दुस्तान पार्टी को वोट देंगे? पार्टी प्रधानमन्त्री के रूप में किसे पेश करेगी?"

"अपने सुन्दर लाल जी हैं ना।"

"क...क्या?"

"क्या?"

"सुन्दर लाल...?"

"सु...सुन्दर लाल...?"

सभी मीडियाकर्मी हक्के-बक्के होकर एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"सुन्दरलाल जी ईमानदार और जुझारू किस्म के नेता हैं...।" सुजाता भारती अपनी ही रौ में कहती चली गई—"उन पर कभी भी किसी किस्म का आरोप नहीं लगा। उनमें प्रधानमन्त्री बनने की काबिलियत है। वो देश को सम्भाल सकते हैं।"

"क्या बात कर रही हैं आप भारती जी? सुन्दर लाल जी के बेटे ने आपके बेटे की हत्या की है। आपकी भतीजी की आत्महत्या के लिये भी शुभम ही जिम्मेदार है।"

"तो इसमें सुन्दर लाल जी का क्या दोष है भला? उन्होंने तो शुभम से नहीं कहा था कि वो वंशराज पर झूठा इल्जाम लगाकर उसकी हत्या कर दे और हत्या को आत्महत्या का रूप दे दे। इस बात की मैं गवाह हूं कि सुन्दर लाल जी ने शुरू से ही शुभम को अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार दिये। लेकिन वो नालायक और मुजरिम किस्म का निकल गया तो इसमें बेचारे सुन्दर लाल जी क्या कर सकते हैं? किसी की भी सन्तान खराब निकल सकती है। विश्रवा ऋषि जैसे भगवान में पूर्ण आस्था रखने वाले महापुरुष के घर में रावण, कुम्भकर्ण और सुर्पनखा जैसे राक्षस पैदा हो गये थे। महाराजा उग्रसेन जैसे महाप्रतापी के यहां कंस जैसा दुष्ट, पापी बेटा पैदा हो गया था। और भी ऐसे कई एग्जाम्पिल हैं। मैं आप लोगों के माध्यम से देश की जनता से अपील करूंगी कि शुभम के बुरे कर्मों की सजा उसके पिता को ना दें और सुन्दर लाल जी पर भरोसा करके हिन्दुस्तान पार्टी को सत्ता में लायें। मैं पार्टी स्तर पर भी ये अपील देशभर में जारी करूंगी। आप लोग भी मेरी अपील को देशवासियों तक पहुंचाइये। मैं आपकी आभारी रहूंगी।"

सभी मीडियाकर्मी हक्का-बक्का थे।

किसी को भी ऐसी उम्मीद न थी कि सुजाता भारती अपने बेटे व भतीजी के कातिल के पिता का यूं खुलकर समर्थन करेगी।

❑❑❑

❑❑❑

"भगवान के लिये दरवाजा खोलिये...अंकल जी!"

"दरवाजा खोलिये सुन्दर लाल जी!"

सुजाता भारती व उदयराज बन्द दरवाजे को पीटते हुये सुन्दर लाल को पुकार रहे थे।

"न...नहीं...मैं दरवाजा नहीं खोलूंगा।" भीतर से सुन्दरलाल की ऐसी आवाज आई कि मानो वो रो रहा हो—"भगवान के लिये तुम दोनों चले जाओ। मैं तुम दोनों का सामना नहीं कर सकता। मेरे उस नीच लड़के ने मुझे इस काबिल नहीं छोड़ा कि मैं तुम दोनों से नजरें मिला सकूं। मैं दर्पण में भी अपनी शक्ल देखने लायक नहीं रहा। अपनी ही नजरों में गिर गया हूं। कम्बख्त दिल का दौरा पड़ा, लेकिन मेरी जान लेकर नहीं गया। मैं तो ऐसे ही शर्मिन्दा था सुजाता बेटी। ऊपर से तुमने देश की जनता से ये अपील कर डाली कि वो मुझे भावी प्रधानमन्त्री के रूप में स्वीकार करके हिन्दुस्तान पार्टी को समर्थन दें—ये बात मुझे जीते-जी मार गई। क्यों किया तुमने ऐसा? क्यों माफ किया मुझे?"

"क्योंकि आप दोषी नहीं हैं अंकल जी! जो भी किया...शुभम ने किया! औलाद अगर नालायक निकल जाये तो इसमें मां-बाप का क्या दोष? मैं जानती हूं कि जितना दुःख मुझे और उदयराज जी को है, उतना ही दुःख आपको है। आप वंशराज और सुगन्धा को शुभम से ज्यादा ही चाहते थे। अगर आपने दरवाजा ना खोला तो मैं दीवार से सिर टकरा-टकराकर खुद को जख्मी कर लूंगी। अगर मुझे अपनी बेटी समझते हैं तो...दरवाजा खोलिये...अंकल जी...!"

दरवाजा खोला सुन्दर लाल ने और सुजाता व उदयराज के पैरों में गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा, शुभम के किये की माफी मांगने लगा।

सुजाता व उदयराज ने बड़ी मुश्किल से उसे समझा-बुझाकर शान्त किया।

सुजाता ने उसे अपनी सौगन्ध देकर इलेक्शन की जिम्मेदारी सम्भालने के लिये राजी किया।

❑❑❑

❑❑❑

वह छोटा-सा सिनेमा हॉल ही मालूम पड़ता था।

ढलानदार फर्श पर दो सौ कुर्सियां लगी हुई थीं और सामने स्टेज पर प्लास्टिक की शीट का पर्दा या स्क्रीन लगी हुई थी।

पचास कुर्सियों पर अलग-अलग इलाकों से आये आई० एस० आई० के एरिया कमांडर विराजमान थे।

देखने पर वो सभ्य समाज के सम्मानित व्यक्ति ही नजर आते थे—लेकिन उन देशद्रोहियों के काम शैतानों से भी खतरनाक थे।

हिन्दुस्तानी होने पर भी वो सभी दौलत के लिये आई० एस० आई० के जरिये पड़ोसी मुल्क के पिट्ठू बने हुये थे और देश के खिलाफ काम कर रहे थे।

जिस थाली में खा रहे थे, उसी में छेद कर रहे थे। जिस धरती पर जन्मे—उसी के सीने पर गद्दारी के खूंटे ठोक रहे थे।

जिस मिट्टी में खेले-कूदे—उसी में हिंसा का बारूद मिला रहे थे।

हिन्दुस्तानी होकर हिन्दुस्तानियों का ही खून बहा रहे थे।

खैर, उन सभी कमीनों की आंखें स्क्रीन पर टिकी हुई थीं और वो अपने चीफ काला मदारी के पधारने का बेताबी के साथ इन्तजार कर रहे थे।

इन्तजार के लम्हें समाप्त हुये।

स्क्रीन के परे लाइट ऑन हुई और कुर्सी पर बैठा काला मदारी दिखलाई पड़ा।

लेकिन परछाई के जैसा ही।

प्लास्टिक की स्क्रीन के कारण उसका चेहरा तो क्या...कपड़े भी दिखलाई नहीं पड़ रहे थे। इस बात का आभास

जरूर हो रहा था कि पैन्ट के साथ ओवरकोट पहने हुये था और सिर पर हैट भी लगाये हुये था।

सभी ने उठकर और सिर झुकाकर अपने 'आका' का अभिवादन किया।

"बैठ जाइये आप लोग...।" हॉल में लगे विभिन्न स्पीकर्स से कौअे जैसी कर्कश आवाज उभरी, "आप सभी का आई० एस० आई० के हैडक्वार्टर पर ह्रार्दिक स्वागत है। बैठ...जाइये।"

सभी वापिस कुर्सियों पर बैठ गये।

हाथ में कार्ड लेस माइक लिये हुये परछाई सरीखा काला मदारी कुर्सी से उठा और चहलकदमी-सी करते हुये कौअे की सी आवाज में बोला—"इलेक्शन सिर पर है। हमारे पाकिस्तानी आका नहीं चाहते थे कि सुजाता भारती हिन्दुस्तान की प्राइम मिनिस्टर बने। हम भी नहीं चाहते थे। वंशराज और सुगन्धा की मौत ने सुजाता को तोड़कर रख दिया! वो राजनीति और हिन्दुस्तान पार्टी से दूर हो गई। अब वो प्रधानमन्त्री नहीं बनने वाली। अगर ऐसा ना होता तो उसका खात्मा करना पड़ता। खैर, भारती वाले टॉपिक को छोड़ हम उस टॉपिक पर आते हैं, जिसके लिये आप लोगों को यहां पर तलब किया है।

आप लोग सामाजिक और प्रतिष्ठित लोग हैं। कोई नहीं जानता कि आपका आई० एस० आई० से कोई ताल्लुक है। आपमें से कई लोग नेता भी हैं—विभिन्न पार्टियों से जुड़े हुये हैं। या फिर आपके द्वारा बनाये गये आई० एस० आई० एजेन्ट राजनीति में भी सक्रिय हैं। जुगाड़ करके खुद इलेक्शन लड़िये और अपने आदमियों को भी लड़वाइये। निर्दलीय लड़िये और हर तरह के हथकण्डे अपनाकर जीतिये—सांसद बनिये। किसी पार्टी के सिम्बल पर भी लड़ते हैं तो कोई दिक्कत नहीं! हमारे यानि आई० एस० आई० के ज्यादा-से-ज्यादा सांसद बनने चाहिये। इससे हमारी ताकत बढ़ेगी, हम सरकार बना भी सकेंगे और सरकार गिरा भी सकेंगे। जो लोग हमारी बात से सहमत हैं, वो कृपया हाथ उठा दें।"

सभी ने हाथ खड़े कर दिये।

"गुड...वैरी गुड...!" काला मदारी खुश होकर बोला, "ये

हुई ना बात! अभी से जुट जाइये। इलेक्शन लड़ने और जीतने की तैयारियां करिये। खुद लड़िये—या अपने आदमियों को लड़वाइये! आई० एस० आई० के जितने भी सांसद बन जायें...उतना ही बढ़िया रहेगा। किसी को मारा-मारी या हिंसा करने वाले आदमियों की जरूरत पड़े तो हमसे कॉन्टेक्ट करे। टेरर मूवमेंट फ्रन्ट का सरगना अपना ही आदमी है। हम उसको बोलकर फायरिंग या बमबारी करने वाले आदमी दिलवा देंगे। वैसे आप लोग भी कम नहीं। आपके पास इस तरह के आदमियों की कोई कमी नहीं है। बस...आज तो इतना ही। इलेक्शन की तैयारियां करिये। गुड लक...गुड बाय...!"

स्क्रीन के पार रोशन लाइट गुल हो गई।

काला मदारी दिखलाई देना बन्द हो गया।

सभी एरिया कमांडर उठ खड़े हुये।

❑❑❑

❑❑❑

"इन्डियन पब्लिक पार्टी के उम्मीदवार रुद्र प्रताप को भला कौन नहीं जानता है? वो गैंगस्टर है। मुम्बई अन्डरवर्ल्ड के काफी बड़े हिस्से पर उसका ही कब्जा है। हर बुरे काम और जुर्म करता है वो। उसके हथियारबन्द गुन्डे इलाके में आतंक मचाये हुये हैं। किसी भी दुकान में पहुंचकर सामान लूट लेते हैं। पेमेंट करना तो दूर की बात रही...गल्ला भी लूट लेते हैं। घरों में घुसकर मारपीट, लूटमार करते हैं। औरतों की इज्जत से खेलते हैं। किसी को भी सरेआम कत्ल कर देते हैं। उसने सभी प्रत्याशियों के साथ मुझे भी धमकी दी थी कि मैं इलेक्शन ना लड़ूं। बाकी लोग तो डरकर पीछे हट गये—लेकिन मैंने पर्चा भरा। पर्चा भरवाने में सैकड़ों की तादाद में लोग मेरे साथ थे। यहां पर भी मैं हजारों की भीड़ देख रहा हूं...खों...खों...खों!"

कोई साठ वर्षीय तेजपाल ठाकरे ने खांसी उठने पर पानी का गिलास उठाकर कुछ घूंट भरीं, फिर खचाखच भरे मैदान पर दृष्टिपात करके बोला, "आप लोगों के समर्थन, आशीर्वाद से मैंने लगातार दो इलेक्शन जीते। दोनों ही बार इन्डियन पब्लिक पार्टी के प्रत्याशियों की जमानतें जब्त हुईं। इस बार

इन्डियन पब्लिक पार्टी ने गैंगस्टर रुद्र प्रताप को टिकिट थमा दिया। लेकिन गुन्डागर्दी से इलेक्शन नहीं जीता जाता। वो जमाने लद गये—जब गुन्डों के दम पर बूथ-कैप्चरिंग कर ली जाती थी—ठप्पेबाजी चलती थी। चुनाव आयोग सख्त हो गया है। जरा-सी भी गड़बड़ी नहीं होने देता। फिर मेरे साथ जनता-जनार्दन है—आप सभी लोग हैं। किसी से भी डरने या दबने की जरूरत नहीं है। इलेक्शन वाले दिन सुबह-सवेरे उठकर पहले अपनी वोट डालिये और फिर बाकी के काम करिये। निश्चिन्त रहिये! हिन्दुस्तान पार्टी सत्ता में आ रही है। मैं हार भी गया...तो भी इस इलाके के लोगों को रुद्रप्रताप की गुन्डागर्दी से निजात दिल दूंगा। वो जेल में जायेगा—या फिर मुम्बई छोड़कर भागने पर मजबूर हो जायेगा। ये मेरा वादा नहीं...दावा है।"

तालियों की गड़गड़ाहट से चारों दिशायें गूंज उठीं।

❑❑❑
❑❑❑

खादी की सफेद पोशाक में काला-कलूटा व हट्टा-कट्टा रुद्र प्रताप यूं ही लग रहा था कि मानो कोई भैंसा रूई के ढेर में घुस गया हो।

तरबूज के साइज का गंजा सिर, लेकिन बीचों-बीच बहुत मोटी व फुटभर लम्बी चुटिया थी—मानों सिर पर बैठे काले सांप ने अपनी पूंछ पीठ पर लटकाई हुई हो।

डी० वी० डी० से जुड़े टी० वी० पर तेजपाल ठाकरे की जनसभा वाली फिल्म चल रही थी, जिसे सिंहासन-नुमा कुर्सी पर बैठा रुद्र प्रताप और कमरे में मौजूद चार हथियारबन्द गुन्डे भी देख रहे थे।

रुद्र प्रताप ने सामने रखी मेज पर से बोतल उठाकर शराब की लम्बी घूंट भरी तथा फिर बोला—"ये बुड्ढा पागल हो गया है—तभी तो हमारी धमकी के बावजूद भी इसने पर्चा भरा और जनसभायें कर रहा है। हारेगा हरामी! जमानत जब्त हो जायेगी। हमारे खौफ से एक भी वोटर घर से नहीं निकलेगा। हमारे आदमी ही सभी बूथों पर जाकर ठप्पेबाजी करेंगे।"

"किसी बी गलतफहमी का शिकार नेई होने का बीड़ू...!"

तभी रुद्रप्रताप की कोई तीस वर्षीय, छः फुट लम्बी, तन्दुरुस्त, सांवली, लेकिन तीखे नैन-नक्श वाली रखैल बिजली कमरे में दाखिल हुई। उसके लड़खड़ाते कदम, भभका चेहरा व सुर्ख आंखें इस बात की चुगली कर रहे थे कि उसने काफी शराब पी हुई थी। वो निःसंकोच रुद्रप्रताप की गोद में बैठ गई और लिपटकर उसकी मोटी गर्दन में मखमली बांहों का हार डालने पर बोली, "चुनाव आयोग का नया अधिकारी बहोत कड़क है। कल वो टी० वी० पे बोल रेला था कि इलेक्शन में कहीं से बी लोकल पुलिस की ड्यूटी नेई लगाई जायेगी। बाहर की फोर्स तैनात की जायेगी। सब्बी को हुक्म दिया जायेगा कि गड़बड़ी करने वाले कू फटाक से गोली ठोक देने का। नो गिरफ्तारी, नो लाठी चार्ज। कहीं पे बी जरा-सी बी गड़बड़ी होयेंगी तो उस इलाके के सब्बी अधिकारी सस्पेंड कर दिये जायेंगे। उनके खिलाफ जांच होयेंगी और कसूरवार निकलने पे जेल भेजा जायेगा। पोलिंग बूथ पे इच नेई...अक्खा इलाके में वीडियो कैमरे लगाये जायेंगे। नेई...तुम्हेरे आदमी कुछ बी नेई करने कू सकते। बूथ कैप्चरिंग नेई होयेंगी! एकीच रास्ता बच रेला है जानी।"

"कौन-सा?"

"उस साले हलकट तेजपाल ठाकरे कू टपका डालने का। फिर डर के मारे कोई बी पर्चा नेई भरेगा। फिर तुम्हेरे कू इच जीतने का है। क्या बोलता है मैन?"

रुद्र प्रताप की बड़ी-बड़ी व अंगारों-सी सुर्ख आंखें सिकुड़ चलीं। वह बुदबुदाया—"ठीक है। साले को टपकवा देते हैं।"

"नक्को...अपने आदमी इस्तेमाल में नेई लाने का। नेई तो तुम पे इच शक जायेगा। तुम्हेरे कू गिरफ्तार कर लिया जायेगा। ऐसा लगने कू नेई मंगता कि ठाकरे का कत्ल किया गयेला है। ऐसा लगने का कि कोई आतंकवादी हमले में उड़ गयेला! बात भेजे में घुस रेली है कि नेई?"

"ठीक है! फिर तो काले खां से मिलना पड़ेगा।"

"बरोबर! उसी से मिलने का और ठाकरे का गेम बजवा डालने का...क्या?"



का॰। रंग की अफगानी पोश क व पगड़ी वाला काले खां अपने नाम के विपरीत खूब गोरा-चिट्टा था।

पतला शरीर, जो कि साढ़े छह फुट का होने की वजह से और भी पतला मालूम पड़ता था। घनी व लम्बी दाढ़ी पेट का 'किस' ले रही थी। पुराने किले के खंडहर के नीचे बनाये गये दस बाई दस फुट के तहखाने में वो जमीन पर बिछे बिस्तर पर बैठा शराब के साथ तन्दूरी मुर्गा चबा रहा था।

तहखाने में मौजूद चार आतंकी भी शराब के साथ तन्दूरी मुर्गे का भक्षण कर रहे थे—उनकी गोद में ए० के० छप्पन यूं रखी हुई थी, जैसे मां की गोद में सोता हुआ बच्चा।

गुलाबी रंग की ईरानी पोशाक वाली एक खूबसूरत हसीना भी मौजूद थी। उसका नाम हसीना ही था और वो काले खां की रखैल थी। सिर्फ रखैल ही नहीं थी, बल्कि खूंखार किस्म की आतंकवादी भी थी वो। हर प्रकार के हथियारों व बमों का इस्तेमाल करना बखूबी जानती थी और मार्शल आर्ट में भी माहिर थी।

आम तौर पर हसीना मर्दाना पोशाक में रहती है—लेकिन थोड़ी देर पहले उसने नाच-गाकर काले खां का मनोरंजन किया था—इसीलिये ईरानी डांसर जैसी पोशाक धारण कर ली थी।

फ़िलहाल वो शराब के साथ तन्दूरी मुर्गे का स्वाद लेते हुये काले खां की बगल में बैठी हुई थी।

"हैलो, काले खां! कैसे हो?"

"आओ...आओ...मुम्बई के एरिया कमांडर रुद्र प्रताप का इस्तकबाल है।" काले खां ने उठकर रुद्र प्रताप से हाथ मिलाया, उसके गले मिला और फिर उसे अपने वाले बिस्तर पर बिठाया।

"कैसी हो हसीना?" पूछने के साथ रुद्र प्रताप ने हसीना के हसीन चेहरे व जिस्म को 'घोलकर पी जाने वाली' नजरों से ही देखा।

उसके भाव समझने पर भी हसीना बेशर्मी से हंस दी और

फिर बोतल से गिलास में शराब व सोडा वाटर डालकर रुद्र प्रताप को थमा दिया। एक बड़े बर्तन से तन्दूरी मुर्गा निकालकर स्टील की प्लेट में रखा और रुद्र प्रताप की तरफ सरका दिया।

रुद्र प्रताप एक ही घूंट में सारी शराब उदरस्थ कर गया और खाली गिलास हसीना को थमाते वक्त जान-बूझकर उसकी गोरी व मुलायम उंगलियों को स्पर्श भी किया। फिर काले खां से मुखातिब होकर बोला—"तुम्हें मेरा एक काम करना होगा काले खां।"

"हां, बोलो बिरादर!" काले खां हसीना की रेशमी जुल्फों से खेलते हुये बोला—"वैसे काला मदारी जी ने तुम्हारे आने की बाबत ट्रांसमीटर पर बोल दिया था। ये भी कहा था कि मैं तुम्हारा काम कर दूं। लेकिन ये नहीं बतलाया था कि वो काम क्या है।"

"काला मदारी जी से कॉन्टेक्ट किये बिना तो तुमसे मिला ही नहीं जा सकता...काले खां! क्योंकि तुम्हारा कोई एक ठिकाना तो है नहीं। बार-बार, जल्दी-जल्दी ठिकाने बदलते रहते हो।"

"हां, ऐसा करना मजबूरी है बिरादर! हिन्दुस्तान की सरकार ने मुझ पर पांच करोड़ का इनाम देने का ऐलान किया हुआ है...जिन्दा या मुर्दा। कई खुफिया एजेंसी मेरी टोह में लगी हुई हैं। पुलिस और मिलिट्री भी मेरे पीछे पड़ी है। इसलिये जल्दी-जल्दी ठिकाने बदलता रहता हूं। सिर्फ काला मदारी जी को ही मालूम होता है कि मैं कहां पर छिपा हुआ हूं। खैर काम बतलाओ।"

"मेरे मुकाबले में तेजपाल ठाकरे हिन्दुस्तान पार्टी के सिम्बल पर इलेक्शन लड़ रहा है। मैंने मरवाया तो फंस जाऊंगा—क्योंकि इलेक्शन कमिश्नर टाइट हुआ पड़ा है। तुम मरवाओगे तो यही माना जायेगा कि बेचारा ठाकरे आतंकवादियों का शिकार हो गया। वैसे भी वो आतंकवादियों के खिलाफ आग उगलता रहता है। ये नेक काम जितनी भी जल्दी हो जाये...उतना ही बेहतर रहेगा। तो कब तक उड़वा दोगे तेजपाल ठाकरे को?"



अगले ही दिन धमाका हो गया।

तेजपाल ठाकरे पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ एक मलीन बस्ती में जन सम्पर्क अभियान पर निकला!

एक गरीब व फटेहाल नजर आती महिला ने तेजपाल ठाकरे को फूलों का हार पहनाया और उसके पैर छूने के लिये झुकी।

उसके झुकते ही पेट पर बन्धे आर० डी० एक्स० बम का बटन दब गया।

कर्णभेदी धमाके के साथ उस औरत के साथ तेजपाल ठाकरे और आसपास खड़े पार्टी के कई कार्यकर्ता और समर्थकों के जिस्म भी हवा में गैस के गुब्बारों की मानिन्द उड़े और फट गये। जमीन पर इधर-उधर मानव अंगों के साथ खून व गोश्त के लोथड़े व हड्डी के टुकड़े बिखरे नजर आये।

भगदड़ मच गई।

कमजोर दिलवाले तो घटनास्थल पर ही अचेत हो गये।

सिर्फ उस इलाके में ही नहीं, पूरी मुम्बई...पूरे प्रदेश और सारे देश में हड़कम्प-सा मच गया।

हर किसी ने यही माना और यही कहा कि ये आतंकवादी घटना थी।

तेजपाल ठाकरे सुजाता भारती के स्वर्गवासी पिता का मित्र था और उसने सुजाता को गोद खिलाया था। सो तबियत ठीक ना होने पर भी सुजाता अपने पति व हिन्दुस्तान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदयराज के साथ मुम्बई पधारी। राष्ट्रीय अध्यक्ष और उदयराज?

हां, सुजाता ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था—वो चाहती थी कि सुन्दर लाल ही पार्टी अध्यक्ष बन जाये, लेकिन सुन्दर लाल ने जिद करके, कसमें देकर उदयराज को अध्यक्ष बना दिया था—उसका कहना ये था कि सुजाता का पति होने की वजह से उदयराज के पार्टी अध्यक्ष बनने से सुजाता भारती के हटने की वजह से होने वाले नुकसान की भरपाई हो जायेगी।

सुन्दर लाल पहले आकर तेजपाल ठाकरे के अन्तिम संस्कार में सम्मलित हुआ था।

सुजाता व उदयराज ने तेजपाल ठाकरे के घर पहुंचकर उसे श्रद्धांजली दी और उसकी निःसन्तान विधवा मायादेवी को सांत्वना भी दी।

उदयराज ने मायादेवी से कहा कि वो अपने पति के इलाके से इलैक्शन लड़ें—लेकिन पति की हत्या से घबराई मायादेवी ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। स्थानीय नेताओं और तेजपाल ठाकरे को इलेक्शन ल..ा रहे लोगों को भी वह मना कर चुकी थी।





सुजाता भारती मुम्बई आये और अपने धर्म भाई से ना मिले—ऐसा हो सकता था?

वह उदयराज के साथ केशव के घर पहुंची।

केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी व करतार सिंह ने दोनों का हार्दिक स्वागत किया।

कुछ देर पश्चात् सुजाता भारती ने केशव को धर्म-संकट, बल्कि महासंकट में ही डाल दिया—

"अगर मैं आपसे कुछ मांगू भाई...तो क्या दोगे? या निराश कर दोगे?"

"कैसी बात करती हो बहनजी! ऐसी दिल तोड़ने वाली बात क्यों करती हो? पहली बार मेरी बहन कुछ मांग रही है। भला मैं अपनी बहन को निराश कर सकता हूं? बोलो, क्या चाहिये? तुम्हारे लिये जान भी हाज़िर है।"

"नहीं ऐसे नहीं।"

"तो फिर?"

"पहले मेरे सिर पर हाथ रखकर कसम खाइये कि मेरी बात मानेंगे।"

केशव ने बिना सोचे-विचारे, निःसंकोच सुजाता के सिर पर हाथ रख दिया—लेकिन सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी व करतार सिंह और चाय व नाश्ता लेकर आया नौकर रणछोड़

सिंह पशोपेश में पड़ गये कि सुजाता ऐसा क्या चाहती है कि उसे केशव का हाथ अपने सिर पर रखवाना पड़ा?

"अब तो तुम्हारे सिर पर हाथ रख दिया मैंने और कसम भी खाता हूं कि तुम्हें निराश नहीं करूंगा। जान भी मांगोगी तो हंसकर दूं...।"

"भगवान आपको मेरी भी उम्र लगा दे मेरे भाई। वो बहन कम्बख्त ही होगी, जो अपने भाई की जान मांगकर सबसे पावन रिश्ते को कलंकित करेगी।"

"तो फिर क्या चाहिये बहनजी—फरमाइये?"

"मुम्बई पश्चिमी से हमारी पार्टी के केन्डीडेट श्री तेजपाल ठाकरे जी आतंकवादियों के शिकार हो गये। उनकी धर्म-पत्नी ने इलेक्शन लड़ने से मना कर दिया। दूसरा कोई नेता भी चुनाव लड़ने के लिये तैयार नहीं है, क्योंकि सभी इन्डियन पब्लिक पार्टी के केन्डीडेट रुद्र प्रताप से डरे हुये हैं। ये तो तेजपाल ठाकरे जी ने ही रुद्र प्रताप के सामने इलेक्शन लड़ने की हिम्मत की थी। अब उनकी जगह आपको इलेक्शन लड़ना है भाई।"

❑❑❑

❑❑❑

सुजाता के अन्तिम वाक्य ने सभी को अर्थात् सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी व करतार सिंह को चिहुंका दिया।

नौकर रणछोड़ सिंह किचन में जा चुका था—वरना वो भी चौंकता।

केशव गम्भीर हो चला।

टेंशन दूर करने के इरादे से उसने सिगरेट सुलगा ली और गहरे-गहरे कश लगाने लगा।

चांदनी व सोफिया ने सुजाता, उदयराज समेत सभी को चाय के कप दिये। सुजाता के सामने बर्फी व भुने हुये मसालेदार काजू की प्लेटें थीं।

"क्या हुआ भाई?" सुजाता काजू का पीस चबाते हुये बोली—"आप खामोश कैसे रह गये? आपने कोई जवाब नहीं दिया। क्या आपको इलेक्शन लड़ने में कोई प्रॉब्लम है?"

"तुमने तो मुझे धर्म-संकट में डाल दिया बहनजी...!"

सिगरेट ऐश-ट्रे में ठूंसकर केशव चाय सिप करके बोला—"राजनीति में मेरी कतई भी दिलचस्पी नहीं। तुम तो जानती ही हो कि मेरा लाइफ कितनी बिजी है। कोर्ट-कचहरी के काम, इन्वेस्टीगेशन और कोर्ट में मुकदमे लड़ना, जरूरत पड़ने पर देश के दुःश्मनों के खिलाफ जंग लड़ता हूं। ये मेरा प्रोफेशन ही नहीं है—बल्कि मेरा जुनून है। मैंने खुद को कानून, देश और इन्सानियत को समर्पित कर दिया है। ऐसा नहीं कि इलेक्शन लड़ लिया और छुट्टी पा ली। अगर जा... संसद बन गया तो फिर अपने संसद क्षेत्र को समय देना होगा—वोटर्स की समस्याओं को दूर करने क प्रयास करने होंगे। संसद की कार्रवाई में भाग लेने के लिये दिल्ली जाना पड़ेगा। फिर मैं कानून या इन्वेस्टीगेशन वगैरा के लिये वक्त कैसे निकाल...?"

"मैं कुछ नहीं जानती! आपको इलेक्शन लड़ना ही होगा। अगर रुद्र प्रताप इलेक्शन जीत गया तो उस इलाके के लोगों की जिन्दगी बद से बदतर हो जायेगी। रुद्र प्रताप सफेदपोश मुजरिम है। गैंगस्टर है। कहा तो ये भी जाता है कि उसके आई० एस० आई० से भी सम्बन्ध हैं। हो सकता है कि तेजपाल ठाकरे जी के कत्ल के पीछे भी रुद्र प्रताप का ही हाथ हो। उसे ये बात जंच गई होगी कि ठाकरे जी के सामने वो जीत नहीं पायेगा। उसने ठाकरे जी को इलेक्शन से हट जाने की चेतावनी भी दी थी। रुद्र प्रताप का मुक़ाबला आप ही कर सकते हैं और उसे इलेक्शन में हरा सकते हैं। फिर...देश की कन्डीशन तो देख ही रहे हैं आप भाई। चारों तरफ जुर्म और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आतंकी घटनायें बढ़ रही हैं। आई० एस०आई० जैसी दुश्मन देश की संस्थायें हमारे देश में अपनी जड़ें मजबूत करती जा रही हैं। ऐसा ही चलता रहा तो देश तबाह हो जायेगा। देश को ईमानदार किस्म के नेताओं और सरकार की सख्त जरूरत है। देश की सेवा खादी पहनकर, नेता या एम० पी०, एम० एल० ए० बनकर भी की जाती है। आप कानून के पुजारी हैं और कानून व्यवस्था बिगड़ी हुई है। सत्ता के दम पर ही बिगड़ी हुई कानून व्यवस्था को सुधारा जा सकता है।"

"ल...लेकिन...!"

"नहीं! मैं कुछ नहीं जानती। आपको इलेक्शन लड़ना ही होगा।"

"आपको बुआ जी की बात मान ही लेनी चाहिये डैडी जी।" चने के दाने कुटकुटाते हुये बोला आशीर्वाद—"रुद्र प्रताप को यूं तो मैं भी सैट कर सकता हूं। लेकिन मजा तो तभी आयेगा जब वो इलेक्शन में जनता की वोटों से हारे।"

"हो जाये केशव।" केशव ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि सोफिया उसके मुंह में बर्फी का पीस ठूंसकर बोली—"वास्तव में ही देश को तुम जैसे लीडर्स की सख्त जरूरत है। जब तक इस देश में ईमानदार सरकार और संसद में ईमानदार सांसद नहीं पहुचेंगे—तब तक गलत सिस्टम नहीं बदलेंगे। अगर गलत सिस्टम चेंज नहीं किये जायेंगे तो देश तरक्की नहीं करेगा—जुर्म, भ्रष्टाचार और आतंकी वारदातों से मुक्ति नहीं मिलेगी। माना कि राजनीति कीचड़ समान है। लेकिन उस कीचड़ में कमल खिलाने के लिये तुम जैसे लोगों को ही कीचड़ में उतरना पड़ेगा। फिर कीचड़ को अच्छी फसल पैदा करने वाली खाद में बदलते देर नहीं लगेगी।"

सिर्फ सोफिया और आशीर्वाद ही नहीं, बल्कि राजन, चांदनी, करतार सिंह व उदयराज ने भी केशव से कहा कि वो चुनावी मैदान में कूद पड़े।

आखिरकार केशव को हामी भरनी पड़ी।

❑❑❑

❑❑❑

"जैसा कि आप अपनी टी० वी० स्क्रीन पर देख ही रहे हैं। हिन्दुस्तान पार्टी के सिम्बल पर कचहरी में पर्चा भरने पहुंचे केशव पण्डित के साथ इतनी भीड़ है कि किसी राष्ट्रीय स्तर के नेता के साथ भी नहीं होती होगी। कचहरी में मौजूद इन्डिया टी० वी० रिपोर्टर माधवी से हमारा सम्पर्क जुड़ गया है। माधवी, वैसे तो हम देख ही रहे हैं कि भीड़ का क्या आलम है। लेकिन तुमसे जानना चाहेंगे कि वहां क्या चल रहा है? कैसा माहौल है?"

टी० वी० स्क्रीन पर काली डेनिम की जींस व पीली टी-

शर्ट वाली खूबसूरत माधवी हाथ में माइक पकड़े हुये दिखलाई दी, जिसे भीड़ से बचने के लिये काफी ज्यादा मशक्कत करनी पड़ रही थी—

"यहां का बुरा हाल है रोशनी! पण्डित जी के बंगले पर ही पचास हजार लोग जमा हो गये थे। पुलिस को पण्डित जी के डेप्युटेशन के लिये कई रूट डाइवर्जन करने पड़े। जिन-जिन रास्तों से भी जुलूस निकला, वहां जाम लग गया। गणेश उत्सव जैसा ही माहौल देखने को मिला। बैन्ड-बाजे, ढोल-नगाड़े बज रहे थे। गुलाल और अबीर उड़ रहा था। उत्साहित लोग होली खेल रहे थे—नारे और जयकारे लगा रहे थे। भीड़ को कन्ट्रोल करने में प्रशासन को पसीने छूट गये। कचहरी को पुलिस छावनी में कन्वर्ट कर दिया गया। दस हजार लोगों के भीतर दाखिल होने पर कचहरी के तमाम गेट बन्द कर दिये गये। बाहर ना जाने कितने हजार लोगों की भीड़ जमा है—जिनसे पुलिस को पार पाना मुश्किल हो रहा है। कई बार लाठी चार्ज करना पड़ा। टीयर गैस तक यूज करनी पड़ी।"

"क्या पण्डित जी भीतर जा चुके हैं माधवी?"

"हां, वो भीतर जा चुके हैं।"

"उनके प्रस्तावक कौन-कौन हैं माधवी?"

"हिन्दुस्तान पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री बालेश्वर मुन्डे और स्वर्गीय तेजपाल ठाकरे की धर्म-पत्नी मायादेवी। वैसे यहां हिन्दुस्तान पार्टी के कई वरिष्ठ नेता, एम० पी० और एम० एल० ए० भी मौजूद हैं। भीड़ देखकर लगता है कि जैसे कुम्भ का मेला लगा हो...।"

(केशव पण्डित के नियमित पाठक जानते ही हैं कि माधवी केशव व आशीर्वाद के गुरु एडवोकेट रमाकान्त की बेटी है, जिसे केशव ने धर्म-बहन बनाया हुआ है और आशीर्वाद उसे 'बुआजी' कहता है।)

❑❑❑

❑❑❑

रुद्र प्रताप और उसके बेटे मुकेश , रखैल बिजली तेजपाल ठाकरे की हत्या के बाद जश्न में डूबे हुये थे कि केशव पण्डित

द्वारा चुनाव लड़ने की खबर अजगर बनकर उनकी तमाम खुशियों को मुर्गी [illegible]च्चों की मानिन्द ही निगल गई।

तमाम उत्साह की फसल पर पाला-सा मार गया। जश्न घोड़े [illegible]ंग की मानिन्द गायब।

रुद्र प्रताप अपने पच्चीस वर्षीय बेटे मुकेश व रखैल बिजली के साथ बैठा टी० वी० देख रहा था, जिस पर माधवी केशव तथा उसके जुलूस की महिमा मंडित किये जा रही थी।

भीतर-ही-भीतर ना जाने कब से सुलगे जा रहे रुद्र प्रताप के सब्र का बांध टूटा तो उसने कांच का वजनी पेपर वेट उठाकर पूरी शक्ति के साथ टी० वी० पर खींच मारा—

छनाक...की आवाज के साथ टी० वी० स्क्रीन टूटी और आग के साथ धुएं का गुब्बार निकला।

मुकेश व बिजली हड़बड़ा उठे।

"क्या हुआ डैड...?"

"अन्धे की औलाद है क्या तू साले...?" दहाड़कर ही बोला रुद्र प्रताप—"टी० वी० पर देख नहीं रहा था कि केशव पण्डित के साथ इलाके का ही नहीं, बल्कि पूरी मुम्बई का बच्चा-बच्चा है। तेजपाल ठाकरे को भी फेल कर दिया इसने तो! पण्डित की जीत पर 'आई० एस० आई०' मार्के वाली मुहर लग गई हो जैसे। अपने जीतने का कोई चांस नहीं...।"

कहने पर उसने मेज पर से बोतल उठाई और मुंह से लगाकर गट-गट की आवाज के साथ बिना सोडा मिलाकर के 'नीट' शराब हलक के रास्ते पेट में उंडेलता चला गया।

"डोन्ट वरी डैड!" सांवली रंगत व लम्बे बालों वाला मुकेश बोला—"आप काले खां को बोलकर इस पण्डित को भी बम से उड़वा दो।"

"नक्को! ऐसा सोचने का बी नेई! लोग ऐसे इच बोल रेले हैं कि तुम्हेरे बाप के रिश्ते आतंकवादियों के साथ हैं और इन्हीं का ठाकरे की हत्या में हाथ है। पण्डित के साथ बी ऐसा इच हुआ तो...मामला खराब! खेल का सत्यानाश...वाट लग जायेगी।" नशे में झूमते हुये बोले जा रही थी बिजली—"फिर वो केशव पण्डित है भीड़ू...कोई [illegible]मूली आदमी नेई। ना जाने कित्ती मर्तबा आई० एस० आई० वालों की ऐसी की तैसी फेर चुका है। पाकिस्तान जाके आई० एस० आई०, वहां की मिलिटरी और सरकार के मुंह पे कालिख पोत के सही-सलामत वापिस लौट के आ गयेला—कुछ बी नेई बिगड़ा उसका! आदमी नेई...भूत है वो...अन्तरयामी। साले हलकट कू पैले से इच मालूम पड़ जाता है कि उसके साथ कोई लोचा होने वाला है—वो पैले इच दुश्मन की वाट लगा देता है। आज तक कोई बी माई का लाल उसका बाल बी बांका नेई कर पाया। हां, उससे पंगा लेने वालों का नामो-निशान इच मिट गयेला! नेई...उसकू खल्लास करने कू सोचने का बी नेई। अपुन की तो ये इच सलाह है।"

कुछ सोचकर रुद्र प्रताप ने सेलफोन उठाया और जल्दी-जल्दी नम्बर्स वाले बटनों को दबाने लगा।

मुकेश व बिजली सोचने लगे कि वो फोन पर किससे बात करने जा रहा है?

❑❑❑

❑❑❑

"हल्लो...!"

दूसरी तरफ से प्रधानमन्त्री और इन्डियन पब्लिक पार्टी के अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह की आवाज उभरने पर रुद्र प्रताप गला खंखारने पर बोला—"पांय लागूं सर जी! रुद्र प्रताप बोल रहा हूं।"

"हां...बोल रुद्र प्रताप। क्या बात है? कुछ परेशान मालूम पड़ रहा है?"

"कुछ नहीं...बहुत ज्यादा! ये तो आपको मालूम है ही कि तेजपाल ठाकरे की जगह हिन्दुस्तान पार्टी ने केशव पण्डित को टिकिट थमा दिया है। आज कचहरी जाकर पर्चा भर रहा है वो! टी० वी० ऑन करके देखिये कि उसके साथ कितनी भीड़ है। मेरा तो वो सूपड़ा ही साफ कर देगा। आपसे एक रिक्वेस्ट है सर जी! आप मुझे किसी दूसरे इलाके से लड़वा दीजिये। दूसरे इलाके की टिकिट दे दीजिये...।"

"क्यों? केशव पण्डित से डर गया तू?" दूसरी तरफ से

देवेन्द्र सिंह क्रोधित लहजे में बोला—"तू तो गैंगस्टर है। तेरे पास हथियारबन्द गुन्डों की पूरी फौज है।"

"ल...लेकिन वो केशव पण्डित है। उसे वन मैन आर्मी कहा जाता है। अकेला ही पूरी फौज पर भारी पड़ जाता है वो। नहीं...इसका मतलब ये नहीं कि मैं ताकत के मामले में उससे डर गया हूं। सुनने में आया है कि इलेक्शन कमीशन बहुत सख्ती करने जा रहा है। किसी भी इलाके में कोई गड़बड़ी नहीं करने दी जायेगी।"

"चुनाव आयोग तो हर बार ऐसे ही दावे करता है रुद्र प्रताप, लेकिन सभी काम होते हैं। पैसे के दम पर मजिस्ट्रेट, चुनाव आयोग के अधिकारी और पुलिस वगैरा से सैटिंग कर ली जाती है। फिर अभी तो हम सत्ता में हैं। हमारी पार्टी के लोगों की ही चलेगी। तुम नाहक ही हलकान हो रहे हो। अपने गुन्डों के दम पर इलाके में इतनी दहशत फैला दो कि कोई वोट डालने के लिये घर से निकले ही नहीं। फिर बूथों पर कब्जा करके ठप्पेबाजी करो। अपनी वोटों से बक्से भर देना। ईमानदारी से चुनाव नहीं जीते जाते। अगर जीते-जाते तो तुम जैसे लोगों को टिकिट नहीं दिये जाते। शरीफ और ईमानदार लोगों को टिकिट दिये जाते। तुम वहीं से इलेक्शन लड़ो—जमकर लड़ो। पूरे जोर लगा दो। ये सीट निकालनी ही होगी तुम्हें रुद्र प्रताप। ओ० के०? गुड डे!"

इसी के साथ दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया।

□□□
□□□

काले रंग की खुली जीप में सवार होकर रुद्र प्रताप का बेटा मुकेश एक मलिन बस्ती में पहुंचा। साथ में आठ गुन्डे भी थे, जिन्होंने तलवारें, कुल्हाड़ी, चॉपर, चाकू व हॉकी जैसे शस्त्र लिये हुये थे।

काली पैन्ट के ऊपर मुकेश ने ऐसा काला कोट पहना हुआ था, जो कि आगे से तो छोटा ही था, लेकिन पीछे की तरफ से घुटनों की सीध तक लटका हुआ था। आंखों पर काला चश्मा और फुटभर लम्बे बाल तेज हवा में यूं ही उड़ रहे थे

कि मानो ढेर सारे सांप के बच्चे आपस में मस्ती कर रहे हों।

बाहर मौजूद चार लोग ताश खेलना छोड़कर भाग खड़े हुये

पान की दुकान पर खड़े सभी ग्राहक ही नहीं खिसक लिये, बल्कि पनवाड़ी भी गुल हो गया।

मुकेश ने कोट की जेब से रिवॉल्वर निकालकर हवा में दो फायर कर दिये...धांय...धांय ऽऽ।

"सुनो...सभी लोग कान खोलकर सुनो।" वह दहाड़-दहाड़कर बोला—"मैं मुकेश प्रताप बोल रहा हूं। सभी लोग बाहर निकल आओ। ठीक दो मिनट बाद मेरे हथियारों से लैस आदमी घरों में घुसकर तलाशी लेंगे। अगर कोई घर में छुपा मिला तो उसे बड़ी ही बुरी मौत मारा जायेगा। सिर्फ दो मिनट के भीतर सभी बाहर आ जायें।"

दो मिनट क्या...एक मिनट के भीतर ही सभी डरे-सहमे से बाहर निकल आये—क्या मर्द, क्या औरतें, क्या बच्चे, क्या बूढ़े और क्या जवान...सभी बाहर आकर भगवान से अपनी खैरियत की प्रार्थना करने लगे। हवाना का सिगार सुलगाकर मुकेश ने उसका धुआं उड़ाया और चीख-चीखकर बोला—"तुम लोगों में से कोई भी केशव पण्डित की सभा या रैली में नहीं जायेगा। वो कन्वेसिंग पर आये तो घरों में घुसकर दरवाजे बन्द कर लेने हैं। इलेक्शन वाले दिन सभी लोग या तो अपने घरों में बन्द रहें—या फिर रिश्तेदारी में चले जायें। कोई भी पोलिंग बूथ पर जायेगा तो उसका अन्जाम बहुत ही बुरा होगा। सिर्फ उसे ही नहीं, उसके सारे खानदान को तड़फा-तड़फाकर मारा जायेगा। लड़कियों और औरतों की इज्जत खराब कर दी जायेगी। चलो रे!" वह जीप की तरफ बढ़ते हुये अपने गुन्डों से बोला, "अगली वाली गली में चलते हैं। उन्हें भी 'डोज' दे देते हैं।"

□□□
□□□

आंधी-तूफान की मानिन्द ही काले रंग की चार जीपें आई और धूल उड़ाने पर पीपल के पेड़ वाले चौक में रुकीं।

अगली जीप में सवार मुकेश गला फाड़कर चिल्लाया—"सभी घरों में जाओ। जो भी मिले—उसे ठोकते-पीटते हुये बाहर लेकर आओ।"

चारों जीपों से अट्ठाईस गुन्डे उतरे—जो कि तलवारों, चॉपर, कुल्हाड़ी, चाकू, हॉकी व मोटर साइकिल की चेन जैसे हथियारों से लैस थे।

वो घर में घुसे और जो भी मिला, उसे डराते-धमकाते और मारते-पीटते हुये बाहर लाने लगे।

सौ के लगभग औरतें-मर्द व बच्चे चौक में जमा हो गये।

हर कोई खौफजदा था—थर-थर कांप रहा था।

फक्क चेहरे—आंखों में मौत नाचती हुई।

"मेरे मना करने के बावजूद भी तुम लोग नहीं माने।" गुर्राकर बोला मुकेश—"कल केशव पण्डित की इस चौक में जन सभा हुई। तुम लोगों ने उसका फूलों और मालाओं से स्वागत किया। उसके भाषण पर ताली पीटी और चाय-नाश्ता भी कराया। भूल गये थे कि मैं क्या बोलकर गया था? कहर का दूसरा नाम मुकेश प्रताप है। जो मेरी बात नहीं मानता, उसका बहुत ही बुरा हाल करता हूं मैं।" बोलते हुये मुकेश की नज़रें इधर-उधर थिरक रही थीं, कोई सोलह वर्ष की खूब गोरी व खूबसूरत युवती पर उसकी नजर अटक गई। जैसे कोई बाज किसी चिड़िया पर झपटता है—ऐसे ही झपटकर मुकेश ने उस किशोरी को दबोच लिया। तो वह किशोरी घबराकर रोने, चीखने-चिल्लाने लगी। उसके मां-बाप, दो भाई मदद को आगे बढ़े तो मुकेश के गुन्डों ने उन्हें पकड़ लिया और धमकाने लगे।

"जी तो चाहता है कि तुम सभी लोगों को जान से मार दूं और तेल छिड़ककर तमाम घरों को फूंककर इस मौहल्ले को श्मशान में बदल दूं—लेकिन इलेक्शन की वजह से कोई बड़ी गड़बड़ी नहीं करना चाहता। लेकिन अपने क्रोध का एक नमूना जरूर छोड़कर जाऊंगा—ताकि तुम लोग आईन्दा मेरे हुक्म को अनसुना ना करो। इस लड़की को यहीं पर नंगी करके इसके साथ बलात्कार करूंगा मैं और तुम लोग इसके बलात्कार का तमाशा देखोगे। कोई यहां से हिला भी तो उसकी टांगें काट

दी जायेंगी। मुंह फिराने वाले की गर्दन काट दी जायेगी और आंखें बन्द करने वाले की आंखें फोड़कर उसे अन्धा कर दिया जायेगा।"

"चल बे...तेरे बाप का राज है क्या?"

❑❑❑

❑❑❑

सभी चौंके और फुर्ती के साथ आवाज की दिशा में देखा तो छह फुटा गोरा, खूबसूरत, सुनहरे व अर्ध घुंघराले बालों, नीलम-सी नीली आंखों वाला चौदह वर्षीय लड़का दिखलाई पड़ा, जो कि मुट्ठी में भरे चनों का एक-एक दाना मुंह में डालकर चबा रहा था।

"ओये केशव पण्डित के छोरे...!" मुकेश कोट की जेब से रिवॉल्वर निकालकर हिंसक लहजे में बोला—"क्या तू ही बोला था अभी? जरा एक बार फिर तो बोलकर दिखला।"

"चल बे...तेरे बाप का राज है क्या? ले, बोल दिया। बोल क्या करेगा तू? मैं अकेला और निहत्था। जबकि तेरे हाथ में मौत का खिलौना है और हथियारों से लैस गुन्डे भी हैं। चल, इस बहन को छोड़ दे। किसी की बहन-बेटी के साथ बदतमीजी करना ठीक बात नहीं होती।"

"अगर नहीं छोडूंगा तो...?"

"तो मुझसे पिटेगा...बुरी तरह पिटेगा।" मुन्डा यूं ही बोल रहा था कि मानो सुई की नोक बराबर भी खौफ या तनाव या चिन्ता ना हो, "तेरी हड्डी-पसली तोड़ दूंगा। जिन्दगीभर के लिये अपाहिज हो जायेगा। ट्वायलेट और बाथरूम में भी दूसरे की मदद लेनी पड़ेगी तुझे...।"

मुकेश का चेहरा यूं सुर्ख हुआ कि मानो बुझ चले कोयले पर जोर-जोर से फूंक मारकर उसे सुलगाया जा रहा हो। आंखों में खून के कतरे से उतर आये।

नथुने यूं फूलने-पिचकने लगे कि मानो उनके भीतर बैठे शरारती बालक बार-बार गुब्बारे फुला रहे हों।

"काफी नाम सुना तेरा! बहुत बड़ी तोप माना जाता है तू...।" जख्मी सर्प-सा फुंफकारा मुकेश—"आज देख लेते हैं

कि तू क्या चीज है। मैं इस लड़की के कपड़े फाड़कर इसकी इज्जत से खेलूंगा। अगर अपनी मां का दूध पिया है—एक ही बाप की औलाद है तो इसकी इज्जत बचाकर दिखला।"

बोलने पर मुकेश ने अपने गुन्डों को इशारा कर दिया और लड़की के साथ छीना-झपटी करने लगा।

अट्ठाईस के अट्ठाईस गुन्डे हथियार तानकर चीखते—चिल्लाते, गुर्राते हुये आशीर्वाद पर झपट पड़े।

"हे प्रभु...!" एक अधेड़ा सहमी हुई-सी बोली—"पण्डित जी के बेटे को यहां अकेले आने की क्या जरूरत थी? अगर आ भी गया था तो...इन शैतानों से टकराने की क्या जरूरत थी? क्या कर पायेगा ये? ना जाने ये गुन्डे इस बच्चे का क्या हाल करेंगे...।"

और फिर जो हुआ, वो अप्रत्याशित, कल्पना से परे...किसी को भी हैरानी में डाल देने वाला था।

□□□
□□□

पोलर, खेतान, उषा, ओरियंट, सिन्नी-बिन्नी...तमाम पंखों को फेल कर देने वाली रफ्तार से ही घूमा आशीर्वाद और वो भी सिर्फ बायें पैर की धुरी पर।

हवा में उठा पैर भी पंखों को शर्मिन्दा कर देने वाली रफ्तार से घूम रहा था।

पहले कुल्हाड़ी वाले गुन्डे के सिर से पैर टकराया तो यूं ही आवाज हुई कि मानो किसी ने हथौड़ा खींचकर मार दिया हो।

गुन्डे का सिर यूं ही फटा कि मानो किसी तरबूज के ऊपर पचास किलो वजन का पत्थर पटका गया हो।

खील-खील हुये सिर से खून का फौव्वारा निकला—कुल्हाड़ी हवा में उछलने पर दूर जाकर गिरी—गुन्डा जमीन पर गिरा और पांच सेकंड तड़फड़ाने पर 'टें' बोल गया।

दूसरे तलवारधारी गुन्डे के सीने पर आशीर्वाद की किक पड़ी तो गुन्डे के सीने की हड्डियों का चूरा हो गया। वो जमीन पर गिरा और खून की उल्टी करके दम तोड़ गया।

सिर्फ एक ही स्थान पर नहीं घूम रहा था आशीर्वाद—बल्कि घूमते-घूमते बहुत तेजी के साथ गुन्डों तक पहुंच रहा था और उनकी ऐसी की तैसी कर रहा था। देखते-ही-देखते जमीन पर एक दर्जन गुन्डे पड़े दिखलाई दिये—जिनमें से चार तो इस जहान से 'नौ दो ग्यारह' हो चुके थे, बाकी हड्डियों का चूरा करवाकर बुरी तरह चीख-चिल्ला रहे थे, तड़फ रहे थे। बाकी के गुन्डे हथियार फेंककर यूं ही भागे—जैसे जहाज को डूबते देख चूहें भाग निकलते हैं।

बौखलाये मुकेश ने उन्हें पुकारा, चीख-चीखकर गैर गालियां बककर उन्हें रोकने की बहुतेरी चेष्टा की—लेकिन किसी ने भी उसकी बात नहीं मानी।

मुकेश के भेजे में ये बात आ चुकी थी कि वो मुण्डे दा मुकाबला नहीं कर सकता—सो बौखलाहट में वो आशीर्वाद पर गोलियां दागता चला गया।

राम जी की सौगन्ध...एक भी गोली आशीर्वाद को छूने की हिम्मत ना कर सकी—किसी जिमनास्ट की मानिन्द ही हवा में उछल-कूद मचाते हुये आशीर्वाद छःओं गोलियों से बचा और फिर कहर बनकर मुकेश पर टूट पड़ा।

हलाल होते जानवर की जैसी ही चींखों व डकारने की आवाजों से चारों दिशाएं गूंजने लगीं।

आशीर्वाद ने मुकेश के हाथों व कन्धों के जोड़ों वाली हड्डियों का चूरा कर दिया और रीढ़ की हड्डी तोड़कर उसे जिन्दगीभर के लिये अपाहिज कर दिया। वो सहारा लेकर भी उठ नहीं सकता था, बैठ नहीं सकता था, खड़े होने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था।

□□□
□□□

मोहल्ले के लोगों ने ही मुकेश को नजदीकी हॉस्पिटल में पहुंचा दिया था।

खबर लगने पर रुद्र प्रताप हॉस्पिटल पहुंचा तो डॉक्टर ने उसके कन्धों व रीढ़ की हड्डी के एक्स-रे दिखलाकर कहा कि दुनिया का कोई भी सर्जन उसके बेटे को ठीक नहीं कर

पायेगा—मुकेश जिन्दगीभर बिस्तर पर पड़ा रहेगा और हाथों का इस्तेमाल भी नहीं कर पायेगा। उसे जिस्म पर बैठे मच्छर या मक्खी को उड़ाने के लिये भी दूसरे व्यक्ति को पुकारना होगा। बावला-सा हो गया रुद्र प्रताप।

अगले ही दिन कन्वेसिंग पर निकली सोफिया, चांदनी व माधवी को हथियारबन्द, काली पोशाक व काली नकाब वाले गुन्डे किडनेप करके ले गये। रुद्र प्रताप को इस बात का अहसास उसकी रखैल बिजली ने कराया कि केशव, आशीर्वाद, राजन शुक्ला व करतार सिंह उसके घर में घुसकर भी उसकी खबर ले सकते हैं—सो रुद्र प्रताप ने पूरे सौ हथियारबन्द गुन्डों को सिक्योरिटी गार्डस् वाली वर्दियां पहनाकर अपने बंगले पर तैनात कर दिया, फिर उसने फोन पर केशव से बातें की—

"मैंने तेरी बीवी, तेरे चेले की बीवी और उस रिपोर्टरनी को किडनेप करा लिया है, जिसे तू छोटी बहन मानता है।"

"हां, जानता हूं, ऐसी घटिया हरकत तेरे जैसा घटिया आदमी ही कर सकता है।"

"जुबान को लगाम दे ओये पण्डित! मत भूल कि उन तीनों की इज्जत और जान खतरे में है।"

"वो तीनों कोई मामूली औरतें नहीं हैं ओये रुद्र प्रताप।" दूसरी तरफ से केशव सपाट व खुरदुरे से लहजे में बोला—"वो तीनों दुर्गा, काली और चण्डी की अवतार हैं। अगर छूने की कोशिश करेगा तो जलकर राख हो जायेगा।"

"ऐसा बोलकर किसी बच्चे को बहलाना पण्डित! वो मामूली औरतें हैं।"

"अगर अपनी मां का दूध पीया है तो उन तीनों में से किसी एक के साथ मुकाबला करके देख। तुझे चीर-फाड़कर ना रख दिया तो...कहना। वो लावा हैं। अगर करीब भी जायेगा तो राख बन जायेगा। खैर, तूने उन तीनों को किडनेप कराके बड़ी भारी भूल कर डाली है। ऐसा करके अपनी मुसीबत को न्यौता दे दिया तूने।"

"क्या कर लेगा तू?" रुद्र प्रताप ऐंठकर बोला, "जानता नहीं कि मैं कौन हूं? गैंगस्टर हूं। मुम्बई अन्डरवर्ल्ड के बहुत

बड़े हिस्से पर मेरी हुकूमत चल रही है। एक-से-एक खतरनाक गुन्डों की फौज है मेरे पास...।"

"गुन्डों की नहीं...हिजड़ों की फौज है। जब मेरे बेटे आशीर्वाद ने हाथ-पैर चलाने शुरू किये तो तेरे वो महारथी चूहों की तरह दुम दबाकर भाग निकले। तेरे बेटे के पुकारने पर भी ना रुके। बेचारे को अकेला मुसीबत में छोड़ गये। वैसे अपने बेटे का हाल तो देख ही लिया होगा तूने?"

केशव ने मानो रुद्र प्रताप की दुखती रग को दबा दिया। वह जल-भुनकर राख-सा हो गया और मानों अंगारों पर लोटते हुये ही बोला—"हां, देखा है मैंने अपने बेटे को। तेरे बेटे ने उसे जिन्दगीभर के लिये अपाहिज बना दिया।"

"अगर तूने सोफिया, चांदनी और माधवी को ना छोड़ा तो मैं तुझे सात जन्मों के लिये अपाहिज बना दूंगा। अगले छह जन्मों में अपनी मां के पेट से अपाहिज ही पैदा होगा।"

"ये धमकी किसी और को देना! तू मुझ तक पहुंच भी नहीं सकता। मुझ तक पहुंचने की कोशिश में वक्त से पहले ही मारा जायेगा।"

"चल बे! हथियारबन्द गुन्डों को अपने बंगले पर तैनात करके बहुत बड़ा तीस मार खां बन रहा है। मुझे नहीं मालूम था कि तू इतना बुजदिल है। तूने तो चूहे को भी मात कर दिया। लेकिन तू अपने बिल में भी सुरक्षित नहीं है। तुझे तेरे घर में ही घुसकर मारूंगा।"

"ऐसी गलती मत कर बैठना ओये पण्डित! अपनी भलाई चाहता है तो मेरी दो शर्तें मान ले।"

"जरा सुनूं तो सही कि तेरी कौन-सी शर्तें हैं?"

"अपने बेटे आशीर्वाद को मेरे हवाले कर दे।"

"ठीक है! अभी उसे तेरे बंगले पर भेज देता हूं।"

"नहीं, यहां नहीं! इलेक्शन का माहौल है। आज आधी रात को उसके हाथ-पैर बांधकर शिवाजी रोड वाले कब्रिस्तान में छोड़कर चले जाना।"

"दूसरी शर्त?"

"किसी भी बहाने से पर्चा उठा ले—इलेक्शन से हट जा।

दोनों शर्तों के पूरा होते ही मैं सोफिया, चांदनी और माधवी को आजाद कर दूंगा।"

"ठीक है! आज रात को आशीर्वाद को हाथ-पैर बांधकर कब्रिस्तान में छोड़ दिया जायेगा। कल सवेरे ही मैं कचहरी जाकर पर्चा वापिस ले लूंगा।"

इसी के साथ केशव ने फोन काट दिया।

"इतनी जल्दी और इतनी आसानी से मान गया।" बुदबुदाया रुद्रप्रताप, "साले के दिमाग में कोई चालाकी या खुराफात तो नहीं है?"

❑❑❑
❑❑❑

भड़...भड़...भड़!

बाहर से दरवाजा भड़भड़ाये जाने पर रुद्र प्रताप यूं हड़बड़ाया कि हाथ में थमे गिलास से आधी शराब छलककर उसके कुर्ते पर गिरी।

"कौ...कौन है?"

"मैं...बिल्लू काना...सर जी...!"

"क्या आफत आ गई? दरवाजा तोड़ेगा क्या?"

"जयभान सिंह जी पधारे हैं। कहते हैं कि आपसे बहुत जरूरी काम है। क्या बोलूं उनसे? क्या वापिस भेज दूं?"

"अबे दिमाग खराब हुआ है क्या भूतनी के! वो पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हैं। साथ ही मुम्बई के चुनाव प्रभारी भी हैं। उन्हें सम्मान के साथ लेकर आ!"

"ठीक है सरजी!"

रुद्र प्रताप ने गिलास में बीच शराब हलक में उंडेली और फिर सिगरेट सुलगा ली।

"कैसे हो रुद्र प्रताप जी...?" एक खद्दरधारी बूढ़ा कमरे में दाखिल हुआ और पलटकर दरवाजे को बन्द करके सिटकनी चढ़ा दी।

"नमस्कार, सिंह साहब! आइये, पधारिये।"

"इलेक्शन की बाबत जरूरी बात करनी थी। लेकिन तुमने

इतनी सिक्योरिटी क्यों रखी हुई है? क्या कोई खतरे वाली बात है?"

"नहीं, कोई खास नहीं। केशव पण्डित के लड़के ने मेरे बेटे को इतना ठोका-पीटा कि वो जिन्दगीभर के लिये अपाहिज हो गया। हॉस्पिटल में पड़ा हाय-हाय कर रहा है। मैंने केशव पण्डित की बीवी, उसके चेले राजन शुक्ला की बीवी और उसकी धर्म-बहन को उठवा लिया। एक तो उसके लड़के की हड्डी-पसलियां तोड़नी हैं। दूसरे उसे इलेक्शन से हटाकर इलेक्शन जीतना है। वो यहां ना आ धमके—इसीलिये गुन्डों की व्यवस्था की है। यहां आया तो साले का नाश पीट दूंगा।"

तड़ाकऽऽऽ!

"आ...आहऽऽऽ!" बूढ़े का शक्तिशाली घूंसा खाकर रुद्र प्रताप कुर्सी समेत पीछे की तरफ गिर पड़ा और चीख के साथ उसके दो दांत भी मुंह से बाहर निकल पड़े।

बूढ़े को फेसमास्क तथा विग उतारते देख मारे हैरानी के उसकी आंखें फट पड़ने को तैयार हो चलीं।

❑❑❑
❑❑❑

"बिल्लू...आह...जमाल...कालिया...उई...आह...ओये टोनी...कहां मर गये सालो...आह...जिस केशव पण्डित के लिये तुम हरामियों को...तैनात किया था...आह...वो यहां जयभान सिंह के भेष में आ गया...आह...आह...और मेरी धुलाई कर रहा है...हाय...कहां मर गये...सुन क्यों नहीं रहे हो हरामजादो...आह...!"

"सुनेंगे कैसे बेवकूफ...!" खद्दरदारी केशव रुद्र प्रताप को लात-घूंसों से बुरी तरह कूटते-पीटते हुये सर्द लहजे में बोला, "ये साउन्ड प्रूफ कमरा है। अगर तू हाथी की तरह भी चिंघाड़ेगा तो तेरी आवाज बाहर नहीं जाने वाली। चल, मुकाबला कर।"

"तुम...आह...मुकाबले का मौका दे ही कहां रहे हो...ओ...ओ...मर गया...धोकर रख दिया...आह... हड्डी-पसली तो...तोड़ दी...आह...क्या चाहता है मेरे...बाप...?"

"सोफिया, चांदनी और माधवी की बाइज्जत रिहाई।"

"मैं...मैं बतलाता हूं कि उन्हें कहां रखा...।"

"उन्हें मेरे घर पहुंचवा।" केशव रुद्र प्रताप के पेट पर घुटने का प्रहार करके बोला, "जब तक वो तीनों सही-सलामत घर नहीं पहुंच जातीं--तेरा ऐसे ही बैंड बजाता रहूंगा मैं।"

"मु...मुझे फोन करने का मौका तो...आह!"

"कर...जल्दी से फोन कर।"

फिर लहूलुहान, टूटे-फूटे, फटेहाल रुद्र प्रताप ने फोन पर किसी मनजीत से बात करके कहा कि वो तुरन्त ही सोफिया, चांदनी व माधवी को पूरे सम्मान के साथ केशव के बंगले तक पहुंचा दे।

तभी केशव ने उसकी कनपटी पर घूंसा जड़कर उसे बेहोश कर दिया और चेहरे पर मास्क व सिर पर विग लगाकर वहां से निकल लिया।

❑❑❑

❑❑❑

"आपसे कॉन्टेक्ट करने की बहुतेरी कोशिश की...लेकिन कॉन्टेक्ट नहीं हो पाया...काला मदारी जी...।"

"हम यहां नहीं थे।" ट्रांजिस्टर के साइज के ट्रांसमीटर से कौए की-सी कर्कश आवाज निकली–"जरूरी काम से पाकिस्तान गये हुये थे। मसला क्या है...?"

रुद्र प्रताप, जिसके सिर पर पट्टियों का हेलमेट-सा चढ़ा हुआ था, बायें पैर और दायें हाथ पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था और चेहरा सूजकर खरबूजे से तरबूज में तब्दील हो चुका था, बतलाता चला गया कि कैसे आशीर्वाद ने उसके बेटे मुकेश को गुन्डों समेत ठोका-पीटा और फिर उसने सोफिया, चांदनी व माधवी को उठवाया तो कैसे भेष बदलकर आये केशव ने उसकी तुड़ाई की और तीनों महिलाओं को आजाद करा ले गया। सारी बातें बतलाने पर वह जख्मी नाग-सा फुंफकारते हुये बोला–"जिन्दगी में कभी इतनी बड़ी शिकस्त नहीं खाई मैंने काला मदारी जी। केशव ने तो मुझे चूहें जैसा बनाकर रख दिया। उससे इन्तकाम लेना है मुझे। मैं काले खां से मिलने गया था,

लेकिन उसने अपना ठिकाना बदल लिया। मुझे उससे बात करके केशव को उड़वाना है।"

"बेवकूफों जैसी बातें ना करो...रुद्र प्रताप।" दूसरी तरफ से रहस्यमयी काला मदारी मानो गुर्राकर बोला, "इतना सब होने पर भी केशव पण्डित की हैसियत का अन्दाजा नहीं लगाया? वो कोई मामूली आदमी नहीं है। आई० एस० आई० और कई आतंकवादी संगठनों ने उसको मारने की कोशिश की...लेकिन हर बार नाकाम हुये और अपना ही नुकसान कराया। वैसे भी इलेक्शन है। इलेक्शन जीतने की कोशिश करो।"

"खाक कोशिश करूं...काला मदारी जी! सभी केशव पण्डित के भक्त बने हुये हैं। एक घर भी तो ऐसा नहीं, जो मुझे वोट दे देगा। ठप्पेबाजी यानि बूथ कैप्चरिंग होने की गुंजाईश नहीं लग रही! चुनाव आयोग सख्ती बरत रहा है। दूसरे स्टेट से फोर्स मंगवाई जा रही है और गड़बड़ी करने वालों को तुरन्त ही गोलियां मारने के हुक्म दिये गये हैं।"

"फिर भी तुम इलेक्शन जीत सकते हो।"

"भ...भला वो कैसे?"

"ऐसी कोई तरकीब भिड़ाओ कि वोटर्स घरों से बाहर ही ना निकल पायें। तुमने पांच हजार के करीब अपने गुन्डों और जान-पहचान वालों की वोट बनवाई हुई हैं ही। अगर वो सभी जाकर वोट देंगे तो तुम्हारा काम हो जायेगा। तुम इलेक्शन जीत जाओगे। सोचो...दिमाग पर जोर डालकर सोचो कि क्या करना है...।"

"दिमाग ठीक से काम ही कहां कर रहा है।"

"लेकिन हमारा दिमाग हर वक्त काम करता है।" ट्रांसमीटर के स्पीकर से काला मदारी की आवाज उभरी, "बाहर से किराये के गुन्डे बुलवाओ। वैसे तुम्हारे पास भी काफी गुन्डे हैं। मुमबई के दूसरे इलाकों से भी पैसे के दम पर गुन्डे इकट्ठा करो। उन गुन्डों का काम ये होगा कि वो हरेक घर में घुसकर परिवार के एक मेम्बर को बन्धक बना लेंगे और बाकी परिवार को धमकी देंगे कि अगर वो वोट डालने गये तो बन्धक को जान से मार दिया जायेगा। केशव पण्डित या फिर कोई भी

वोटर के साथ वोट डालने की जबरदस्ती नहीं कर सकता। सभी लोग ये कहेंगे कि उन्होंने इलेक्शन का बहिष्कार कर दिया है। इसी तरीके से तुम हारी हुई बाजी जीत सकते हो। बात समझ में आ रही है कि नहीं?"

"हां, काला मदारी जी!" रुद्र प्रताप उत्साह से भरा हुआ बोला, "बात समझ में आ रही है। मैं ऐसा ही करता हूं! ये तो आने वाला वक्त ही बतलायेगा कि...क्या होगा?"




हथियारों, ग्रेनेड, बमों से लैस सैकड़ों गुन्डे इलाके के लगभग सभी घरों में सुबह पांच बजे घुसे और पूरे परिवार को धमकी दी कि अगर शोर या विरोध किया तो सभी को मार दिया जायेगा। फिर परिवार के बच्चे, जवान लड़के या पति-पत्नी में से पति को कब्जे में करके धमकी दी गई कि अगर वो वोट डालने गये तो बन्धक को जान से मार दिया जायेगा। कहा गया कि किसी के आने पर बोल दें कि उन्होंने चुनाव का बहिष्कार कर दिया है—साथ ही ये चेतावनी भी दी कि अगर चेहरे पर ऐसे भाव लाये कि सामने वाले को शक हो जाये...तो फिर बन्धक बनाये गये उनके परिजन और उनकी खैर नहीं होगी—जरूरत पड़ने पर गोलियां ही नहीं, बमों और ग्रेनेडों का भी इस्तेमाल किया जायेगा।

सुबह के सात बजते ही वोटिंग का टाइम शुरू हो गया, लेकिन केशव वाले पूरे इलाके के तमाम बूथों पर सन्नाटा-सा पसरा हुआ था, मातम-सा छाया हुआ था। दूर-दूर तक वोटर के दर्शन नहीं हो रहे थे।

अधिकारी, फोर्स के जवान और हिन्दुस्तान पार्टी के नेता, कार्यकर्ताओं समेत केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी, करतार सिंह, माधवी व रमाकान्त समेत केशव के अड़ोसी-पड़ोसी व शुभचिन्तक परेशान कि मामला क्या है?

वोटर्स यानि मतदाताओं का अकाल कैसे पड़ गया?

सभी वोटर्स को घरों से निकालकर लाने के लिये निकल

पड़े—लेकिन हरेक घर से यही जवाब मिल रहा था कि उन लोगों के लिये कभी किसी नेता या सरकार ने कुछ नहीं किया—इसलिये उन लोगों ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया है।

सभी परेशान कि आखिर क्या हो रहा है?

यकायक ही पूरे इलाके के मतदाताओं ने चुनाव के बहिष्कार का फैसला कैसे कर लिया?

उधर रुद्र प्रताप ने अपने आदमियों की वोट बनवा रखी थी—उसके आदमी वोट डालने बूथों पर पहुंच गये।

रुद्र प्रताप भी अपनी वोट डालने के लिये आया। जब उसे पता चला कि बूथों पर सिर्फ उसी के आदमी हैं और उसी के चुनाव चिन्ह वाले बटन दबाये जा रहे हैं तो वह फूलकर कुप्पा हो गया और पहुंचकर अपनी रखैल बिजली के साथ जश्न मनाने लगा।




केशव ने फोन करके आशीर्वाद, राजन, करतार सिंह, सोफिया, चांदनी, माधवी व अपने और आशीर्वाद के गुरु रमाकान्त को एक स्थान पर बुलवा लिया।

चारमीनार की सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये बतलाया कि एक औरत को हिप्नोटाइज्ड करके जानकारी निकाल ली है कि हथियारों व बमों से लैस गुन्डे हरेक घर में हैं और परिवार के एक सदस्य के साथ भीतरी कमरों, बाथरूम, स्टोर रूम या किचन वगैरा में छिपे हुये हैं और धमकी दी हुई है कि अगर वोट डालने गये तो बन्धकों को मार दिया जायेगा।

"ये...ये तो प्रॉब्लम क्रियेट हो गई केशव बेटे।" हंस जैसे सफेद बुर्राक बालों वाला रमाकान्त चिन्तित भाव से बोला—"अगर पुलिस फोर्स की मदद ली जाती है तो गुन्डे हथियारों और बमों का इस्तेमाल करके खून के दरिया बहा देंगे—लाशों के अम्बार लगा देंगे। ये प्रॉब्लम दिमाग से ही सोल्व होगी। तुम दिमाग के जादूगर हो। जल्दी से सोचो कि इस कन्डीशन में क्या करना है?"



दिमाग के जादूगर ने तब तक दिमाग के तमाम घोड़ों को चहुं दिशाओं में दौड़ाये रखा—जब तक कि वो समस्या का निदान करने वाली 'जड़ी-बूटी' अर्थात् आइडिया खोजकर नहीं ले आये।

चुनाव आयोग के उच्चाधिकारी से फोन पर बात की केशव ने और समस्या बतलाने के साथ उसके निदान के बारे में भी बतला दिया।

इलेक्शन कमिश्नर और सैक्टर मजिस्ट्रेट स्वयं आकर केशव से मिले और उसका सहयोग करने लगे। केशव ने भारी मात्रा में छोटे-छोटे साइज के सिलेन्डर मंगवाये और फोर्स के जवानों को समझाया कि उन लोगों को क्या करना है।

मुम्बई के कई हॉस्पिटल के डॉक्टर्स व स्टाफ के लोग रेडी हो गये और ढेर सारी एम्बूलेंस इलाके से जुड़ी सड़कों पर आकर खड़ी हो गईं।

सेना के जवानों के साथ केशव, आशीर्वाद, राजन व करतार सिंह ने चेहरों पर गैस-मास्क फिट किये और सिलेन्डर लिये हुये घरों में दाखिल होने पर सिलेन्डर जोर से फर्श पर पटक दिये।

सिलेन्डरों से पीले धुएं वाली गैस तेजी के साथ निकलकर चारों तरफ फैली।

गुन्डे व बन्धक बेहोश!

किसी भी गुन्डे को कुछ करने का मौका ना मिला।

गैस के दुष्प्रभाव से बचाने के लिये परिवार के बाकी लोगों को पहले ही बाहर भगा दिया गया था। बेहोश गुन्डों के हथियारों, ग्रेनेडों व बमों को कब्जे में कर फोर्स ने उन्हें अरेस्ट कर लिया और बेहोश बन्धकों को एम्बूलेंस के जरिये तुरन्त ही नजदीक के हॉस्पिटल में भिजवा दिया गया।

गुन्डों को घरों में ही होश में लाकर फोर्स ने उन पर अपना गुस्सा उतारा और पीट-पीटकर, कूट-कूटकर अधमरे कर दिये, फिर पुलिस के हवाले किये गये।

चूंकि गुन्डों ने बतला दिया था कि वो रुद्र प्रताप के लिये काम कर रहे थे—सो रुद्र प्रताप को भी उसके गुन्डों व रखैल बिजली समेत गिरफ्तार कर लिया गया।

बन्धक बनाकर रखे गये बेहोश लोगों के होश में आने के बाद पोलिंग बूथों पर वोटर्स की ऐसी भीड़ टूटी कि पोलिंग अधिकारियों के लिये सम्भालना मुश्किल हो गया।

अस्सी फीसदी मतदान हुआ।

तयशुदा दिन से समूचे देश में वोटों की काउंटिंग शुरू हुई। चूंकि मतदान मशीनों के जरिये हुआ था, इसलिये नतीजे निकलने में देर नहीं लग रही थी। देशभर में हिन्दुस्तान पार्टी सफलता के झन्डे गाड़ रही थी। दूसरे नम्बर पर तीसरा मोर्चा यानि 'गरीब मजदूर किसान पार्टी' चल रही थी। जबकि सत्ताधारी 'इन्डियन पब्लिक पार्टी' की पूरे देश में मिट्टी पलीद हो रही थी। कुछ ही ऐसे खुशनसीब उम्मीदवार थे, जो अपनी जमानतें बचा पाये। कुल मिलाकर वो नेता या मन्त्री ही जीते, जिन्होंने अपने इलाकों में काम करवाये थे। प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह भी मात्र नौ सौ वोटों से जीत गया।

तीसरे मोर्चे में शामिल सभी एक दर्जन पार्टियों के अध्यक्ष भी चुनाव जीत गये थे।

चूंकि तीसरे मोर्चा की पार्टियों ने जातिवाद पर इलेक्शन लड़ा था और उनकी जाति के लोगों ने अच्छाई-बुराई ना देख, जाति ही देखी थी, इसलिये मोर्चे के हाथ काफी सीटें लगीं! लेकिन कुल मिलाकर हिन्दुस्तान पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिल गया तो प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह ने राष्ट्रपति महोदय के पास जाकर इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रपति महोदय ने इस्तीफा स्वीकारते हुये उससे अगली सरकार के गठन तक प्रधानमन्त्री का कार्य-भार सम्भाले रखने के लिये बोल दिया।

क्या पूछा आपने?

केशव पण्डित के इलेक्शन का क्या हुआ?

पांच लाख वोटों के मार्जिन से जीता वो और जेल में बन्द रुद्र प्रताप की जमानत जब्त हो गई।

यूं तो मुम्बई की तमाम सीटों पर 'हिन्दुस्तान पार्टी' ने

ही विजय-पताका फहराई—लेकिन जो भव्य स्वागत केशव का हुआ, किसी दूसरे का नहीं हुआ।

केशव का विजय जुलूस देखने के काबिल था। ट्रेफिक जाम हो गये।

बैन्ड-बाजे, ढोल-नगाड़े, गुलाल-अबीर...नाचते-गाते लोग...मिठाइयों व दावतों के दौर!

केशव ने सबसे पहले सिद्धि विनायक के मन्दिर में जाकर गणपति बप्पा का आशीर्वाद लिया और फिर अपने इलाके के तमाम मतदाताओं के घर-घर जाकर धन्यवाद दिया, बड़े बुजुर्गों के पैर छुए।

मतदाताओं ने भी पलक-पावड़े बिछाकर उसका स्वागत किया, तिलक लगाकर फूल-मालायें पहनाई और मुंह मीठा कराया।

भाइयों, अब दिल्ली चलें—

वहां चलकर देखें कि सरकार बनाने के लिये हिन्दुस्तान पार्टी के नेताओं में क्या गतिविधियां चल रही हैं और कौन प्रधानमन्त्री बनने जा रहा है?

❑❑❑
❑❑❑

"आप उदास क्यों हैं जी...? आपकी पार्टी ने बहुमत हासिल कर लिया है। आपकी पार्टी की ही सरकार बनने जा रही है। आपका मिनिस्टर बनना भी तय है। आपको तो खुश होना चाहिये जी...।"

"खाक...खुश होना चाहिये।" अधगंजे कुमार स्वामी ने अपनी बीवी लक्ष्मी के हाथ को अपने कन्धे से हटाकर कहा—"प्रधानमन्त्री बनूं तो कुछ मजा भी आये।"

"भला आप प्रधानमन्त्री कैसे बन सकते हैं जी? सांसद नेता तो सुन्दर लाल जी हैं। पार्टी ने उनको ही प्रधानमन्त्री के रूप में पेश करके इलेक्शन लड़ा है। वैसे भी वो पार्टी के सबसे वरिष्ठ नेता...।"

"खाक नेता है वो। उसके बेटे ने कितनी बुरी हरकत की! एक कातिल का बाप प्रधानमन्त्री कैसे बन सकता है? देशभर

में लोगों की यही मांग है कि सुन्दरलाल की बजाय किसी को भी प्रधानमन्त्री बना दिया जाये।"

"ठक...ठक...ठक...!"

"कौन?"

"मैं हरिया हूं साहब जी...!" बन्द दरवाजे के बाहर से आवाज आई, "आपसे मुखिया जी मिलने आये हैं।"

"जयन्त मुखिया...!" कुमार स्वामी चौंककर बोला, "ये मेरे घर कैसे आ गया? ये तो हमेशा से मेरे एन्टी रहा है।"

"कोई जरूरी काम ही होगा जी! आप जाकर मुखिया जी से मिलिये तो सही।"

"हां, मिलना तो पड़ेगा ही...!" कुमार स्वामी बेड से उतरकर चप्पलें पहनते हुये बोला, "तभी मालूम पड़ेगा कि जयन्त मुखिया के आने का मकसद क्या है?"

❑❑❑
❑❑❑

काले-कलूटे, घनी दाढ़ी व गंजे जयन्त मुखिया ने सोफे से उठकर कुमार स्वामी से हाथ मिलाया और बोला—"कैसे हैं स्वामी जी?"

"ठीक ही हूं मुखिया जी...बैठिये!"

"हां, आप भी बैठिये ना।"

दोनों बैठ गये।

नौकर पानी के दो गिलास रख गया।

कुमार स्वामी ने एक गिलास उठाकर जयन्त मुखिया को दिया और फिर बोला—"कहिये, कैसे आना हुआ मुखिया जी?"

"सुन्दरलाल जी का प्रधानमन्त्री बनना पार्टी और देश हित में नहीं होगा स्वामी जी...।" पानी की एक घूंट भरकर गिलास मेज पर रख दिया जयन्त मुखिया ने और गंजे सिर पर हथेली फिराते हुये गम्भीर भाव से बोला, "वो बूढ़े और हार्ट पेशेंट हैं। उससे बड़ी बात तो ये कि वो एक कातिल के पिता हैं—उनके माथे पर कलंक लगा है। टी० वी० खोलकर देखिये! हरेक न्यूज चैनल पर लोग यही कह रहे हैं कि उन्होंने देवेन्द्र सिंह को हटाने के लिये ही हिन्दुस्तान पार्टी को वोट दी—लेकिन वो नहीं चाहते

कि सुन्दर लाल प्रधानमन्त्री बने। वास्तविकता तो ये है कि हम दोनों भी नहीं चाहते कि सुन्दर लाल प्रधानमन्त्री बने। क्यों ठीक कहा ना मैंने?"

कहने पर जयन्त मुखिया ने अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ कुमार स्वामी को देखा।

हिचकिचाया कुमार स्वामी, फिर बोला—"हां, ये बात तो है। सिर्फ इलेक्शन में ही नहीं, बल्कि उससे पहले भी हमने बहुत मेहनत की। साउथ इन्डिया से जितनी भी सीटें मिली हैं, वो मेरी वजह से ही तो मिली हैं।"

"और यू० पी० की तमाम सीटें मेरी वजह से ही मिली हैं। देखा जाये तो लगभग आधी सीटें तो हम दोनों की वजह से ही मिली हैं। सुन्दर लाल जी से तो भाषण भी देना नहीं आता। वो जहां भी गये बहुत कम लोग जुट पाये।"

"लेकिन...अगर सुन्दर लाल जी प्रधानमन्त्री नहीं बनते तो...फिर कौन...?" कुमार स्वामी ने जान-बूझकर वाक्य अधूरा छोड़ दिया और अर्थपूर्ण निगाहों से जयन्त मुखिया को देखने लगा।

जयन्त मुखिया ने दाढ़ी को खुजलाया और कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ बोला—"प्रधानमन्त्री बनने का ख्वाहिशमन्द मैं भी हूं और आप भी हैं। लेकिन हम दोनों तो पी० एम० बनने से रहे! वैसे...उप-प्रधानमन्त्री का पद भी बुरा नहीं है।"

"आप उप-प्रधानमन्त्री बनेंगे?"

"हम दोनों में से जिसके साथ भी ज्यादा सांसद होंगे—तो प्रधानमन्त्री बन जायेगा और दूसरा उप-प्रधानमन्त्री बन जायेगा। लेकिन उससे पहले सुन्दर लाल जी को प्रधानमन्त्री बनने से रोकना होगा। हमें ये सोचना होगा कि सुन्दर लाल जी का पत्ता कैसे साफ किया जाये?"

□□□

□□□

"मैं इस वक्त कनाट प्लेस में हूं।" हाथ में कार्डलेस माइक लिये हुये खूबसूरत रिपोर्टर टी० वी० कैमरे की तरफ देखते हुये बोली—"यहां पर काफी लोग आ-जा रहे हैं। दुकानों पर भी

काफी रश है। मैं इन लोगों से पूछती हूं...एक्सक्यूज मी...सर!" वह रेड लाइट होने के कारण रुकी मर्सीडीज कार की ड्राइविंग सीट पर सवार सफारी सूट वाले अधेड़ से बोली—"केन्द्र में हिन्दुस्तान पार्टी की सरकार बनने जा रही है। आपको कैसा लग रहा है?"

"काफी अच्छा लग रहा है। वर्तमान सरकार से तो हर कोई दुःखी था। देश के तमाम सिस्टम्स डिस बैलेंस हो गये थे। नई गवर्नमेंट से उम्मीद की जा सकती है कि देश की कन्डीशन सुधरेगी।"

"आपके ख्याल से प्रधानमन्त्री पद के लिये कौन योग्य उम्मीदवार है?"

"सुजाता भारती! हालांकि उसे राजनीति का कोई एक्सपीरियंस नहीं है लेकिन उसका सम्बन्ध देश को चार पी० एम० देने वाले परिवार से है। राजनीति शास्त्र से पोस्ट ग्रेजुएशन किया है उसने। इलेक्शन कैम्पेनिंग के दौरान उसके जो तेवर दिखलाई दिये—ऐसे ही तेवरों वाली प्रधानमन्त्री चाहिये। वो साहसी, आत्मविश्वास और बुलन्द इरादों से भरपूर महिला है।"

"और सुन्दर लाल जी के बारे में आपकी क्या राय है सर? बेटे और भतीजी की मौत से दुःखी सुजाता जी ने राजनीति से कदम पीछे हटा लिये। पार्टी अध्यक्ष का पद भी छोड़ दिया। उन्होंने यही कहा कि सुन्दर लाल ही पार्टी के जीतने पर प्रधानमन्त्री बनेंगे।"

"सुन्दर लाल जी ईमानदार हैं। लेकिन वो पहले एक बार प्रधानमन्त्री रह चुके हैं। उनसे ये जिम्मेदारी ठीक से निभी नहीं। वो कार्यकाल भी पूरा नहीं कर पाये थे और देश को मध्यावधि चुनाव का सामना करना पड़ा था। आज तो देश के हालात उस पीरियड से भी ज्यादा गम्भीर हैं। मुझे नहीं लगता कि सुन्दर लाल जी प्रधानमन्त्री पद के साथ न्याय कर सकेंगे। वैसे भी वो बुजुर्ग और बीमार हैं, हार्ट पेशेंट हैं। उनके बेटे की करतूत ने भी उनको टेंशन दी है। इलेक्शन के दौरान इसका प्रभाव देखने को भी मिला। वो भाषण देते हुये अटक जाते थे—भूल जाते थे कि क्या बोल रहे थे। देश की भलाई के लिये सुजाता

भारती जी को ही तमाम गमों से उबरकर पी० एम० की जिम्मेदारी लेनी होगी।"

तभी ग्रीन लाइट होने पर वो अधेड़ कार को आगे बढ़ा ले गया।

इसके पश्चात् रिपोर्टर ने दुकानदारों, दुकानों पर मौजूद ग्राहकों की राय ली तो अधिकांश ने यही कहा कि सुन्दर लाल प्रधानमन्त्री पद के लिये उचित नहीं है और सुजाता भारती को ही प्रधानमन्त्री बनना चाहिये।

□□□
□□□

उधर कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया गुप-चुप तरीके से अपना खेल, खेल रहे थे। वो सांसदों से सम्पर्क करके उन्हें इस बात के लिये राजी कर रहे थे कि वो सुन्दर लाल को प्रधानमन्त्री बनने का विरोध करें और प्रधानमन्त्री पद के लिये उनके नाम को पेश करें। उन्हें ये लालच दिया गया कि योजना के कामयाब होने पर उन्हें मन्त्री पद दिया जायेगा, या किसी ऐसे आयोग या संस्था का मुखिया बना दिया जायेगा कि खूब कमाई हो सके। किसी-किसी सांसद को पांच से पच्चीस करोड़ रुपये कैश का लालच भी दिया गया।

जो सांसद लालच में फंस गये या सुन्दर लाल को नापसन्द करते थे, उन्होंने अपने चेले-चपाटों को सुन्दर लाल के विरोध पर लगा दिया।

कई शहरों में लोग सुन्दर लाल के विरोध में धरने-प्रदर्शन करने लगे।

कई सांसदों ने तो खुले आम बोल दिया कि वो सुन्दर लाल के प्रधानमन्त्री बनने पर इस्तीफा दे देंगे। फिर तो आम लोग भी सुन्दर लाल का विरोध करने लगे, लेकिन उनमें से अधिकांश की इच्छा यही थी कि सुजाता भारती ही प्रधानमन्त्री बने।

इधर सांसदों को अपने फेवर में करने में कुमार स्वामी ने बाजी मारी। उसके फेवर में जयन्त मुखिया से ज्यादा सांसद

थे—सो ये तय हुआ कि कुमार स्वामी प्रधानमन्त्री और जयन्त मुखिया उप-प्रधानमन्त्री बनेगा।

करीब सौ सांसदों के साथ वो दोनों पार्टी अध्यक्ष उदयराज तथा सुजाता भारती से मिलने उनके बंगले पर जा पहुंचे।

किसी भी सांसद ने ये तो नहीं कहा कि कुमार स्वामी को प्रधानमन्त्री बना दिया जाये—लेकिन सभी ने एक सुर में बोल दिया कि उन्हें प्रधानमन्त्री के रूप में सुन्दर लाल कतई भी स्वीकार नहीं है—उन्होंने पहले से ही लिखे इस्तीफे उदयराज के चरणों में रख दिये। परेशान उदयराज ने उनसे फैसला करने के लिये अड़तालीस घण्टों का समय ले लिया और ये भी कहा कि वो बाकी के सांसदों से भी उनकी राय मालूम करेगा और कोई फैसला लेगा।

उसने सभी को चाय-नाश्ता करवाकर विदा कर दिया। ऐसा तो हो ही नहीं सकता था कि मीडिया वालों को मनक नहीं लगती।

सो न्यूज चैनल पर ये न्यूज फ्लैश होने लगी कि कुमार स्वामी व जयन्त मुखिया के नेतृत्व में सौ के करीब सांसदों ने पार्टी अध्यक्ष उदयराज से मुलाकात कर स्पष्ट रूप से कह दिया कि उन्हें प्रधानमन्त्री के रूप में सुन्दर लाल कतई मन्जूर नहीं है, अगर सुन्दर लाल को पी० एम० बनाया गया तो वो इस्तीफा दे देंगे। इस खबर से देशभर में हलचल मच गई और लोग एक-दूसरे से सवाल करने लगे कि अगर सुन्दर लाल प्रधानमन्त्री नहीं तो...फिर कौन प्रधानमन्त्री बनेगा?

□□□
□□□

सुन्दर लाल और केशव पण्डित एक साथ ही सुजाता भारती व उदयराज के बंगले पर पहुंचे और अपनी-अपनी गाड़ियों से उतरे।

सुन्दर लाल सफेद एम्बेसडर में था तो केशव ने एयरपोर्ट से टैक्सी ली थी।

दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया, गले मिले और भीतर पहुंचे।

उदयराज व सुजाता भारती ने सुन्दर लाल का हाथ जोड़कर अभिवादन किया, जबकि केशव से वो पूरी आत्मीयता व उत्साह से मिले—उससे गले भी मिले।

उदयराज बैसाखियों को सोफे के सहारे खड़ा करके सोफे पर बैठा और मेज पर से रिमोट उठाकर टी० वी० का वॉल्यूम बहुत कम कर दिया।

"देख रहे हैं अंकल जी...!" वह टी० वी० की तरफ इशारा करके सुन्दर लाल से बोला—"देश में क्या चल रहा है?"

"हां, देख रहा हूं।" सुन्दर लाल दुःखी भाव से बोला, "देश-भर में मेरा विरोध हो रहा है।"

"इस खेल के पीछे कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया का हाथ है। उन्होंने कुछ सांसदों को अपने साथ मिला लिया है।"

"नहीं, दामाद जी! जब अपना ही सिक्का खोटा हो तो फिर दूसरों को क्या दोष देना? इस सबके लिये मेरा वो कपूत शुभम जिम्मेदार है। उस कमीने ने वंशराज और सुगन्धा की जान लेकर मुझे दुनियाभर में जलील कर दिया। लोग मुझे कातिल का बाप तो कहेंगे ही। बाप के कुकर्मों की सजा अगर औलाद को भुगतनी पड़ती है तो औलाद की करतूत का खामियाजा मां-बाप को भी भुगतना पड़ता है। मैं तो डर रहा था कि मेरी वजह से हमारी पार्टी को हार का मुंह ना देखना पड़ जाये।"

"दुःखी होने की कोई जरूरत नहीं है अंकल जी।" सुजाता सांत्वना देने वाले भाव से बोली, "आप खुद को दोषी मत मानिये। पार्टी ने पहले ही डिक्लेयर कर दिया था कि जीत के बाद आपको ही प्रधानमन्त्री बनाया जायेगा। आप राष्ट्रपति महोदय के पास जाकर सरकार बनाने का दावा कीजिये और शपथ-ग्रहण की डेट फिक्स कर लीजिये।"

"कैसी बात कर रही हो तुम सुजाता?" सुन्दर लाल का मुंह खुलने से पहले ही उदयराज बोला—"देशभर में सुन्दर लाल जी का विरोध हो रहा है। टी० वी० वाले जिन भी लोगों के इन्टरव्यू ले रहे हैं, वो ही बोल रहे हैं कि सुन्दर लाल जी को पी० एम० नहीं बनाना चाहिये। हालांकि मैं शुरू से ही सुन्दर

लाल जी की ईमानदारी और साफ छवि का कद्रदान हूं। लेकिन ये वक्त भावुक होने का कतई नहीं है।"

"जब पार्टी ने अंकल जी को पी० एम० के रूप में पेश कर दिया था तो पार्टी की जीत का मतलब यही हुआ कि लोगों को इनसे कोई परहेज नहीं है।"

"परहेज था नहीं, लेकिन अब परहेज हो गया है सुजाता।" उदयराज तपाक से बोला, "मैं मानता हूं कि अंकल जी के खिलाफ माहौल बनाने वाले कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया हैं। लेकिन उनके साथ सौ से भी ज्यादा सांसद हैं। उन सभी के इस्तीफे मेरे पास हैं। वो बोल गये हैं कि अगर सुन्दर लाल जी को प्रधानमन्त्री बनाया गया तो वो पार्टी से इस्तीफा दे देंगे। फिर हमारे पास सरकार बनाने लायक बहुमत कहां रह जायेगा भला?"

"इस बात का फायदा दूसरे लोग उठायेंगे बहन जी...।" केशव चारमीनार की सिगरेट सुलगा लेने पर बोला—"प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह के पास भले ही बहुत कम सांसद हैं। लेकिन वो बहुत शातिर है। वो तीसरे मोर्चे के नेताओं और सांसदों के साथ मिल जायेगा। हमारी पार्टी के सांसदों को तोड़ लेगा। भले ही वो स्वयं प्रधानमन्त्री ना बने—लेकिन किसी दूसरे को प्रधानमन्त्री बनवाकर भी वो परोक्ष रूप से सरकार चलायेगा और फायदे उठायेगा। इसका खामियाजा पूरे देश को भुगतना पड़ेगा। मामला बहुत ही गम्भीर है। इसीलिये मुझे मुम्बई से चलकर यहां आना पड़ा। हमें ना तो अपने बारे में सोचना है, ना ही पार्टी की चिन्ता करनी है। चिन्ता करनी है अपने देश की...हिन्दुस्तान की। मुसीबतों के दौर से गुजर रहे देश को एक मजबूत और स्थिर सरकार की सख्त दरकार है।"

"लेकिन...कुमार स्वामी और जयन्त चौधरी तो अपने चक्कर में हैं पण्डित जी।" सुन्दर लाल बुझा-बुझा-सा बोला, "दोनों में तालमेल हो गया है। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि कुमार स्वामी प्रधानमन्त्री और जयन्त मुखिया उप-प्रधानमन्त्री बनने के चक्कर में हैं। उनके स्तर के पार्टी में कई नेता हैं। बल्कि उनसे भी ज्यादा काबिल, ईमानदार और रसूख

वाले। वो हर लिहाज से कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया से बेहतर हैं। अगर कुमार स्वामी प्रधानमन्त्री और जयन्त मुखिया उप-प्रधानमन्त्री बनता है तो वो लोग कहेंगे कि उन्हें प्रधानमन्त्री क्यों नहीं बनाया गया? कुमार स्वामी में ऐसे कौन-से सुर्खाब के पंख लगे थे? फिर वो बगावत पर उतर आयेंगे। इस तरह तो पार्टी जंग का अखाड़ा ही बन जायेगी। नेता आपस में ही लड़ेंगे—देश की तरफ ध्यान ही नहीं दिया जायेगा। मैं पार्टी हित को ध्यान में रखकर ही बोल रहा हूं कि कुमार स्वामी या जयन्त मुखिया को पी० एम० बनाना आत्मघाती कदम होगा। पार्टी टूट जायेगी। सरकार ज्यादा दिनों तक नहीं चल पायेगी। आधे से ज्यादा सांसद उन दोनों को प्रधानमन्त्री और उप-प्रधानमन्त्री के पद पर कतई पसन्द नहीं करेंगे और वो बगावत पर उतर आयेंगे।"

सुजाता भारती ने हथेलियों से सिर थाम लिया और रूआंसी-सी होकर बोली—"ये...ये क्या हो रहा है? क्या कोई ऐसा रास्ता नहीं है कि देश को एक ईमानदार और मजबूत सरकार मिल जाये—जो देश की तमाम समस्याओं को खत्म करके तरक्की की राह पर ले जा सके?"

□□□

□□□

सुजाता भारती के सवाल पर उदयराज गम्भीर व परेशान हो चला। वह सोफे से उठा और दोनों बगलों में बैसाखियां दबाकर चहलकदमी-सी करने लगा...खट...खट...खट...!

फिर उसने सिगरेट भी सुलगा ली तथा गहरे-गहरे, लम्बे-लम्बे कश मारने लगा।

व्याकुल तो सुन्दर लाल भी था—

"देश को मजबूत और स्थिरता प्रदान करने वाली सरकार तभी मिल सकती है, जब प्रधानमन्त्री भी दृढ़ निश्चय, बुलन्द इरादों वाला हो।" चारमीनार वाली सिगरेट का धुंआ उड़ाते हुये बोला केशव, "अगर प्रधानमन्त्री कमजोर हुआ तो वह अपने मन्त्रि मन्डल और सांसदों को ही एकजुट नहीं रख पायेगा! फिर

वो इतने बड़े देश को भला कैसे सम्भाल सकेगा? अब सिर्फ एक ही रास्ता बचता है।"

सुजाता भारती, सुन्दर लाल ने केशव की तरफ देखा।

उदयराज ने भी चहलकदमी बन्द की और केशव की तरफ पलटकर कौतूहलताभरी आँखों से देखने लगा।

"इस देश की प्रधानमन्त्री तुम बनोगी बहन जी...।" केशव सुजाता भारती की आंखों में झांकते हुये बोला—"राष्ट्रपति महोदय के पास जाकर सरकार बनाने का दावा पेश कर दो। क्यों सुन्दर लाल जी?"

"हां, क्यों नहीं...?" सुन्दर लाल तपाक से बोला, "नेकी और पूछ-पूछ! अगर ऐसा हो जाये तो फिर कहने ही क्या? मैं तो मजबूरी में ही इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेने को राजी हुआ था—वरना ये बूढ़ा हो चला कमजोर जिस्म इस काबिल कहां है। हकीकत तो यही है कि मैं सुजाता बेटी से यही रिक्वेस्ट करने आया था कि...तुम ही पी० एम० बन जाओ बेटी! इस महत्वपूर्ण पद के लिये सुजाता बेटी ही डिजर्व करती है।"

"न...नहीं...मैं नहीं...!" सुजाता हाथ जोड़कर बोली, "मैं जिस्मानी और मानसिक रूप से पूरी तरह टूट चुकी हूं। तभी मैंने पार्टी अध्यक्ष का पद छोड़ा। मैं पी० एम० नहीं बनूंगी...बिल्कुल नहीं।"

"मैं तुम्हारी मनोदशा को समझता हूं बहन जी।" केशव गम्भीर भाव से बोला, "लेकिन हम लोगों का अपने देश के प्रति भी कोई दायित्व बनता है। सिर्फ तुम ही दुःखी नहीं हो...सारा देश दुःखी है। भारत माता दुःखी है। मिट्टी का कण-कण कराह रहा है। पेड़-पौधे सुबक रहे हैं। खेत-खलिहान पीड़ा में हैं, नदियां और समुन्द्र उदास हैं। हिमालय के कलेजे से हूक-सी उठ रही है। वंशराज और सुगन्धा नहीं रहे तो क्या हुआ? देश के तमाम नौनिहालों को अपनी ममता के आंचल में समेट लो। दुःखी, बेहाल लोगों की तकलीफों की हिस्सेदार बन जाओ। किसानों की बेटी, जवानों की बहन, दुखियारों की दोस्त बन जाओ। अपने लिये तो बहुत जी लीं—अब देश के लिये जीओ।"

"ले...लेकिन...!"

"नहीं कुछ नहीं सुनूंगा मैं।" केशव सुजाता की बात काटकर बोला—"उस दिन मैंने तुम्हारी बात मानकर इलेक्शन लड़ने का निर्णय लिया था। अब तुम्हें अपने भाई की बात मानकर प्रधानमन्त्री पद पर आसीन होना है। तुम मना नहीं करोगी बहनजी। तुम्हें मेरी कसम है।"

अब सुजाता के पास इन्कार करने की जरा-सी भी गुंजाईश नहीं बची थी।

❑❑❑
❑❑❑

केशव, उदयराज, सुन्दर लाल के साथ सुजाता भारती समय लेने पर राष्ट्रपति महोदय से मिली और सरकार बनाने का दावा किया।

राष्ट्रपति महोदय ने सरकार बनाने का न्यौता दिया और पूछा कि वो कब शपथ लेना चाहेंगी?

रविवार का दिन निश्चित किया गया—जो कि अगले ही दिन पड़ रहा था।

परमाणु बम की गैस से भी तेज रफ्तार से समूचे देश ही नहीं, पूरे विश्व में खबर फैलती चली गई कि सुजाता भारती भारत की अगली प्रधानमन्त्री बनने जा रही हैं।

देश-विदेश से बधाइयों का तांता लग गया।

समूचे हिन्दुस्तान में हर्ष की लहर दौड़ती चली गई। लोग जश्न मनाने लगे और एक-दूसरे को बधाइयां देने लगे।

मगर बिजली गिरी तो बेचारे कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया पर—लेकिन वो कुछ भी करने की स्थिति में कतई नहीं थे—क्योंकि उनके साथ लगे तमाम सांसद भी सुजाता भारती के प्रधानमन्त्री बनने पर खुश थे, जश्न में डूबे हुये थे।

दोनों दिल मसोसकर रह गये और सुजाता भारती के घर जाकर उसे बधाई दी।

रविवार की दोपहर बारह बजे एक बड़े स्टेडियम में शपथ-ग्रहण समारोह हुआ, जिसकी कवरेज के लिये देश-विदेश के मीडियाकर्मी जुटे और लाइव टेलीकास्ट व डायरेक्ट ब्राड-कास्ट कर रहे थे।

केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी, करतार सिंह, माधवी, रमाकान्त शपथ ग्रहण समारोह में सम्मलित हुये।

सुजाता ने जिद की थी कि केशव भी मन्त्री पद ले और उसका मार्ग दर्शन करे—लेकिन केशव ने अपनी सौगन्ध देकर कहा कि वो मन्त्री बन गया तो कानून, अदालत या अपने मुवक्किलों को कतई भी वक्त नहीं दे पायेगा और लेखन कार्य भी नहीं कर पायेगा।

सुजाता भारती के साथ सुन्दर लाल, कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया समेत एक दर्जन सांसदों ने मन्त्री पद की शपथ ली—जिनके विभागों या मन्त्रालय की घोषणा बाद में होनी थी।

समूचा देश जश्न में डूबा हुआ था।

माटी का कण-कण प्रफुल्लित था।

हवायें मानो मधुर राग छेड़े हुये थीं। कल-कल करती नदियां, झरने खुशी के तराने गा रहे थे तो पशु-पक्षी भी मानो जश्न मना रहे थे।

समुद्र भी मस्ती में था और आसमान भी हल्की बूंदा-बांदी के रूप में मानो खुशी के आंसू बहा रहा था।

लेकिन!

कोई था, जो मातम के कब्रिस्तान में बैठकर अंगारे से चबा रहा था, जिसके सीने पर सांप-से लोट रहे थे, खून तेजाब की मानिन्द ही खौल रहा था और कभी बालों को नोच रहा था तो कभी हथेलियों पर घूंसे बरसा रहा था।

आइये, देख लेते हैं कि ये बन्दा कौन है?

❑❑❑
❑❑❑

अरे! ये तो जनरल साहब हैं, पड़ोसी मुल्क के राष्ट्रपति महोदय—जिनके चेहरे पर मातम के चील-कौए मंडरा रहे हैं।

क्या उस शानदार ऑफिस में कोई जख्मी नाग भी मौजूद था, जो जोर-जोर से फुंफकारे मार रहा था?

अरे नहीं, ये आवाजें तो जनरल के फूलते-पिचकते नथुनों से फूट रही हैं, जो पैरों में पहने जूतों से बेशकीमती व खूबसूरत कालीन को बेदर्दी से रौंदे जा रहा है।

कमरा इतना गर्म क्यों है? कोई रूम हीटर तो नजर नहीं आ रहा है...ओहो...जनरल साहब के क्रोध से टेम्प्रेचर बढ़ा हुआ है।

"अस्सलामु व अलैकुम...जनाब...!" लेफ्टीनेंट की वर्दी में आई० एस० आई० मुखिया जलाल खान ऑफिस में यूं दाखिल हुआ कि मानो टमाटरों के ढेर पर चल रहा था और एक भी टमाटर के फूटने या पिचकने पर उसे सख्त सजा मिलनी थी।

सहमा हुआ-सा था बेचारा तभी तो बार-बार थूक-सा सटक रहा था।

"व अलैकुम अस्सलाम...!" राष्ट्रपति ने मानो जुबान से हन्टर का काम लेते हुये उसे जोर से फटकारा।

जलाल खान की हालत और भी पतली हो चली!

"जिस बात का डर था, वो ही हो गया ना?" किसी कटखने कुत्ते जैसा ही लहजा था राष्ट्रपति का, "सुजाता भारती हिन्दुस्तान की वजीरे आला बन गई। अपनी पहली तकरीर या स्पीच में ही उसने बोल दिया कि उसका पहला मकसद आई० एस० आई० और दहशतगर्दों से निपटना होगा। इसी के साथ उसने ये भी बोला कि जुर्म और क्रप्शन दूर करने को कानून को पुख्ता किया जायेगा। महंगाई दूर करने को जमाखोरों के यहां छापे मारकर माल पकड़ा जायेगा और बाहर से कुछ जरूरी चीजें भी इम्पोर्ट की जायेंगी। मिलिट्री वालों को छूट मिली तो पहले ही दिन कश्मीर में दो दर्जन दहशतगर्दों को मुठभेड़ में मार दिया। आई० एस० आई० के दर्जनभर एजेंट पकड़ लिये गये और हर जगह आई० एस० आई० के एजेंटों की तलाश में छापे मारे जा रहे हैं। हमने तुम्हें पहले ही आगाह कर दिया था कि सुजाता भारती पी० एम० नहीं बननी चाहिये। तुम हिन्दुस्तान जाकर काला मदारी से मिले थे लेकिन तुमने या काला मदारी ने कुछ करके नहीं दिखलाया। झक मारी...झक! हिन्दुस्तान गये और दावत उड़ाकर वापिस लौट आये।"

"न...नहीं...!"

"वो हरामजादा काला मदारी भी घोड़े बेचकर सोता रहा।

वहां इतनी बड़ी उलट-फेर हो गई और वो कुछ भी नहीं कर पाया। एक औरत को खत्म नहीं कर पाया वो।"

"खुदा के वास्ते गुस्सा मत होइये जनाब...!" जमाल खान गिड़गिड़ाने वाले लहजे में बोला, "सब्र के साथ इस खाकसार की बात सुन लें—बड़ी मेहरबानी होगी।"

"बको! क्या कहना चाहते हो?"

"मेरी और काला मदारी की तवज्जो हिन्दुस्तान में अदलते-बदलते हालातों पर ही थी। हम एक-एक पल की जानकारी ले रहे थे। सुजाता भारती का पी० एम० बनने का कोई चांस नहीं था। बेटे के कत्ल और भतीजी की खुदकुशी के बाद वो टूटकर बिखर गई थी। उसने पोलटिक्स से तौबा कर ली थी। पार्टी के सदर के ओहदे से भी इस्तीफा दे दिया था उसने! हालात ऐसे बन गये थे कि सुन्दर लाल का पी० एम० बनना तय था। लेकिन पार्टी के दो लीडरों ने गड़बड़ी कर दी। वो खुद वजीरे आला बनने के ख्वाहिशमन्द थे। दोनों में सुलह हो गई कि एक पी० एम० और दूसरी वाइस पी० एम० बनेगा। उन्होंने सौ से ज्यादा एम० पी० अपने फेवर में कर लिये और सुन्दर लाल के खिलाफ बगावत का झन्डा उठा दिया। उनके आदमियों ने पब्लिक में भी ऐसा माहौल बना दिया कि चारों तरफ सुन्दर लाल की मुखालफत होने लगी। फिर भी सुन्दर लाल वजीरे आला बन जाता—लेकिन केशव पण्डित ने गड़बड़ी कर दी।"

"केशव पण्डित?"

"हां! वो सुजाता भारती का धर्म-भाई है। उसकी वजह से ही तो सुजाता के मर्डर प्लान को ड्रॉप करना पड़ा था। आप तो जानते ही हैं कि केशव पण्डित क्या बला है।"

केशव का जिक्र होते ही राष्ट्रपति की मुट्ठियां भिंच चलीं। चेहरे पर मानो सुर्ख रंग की चींटियों का झुन्ड-सा भागा-दौड़ी करने लगा। कनपटियों की नसें उभरकर जूतों तले आ गये कैंचुओं की मानिन्द ही छटपटाने लगीं। आंखों की कटोरियों में सुर्ख रंग के कीड़े-से गिजगिजाने लगे।

फूलते-पिचकते नथुनों से लोहार की धौंकनी जैसी आवाज फूटने लगी।

"केशव पण्डित ने सुजाता भारती के कहने पर ही मुम्बई से इलेक्शन लड़ा था और तगड़ी फतह भी हासिल की! वो दिल्ली पहुंचा और सुजाता भारती से कहा कि देश की खातिर उसी को पी० एम० बनना होगा। सुजाता भारती तैयार नहीं थी—लेकिन केशव पण्डित ने उसे राजी कर लिया और हमारा खेल खराब हो गया। सब कुछ अचानक ही हो गया। कुछ करने का तो क्या...सोचने का भी मौका ना मिल पाया। सुजाता की सिक्योरिटी के इतने पुख्ता इन्तजामात कर दिये गये थे कि चाहकर भी काला मदारी कुछ नहीं कर पाया।"

"बको मत! हिन्दुस्तान के कई प्रधानमन्त्रियों को उड़ाया गया है। क्या उनकी सिक्योरिटी के इन्तजामात नहीं थे? हरेक मुल्क के वी० आई० पी० की सिक्योरिटी टाइट होती है। लेकिन काम करने वाले फिर भी काम कर जाते हैं। फौरन से पेश्तर सुजाता भारती की मौत का सामान करो। उसका जिन्दा रहना हमारे हक में नहीं है। तुरन्त ही काला मदारी से कॉन्टेक्ट करो और सुजाता भारती की मौत का बन्दोबस्त करो। अगर फौरन से पेश्तर सुजाता भारती को ना उड़ाया गया तो काला मदारी के साथ-साथ तुम्हारी भी खैर ना होगी। बात दिमाग में पेवस्त हुई कि नहीं?"

"हो गई जनाब! कील की माफिक ठुक गई है। इन्शाअल्लाह...फौरन से पेश्तर आपकी ख्वाहिश पूरी कर दी जायेगी।"

"आमीन...!"

□□□

□□□

टेरर मूवमेंट फ्रन्ट का सरगना काले खां अकेला और निहत्था ही पिक्चर हॉल जैसे ही बड़े हॉल में दाखिल हुआ और कुर्सियों की कतारों के बीच बने ढलानदार रास्ते से प्लास्टिक की सफेद स्क्रीन वाले स्टेज की तरफ बढ़ने लगा।

हॉल में उसके सिवाय दूसरा कोई प्राणी नहीं था। सबसे

अगली कतार की एक कुर्सी पर बैठ गया वो और काला मदारी का इन्तजार करने लगा।

पांच मिनट पश्चात् स्क्रीन के पीछे रोशनी हुई और हाथ में माइक लिये हुये काला मदारी परछाई के रूप में ही खड़ा दिखलाई पड़ा।

"सलाम...नमस्ते...!" काले खां ने उठकर सिर झुकाकर अभिवादन किया और फिर अदब के साथ बोला—"आपका हुक्म मिलते ही चला आया काला मदारी जी! फरमाइये, गुलाम के वास्ते क्या हुक्म है? ये नाचीज आपके वास्ते क्या कर सकता है?"

"बहुत ही खतरनाक काम करना है तुम्हें काले खां...।" कौए जैसी कर्कश आवाज हॉल में लगे स्पीकर्स के जरिये काले खां के कानों तक पहुंच रही थी—"यूं तो तुमने बहुत से खतरनाक कामों को अन्जाम दिया है। लेकिन ये काम अब तक का सबसे बड़ा और खतरनाक होगा। सिर्फ हिन्दुस्तान में ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में तहलका मच जायेगा।"

"मैं तैयार हूं जनाबे आली! फरमाइये...क्या करना होगा मुझे?"

"प्रधानमन्त्री सुजाता भारती का कत्ल! उड़ा दो उसे।"

"आपने हुक्म दिया है तो समझ लीजिये कि वो उड़ गई। मानव-बम का इस्तेमाल करूं...या...?"

"ये सिरदर्दी तुम्हारी है कि सुजाता भारती का काम तमाम करने के लिये कौन-सा तरीका अपनाते हो।"

□□□

□□□

एक कमरा, तीन प्राणी!

केशव पण्डित!

हिन्दुस्तान पार्टी का अध्यक्ष व प्रधानमन्त्री सुजाता भारती का पति उदयराज!

उप-प्रधानमन्त्री—सुन्दर लाल!

केशव गम्भीर भाव से बोला—"मैं मुम्बई लौट रहा हूं। एक मर्डर केस की बाबत इन्सपेक्टर अनिल यादव का फोन

आ गया—उसे मेरी मदद की दरकार है। परसों कोर्ट में भी एक मर्डर केस की हियरिंग है—उसकी भी तैयारी करनी है। आप दोनों को बहन जी का पूरा ख्याल रखना है।"

"आप चिन्ता ना करें पण्डित जी। डॉक्टर से डेली चैकअप करवाता रहूंगा और इस बात का ख्याल भी रखूंगा कि वो वक्त पर दवाइयां लेती...।"

"वो सब तो आपने करना ही है ए० सी० पी० साहब।" केशव उदयराज की बात को काटकर बोला, "मेरा इशारा सिक्योरिटी से है। यूं तो प्राइम मिनिस्टर की सुरक्षा के पुख्ता इन्तजाम होते ही हैं। लेकिन सुजाता बहन जी तो पी० एम० बनते ही आग से खेलने लगी हैं। उन्होंने एक तरफ देवेन्द्र सिंह और उसकी सरकार के बाकी मन्त्रियों के घोटालों की जांच के लिये जांच आयोग बिठाने का ऐलान कर दिया—तो दूसरी तरफ देश के दुश्मनों के खिलाफ भी जंग छेड़ दी है। आतंकवादियों और आई० एस० आई० जैसे संगठनों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इससे दुश्मनों का बौखला जाना स्वभाविक है। बहनजी आग से खेल रही हैं। आग से खेलने वाले के जलने या झुलसने की सम्भावनायें बढ़ जाती हैं। इसलिये उनकी सिक्योरिटी के विशेष इन्तजाम करने होंगे। ऊपर से बहनजी ने हर सन्डे को अपने प्रधानमन्त्री आवास पर आम जनता की शिकायतें सुनने की घोषणा भी कर दी है, सो उनकी सिक्योरिटी टाइट करनी होगी। ये जिम्मेदारी आपको लेनी होगी सुन्दर लाल जी।"

"आप चिन्ता ना करिये पण्डित जी! सुजाता बेटी की सुरक्षा में जरा-सी भी कोताही ना होगी। सुई की नोक बराबर भी ढिलाई नहीं बरती जायेगी। मैं आज ही होम मिनिस्टर साहब से मिलकर सुजाता बेटी की सुरक्षा के कड़े बन्दोबस्त करने की बाबत बात करता हूं। कोशिश की जायेगी कि सिक्योरिटी वालों, या ब्लैक कमान्डोज की नजरों से बचकर कोई चींटी भी सुजाता बेटी तक भी ना पहुंचने पाये। हवा का झोंका भी उसे स्पर्श ना करने पाये।"

"ठीक है! अब मैं निश्चिन्त होकर मुम्बई लौट सकूंगा। मौका और समय मिलते ही दिल्ली आता रहूंगा। अच्छा...!"

केशव कुर्सी छोड़कर बोला, "अब आप दोनों मुझे चलने की इजाजत दीजिये। फ्लाइट का टाइम हो रहा है।"

❑❑❑
❑❑❑

सन्डे का दिन!

घोषित प्रोग्राम के मुताबिक सुजाता भारती को आम नागरिकों की समस्याएं सुननी थीं और समस्याओं का निवारण भी करना था।

प्रधानमन्त्री आवास से जुड़े एक बड़े लॉन में ये प्रोग्राम सुबह आठ बजे से दोपहर बारह बजे तक और फिर अपराह्न तीन बजे से सायं छह बजे तक चलना था।

सिक्योरिटी के तमाम बन्दोबस्त उप-प्रधानमन्त्री सुन्दर लाल ने अपनी देख-रेख में करवाये थे।

बंगले के बाहर, भीतर और छत पर चप्पे-चप्पे पर ब्लैक कमान्डोज तैनात थे। आसपास की इमारतों की छत पर भी दूरबीन व टेलीस्कोपिक गन वाले कमान्डोज तैनात थे।

मर्दों व औरतों के लिये अलग-अलग सर्च केबिन बनाये गये थे—जहां सभी की तलाशी ही नहीं होनी थी, बल्कि उन्हें ऐसी मशीनों से भी दो-चार होना था कि अगर किसी के जिस्म के भीतर सुई की टूटी नोंक भी हो तो उसकी तस्वीर टी० वी० मॉनीटर पर आ जानी थी।

औरतों के लिये लेडिज कमान्डोज का बन्दोबस्त था! जिन्हें ये निर्देश भी थे कि किसी महिला पर जरा-सा भी शक होने पर उसके तमाम वस्त्र उतरवाकर तलाशी लेनी थी और मशीनों से जांच करनी थी।

ऐसा ही निर्देश मर्दों के लिये था और इसी के साथ ये भी हुक्म था कि संदिग्ध मर्द या औरत को केबिन के भीतर ही जहरीली गैस छोड़कर या ट्राइंग्युलाइर गन से नशीला इंजेक्शन चलाकर बेहोश कर देना था—जरूरत पड़ने पर गोलियों से भी भून डालना था।

स्त्री-पुरुषों के लिये अलग-अलग बैरीकेटिंग वाली लाइन

बननी थी और दोनों तरफ ब्लैक कमान्डोज कदम-कदम पर तैनात रहने थे।

इसी के साथ हर किसी को कई-कई जगहों पर मैटलडिटेक्टर के सामने से गुजरना था और कमान्डोज से घिरी बैठी सुजाता भारती से एक वक्त में सिर्फ एक ही व्यक्ति को मिलने की परमिशन थी।

जगह-जगह टी० वी० कैमरे लगाये गये थे, ताकि पी० एम० हाउस में बनाये गये कन्ट्रोल रूम से क्लोज सर्किट टी० वी० सिस्टम से निगरानी होती रहे।

❑❑❑
❑❑❑

"सलाम...काला मदारी जी...नमस्कार...!"

गुफा जैसी नीम अन्धेरी वाली जगह पर अपनी रखैल हसीना के साथ मौजूद था और ट्रांजिस्टर जैसे ट्रांसमीटर पर रहस्यमयी काला मदारी से वार्तालाप कर रहा था काले खां।

"हमने तुम्हें दो घण्टे पहले ही बतला दिया था कि सुजाता भारती की सिक्योरिटी के क्या-क्या बन्दोबस्त किये गये हैं।" ट्रांसमीटर से कौए जैसी कर्कश आवाज़ फूटी, "क्या तुमने सोचा कि सुजाता का खात्मा कैसे करोगे?"

"मुआफी चाहूंगा काला मदारी जी।" काले खां शर्मिन्दगी के साथ बोला, "किसी आस-पास की बिल्डिंग की छत पर से टेलीस्कोप वाली गन से सुजाता भारती को निशाना नहीं बनाया जा सकता। आपके मुताबिक आसपास की इमारतों पर ब्लैक कमान्डोज तैनात हैं। सुजाता की सिक्योरिटी के इतने सख्त इन्तजामात हैं कि हथियार या बम के साथ किसी का भी उस तक पहुंच पाना नामुमकिन है। क्यों ना वारदात के वास्ते कोई दूसरी जगह और वक्त मुकर्रर किया...?"

"बकवास मत करो काले खां।" दूसरी तरफ से काला मदारी क्रोधित भाव से चींखकर बोला–"सुजाता को आज ही उड़ाना है–पी० एम० हाउस पर ही उड़ाना है। हमारे आका उसकी मौत की खबर सुनने को बेताब हुये जा रहे हैं। हमने

उनसे बोल दिया कि सुजाता का आज ही काम तमाम हो जायेगा।"

"ले...लेकिन कैसे? इतनी टाइट सिक्योरिटी में...?"

"तुम्हारे पास ऐसी कोई महिला है, जो अपनी जान देने से हिचकिचाये नहीं और गजब की एक्टिंग भी कर लेती हो–जो कतई भी नर्वस ना हो?"

काले खां की आंखें सोचने वाली मुद्रा में सिकुड़ चलीं, फिर जब वो पुनः अपने आकार में लौटीं तो काले खां के होठ खुले और जुबान भी हिली–"हां, है। उसका नाम नाजिमा है। सुजाता के भाई संजीव भारती के टाइम में मिलिट्री ने नाजिमा के चार भाइयों और शौहर को हलाक कर दिया था। तभी से नफरत और इन्तकाम की आग में सुलग रही है वो। पहले वो स्टेज पर नाटक किया करती थी–लेकिन फिर उसने पाकिस्तान जाकर ट्रेनिंग ली और हथियार उठा लिये। वो सुजाता से भी खार खाये हुये...।"

"तो फिर तो नाजिमा ही ठीक है। वो ही ये काम करेगी। उसे इन्तकाम लेने का मौका दो भई। अब कानों को खोलकर ध्यान से सुनो कि नाजिमा को सुजाता भारती की जान लेने के लिये क्या करना है।"

दूसरी तरफ से काला मदारी प्लान बतलाने लगा। काले खां के साथ हसीना का चेहरा भी खिलने लगा, आंखें चमकने लगीं।

❑❑❑
❑❑❑

नाजिमा ठीक दो बजे पी० एम० हाउस पहुंच गई। कोई बत्तीस वर्षीय नाजिमा के जिस्म पर सस्ती-सी साड़ी व ब्लाउज था। हाथों में चूड़ियां और पैरों में पायल। गले में मंगलसूत्र और मांग में सिन्दूर। माथे पर लाल रंग की बिन्दिया।

गोरे-गोरे पैरों में प्लास्टिक की सस्ती व पुरानी-सी चप्पलें।

कुल मिलाकर वो गरीब परिवार की हिन्दू महिला मालूम पड़ रही थी। उसकी आंखों में और चेहरे पर ऐसे हाव-भाव थे कि मानो दुनिया में उससे ज्यादा दुखियारी, मजलूम और

परेशान कोई अन्य महिला हो ही नहीं।

उसने रजिस्टर में अपना नाम 'सविता रानी' लिखवाया और 'गांधी नगर, शाहदरा' का एक काल्पनिक पता भी लिखवा दिया।

बारी आने पर वो चैकिंग वाले केबिन में पहुंची, जहां पर हट्टी-कट्टी, लम्बी-चौड़ी चार महिला कमान्डोज मौजूद थीं—एक वीडियो कैमरा भी लगा हुआ था।

एक कमान्डोज के हाथों में ब्रेनगन तथा दूसरी के हाथों में ट्राइंग्यूलाइजर गन थमी हुई थी। टी० वी० कैमरे के जरिये, कन्ट्रोल रूम से निगरानी की जा रही थी और जरूरत पड़ने पर कन्ट्रोल रूम से ही एक स्विच दबाकर उस केबिन में बेहोशी की गैस छोड़ी जा सकती थी। दो निहत्थी लेडी कमान्डोज ने नाजिमा की बारीकी के साथ तलाशी ली, उसे मैटल डिटेक्टर से भी चैक किया और उस मशीन के सामने भी खड़ा किया, जिसकी बड़ी स्क्रीन पर एक्स-रे की मानिन्द ही जिस्म के अन्दरूनी हिस्सों को देखा जा सकता था।

"ये जूड़े में क्या लगाया हुआ है तुमने?" एक कमान्डो ने पूछा तो नाजिमा निर्विकार भाव से बोली—

"बालों को बान्धे रखने के लिये प्लास्टिक की क्लिप है।"

वह प्लास्टिक की कत्थई रंग की सुई-नुमा क्लिप थी, जिसके एक सिरे पर गोल घुंडी या नन्हीं-सी बॉल बनी हुई थीं और उस क्लिप की लम्बाई पांच इंच के लगभग थी।

"आप कहें तो इसे निकाल दूं?" कहने पर नाजिमा ने क्लिप निकालने को हाथ सिर तक पहुंचाया।

"नहीं रहने दो! तुम जा सकती हो।"

नाजिमा दूसरे गेट से पी० एम० हाउस में दाखिल हो गई।

❑❑❑
❑❑❑

लोहे की मजबूत पाइपों से मजबूत बैरीकेरिंग की गई थी और डेढ़ फुट चौड़ा ही खुले गलियारे जैसा रास्ता था।

दोनों तरफ हथियारबन्द ब्लैक कमान्डोज अटेंशन की पोजीशन में खड़े थे—किसी भी क्षण फायरिंग करने को तत्पर!

क्या मजाल कि आगे बढ़ती जा रही नाजिमा के चेहरे पर सुई की नोक बराबर भी ऐसा कोई भाव उभरा हो, जो कोई उस पर शक कर सके।

मासूमियत का लबादा ओढ़े मौत आगे बढ़ी चली जा रही थी।

हथियारबन्द ब्लैक कमाण्डोज से घिरी कुर्सी पर बैठी सुजाता भारती एक रोते-बिलखते बूढ़े की फरियाद सुन रही थी और करीब खड़े सैक्रेटरी को उसकी शिकायतें नोट करने को बोल रही थी।

कमान्डोज ने नाजिमा को रोक दिया था।

नाजिमा जरा-सी भी तो परेशान, खौफजदा या तनाव में नजर नहीं आ रही थी—कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता था कि उस खतरनाक औरत के दिल व दिमाग में क्या चल रहा था।

फरियादी बूढ़े के चले जाने पर एक कमान्डो ने नाजिमा को सुजाता भारती के पास जाने का इशारा किया तो नाजिमा की आंखों में आंसू भर आये और चेहरा यूं बनने-बिगड़ने लगा कि मानो वह किसी भी पल फूट-फूटकर रो पड़ेगी।

गुलाबी साड़ी वाली सुजाता ने सुहागिनों वाला पूरा श्रृंगार किया हुआ था और काफी मोहक, प्यारी लग रही थी।

"बोलो बहन!" आवाज में अपनेपन का शहद और हमदर्दी का नमक घोलकर बोली सुजाता भारती, "अपना दुःख-तकलीफ या जो भी परेशानी हो...मुझसे निःसंकोच कहो। प्रधानमन्त्री समझकर नहीं...बड़ी बहन समझकर कहो। मैं तुम्हारी हर सम्भव मदद करूंगी।"

"पुलिस के एक दरोगा ने मुझे इतना परेशान किया हुआ है मैडम जी कि अगर बीमार पति और तीन छोटे-छोटे बच्चे ना होते तो कभी की खुदकुशी कर ली होती मैंने।" घुटनों के बल बैठकर तथा हाथों को जोड़कर रोते हुये बोली औरत रूपी मौत—"कमीने की मुझ पर गन्दी नजरें हैं। मेरी इज्जत से खेलना चाहता है। धमकी देता है कि अगर उसे खुश नहीं किया तो मेरे पति को एनकाउन्टर में मारकर ये साबित कर देगा कि वो

मुजरिम थे और मुझ पर भी धन्धा करने का आरोप लगाकर जेल में सड़ा...!"

इतना बोलने पर ही नाजिमा ने बला की फुर्ती से और अप्रत्याशित रूप से जूड़े में फिट प्लास्टिक का सुई-नुमा क्लिप निकाला और सुजाता के दाहिने पैर के पन्जे के ऊपरी हिस्से पर जोर से चुभो दिया।

सिसकारी भरने को सुजाता के होठ जरा-से ही हिले थे, मुंह खुलने भी ना पाया और वो भरभराकर कुर्सी से नीचे गिर पड़ी।

❑❑❑
❑❑❑

मानो अचानक ही प्रकृति की तमाम गतिविधियां यकायक ही रुक गई हों।

सूर्य की परिक्रमा करती धरती ठिठक पड़ी हो। हवा के झोंकों को लकवा-सा मार गया हो।

नदियों, नहरों, झरनों का पानी बर्फ की मानिन्द जम गया और उसकी गति मन्द पड़ गई।

आकाश में उड़ते पंछी जहां के तहां लटके रह गये हों।

पेड़-पौधों तक की धड़कनें बन्द हो गई हों और प्रत्येक जीव की नब्ज ठिठक पड़ी हो।

तमाम कमान्डोज और कन्ट्रोल रूम में क्लोज सर्किट टी० वी० से निगरानी करने वाले सुरक्षा अधिकारी हक्के-बक्के रह गये।

किसी की समझ में ना आया कि अचानक ही क्या हो गया।

पत्थर के बुत बने सैक्रेटरी में सबसे पहले मानो प्राणों का संचार हुआ। वो जमीन पर पड़ी सुजाता पर झपटा और उसे पुकारने लगा—कोई प्रतिक्रिया ना मिलने पर उसे झिंझोड़ने लगा।

कोई प्रतिक्रिया ना मिलने पर उसने सुजाता की दोनों कलाइयां थामीं तो नब्ज गायब पाकर बौखला गया और विक्षिप्त भाव से चीख-चीखकर बोला—"मै...मैडम जी को कु...कुछ

हो गया...अरे, कोई कुछ करो...डॉक्टर को बुलाओ...!"

आसपास के कमान्डोज मानो गहरी नींद से हड़बड़ाकर जागे। उनके दिमाग में ये ख्याल आकाशीय बिजली की मानिन्द ही कौंधा कि नाजिमा ने ही क्लिप चुभोकर गड़बड़ी की थी।

कई हथियार तन गये और नाजिमा पर फायरिंग करने को तत्पर थे।

चार कमाण्डोज ने नाजिमा को दबोचा!

लेकिन तब तक तो बहुत देर हो चुकी थी।

नाजिमा ने जबड़े में फिट प्लास्टिक के नकली दांत को जीभ की नोक से अलग करके उसे चबा लिया था और नकली दांत में भरे पोटेशियम सायनाइड ने अपना काम कर दिया था।

वो जिन्दा नहीं थी।

❑❑❑
❑❑❑

मस्तिष्क तरंगों की सी गति से ही समूची दुनिया में ये मनहूस खबर फैलती चली गई कि आत्मघाती आतंकी महिला ने भारत की प्रधानमन्त्री सुजाता भारती को पोटेशियम सायनाइड जहर वाली हेयर पिन चुभोकर हत्या कर दी और स्वयं भी पोटेशियम सायनाइड वाला कृत्रिम दांत या दांत-नुमा कैप्सूल चबाकर आत्महत्या कर ली—चूंकि पोटेशियम सायनाइड पलभर में ही जान ले लेता है, इसलिये सुजाता को उपचार पाने का मौका ही ना मिल सका।

समूचे देश में हड़कम्प मच गया और प्लेग की बीमारी की मानिन्द ही शोक की लहर दौड़ती चली गई। दुःखी केशव और उसका परिवार तुरन्त ही दिल्ली आ पहुंचे।

उदयराज को बार-बार बेहोशी के दौरे पड़ रहे थे—सो उसे हॉस्पिटलाइज्ड करना पड़ा।

उप-प्रधानमन्त्री सुन्दर लाल ने सेना व पुलिस को सतर्क रहने को बोल दिया था और बी० आई० पी० इमारतों की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी थी।

इस दुःख के माहौल में तमाम न्यूज चैनल वालों के पास एक सी० डी० आई—जिसे सभी ने तुरन्त ही प्रसारित किया—

उक्त सी० डी० की फिल्म में एक गुफा जैसी जगह पर टेरर मूवमेंट फ्रन्ट का सरगना काले खां नजर आया, जो कि वीडियो कैमरे की तरफ देख रहा था। उसके चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव परिलक्षित हो रहे थे।

आंखों में चमक व सुर्ख होठों पर मक्कारी भरी मुस्कान थी –

"प्रधानमन्त्री सुजाता भारती के कत्ल की जिम्मेदारी मैं लेता हूं। वो मुझे और मेरे साथियों को नेस्तनाबूद करने के दावे कर रही थी। यही गलती उसके बड़ों ने की थी और उन सभी को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। सुजाता भारती को मारने वाली मोहतरमा का नाम नाजिमा था, जिसके पति और भाइयों को संजीव भारती के वक्त में मिलिट्री ने हलाक कर दिया था। तभी से वो इन्तकाम की आग में सुलग रही थी। मैंने भी उसी को मौका दिया। इससे पहले मुम्बई में हिन्दुस्तान पार्टी के कन्डीडेट ठाकरे को भी मैंने ही उड़वाया था। हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों का दुश्मन हूं मैं। जो लोग मेरे या मेरे आदमियों के खिलाफ आग उगलेंगे—उनका भी हश्र सुजाता भारती के जैसा ही होगा। हिन्दुस्तान को तबाह करके रख दूंगा मैं। चारों तरफ बदअमनी फैला दूंगा। खून के दरिया बहा दूंगा। इतनी लाशें बिछाऊंगा कि श्मशानों और कब्रिस्तानों में हाउस-फुल के बोर्ड लटकवा दूंगा। मेरे बाप बिलाल खां को फांसी पर लटकाकर मार दिया गया था। उस सदमे में मेरी अम्मी पागल होकर मर गई थी। इन्तकाम की आग में पूरे मुल्क को जला दूंगा मैं। जब तक जिन्दा हूं...तबाही के खेल खेलता रहूंगा। शैतान जिन्दाबाद!"

बस, इतना ही मैसेज था, जिसने केशव पण्डित समेत ना जाने कितने लोगों के दिलों में क्रोध की आग भड़का दी थी।

एक तरफ सुजाता भारती के अन्तिम संस्कार की तैयारियां हो रही थीं तो दूसरी तरफ लोगों के दिमाग में एक 'यक्ष-प्रश्न' था कि सुजाता भारती की जगह कौन लेगा—यानि अगला प्रधानमन्त्री कौन बनेगा?



सुजाता भारती का राष्ट्रीय सम्मान के साथ अन्तिम संस्कार हुआ।

उसकी अन्तिम यात्रा में अथाह जनसमूह था। तमाम मन्त्री, तमाम पार्टियों के नेता, बहुत से वी० आई० पी० विदेशों के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, राजदूत इत्यादि तो [illegible] आम नागरिक भी शामिल थे।

लोग चीख-चीख कर नारे लगा रहे थे—

"जब तक सूरज-चांद रहेगा...!"

"सुजाता भारती तेरा नाम रहेगा।"

हॉस्पिटल की एम्बूलेंस से सीधे श्मशान घाट पर पहुंचे उदयराज ने चिता को मुखाग्नि दी और फूट-फूटकर रो दिया।

ना जाने कितने लोग बिलख रहे थे।

शायद ही कोई ऐसी आंख हो, जो आंसू से रूठी हुई हो।

"सुजाता! मेरी बहन!" धू...धू करती चिता की तरफ दायां हाथ उठाकर केशव मानो शब्दों के रूप में अंगारे ही उगल रहा था, "बदकिस्मती से मैं मुम्बई में था। मुझे ख्याल भी नहीं था कि दुश्मन इतनी जल्दी हमला कर जायेगा। शायद होनी को ऐसा ही मन्जूर था। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि होनी के सदके में काले खां को माफी मिल जायेगी। नहीं...कदापि नहीं। उसे अपने किये की सजा तो भुगतनी ही होगी। उसे पाताल से भी खोदकर ले आऊंगा मैं और बहुत बुरी मौत मारूंगा। तुम्हारी तमाम राखियों का कर्ज काले खां के खून से ही चुकाऊंगा मैं। ये तुम्हारे भाई का वादा है।"



पार्टी मुख्यालय के हॉल में फर्श पर बिछाये गये गद्दों व उन पर डाली गई सफेद चादरों पर हिन्दुस्तान पार्टी के लगभग सभी सांसद मौजूद थे।

माहौल में तनावभरी खामोशी थी।

प्रधानमन्त्री का चयन जो होना था।

लकड़ी की पेटिका के पीछे अध्यक्ष वाली गद्दी पर पार्टी अध्यक्ष उदयराज बैठा हुआ था। उसके चेहरे पर शेविंग बढ़ी हुई थी और आंखों में वीरानी-सी थी।

"तो कार्रवाई शुरू की जाये?" वह सभी मन्त्रियों व सांसदों से मुखातिब होकर कमजोर-सी आवाज में बोला—"सुजाता की हत्या हो जाने की वजह से प्रधानमन्त्री का पद रिक्त पड़ा है। देश हित में हमें तुरन्त ही नये प्रधानमन्त्री की घोषणा करनी होगी। मैं चाहता हूं कि सभी की सहमति से ही प्रधानमन्त्री की नियुक्ति हो।"

"आप ही बोल दीजिये ए० सी० पी० साहब कि किसे ये जिम्मेदारी सौंपी जाये?" उदयराज की बगल में बैठा केशव बोला—"अगर किसी को ऐतराज होगा तो फिर दूसरा नाम रख दिया जायेगा और जिसके भी ज्यादा समर्थक होंगे—उसी को ये जिम्मेदारी सौंप दी जायेगी।"

"मेरे ख्याल से तो पार्टी में सबसे अनुभवी और काबिल सुन्दर लाल जी ही हैं। ये वैसे भी वर्तमान में उप-प्रधानमन्त्री हैं। क्या किसी को ऐतराज...?"

"हां, मुझे ऐतराज है।" रेलमन्त्री जयन्त मुखिया अपने स्थान से उठकर बोला, "ऐसा नहीं कि सुन्दर लाल जी से मेरी कोई जाती दुश्मनी है। मैं इनका पूरा सम्मान करता हूं! लेकिन सवाल देश और हमारी पार्टी का है। सुन्दर लाल जी पहले एक बार प्रधानमन्त्री बने थे—लेकिन इनसे ठीक से जिम्मेदारी निभाई नहीं गई थी। पार्टी टूट के कगार पर पहुंच गई थी। विपक्षी हावी हो गये थे। देशभर में आन्दोलन हुये थे और इन्हें इस्तीफा देकर नये चुनावों की सिफारिश करनी पड़ी थी। फिर इलेक्शन में इन्हीं के नेतृत्व में पार्टी लड़ी—लेकिन सत्ता में इन्डियन पब्लिक पार्टी आई और देवेन्द्र सिंह देश के प्रधानमन्त्री बने। अब तो देश के हालात और भी खराब हैं। सुन्दर लाल जी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। इनके बेटे पर वंशराज के कत्ल और सुगन्धा की मौत का इल्जाम भी है। उसे उम्र कैद की सजा होना निश्चित है।"

"जो किया, शुभम ने किया...!" सुन्दर लाल मानो

क़समसाकर बोला—"उसकी करतूत मालूम पड़ते ही मुझे इतना बड़ा सदमा लगा कि...हार्ट अटैक की वजह से हॉस्पिटल में एडमिट होना पड़ा। मैंने तभी उस कुत्ते से तमाम सम्बन्ध तोड़ लिये थे। उससे मिला तक नहीं—जिन्दगी में उसकी शक्ल देखूंगा भी नहीं। भगवान से यही प्रार्थना करता रहता हूं कि शुभम को फांसी की सजा मिले—या वो कुत्ते की ही मौत मर जाये। जब मैं पी० एम० था तो हमारे कुछ मन्त्रियों ने गलत काम किये थे। घोटाले किये थे। बिजनेसमैनों, कम्पनी और फैक्ट्रियों के मालिकों से कमीशन खाकर उन्हें सामानों के भाव बढ़ाने की छूट दे डाली थी। महंगाई ने जनता की कमर तोड़ डाली थी। इसका लाभ विपक्षियों ने उठाया था और जन आन्दोलन चलाये थे। मुझे इस्तीफा देकर चुनाव की सिफारिश के लिये मजबूर किया गया था। उस पीरियड में मैंने कोई गलत काम या घोटाला किया हो तो बताया जाये—मैं अभी इस्तीफा लिख दूंगा।"

"सवाल ये नहीं कि आप ईमानदार या बेईमान थे...!" जयन्त मुखिया बोला—"सवाल ये है कि क्या आप प्रधानमन्त्री पद की जिम्मेदारी निभा पायेंगे? मेरा ख्याल है कि नहीं—कतई नहीं! किसी कम उम्र वाले और स्वस्थ व्यक्ति को ये जिम्मेदारी दी जाये। मैं वादा नहीं कर रहा हूं, बल्कि दावा भी कर रहा हूं कि अगर मुझे ये जिम्मेदारी सौंपी जाती है तो मैं स्वर्गीय सुजाता भारती के स्वप्नों को पूरा करके दिखलाऊंगा—उनके पद-चिन्हों पर चलूंगा। पार्टी और देश के लिये बड़ी-से-बड़ी कुर्बानी देने को हरदम तैयार रहूंगा। देश से आतंकवाद का नामोनिशान मिटाकर रख दूंगा।"

"जुम्मा-जुम्मा आठ दिन का अनुभव है तुम्हें...!" गृह मन्त्री कुमार स्वामी भभकते चेहरे व सुलगती-सी आवाज में बोला—"सात साल पहले तक तुम इन्डियन पब्लिक पार्टी में थे और इलेक्शन में टिकिट ना मिलने पर हिन्दुस्तान पार्टी में आ गये थे। जबकि मैं शुरू से ही हिन्दुस्तान पार्टी में हूं। वैसे भी लोग मेरी ईमानदारी की कसमें खाते हैं। उप-प्रधानमन्त्री

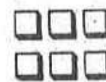
का तो कोई पद होता ही नहीं। प्रधानमन्त्री के बाद सबसे बड़ा पद होम मिनिस्टर का होता है। मेरे, तुम्हारे और सुन्दर लाल जी के बीच वोटिंग हो जाये। जिसके भी समर्थन में ज्यादा सांसद हों, उसी को प्रधानमन्त्री बना दिया जाये।"

"अध्यक्ष जी!" कोई सत्तर वर्षीय सांसद उठा और बड़ी ही विनम्रता के साथ बोला, "प्रधानमन्त्री पद के तीन दावेदार तो सामने आ चुके हैं। कुछ और लोग भी प्रधानमन्त्री बनने के इच्छुक हो सकते हैं। लेकिन मैं इन्हीं तीनों यानि सुन्दर लाल जी, जयन्त मुखिया जी और कुमार स्वामी जी की ही बात करता हूं। मान लीजिये कि इन तीनों में से किसी एक को प्रधानमन्त्री बना दिया जाता है तो...इसका क्या परिणाम निकलेगा? बाकी दो और उनके समर्थक नाराज हो जायेंगे और विरोध करेंगे। खुलकर नहीं करेंगे तो...चोरी-छिपे करेंगे...जो कि और भी ज्यादा खतरनाक होगा। बाकी आप लोग भी बगावत कर सकते हैं। स्वयं प्रधानमन्त्री बनने के चक्कर में वो ऐसे काम करेंगे कि प्रधानमन्त्री की बदनामी हो, उस पर नाकामी का ठप्पा लगे--ताकि उसे हटाकर दूसरे को प्रधानमन्त्री बना दिया जाये। क्या ऐसे माहौल में सरकार चल पायेगी? देश की भलाई के काम हो सकेंगे? पार्टी का फायदा होगा?"

"आप हम सभी से उम्र में बड़े हैं गुप्ता जी...।" गम्भीर भाव से बोला उदयराज, "आपको राजनीति का खासा एक्सपीरियंस भी है। आप ही बतलाइये कि ऐसे हालात में क्या करना चाहिये?"

"ऐसे व्यक्ति को प्रधानमन्त्री बनाया जाये, जो कि सभी को स्वीकार्य हो– जिसके खिलाफ एक भी सांसद या मन्त्री ना हो। जो गुणी, काबिल, तेज-तर्रार, ईमानदार हो–जिसमें देश को चलाने की काबिलियत हो! जिससे पार्टी के लोग ही नहीं...बल्कि देश की जनता भी खुश हो...।"

"तो फिर आप ही बतलाइये गुप्ता जी कि ऐसा व्यक्ति कौन हो सकता है? आपके ख्याल से किसे प्रधानमन्त्री बनाया जाये?"



पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से कोई चालीस किलोमीटर दूर एक खूबसूरत, बड़ा व आलीशान फार्म हाउस!

फार्म हाउस के हॉल में जश्न मनाया जा रहा था! राष्ट्रपति-कम-मिलिट्री जनरल और लेफ्टिनेंट जनरल व आई० एस० आई० के मुखिया जलाल खान के अलावा भी कई लोग जश्न में शामिल थे, जिनका ताल्लुक मिलिट्री या आई० एस० आई० से था।

सिगरेट, सिगार के साथ शराब के भी दौर चल रहे थे। खाने के लिये 'नॉनवेज' के कई आइटम्स थे। खूबसूरत युवतियां भी मौजूद थीं, जो कि शराब के साथ-साथ खाने-पीने का सामान भी सर्व कर रही थीं! बहुत कम वस्त्रों वाली चार विदेशी बालायें म्यूजिक सिस्टम की धुन पर डांस कर रही थीं।

"वाह भई...वाह...कमाल ही कर दिया तुमने।" राष्ट्रपति शराब से भरा गिलास थामे हुये जलाल खान के करीब पहुंचा और शराब के साथ कामयाबी के भी नशे में झूमते हुये बोला, "हमें ये तो उम्मीद थी कि उस हिन्दुस्तानी औरत सुजाता भारती का काम तमाम हो जायेगा। लेकिन ये उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी उसे दुनिया से रुखसत कर दिया जायेगा। बेचारी ने सिर्फ दो दिन ही पी० एम० के ओहदे का स्वाद लिया...हिच्च...और फिर दुनिया से चलती बनी! तुमने तबियत खुश कर दी जलाल खान! हमारी तरफ से काला मदारी और काले खां को मुबारकबाद दी कि नहीं?"

"भला इस खाकसार से इतनी बड़ी गुस्ताखी कैसे हो सकती है जनाब...!" नशे में झूमते हुये बोला जलाल खान, "मैंने उन दोनों से कहा कि आप उनके कारनामे से बेहद खुश हैं और आमना-सामना होने पर पीठ ठोककर शाबाशी देंगे। आपकी तरफ से दोनों को भारी इनामात देने की बात भी बोल दी मैंने तो...हिच्च।"

"हां, ये ठीक किया तुमने जलाल खान! काला मदारी और काले खां ने इनाम के काबिल काम किया है। उन्हें मुंह मांगा

इनामात दिये जायेंगे। उन्होंने सुजाता भारती के रूप में हमारी सबसे बड़ी दुश्मन को खत्म करके तबियत खुश कर दी। उसके वजीरे आला बनते ही हमारे आदमी मारे जाने लगे थे। वहां की मिलिट्री और पुलिस में ना जाने कहां से जोश आ गया था। अब दिल को सकून मिला है। अब कोई भी हिन्दुस्तान का पी० एम० बन जाये—हम पर कोई फर्क नहीं पड़ता। वो सुजाता भारती जितना खतरनाक नहीं हो सकता। लेकिन ये तो मालूम होना चाहिये कि अगला वजीरे आला कौन बन रहा है?"

"सुन्दर लाल ही बनेगा जनाब! वो वाइस प्राइम मिनिस्टर है। वहां मीटिंग चल रही थी। शायद नये प्राइम मिनिस्टर के नाम का ऐलान हो चुका हो।"

"तो फिर म्यूजिक सिस्टम और डांस को बन्द कराके टी० वी० ऑन कराओ। जी० न्यूज, स्टार न्यूज, एन० डी० टी० वी०, इन्डिया न्यूज, आज तक...कोई सा भी न्यूज चैनल लगवाओ। पता तो चले कि कौन प्राइम मिनिस्टर बन रहा है?"

❑❑❑

❑❑❑

"चियर्स!"

"चियर्स...!"

ताजा-ताजा ही वर्तमान से निवर्तमान प्रधानमन्त्री बने देवेन्द्र सिंह और उसके बेटे वासुदेव सिंह ने जाम-से-जाम टकराये और स्याह होठों से लगाकर 'गटागट' सारी शराब हलक से नीचे उतार गये।

"सुजाता भारती की मौत मुबारक हो डैड!"

"तुम्हें भी बेटे...!" कहने पर देवेन्द्र सिंह ने बोतल उठा ली और नये पैग बनाते हुये बोला, "अपना पत्ता साफ होना तो तय था। लेकिन उस हरामजादी की जिन्दगी के पत्ते यूं फटे कि कोई माई का लाल जोड़ नहीं पायेगा। श्मशान घाट पर राख के रूप में आराम फरमा रही है वो! साली ने हमारे खिलाफ जांच आयोग का गठन करने का ऐलान कर दिया था। अगर जिन्दा रहती तो अपना तो फजीता ही कर डालती। या तो हमारी गिरफ्तारी होती, या फिर हमें दुम-दबाकर विदेश भागना पड़ता।

अब हिन्दुस्तान पार्टी में कोई सूरमा नहीं बचा। जो भी प्रधानमन्त्री बनेगा, उसका फजीता कर देंगे। तीसरे मोर्चे के नेताओं से जल्दी ही मीटिंग होगी। मिल-जुलकर ऐसी नीतियां बनायेंगे कि सरकार या प्रधानमन्त्री हमारे पीछे पड़ने की बजाय अपना बचाव करते फिरेंगे। जरा टी० वी० ऑन कर! मीटिंग में फैसला हो चुका होगा कि अगला प्रधानमन्त्री कौन बन रहा है। अगर सुन्दर लाल बन जाये तो...घस्से ही कट जायेंगे। वो पहले भी प्रधानमन्त्री बना था तो हमने उसे इस्तीफा देने को मजबूर कर दिया था। उसके कुछ मन्त्रियों को तोड़कर अपनी तरफ मिला लिया था और उनसे घोटाले कराये थे, कमीशन दिलवाकर महंगाई बढ़वा दी थी। ऐसा ही कुछ खेल अब की बार भी खेला जायेगा।"

वासुदेव सिंह ने रिमोट उठाकर टी० वी० ऑन कर दिया।

टी० वी० पर नये प्रधानमन्त्री की तस्वीर भी दिखलाई जा रही थी और उसका नाम भी फ्लैश किया जा रहा था।

देवेन्द्र सिंह के हाथ से शराब की बोतल निकल कर मेज पर गिरी और कांच के टॉप को चकनाचूर करके उस पर रखे गिलासों व अन्य सामानों को साथ लिये-दिये कालीन पर जा गिरी—वो भी टुकड़ों की शक्ल में।

देवेन्द्र सिंह की हालत ऐसी कि मानो क्रोधी दुर्वासा ऋषि ने उसे श्राप देकर पत्थर की निष्प्राण प्रतिमा में 'कन्वर्ट' कर दिया हो! टी० वी० को देखती आंखों में मानो जीवन का कोई लक्षण ही नहीं था। पुतलियों में जरा-सी भी हरकत नहीं थी—मानों फेवीकोल से आंखों के बीचों-बीच बटन चिपका दिये गये हों।

पलकों का आलम ये था कि मानो बॉर्डर पार करते घुसपैठियों ने हथियारबन्द सैनिकों से घिर जाने पर हाथ खड़े कर दिये हों और जरा भी हिल ना रहे हों।

मुंह अलीबाबा चालीस चोर वाली कहानी की उस गुफा की मानिन्द ही खुल गया था, जो कि 'खुल जा सिमसिम' कहने पर खुलती थी और 'बन्द होजा सिमसिम' कहने पर ही बन्द

होती थी। ऐसा ही कुछ हाल वासुदेव सिंह का भी था। वो भी 'काठ का उल्लू' बना बैठा हुआ था।



आत्मा राम गुप्ता नामक बुजुर्ग सांसद ने जब प्रधानमन्त्री पद के लिये केशव का नाम रखा तो हॉल में ऐसा सन्नाटा व्याप्त हो गया कि मानो सभी को एनाकोन्डा ने सूंघ लिया हो।

सबसे अधिक सकते की सी अवस्था में केशव ही रह गया था—मानो उसे बर्फ की बड़ी सिल्ली के भीतर जमा दिया गया हो।

"मुझे मन्जूर है।" एक सांसद खुशी व उत्साह से भरा हुआ बोला—"वाह गुप्ता जी...वाह! आपने एकदम सबसे काबिल व्यक्ति का नाम लिया है। ये शख्स अपनी खूबियों, काबिलियत, देशभक्ति और कानून के साथ मजलूमों की मदद करने की वजह से देशभर में मशहूर है। केशव मास्टर माइंड है—दिमाग का जादूगर। इस देश को पण्डित जी जैसे योग्य प्रधानमन्त्री की ही जरूरत है। देश की तमाम समस्याएं और परेशानियां दूर हो जायेंगी। देश तरक्की की राह पर चल पड़ेगा और मजबूत होता चला जायेगा।"

"हां, पण्डित जी बेहतर हैं।"

"प्रधानमन्त्री पद के लिये पण्डित जी से बढ़िया कोई नहीं हो सकता।"

"मुझे पण्डित जी प्रधानमन्त्री के रूप में स्वीकार हैं।"

"मुझे भी।"

"मैं इसका समर्थन करता हूं।"

कम-से-कम डेढ़ सौ सांसद केशव के फेवर में बोलने लगे तो पहले सुन्दर लाल ने ही उठकर कहा कि वो केशव को प्रधानमन्त्री बनाने के लिए दिल से राजी है और केशव की हर सम्भव सहयोग करेगा। फिर तो जयन्त मुखिया, कुमार स्वामी और बाकी लोग भी केशव का समर्थन करने लगे।

लेकिन!

केशव ने मना कर दिया। वो बोला—

"मुझे वकालत, इन्वेस्टीगेशन और लेखन कार्य से बहुत लगाव है—मैं अपना प्रोफेशन नहीं छोड़ सकता। दूसरे, इतने बड़े देश का प्रधानमन्त्री बनना कोई हंसी-खेल नहीं है। मुझे तो राजनीति का जरा-सा भी एक्सपीरियंस नहीं है। ये तो सुजाता बहनजी ने ही अपनी कसम दिलाकर एम० पी० का इलेक्शन लड़वा दिया था।"

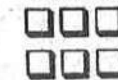
"देश इस वक्त संकट की घड़ियों से गुजर रहा है पण्डित जी...।" सुन्दर लाल समझाने वाले भाव से बोला—"आप जीनियस हैं, माइन्डेड हैं। फिर हम सभी लोग भी तो आपके साथ हैं। आप अपनी काबिलियत के दम पर इस जिम्मेदारी को ठीक से निभा लेंगे।"

"न...नहीं! मैं क्षमा चाहूंगा।"

लेकिन सभी ने केशव को घेर लिया और उस पर प्रधानमन्त्री बनने का दबाव डालने लगे।

केशव तब मजबूर हुआ, जब उसे कई सांसदों, मन्त्रियों और पार्टी अध्यक्ष उदयराज ने सुजाता भारती की सौगन्ध दे डाली—यहां तक कहा कि अगर उसे देश की जरा-सी भी चिन्ता हो और हिन्दुस्तान से जरा-सा भी प्यार हो तो प्रधानमन्त्री पद की जिम्मेदारी कबूल कर ले।

केशव को हांमी भरनी पड़ी।



"केशव पण्डित को सिर्फ मुम्बई ही नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के चन्द बड़े वकीलों में गिना जाता है। उन्होंने आज तक भी जितने केस लड़े—सभी में विजय हासिल की। सबसे अहम बात ये कि उन्होंने कभी किसी मुजरिम की पैरवी नहीं की—हमेशा लोगों को इन्साफ और मुजरिमों को सजा दिलवाने को ही कानूनी लड़ाई लड़ी। इन्वेस्टीगेशन करके ना जाने कितने ही मुजरिमों को पकड़ा और उन्हें सजा दिलवाई।

इतना ही नहीं, केशव पण्डित ने अपनी जान जोखिम में डालकर कई बड़े, खतरनाक मुजरिमों, गैंगस्टरों, देशद्रोहियों, आतंकवादियों, आई० एस० आई० के एजेंटों को पकड़कर सजा

दी। पाकिस्तान जाकर अकेले दम पर वहां आतंकवादियों के ट्रेनिंग कैम्प भी नष्ट...!"

"नहींऽऽऽऽ!"

भयानक किस्म की चीख निकालते हुये पाकिस्तानी राष्ट्रपति ने मेज पर से शराब की बोतल उठाकर पूरी शक्ति से टी० वी० पर खींच मारी—

छनाक...की आवाज के साथ बोतल भी फूटी और स्क्रीन के टूटने पर न्यूज रीडर भी गायब हो गया।

जमाल खान हक्का-बक्का-सा, लुटा-पिटा-सा खड़ा था—उसकी आंखों में एक ही आर्तनाद हिचकौले खा रहा था—"ये...ये क्या हो गया?"

पार्टी या जश्न में शामिल तमाम लोग ही यूं गमजदा थे कि मानो घर में किसी की मौत हो गई हो।

जश्न मातम में तब्दील हो गया।

सबसे बुरा हाल राष्ट्रपति का ही था। चेहरे व आंखों में वहशत के भाव लिये हुये वह लुटा-पिटा-सा बोला—"ये...ये क्या हो गया...कैसे हो गया? केशव पण्डित हिन्दुस्तान का प्राइम मिनिस्टर कैसे बन सकता है? ये...ये ठीक नहीं होगा। हमारे वास्ते मनहूस खबर है ये! हम सुजाता भारती को लेकर ही फिक्रमन्द थे। लेकिन अब तो...अगर जरा-सा भी गुमान होता कि केशव पण्डित प्रधानमन्त्री बन जायेगा तो...हम कतई भी सुजाता भारती को खत्म नहीं कराते। हमने जंगली बिल्ली को खत्म किया तो खूंखार शेर से पाला पड़ गया। नमाज बख्शवाने के चक्कर में रोजे गले पड़ गये। सुई से बचने की कोशिश की तो सिर पर तलवार लटक गई। केशव पण्डित ने हमारे आदमी हिन्दुस्तान में ही पकड़े और मारे नहीं—बल्कि वो हमारे मुल्क में भी दनदनाता हुआ आया और तबाही मचाकर तूफान की माफिक लौट गया...सही-सलामत! हमारी मिलिट्री, हमारे सूरमा उसका बाल भी बांका नहीं कर पाये। तब तो वो मामूली हिन्दुस्तानी था! अब तो वो प्रधानमन्त्री बन जायेगा...हिन्दुस्तान की सुप्रीम पॉवर! उसके पास सत्ता की, तीनों सेनाओं की ताकत होगी। खुद भी चैन से नहीं बैठेगा

और हमें भी नहीं बैठने देगा। कुछ करना होगा। फौरन से पेश्तर कुछ करना पड़ेगा। नहीं तो ये केशव पण्डित हमें बहुत भारी पड़ेगा। हमारे वास्ते बहुत ही नुकसानदेय साबित होगा। उफ्फ ये क्या हो गया...क्यों हो गया? हम तो सुजाता भारती को मारकर खुश हो रहे थे कि...रिवॉल्वर को नेस्तनाबूद कर दिया। लेकिन अब तो एटम बम आ गया है। जो फटेगा तो तबाही के पहाड़ खड़े कर देगा। दिमाग घूम रहा है। कोई पैग बनाकर दो...जल्दी से।"



काठ का उल्लू बना वासुदेव सिंह ही पहले सचेत हुआ और बुत बने खड़े देवेन्द्र सिंह के करीब पहुंचा।

"डैड...डैड...!" देवेन्द्र सिंह के कन्धे झिंझोड़ते हुये बोला, "कहां खो गये आप—होश में आइये।"

देवेन्द्र सिंह ने यूं झुरझुरी-सी ली कि मानो वो गहरी नींद सोया हुआ हो और उसके ऊपर बर्फ का ठन्डा पानी उड़ेल दिया गया हो।

"कहां खो गये थे डैड?"

"होश उड़ गये थे मेरे। अभी भी ठिकाने पर नहीं हैं। ये...ये ठीक नहीं हो रहा। बहुत गलत होने जा रहा है। सत्यानाश हो उसका...जिसने केशव पण्डित को प्रधानमन्त्री बनाने का प्रस्ताव रखा होगा। वो नाश पीट देगा हमारा। सुजाता भारती से भी ज्यादा खतरनाक है ये केशव पण्डित। कानून का पुजारी भी है और देशभक्त टाइप का भी है। वो ऐसे ही मुजरिमों, भ्रष्टाचारियों और देश के दुश्मनों के खिलाफ जंग लड़ता रहा है। प्रधानमन्त्री बनने पर तो ना जाने क्या करेगा। अपनी भी बारी आयेगी।"

"लेकिन किया ही क्या जा सकता है डैड?"

"कुछ-ना-कुछ तो करना ही होगा।" देवेन्द्र सिंह आंखों को सिकोड़कर मुट्ठियों को भींचकर मानो जबड़े की चक्की में शब्दों के गेहूं पीसते हुये ही बोला, "कोई तो रास्ता निकालना

पड़ेगा ही। सोचना पड़ेगा कि केशव पण्डित को प्रधानमन्त्री बनने से रोकने के लिये क्या किया जा सकता है?"

❑❑❑

❑❑❑

टेरर मूवमेंट फ्रन्ट का सरगना काले खां पिक्चर हॉल जैसे उसी प्लास्टिक की स्क्रीन वाले हॉल में दाखिल हुआ।

उसके हाव-भाव, बॉडी लेंग्वेज देखने पर ही लगता था कि वो काफी हड़बड़ाया हुआ था—टेंशन के जंगल से गुजरकर आया था।

स्क्रीन वाले स्टेज के करीब पहुंचते ही वो उतावला-सा होकर बोला—"काला मदारी जी...काला मदारी जी...मैं आ गया हूं। अगर आप मेरी आवाज सुन रहे हैं तो मेहरबानी करके आ जाइये।"

स्क्रीन के पीछे लाइट जली और परछाई-नुमा काला मदारी दिखलाई पड़ा।

"नमस्ते...काला मदारी जी।"

"आओ काले खां, हम बेताबी के साथ तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे।"

"मसला क्या है काला मदारी जी? अपने मुझे फौरन से पेश्तर यहां पहुंचने को हुक्म दिया है तो जरूर कोई-ना-कोई गड़बड़ी वाली बात होगी।"

"हमसे हाजी जी यानि जमाल खान ने कॉन्टेक्ट किया है काले खां।" हॉल में लगे कई स्पीकर्स से कौए जैसी कर्कश आवाज उभरी—"सिर्फ वो ही नहीं, बल्कि जनरल साहब भी केशव पण्डित के प्रधानमन्त्री बनने की खबर से बहुत परेशान हैं।"

"परेशान तो मैं और मेरे आदमी भी हो चले हैं काला मदारी जी। आप भी जानते हैं कि वो कितना खतरनाक बन्दा है। उसकी वजह से ही मुझे मुम्बई की बजाय दिल्ली में अपना ठिकाना बनाना पड़ा। मेरे आदमी मुम्बई जाकर वारदात करने से कतराते हैं। पाकिस्तान जाकर वो कई मर्तबा तबाही मचा चुका है और वहां से यूं ही निकल आया, जैसे मक्खन में से

बाल निकल आता है। पाकिस्तानी मिलिट्री, आई० एस० आई० वाले और दहशतगर्द या फिदाईन उसका बाल भी बांका नहीं कर...।"

"केशव की तारीफ बन्द करो...!" स्क्रीन के पार चहलकदमी-सी करता काला मदारी किलसकर बोला—"हमें उसके बारे में काफी कुछ मालूम है। अपने दुश्मनों का पूरा बायोडाटा रखते हैं हम। केशव पण्डित के गुरु रमाकान्त को डेंगू बुखार हुआ है और वो शिवाजी हॉस्पिटल में एडमिट है। केशव उसे देखने मुम्बई जा रहा है। वहां से लौटने पर ही वो प्रधानमन्त्री पद की शपथ लेगा। हम चाहते हैं कि शपथ लेने से पहले ही वो उड़ जाये। तुरन्त ही किसी मानव-बम यानि फिदाईन को मुम्बई भेजो और केशव को उड़वाओ। कल रात को उसे वापिस लौटकर परसों सुबह शपथ लेनी है। वो मुम्बई से लौटना नहीं चाहिये। वहीं पर उसके परखच्चे उड़ जाने चाहियें। इसी में हमारी भलाई है। अगर वो प्रधानमन्त्री बन गया तो...फिर काबू में आने वाला नहीं। तुरन्त ही अपने सबसे होशियार मानव-बम को मुम्बई भेजकर उसका काम तमाम कराओ। नहीं,एक से बात नहीं बनेगी। कई मानव-बम भेजो। कोई तो पण्डित का काम तमाम करने में कामयाब...।"

"मुआफी चाहूंगा काला मदारी जी। इस वक्त मेरे पास सिर्फ एक ही फिदाईन है।"

"ओ शिट! ठीक है। उसी को भेजो। उसे बोलकर भेजना कि उसे हर कीमत पर कामयाब होना है। केशव को उड़ाना ही उड़ाना है। जाओ, देर ना करो। देखें, तुम कब तक हमें खुशखबरी देते हो?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव रातभर हॉस्पिटल में ही रहा।

उसके साथ सोफिया, माधवी, राजन, करतार सिंह व आशीर्वाद भी थे।

केशव जब दिल्ली से चला तो ब्लैक कमान्डोज भी उसके साथ आना चाहते थे, लेकिन उसने सख्ती के साथ मना कर

दिया था और बोला था—"अगर देश के होने वाले प्रधानमन्त्री को ही सिक्योरिटी की जरूरत पड़ेगी तो फिर आम नागरिकों का मनोबल कैसे बढ़ेगा? देश के कई लोगों को दो वक्त क्या...एक वक्त का भी खाना मयस्सर नहीं होता। जबकि प्रधानमन्त्री, मन्त्रियों, एम० पी०, एम० एल० ए० और बाकी वी० आई० पी० सिक्योरिटी पर करोड़ों रुपये रोज के खर्च हो जाते हैं। मैं जहां भी जाऊंगा—अकेला अपने दम पर जाऊंगा।"

अकेले ही आया वो मुम्बई।

ये बात दूसरी थी कि हॉस्पिटल में लोगों के आने-जाने का सिलसिला जारी था, जो कि केशव को बधाई दे रहे थे।

ना जाने लोगों को कैसे मालूम हुआ कि केशव मुम्बई में है।

मीडिया वाले भी आ-आकर केशव का इन्टरव्यू ले रहे थे।

सुबह होने पर जब भीड़ बढ़ने लगी तो पुलिस को आकर व्यवस्था सम्भालनी पड़ी। इससे एडमिट मरीजों, उनके परिजनों और नये आने वाले मरीजों को भी दिक्कत होने लगी।

रमाकान्त की तबियत में सुधार था। केशव ने कहा कि वो चुपचाप पीछे के रास्ते से निकलकर घर जा रहा है और कुछ समय आराम करेगा। उसने सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी व करतार सिंह से कहा कि वो लोग फ्लाइट के समय ही हॉस्पिटल से सीधे एयरपोर्ट पहुंच जायें।

❑❑❑
❑❑❑

वो चार गुन्डे थे, जो कि टू स्टार वर्दी वाले पुलिस इन्सपेक्टर को हॉकी, तलवार, मोटर साईकिल चेन व लोहे की रॉड से मार रहे थे।

जख्मी व निहत्था इन्सपेक्टर चारों का मुकाबला कर रहा था और उन्हें लात-घूंसे भी मार रहा था—लेकिन पलड़ा गुन्डों का ही भारी था।

केशव ने कार रोकी और फुर्ती के साथ बाहर निकलकर उन लोगों की तरफ दौड़ा!

"अरे! ये तो केशव पण्डित है भीडू! अपुन इसका मुकाबला नेई कर सकते। जान बचाने का—कल्टी मार लेने का।"

कहने पर एक गुन्डा भागा तो दूसरे गुंन्डे भी इधर-उधर भाग निकले।

जख्मी इन्सपेक्टर गिरने ही वाला था कि केशव ने उसे सम्भाल लिया और बोला—"घबराने की जरूरत नहीं है। वो बदमाश भाग गये। मैं तुम्हें किसी नजदीक के हॉस्पिटल में लिये चलता हूं।"

"शु...शुक्रिया...पण्डित जी।" वह हांफते-कराहते हुये बोला, "दिनेश उमराव पुरकर...इस्लाम नगर में पोस्टिंग...ये गुन्डे कुछ लोगों को लूट रहे थे...रिव...रिवॉल्वर पुलिस स्टेशन में ही रह गई थी...आह...कम्बख्तों ने घेर लिया...आप नहीं आते तो मुझे जान से ही मार...।"

"बोलो मत! सिर से खून बह रहा है।"

केशव ने उसे बांहों में उठाकर कार की पिछली सीट पर लिटा दिया और फिर ड्राइविंग सीट पर बैठ कार को दौड़ा दिया।

"अपने भगवान को याद कर ले ओये पण्डित...!" भेड़िये की गुर्राहट जैसी आवाज पीछे की तरफ से ही उभरी थी—"तेरा आखिरी टाइम आ गया है।"

❑❑❑
❑❑❑

केशव को चौंकना चाहिये था ना?

लेकिन बिल्कुल भी नहीं चौंका।

कार को उसी रफ्तार से चलाते हुये बैक व्यू मिरर में देखा तो जख्मी इन्सपेक्टर दिखलाई पड़ा—जिसके खून से सने चेहरे पर खूंखार किस्म भाव थे और होंठों पर जहरीली किस्म की मुस्कान नृत्य कर रही थी।

"कौन हो भाई? ये तो जाहिर हो चुका है कि तुम पुलिस वाले नहीं हो और वो गुन्डे तुम्हारे ही साथी थे। मुझे फंसाने को ड्रामा चल रहा था।"

"काफी माइंडेड है तू...।" बर्फ-सी ठन्डी, पोटेशियम

सायनाइड-सी घातक आवाज, "वो लोग मेरे ही साथी थे। ड्रामे को असली रंग देने के लिये वो मुझ पर सचमुच ही वार कर रहे थे। मेरी चोटों से असली खून ही निकल रहा है। मैं फिदाईन हूं...नाम है कबीर अली।"

"फिदाईन...यानि आत्मघाती। जो अपनी जान देकर अपने साथ दूसरे लोगों को भी ले मरता है?"

"बिल्कुल...वो ही हूं मैं। मेरे पेट पर आर० डी० एक्स० बम वाली बैल्ट बंधी है। उसमें लगे लाल बटन को दबाते ही बम फटेगा और मेरे साथ तू भी उड़ जायेगा। परखच्चे से उड़ जायेंगे हम दोनों के।"

"यानि मेरी मौत तय है?"

"बिल्कुल! तेरी मौत मुकर्रर कर दी गई है। हम दोनों एक साथ उड़ेंगे। तेरी कार भी उड़ेगी! तो मैं बटन दबा दूं?"

❑❑❑

❑❑❑

"ऐसी भी क्या ज़ल्दी है प्यारे!" केशव जरा-सा भी तो घबराया हुआ नहीं था और आराम से बोले जा रहा था, "मरना ही तो है। एक-दो मिनट बाद मर जायेंगे तो क्या फर्क पड़ जायेगा भला? मुझे उड़ाने से पहले थोड़ी जानकारी तो दे दो यार! मेरा राम नाम सत्य करने को किसने भेजा है—क्यों भेजा है?"

"काले खां का नाम तो सुना ही होगा तूने?"

"हां सुना है। लेकिन मैंने उसका क्या बिगाड़ा है, जो वो भरी जवानी में मेरी धर्म-पत्नी को विधवा कर देना चाहता है?"

"उससे काला मदारी ने कहा है।"

"ये काला मदारी कौन है? सड़कों पर बन्दर-बन्दरिया का तमाशा दिखलाता है क्या?"

"नहीं, वो इन्डिया में आई० एस० आई० का चीफ है। वो कौन है—ये मालूम नहीं! काले खां उसी के अन्डर में काम करता है। उसने काले खां को हुक्म दिया कि तुझे प्रधानमन्त्री बनने से पहले ही उड़ा दिया जाये— वरना तू बहुत खतरनाक साबित होगा। काले खां ने मुझसे कहा तो मैं कई दहशतगर्दों के साथ मुम्बई आ पहुंचा। एक उम्मीद थी कि तू हॉस्पिटल

से अपने घर जा सकता है। इसीलिये हम लोग इस रोड पर तैनात थे। अगर तू घर के लिये ना निकलता तो शाम को एयरपोर्ट पर जाना था ही। तब हम एयरपोर्ट जाने वाली सड़क पर मोर्चा जमाते। हमारा एक आदमी हॉस्पिटल में मौजूद था। उसी ने वॉकी-टॉकी पर तेरे वहां से निकलने की जानकारी दी थी और कार का नम्बर, नाम, रंग वगैरा भी बतला दिया था।"

"ओह! वो पांचों दहशतगर्द यानि आतंकवादी कहां पर ठहरे हुये हैं? बतला दो यार! हम दोनों तो ... ही वाले हैं।"

"वो होटल जहां ... के रूम नम्बर तीन सौ दो में ठहरे हुये हैं। कुछ और भी पूछना है तुझे?"

"नहीं, भाई साहब! आपने जितनी जानकारियां दीं—उसके लिये शुक्रिया...थैंक्यू, धन्यवाद! अब आप बटन दबाकर बम फोड़ सकते हैं।"

"तुझे मौत की दहशत नहीं हो रही?"

"क्या तुम्हें हो रही है।"

"बिल्कुल भी नहीं। मुझे ब्लड कैंसर है। अपने मुल्क, अपनी कौम और जेहाद के वास्ते जान कुर्बान करूंगा तो शहीद कहलाऊंगा और जन्नत मिलेगी। मैं बटन दबाने जा रहा हूं। खुदा को याद करते ही बटन दबा दूंगा। तुम भी अपने खुदा को याद कर लो। अल्ला हुम-म अजिन्नीं अला ग म—शातिल मौति ब स-क-शातिल मौति।"

कहने पर उस फिदाईन ने खून से सनी शर्ट ऊपर उठाकर पेट पर बंधे आर० डी० एक्स० बम वाली बैल्ट पर लगा लाल बटन दबा दिया—

धड़ाम ऽऽऽऽऽ!

आग की लपटों से घिरी कार गैस के गुब्बारे की मानिन्द ही हवा में कई फुट ऊपर तक उड़ी और हवा में ही खील-खील हो गई।

❑❑❑

❑❑❑

पांचों इतना ज्यादा खुश थे कि पैर जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे— मानो हवा में उड़ रहे हों।

होटल के कमरे में पहुंचने पर उनके लीडर अजमल शाह ने रूम सर्विस को फोन करके 'ग्रीन लेबल' वाली शराब की बोतल, सोडा वाटर, गर्मा-गरम सीक कबाब व उबले हुये अन्डों का ऑर्डर दे दिया। फिर उसने एक ब्रीफकेस खोलकर उसमें रखे तमाम कपड़े निकाल दिये और खांचों में फंसी तली को थोड़ी मेहनत करके बाहर निकाला तो छोटे साइज का ट्रांसमीटर सैट दिखलाई पड़ा।

ट्रांसमीटर से जुड़े हैडफोन को सिर व कानों पर फिट करने पर माइक बायें हाथ में ले लिया, फिर सैट को ऑन करके उसकी नॉब घुमाते हुये बोला—"ब्लैक ईगल कॉलिंग...ब्लैक ईगल कॉलिंग!"

"ब्लैक वुल्फ दिस साइड...।" अजमल शाह के कानों में काले खां की आवाज पड़ी—"मैसेज दो ब्लैक ईगल...ओवर।"

"अपना कोबरा शिकार को डसने में कामयाब हुआ ब्लैक वुल्फ। वो जांबाज शिकार को खत्म करके शहीद हो गया...ओवर।"

"यकीन नहीं हो रहा ब्लैक ईगल...!" काले खां की आवाज मारे खुशी व उत्तेजना के कांप उठी—"तुम्हारी रिपोर्ट एकदम पक्की है ना...?"

"बिल्कुल...ब्लैक वुल्फ...एकदम पक्की। अपनी आंखों से मैंने और मेरे साथियों ने उस कार के परखच्चे उड़ते देखे हैं जिसमें कोबरा के साथ शिकार भी सवार था। आग के शोलों में लिपटी कार बहुत ऊंचाई तक उड़ी और फिर हवा में ही उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। शिकार के बचने का कोई सवाल ही नहीं उठता। अभी पुलिस को कार का नम्बर और उसके मालिक का पता निकालने में वक्त लगेगा। फिर तो सारे मुल्क में हा-हाकार मच जायेगा। रेडियो, टी० वी० पर शिकार के उड़ने की खबरें ही चलेंगी। हम बहुत बड़ा कारनामा करने में कामयाब हुये हैं ब्लैक वुल्फ...।"

"तबियत खुश कर दी तुम लोगों ने। हमारी खुशी का अन्दाजा नहीं लगा सकते तुम! हम अभी काला मदारी जी को खबर करेंगे तो वो भी मारे खुशी के पागल हो जायेंगे। हमारे

आका भी जश्न मनायेंगे। तुम लोगों को मुंहमांगा इनाम मिलेगा। तुम लोग वापिस लौट आओ। ओवर एंड ऑल।"

इसी के साथ दूसरी तरफ से काले खां ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया।



शराब के साथ बाकी मंगवाया हुआ सामान भी आ गया। पांचों कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द करके शराब की चुस्कियों के साथ सींक कबाब, अन्डों का सेवन कर रहे थे, सिगरेट का धुआं उड़ा रहे थे।

केशव की मौत की खबर सुनने के लिये टी० वी० ऑन किया हुआ था और न्यूज चैनल लगाया हुआ था।

भड़ाक की आवाज के साथ दरवाजा टूटकर भीतर की तरफ गिरा। वो पांचों इतना चौंके व हड़बड़ाये कि हाथों से गिलास, सिगरेट, कबाब व अन्डे छूट गये।

यमराज का अवतार लग रहा आशीर्वाद कमरे में दाखिल हुआ। पीछे-पीछे यमदूतों की मानिन्द राजन व करतार सिंह भी थे।

"ऐ कौन हो तुम...?" एक आतंकी आशीर्वाद की तरफ बढ़ते हुये बोला, "दरवाजा तोड़कर भीतर आने का क्या मतलब...आ...आउच...!"

लम्बे कद के मुण्डे ने दाहिने हाथ की चौड़ी हथेली के पन्जे में आतंकी का गला दबोचकर उसे फर्श से ऊपर उठा लिया और फिर ऊपर की तरफ उछाल दिया।

भड़ाक की आवाज के साथ वो आतंकी फुल स्पीड में चलते सीलिंग फैन से टकराया और फैन के टूटे ब्लेड के साथ नीचे गिरा।

आधे से ज्यादा कटे गले से खून का झरना-सा बह रहा था।

पानी से निकालकर गर्म तवे पर रख दी गई मछली की मानिन्द ही वो तड़फाया, छटपटाया और फिर बेजान मिट्टी के बुत में तब्दील हो गया। बाकी चारों आतंकी अपने साथी

के हश्र व अन्जाम को देख हड़बड़ा उठे— बौखला गये।

फिर वो चारों क्रोध से हुंकारते हुये आशीर्वाद पर झपटे। उनमें से दो को राजन व करतार सिंह ने दबोच लिया और बाकी दो को आशीर्वाद ने उनके गलों से पकड़कर आसानी से फर्श से फुटभर ऊपर उठा लिया और दोनों को वाल क्लॉक के पैण्डुलम की मानिन्द हिलाते हुये बोला—"क्या सोचा था, मेरे डेडी जी को मारने में कामयाब हो जाओगे? केशव पण्डित नाम है उनका! चूहों ने कभी शेर का शिकार किया है क्या? बम के ब्लास्ट होने से पहले ही वो विन्ड स्क्रीन तोड़कर कार से बाहर निकल गये थे। कार के साथ सिर्फ तुम्हारा साथी ही उड़ा था।"

इतना बोलने पर आशीर्वाद ने दोनों के सिरों को आपस में जोर से टकरा दिया—

तड़ाक! की ऐसी आवाज हुई कि मानो दो नारियल आपस में टकराये हों।

दोनों के ही सिर फूट गये और खून बहने लगा।

आशीर्वाद ने दोनों को फर्श पर पटककर उनके गलों पर एक्शन वाले शूज समेत पैर रखकर जरा-सा जोर लगाकर ही उनके प्राणों का किडनेप कर लिया।

बाकी दो आतंकियों को राजन व करतार सिंह ने हाथों-पैरों से इतना तोड़ा कि उनकी एक-एक हड्डी टूट गई।

कई हड्डियां तो चकनाचूर ही हो गईं।

इतनी बुरी हालत होने पर भला कोई जिन्दा रह सकता है?

❑❑❑
❑❑❑

सोफिया, आशीर्वाद, राजन, करतार सिंह के साथ केशव प्लेन के जरिये दिल्ली पहुंचा।

बहुत ही सादे समारोह में केशव ने राष्ट्रपति महोदय के द्वारा प्रधानमन्त्री पद की शपथ ली।

इस प्रोग्राम का लाइव टेलीकास्ट हुआ!

इस प्रोग्राम को काले खां, काला मदारी, पाकिस्तान में

राष्ट्रपति, लेफ्टिनेंट जनरल व आई० एस०.आई० के मुखिया, जमाल खान ने भी देखा।

उन पर क्या बीत रही होगी?

सीनों पर सांप से लोट रहे थे।

मानों वो अंगारों पर लेट रहे थे।

उनका जश्न मातम और चिन्ता में बदल गया था।

जबकि पूरा हिन्दुस्तान केशव के प्रधानमन्त्री बनने पर जश्न मना रहा था।

❑❑❑
❑❑❑

"मेरे प्यारे देशवासियों! कुछ दिनों पहले तक सोचा भी नहीं था कि मुझे इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिल जायेगी। हालांकि मुझे राजनीति का कोई अनुभव नहीं है—लेकिन मेरे साथ सुन्दर लाल जी जैसे अनुभवी नेता हैं, जिन्हें उप-प्रधानमन्त्री बनाया गया है। बाकी मन्त्री भी मेरा साथ देंगे। हम लोग मिल-जुलकर पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ सरकार चलायेंगे। पूरी जिम्मेदारी और गम्भीरता से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करेंगे।"

दूरदर्शन तथा अन्य टी० वी० चैनल्स के माध्यम से केशव प्रधानमन्त्री के रूप में देश की जनता को सम्बोधित कर रहा था—

"हमारा देश किन परिस्थितियों से गुजर रहा है, किन-किन समस्याओं से ग्रस्त है, मुझे मालूम है। अपनी तरफ से पूरी-पूरी कोशिश करूंगा कि जल्द से जल्द तमाम समस्याओं का निराकरण हो और देश तरक्की की राह पर चल पड़े। कानून का सख्ती के साथ पालन कराया जायेगा। मुजरिमों को या तो जेल जाना होगा, या फिर पुलिस एनकाउन्टर में अपनी जान खोनी पड़ेगी। भ्रष्ट अधिकारियों और कर्मचारियों पर लगाम कसी जायेगी। उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जायेगी। महंगाई पर कन्ट्रोल किया जायेगा। और बेरोजगारों को रोजगार मुहैया कराया जायेगा। इसके लिये ज्यादा-से-ज्यादा कम्पनियां और फैक्ट्रियां स्थापित की जायेंगी। छोटे-बड़े उद्योगों के लिये बैंक द्वारा लोन दिया जायेगा। गरीबों व मध्यम वर्ग

के लोगों के इस्तेमाल में आने वाली तमाम वस्तुएं सस्ती की जायेंगी। उदाहरण के लिये कैरोसीन और गैस सिलेन्डर बहुत सस्ते किये जायेंगे और उनके नुकसान की पूर्ति पैट्रोल, कारों, ए० सी०, शराब, सिगरेट वगैरा के दाम बढ़ाकर की जायेगी। बस और ट्रेन की यात्रा सस्ती की जायेगी और प्लेन, हेलीकॉप्टर के किराये बढ़ाये जायेंगे। अनाज, चीनी, चाय, तेल, घी वगैरा सस्ते किये जायेंगे और इसकी भरपाई के लिये कॉफी, कोल्ड ड्रिंक, चॉकलेट, पीज्जा, बर्गर वगैरा महंगे किये जायेंगे।

गरीबों को योग्यता के आधार पर एजूकेशन और नौकरियों में आरक्षण दिया जायेगा, चाहे वो किसी भी जाति या धर्म से सम्बन्ध रखते हों। गरीबों को मुफ्त में पढ़ाई और इलाज, दवाइयां दी जायेंगी—जिसकी पूर्ति होटलों, डांस बार, बार, सिनेमा वगैरा से टैक्स वसूली करके की जायेगी।

देश में व्याप्त आतंकियों और आई० एस० आई० जैसे देश के दुश्मनों को कुचलकर रख दिया जायेगा। मिलिट्री, पुलिस, खुफिया विभागों को हथियारों व अन्य साधनों से मजबूत किया जायेगा। सुजाता बहनजी के सभी स्वप्न पूरे किये जायेंगे। देश को हर जगह से मजबूत बनाया जायेगा। लेकिन इसके लिये भारतवासियों को सरकार का साथ देना होगा। आप सभी को अपने दम पर भी मुजरिमों, आतंकियों और भ्रष्टाचारियों का विरोध करना होगा। अपनी और दूसरों की रक्षा करनी होगी। आप सभी को एक जिम्मेदार नागरिक बनना है। हम सभी को मिल-जुलकर अपने देश को मजबूत और विकासशील बनाना है। नमस्कार...जयहिन्द...।"

□□□

□□□

केशव ने पहले तीनों सेना के अध्यक्षों से बन्द कमरे में गहन विचार-विमर्श किया और उनसे पूछा कि सेनाओं को हर तरह से मजबूत करने के लिये क्या-क्या उपाय किये जायें? या किन-किन चीजों की कमियां हैं?

तीनों अध्यक्षों ने बतलाया कि सेना को क्या-क्या चाहिये।

केशव ने कहा कि बहुत जल्द उनके सुझावों पर अमल किया जायेगा।

फिर घण्टेभर पश्चात् ही केशव ने दूरदर्शन समेत सभी न्यूज चैनल्स वालों को बुलवा लिया और 'लाइव टेलीकास्ट' के जरिये देश की जनता से सम्बोधित होकर बोला—"नमस्कार, सलाम, सतश्री अकाल, गुड इवनिंग। मेरे प्यारे देशवासियों, आपने सुना या पढ़ा ही होगा कि किसी समय में हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था। क्योंकि यहां पर अपार धन-दौलत, सम्पदा थी। लेकिन फिर विदेशी आक्रमणकारियों ने बार-बार आक्रमण किये और यहां की सम्पदा को लूटा। यहां तक कि यहां के धार्मिक स्थलों को भी लूटा गया। लुटेरे धन-दौलत, हीरे-जवाहरात इत्यादि लूटकर ले गये। रही-सही कसर फिरंगियों ने पूरी कर दी। उन्होंने हमें अपना गुलाम बनाकर रखा और देश की सम्पदा को लूटकर अपने देश में भिजवाते रहे। विश्व-प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी फिरंगी ले गये!

ये सब क्यों हुआ? इसलिये हुआ कि हम लोगों में एकता नहीं थी। यहां के राजा आपस में ही लड़ते रहते थे। उससे देश की सुरक्षा व्यवस्था कमजोर हुई और दुश्मनों ने इसका फायदा उठाया। जयचन्द और मीरजाफर जैसे गद्दारों ने भी दुश्मनों का साथ दिया। आज भी दुश्मनों की कमी नहीं है। उनकी गिद्ध-दृष्टि हमारे देश पर गड़ी है। देश की तरक्की या विकास उन्हें कतई नहीं भा रहा है। अवसर मिलते ही वो हम पर हमला कर सकते हैं। आई० एस० आई० और आतंकी संगठनों के जरिये देश में गड़बड़ियां फैलाई भी जा रही हैं।

देश के भीतर मौजूद दुश्मनों, देशद्रोहियों और बाहरी दुश्मनों से निपटने के लिये जरूरी है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ यानि मजबूत की जाये। इसके लिये तीनों सेनाओं यानि थलसेना, वायुसेना और जलसेना का मजबूत होना बहुत जरूरी है।

पुलिस, अर्धसैनिक बलों का भी मजबूत होना बेहद जरूरी है। मैं आपको दो उदाहरण देने चाहूंगा। एक तो ये कि जब पुलिस और आतंकियों के बीच मुठभेड़ होती है तो आतंकियों

के पास ग्रेनेड, ए० के० छप्पन मशीनगन, ब्रेनगन जैसे आधुनिक हथियार होते हैं। जबकि पुलिस या फोर्स के पास रायफल, रिवॉल्वर और कम मात्रा में कारबाइन या ए० के० सैंतालीस होती है? क्या ऐसे में हमारे जवान आतंकियों का ठीक से मुकाबला कर सकते हैं?"

दूसरा उदाहरण मैं थलसेना यानि मिलिट्री का दूंगा...।" केशव लगातार बोले जा रहा था, "चीन और पाकिस्तान की लाइन ऑफ कन्ट्रोल यानि एल० ओ० सी० पर तैनात हमारे जवान हरेक मौसम में बर्फीली हवाओं और ठिठुरनभरी ठन्ड का सामना करते हैं। सर्दियों में तो खून को बर्फ की तरह जमा देने वाली ठन्ड पड़ती है। हमारे जवानों के पास पुराने जूते, जुर्राबें, टोपियां और पोशाकें हैं। उन्हें नये जूतों, जुर्राबों व पोशाकों की जरूरत है। अन्य साधनों और हथियारों वगैरा की जरूरत है।

सुरक्षा-व्यवस्था को मजबूत करने के लिये परमाणु बमों, मिसाइलों, टैंकों, विमानों, हैलीकॉप्टर्स, पनडुब्बियों, जलपोतों, हथियारों की सख्त जरूरत है। पुलिस और सेना की तादाद बढ़ाने की भी जरूरत है। जिसके वास्ते धन की आवश्यकता है। सभी देशवासियों का सहयोग चाहिये मुझे! सो प्रत्येक शहरों, कस्बों और गांवों में रक्षा मन्त्रालयों के कलेक्शन कैम्प लगाये जायेंगे। आपसे जितनी भी बन पड़े, देश के लिये आर्थिक मदद कीजिये और बदले में रसीद अवश्य लीजिये। आपके सहयोग से देश मजबूत होगा। देश मजबूत होगा तो हम चैन की नींद सो सकेंगे और हर क्षेत्र में तरक्की कर पायेंगे। धन्यवाद...जय हिन्द!"

❑❑❑
❑❑❑

देश के सभी राज्यों, केन्द्र शासित राज्यों के पुलिस उच्चाधिकारी केशव तथा उप-प्रधानमन्त्री सुन्दर लाल के साथ एक हॉल रूम में मौजूद थे।

सभी को विशेष विमानों द्वारा बुलवाया गया था। किसी को भी मालूम नहीं था कि उन्हें क्यों बुलाया गया है।

जलपान हो जाने पर केशव ने सभी की व्याकुलता, जिज्ञासा का अपनी गम्भीर वाणी से मर्दन करना प्रारम्भ किया—

"सभी राज्यों की पुलिस का क्या हाल है—ये आप लोग भी जानते हैं। ऐसा नहीं कि ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, मेहनती और जांबाज किस्म के पुलिस जवानों और अधिकारियों की कोई कमी है। लेकिन उनके मुकाबले भ्रष्ट, कामचोर, निकम्मे, रिश्वतखोरों की संख्या कहीं ज्यादा है। कन्डीशन ये है कि मुजरिम पुलिस वालों से डरते ही नहीं। क्योंकि वो जानते हैं कि अव्वल तो हफ्ता पहुंचने की वजह से वो पकड़े ही नहीं जायेंगे—अगर पकड़े भी गये तो रिश्वत देकर छूट जायेंगे। जबकि आम आदमी पुलिस के नाम से भी घबराता है। उसे किसी मजबूरी में पुलिस स्टेशन जाना पड़ जाये तो उसकी हालत ऐसी होती है कि मानो भेड़ को कसाईखाने में जाना पड़ रहा हो।

पुलिस का डन्डा मुजरिमों पर कम और आम नागरिकों पर ज्यादा चलता है। अगर डकैतों, गुन्डों या आंतकियों से मुठभेड़ हो जाये तो इधर-उधर छिपकर जान बचाते फिरेंगे—लेकिन अपने अधिकार के लिये नागरिक धरने पर बैठे हों तो उन्हें बेरहमी के साथ पीटा जाता है—खाकी वर्दी वाले फिरंगियों की याद ताजा कर देते हैं। थानों में फरियादियों की कोई सुनवाई नहीं, रिपोर्ट दर्ज नहीं होती। अगर होती भी है तो बदले में रिश्वत ली जाती है, या फिर आगे कोई कार्रवाई ना होगी। जुल्म करने वालों को रिश्वत लेकर उन्हें बचाने की कोशिश की जायेगी। शरीफ और निर्दोष लोगों को झूठे केस में फंसा दिया जायेगा। कई बार तो निर्दोषों को मुठभेड़ के नाम पर मार दिया जाता है और उन्हें मुजरिम या आतंकवादी बतला दिया जाता है।" अधिकांश पुलिसवालों के सिर झुक गये—नजरें झुक गईं।

"कोई ईमानदार पुलिसवाला अपने कर्त्तव्य का पालन करता भी है तो वह डिपार्टमेंट वालों की आंखों की ही किरकिरी बन जाता है। उसे दुश्मन समझ खुन्नस निकाली जाती है। वो मुजरिमों को पकड़ लाये तो उसके अधिकारी का फोन आ

जायेगा कि वो मुजरिम को छोड़ दे। अगर वो नहीं छोड़ेगा तो उसका ट्रांसफर कर दिया जायेगा—सस्पैंड कर दिया जायेगा। कईयों को तो मारकर ये साबित कर दिया जाता है कि वो गुन्डों, या डकैतों या आतंकियों के साथ हुई मुठभेड़ में शहीद हो गया। नहीं...अब ये सब नहीं चलेगा...बिल्कुल नहीं चलेगा।"

केशव के कण्ठ से मानो शब्द नहीं, बल्कि दहकते अंगारे ही फूट रहे थे—

"अब तमाम गलत सिस्टम बदलने होंगे। आप लोगों की सुपरविजन में सभी थानों में लॉकअप समेत विभिन्न हिस्सों में वीडियो कैमरे लगाये जायेंगे। उनका कनेक्शन जिला मुख्यालय के कन्ट्रोल रूम से होगा—जहां से सभी थानों को वॉच किया जायेगा। उसी कन्ट्रोल रूम में आम जनता के लिये फोन लगेंगे। कोई भी पीड़ित उस फोन पर अपनी शिकायत बतायेगा, जिसको कम्प्यूटर में फीड करने की व्यवस्था होगी। उसकी शिकायत को ही एफ० आई० आर० माना जायेगा। कन्ट्रोल रूम का अधिकारी सम्बन्धित थाने के अधिकारियों को उस शिकायत की जानकारी देकर तुरन्त ही कार्रवाई करने का हुक्म देगा। सर्किल इन्चार्ज को तुरन्त ही फरियादी के पास जाकर उसकी शिकायत सुननी होगी—उसके साथ एक वीडियो कैमरे वाला भी होगा, जो कि फरियादी की शिकायत या बयान की रिकॉर्डिंग करेगा।

पुलिस अधिकारी को तुरन्त ही कार्रवाई की रिपोर्ट कन्ट्रोल रूम को देते रहना होगा। कन्ट्रोल रूम का इन्चार्ज केन्द्रीय गृह मन्त्रालय से सम्बद्ध होगा। उसके अधीनस्थ हरेक थाने पर तैनात होंगे, जो कि पुलिस की तमाम कार्रवाइयों की वीडियो रिकॉर्डिंग करेंगे और 'लाइव टेलीकास्ट' सिस्टम के जरिये तुरन्त ही कन्ट्रोल रूम को भेजते रहेंगे। गलत काम करने वाले पुलिस कर्मियों की रिपोर्ट अधिकारियों को दी जायेगी और अधिकारियों को तुरन्त ही उस पुलिसवाले के खिलाफ कार्रवाई करनी पड़ेगी। कुल मिलाकर कानून व्यवस्था को कठोर करना है। पुलिसवालों को जनता का रक्षक और दोस्त बनना होगा और मुजरिमों का दुश्मन बनना होगा। इसके बदले में पुलिसवालों की तनख्वाह

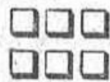
तीन गुणा की जायेगी। उन्हें हर तरह की सुविधा दी जायेगी। उन्हें हथियार, वाहन उपलब्ध कराये जायेंगे। गुन्डों, आतंकियों वगैरा से निबटने को हरेक जिले की पुलिस को मशीनगन्न लगे और हैन्ड ग्रेनेड से भरे हेलीकॉप्टर्स दिये जायेंगे। अगर इसके अलावा आपके राज्य की पुलिस को किसी बात की दिक्कत या परेशानी हो तो निःसंकोच बतलाइये। हरेक समस्या का समाधान किया जायेगा, हरेक दिक्कत को दूर किया जायेगा, तमाम जायज मांगों को पूरा किया जायेगा।"

अब तक चुपचाप बैठा सुन्दर लाल बोला—"आपके राज्य की पुलिस को कोई दिक्कत या परेशानी हो तो बेझिझक प्रधानमन्त्री जी से कहिये।"

"सर...!" एक पुलिस अधिकारी उठा और थोड़ा झिझकते हुये केशव से बोला, "आपने पुलिसवालों की तनख्वाह बढ़ाने के साथ-साथ बाकी सुविधायें मुहैया कराने को कहा ही है। आपने हमसे जो उम्मीदें रखी हैं, उन्हें पूरा किया जायेगा। लेकिन पुलिस के सामने सबसे बड़ी परेशानी ये आती है कि जब कानून तोड़ने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाती है तो सत्ताधारी पार्टी के नेता और मन्त्री उसके बचाव को आ जाते हैं। अगर उनकी बातें ना मानी जायें तो पुलिसवालों का ट्रांसफर कर दिया जाता है, या दूसरे तरीकों से परेशान किया जाता है।"

"अब ऐसा नहीं होगा!" बहुत ही सख्त, खुरदरे व सर्द से लहजे में बोला केशव, "बाकायदा संसद में कानून पास कराया जायेगा। अगर किसी भी राज्य का कोई नेता, मन्त्री...यहां तक कि मुख्यमन्त्री भी किसी मुजरिम या भ्रष्टाचारी को बचाने के लिये पुलिस पर नाजायज दबाव बनाने की कोशिश करेगा तो उस पुलिसवाले की शिकायत पर केन्द्रीय गृह मन्त्रालय कार्रवाई करेगा। उस मन्त्री या मुख्यमन्त्री के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी। उसे मुजरिम की कैटेगिरी में लाकर पद से हटाया जायेगा और मुकदमा चलाकर जेल की हवा खिलवाई जायेगी। और कोई समस्या हो तो बतलाइये।"

पुलिस अधिकारियों ने जो-जो भी समस्याएं बतालाईं—केशव ने उसका जल्द-से-जल्द निराकरण करने का आश्वासन दिया।



पूर्व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह, उसका बेटा वासुदेव सिंह, तीसरा मोर्चा में शामिल तमाम दर्जनभर पार्टियों के नेता ही देवेन्द्र सिंह के फार्म हाउस पर मौजूद नहीं थे, बल्कि रेलमन्त्री जयन्त मुखिया, रक्षामन्त्री कुमार स्वामी और उद्योगमन्त्री परमार भी मौजूद थे।

तले हुये मसालेदार काजुओं व पनीर के साथ विदेशी शराब की चुस्कियां भी चल रही थीं। दो बला की हसीन व कम वस्त्रों वाली युवतियां सभी को ड्रिंक सर्व कर रही थीं।

"दावत के लिये बहुत-बहुत शुक्रिया...देवेन्द्र सिंह जी...!" कुमार स्वामी बोला, "अब मतलब की बातें भी हो जानी चाहिये। आपने फोन पर कहा था कि फायदे की बात करनी है। क्या बात है वो?"

देवेन्द्र सिंह ने सिगरेट सुलगा ली तथा कश लगाते हुये बोला—"पहले ये बतलाइये कि कमाई-धमाई कैसी चल रही है? स्विस बैंक में कितना पैसा पहुंचा दिया है?"

"एक फूटी कौड़ी भी नहीं...!" जयन्त मुखिया बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, "खाक कमाई हो रही है। केशव पण्डित प्रधानमन्त्री बन गया। वो ना तो खा रहा है, ना ही खाने दे रहा है।"

"आप तो रेलमन्त्री हैं अंकल।" वासुदेव सिंह वाघ किस्म की मुस्कान के साथ बोला, "रेलमन्त्री तो बेहिसाब कमाई कर सकता है। पुरानी ट्रेनों, मालगाड़ियों को कन्डम डिक्लेयर करके नई ट्रेनें और मालगाड़ियां बनवाइये। नई लाइन बिछवाइये, नये पुल बनवाइये। जहां सिंगल लाइन है, वहां पर डबल लाइन डलवाइये। जहां पर रेलवे नहीं है, वहां पर भी पहुंचवाइये। बड़े शहरों में मैट्रो ट्रेन, लोकल ट्रेनें चलवाइये। वाह-वाही भी लूटिये और मोटा कमीशन भी खाइये। आपकी भी दसों उंगलियां घी में और सिर कढ़ाही में होना चाहिये स्वामी अंकल जी। तीनों सेनाओं के लिये देशभर से पैसा इकट्ठा किया जा रहा हैं। नये सामान, हथियार, हेलीकॉप्टर, प्लेन, टैंक, पनडुब्बी, मिसाइलें

वगैरा खरीदी जा रही हैं। जो भी देश या कम्पनी ज्यादा कमीशन दे—उसी से डील करिये।"

"तुम शायद केशव पण्डित को ठीक से जानते नहीं हो।" जला-भुना-सा बोला कुमार स्वामी, "पक्का देशभक्त और ईमानदार है वो। अगर उसे जरा-सी भी भनक लग गई तो हमारी खाल खिंचवा लेगा। मन्त्रालय छीनकर, पार्टी से निकालकर जेल की हवा खिलवा देगा।"

"वो कुछ भी नहीं कर पायेगा!" देवेन्द्र सिंह अर्थपूर्ण मुस्कान व पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ बोला, "तुम लोगों का बाल भी बांका नहीं कर पायेगा।"

"ये तो चमत्कार जैसी ही बात होगी।" उद्योगमन्त्री मुकेश परमार बोला, "केशव पण्डित से पार पाना इतना ही कठिन है, जैसे किसी चींटी का माउन्ट एवरेस्ट पर चढ़ जाना।"

यूं मुस्कराया देवेन्द्र सिंह कि मानो मुकेश परमार की मासूमियत व नादानी पर तरस खा रहा हो—"तुम लोग राजनीति के नये-नये खिलाड़ी हो। राजनीति के दाव-पेंच नहीं जानते। इसीलिये केशव पण्डित से घबराये हुये हो। हमसे हाथ मिलाओ। फिर देखो कि कैसे चमत्कार होता है! तुम लोग दोनों हाथों से दौलत कमाओगे और केशव पण्डित चाहकर भी तुम लोगों का बाल बांका नहीं कर पायेगा।"

"क्या...क्या ऐसा कोई चक्कर चल सकता है?" मुकेश परमार उत्साहित भाव से बोला, "क्या ऐसा कोई करिश्मा हो सकता है?"

"क्यों नहीं हो सकता? लेकिन ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती। यहां पर हम भी हैं और तीसरे मोर्चा के नेता भी मौजूद हैं—जिनका हमारे साथ गुप्त समझौता हो चुका है। मिल-जुलकर खाना होगा। एक-दूसरे की पीठ खुजलाकर ही खुजली मिटाई जा सकती है। हमारे साथ मिल जाओ। हम सबका एक हो जाना फायदेमन्द होगा। फिर ये हमारी गारन्टी है कि केशव पण्डित या वो उसका चमचा सुन्दर लाल तुम लोगों का बाल भी बांका नहीं कर पायेगा। उन दोनों को...खास करके केशव पण्डित को मजबूरी के मजबूत जाल में ना बांध दिया

तो अपना नाम भी देवेन्द्र सिंह नहीं।"

"कैसे...?" कुमार स्वामी की आंखें सिकुड़ चलीं और पेशानी पर बल पड़ते चले गये, "ये सब कैसे हो पायेगा? हम लोग आपके साथ हैं। आप जो भी कहेंगे वो ही करेंगे। अब बतलाइये कि ये सब कैसे हो पायेगा?"

देवेन्द्र सिंह बतलाने लगा।

कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया व मुकेश परमार के चेहरे यूं खिलने लगे, जैसे धूप निकलने पर सूरजमुखी के फूल खिल पड़ते हैं।

आंखें उन चिरागों की तरह ही चमकने लगीं, जिनमें बातियों के बुझने से पहले ही तेल भर दिया गया हो।

❑❑❑
❑❑❑

केशव के आह्वान का समूचे देश पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। सेना, अर्धसैनिक बलों व पुलिस के लिये हर कोई दिल खोलकर रकम दे रहा था।

प्रत्येक शहरों, कस्बों में रक्षा मन्त्रालय के कलेक्शन काउन्टर या बूथ बनाये गये थे, जहां पर लोग पहुंचकर रकम देकर रसीद ले रहे थे।

कई सामाजिक संगठन, स्कूल-कॉलेज के स्टूडेन्टस् प्रतिष्ठानों, घरों में जाकर कलेक्शन कर रहे थे और जमा कराके रसीद हासिल कर रहे थे।

हैरानी वाली बात तो ये थे कि गरीब व मजदूरों के साथ भिखारी तक सहयोग दे रहे थे।

बहुत मोटी रकम इकट्ठा हो रही थी।

इसी बीच केशव ने सभी सेनाओं, अर्धसैनिक बलों, पुलिस, सुरक्षा से जुड़े तमाम जवानों, अधिकारियों, खुफिया विभाग वालों की तनख्वाह तीन गुणा कर दी।

सभी किसानों के कर्जे माफ कर दिये।

इस बात की व्यवस्था कर दी कि तमाम बेरोजगारों को नौकरी या बिजनेस के लिये लोन मिलने तक दो हजार रुपये महीना मिलते रहें। साठ साल से ज्यादा उम्र वाले बेरोजगारों

व निराश्रितों को भी दो हजार रुपये महीना मिलने थे।

ये ऐलान भी कर दिया कि अगर कोई भूख से मरता है, या गरीबी से तंग आकर आत्महत्या करता है तो इसके लिये डी० एम०, एस० डी० एम०, महापौर, चेयरमैन व ग्राम प्रधान जिम्मेदार होंगे तथा उन्हें सजा मिलेगी।

प्रत्येक जिले में अनाथ आश्रम, विधवा व कुष्ठ आश्रम बनाने के हुक्म जारी कर दिये गये।

अनाज, चावल, चीनी, चाय, नमक, म ते, दवाइयां, गरीबों व मध्यम वर्ग के इस्तेमाल में आने वाली वस्तुओं को बहुत सस्ता कर दिया गया, जिनमें किसानों के लिये बीज व खाद भी थी, मिट्टी का तेल व गैस सिलेन्डर भी थे—इस सब्सिडी की भरपाई के लिये हवाई यात्रा, पैट्रोल, शराब, सिगरेट, कारें, फ्रिज, ए०सी०, होटल का खाना, बार, डांस बार...यानि वो तमाम चीजें महंगी कर दीं, जो कि अमीरों के इस्तेमाल की थीं।

इसी के साथ केशव ने सभी अदालतों, जजों, सरकारी वकीलों, पुलिस वगैरा तक ये निर्देश भिजवा दिये कि तीन महीने के भीतर सभी पेन्डिंग में पड़े केसों या मुकदमों का फैसला सुनाया जाये और नये जुर्मों या विवादों का फैसला भी तीन महीने के भीतर-भीतर करना अनिवार्य होगा।

केशव ने ये भी ऐलान कर दिया कि जल्दी ही संसद में ये कानून पास कराया जायेगा कि बलात्कारियों को फांसी की ही सजा मिलेगी और बलात्कारियों को ये सजा दो महीने के भीतर-भीतर ही देना अनिवार्य होगा।

इसी के साथ केशव ने देश के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों, इंजीनियरों को बुलाकर कहा कि वो ऐसे उपाय करें कि बाढ़ के पानी को बड़ी झीलों में स्टोर किया जा सके और वहां पर डैम या बांध बनाकर बिजली का निर्माण किया जा सके। ये भी कहा कि वो लोग देश हित में नये-नये अविष्कार करें—जिसके लिये उन्हें धन-दौलत व हर प्रकार की सुविधायें व साधन मुहैया कराये जायेंगे।

कुल मिलाकर देशवासियों को लग रहा था कि केशव

अगर ऐसे ही काम करता रहा तो जल्दी ही देश का काया-कल्प हो जायेगा और भारत देश महाशक्ति बनकर ही रहेगा।

□□□

□□□

केशव पी० एम० ऑफिस में ही था। वहां पर सुन्दर लाल व उदयराज भी आ पहुंचे।

दोनों के चेहरे देखकर केशव को महसूस हो गया कि जरूर कोई गम्भीर मसला है।

"आइये, सुन्दर लाल जी...ए० सी० पी० साहब! पधारिये...बैठिये।"

उदयराज ने बैसाखियों को बगल से हटाकर कुर्सी के सहारे खड़ी कर दी और उसी कुर्सी पर बैठ गया। सुन्दर लाल भी उसकी बगलवाली कुर्सी पर बैठ गया।

केशव ने चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली और कश लगाकर व नथुनों से धुआं उगलने पर बोला—"क्या बात है—आप दोनों ही गम्भीर मालूम पड़ रहे हैं? अवश्य ही कोई गम्भीर मसला है।"

उदयराज ने भी सिगरेट सुलगा ली, जबकि सुन्दर लाल दीर्घ श्वास छोड़कर बोला—"मसला वास्तव में ही गम्भीर है पण्डित जी! खुफिया विभाग से जो रिपोर्ट मिली है, उसने मुझे सांसत में डाल दिया। पहले मैं अध्यक्ष जी के पास गया और फिर इन्हें साथ लेकर आपके पास आया।"

"क्या रिपोर्ट है...खुफिया विभाग की?"

"हमारे बहुत से मन्त्री गड़बड़ी कर रहे हैं।"

"क्या?" चौंककर बोला केशव—"ये...ये आप क्या कह रहे हैं? क्या गड़बड़ी कर रहे हैं वो लोग? कौन-कौन लोग हैं?"

सुन्दर लाल ने पहले पनामा ब्रान्ड वाली नॉन-फिल्टर सिगरेट सुलगाई और फिर जवाब दिया—

"गड़बड़ी करने वालों में रक्षामन्त्री कुमार स्वामी, रेल-मन्त्री जयन्त मुखिया, उद्योगमन्त्री मुकेश परमार, शहरी विकास, संस्कृति, लघु उद्योग, ग्रामीण एवं कृषि मन्त्री बनारसी चौबे और जहाज रानी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मन्त्री शंकर चौधरी

शामिल हैं। मानव विकास संसाधन मन्त्री कालू महेन्द्रा, कपड़ा मन्त्री सुरेन्द्र बनर्जी, रसायन एवं खाद, इस्पात मन्त्री जयवंश सिन्हा, वाणिज्य एवं उद्योगमन्त्री बलवन्त काकड़ा, कोयला मन्त्री रमेश पंवार भी जमकर धांधली कर रहे हैं। घोटाले कर रहे हैं। कमीशन खा रहे हैं। कमीशन के चक्कर में घटिया सामान खरीदा जा रहा है, निर्माण कार्यों में भी घटिया सामान लगाया जा रहा है।"

"इतना सब कुछ चल रहा है!" हैरानी में पड़ा केशव बोला, "और हमें भनक भी ना लगने पाई?"

"सभी लोगों पर भरोसा था ना कि वो ईमानदार हैं और देशहित में काम करेंगे...।" उदयराज सिगरेट को ऐश ट्रे में ठूंसकर कड़वाहटभरे लहजे में बोला, "लेकिन कम्बख्तों ने विश्वासघात किया! पार्टी के साथ ही नहीं, देश और देश की जनता के साथ भी।"

केशव ने मेज पर जोर से हाथ मारा और मानो अंगारों पर लोटते हुये बोला, "मैंने सभी को वार्निंग दी थी कि अगर किसी ने जरा-सी भी गड़बड़ी की तो उसकी खैर नहीं होगी। उसको ना सिर्फ मन्त्री पद से हटा दिया जायेगा, बल्कि पार्टी से भी निष्कासित कर दिया जायेगा। फिर भी वो लोग नहीं माने। उनहोंने गड़बड़ी की।"

"इसके लिये कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया ज्यादा जिम्मेदार हैं पण्डित जी। खास करके कुमार स्वामी। वो ही इन भ्रष्ट मन्त्रियों का नेता है।"

"ये...आप क्या कह रहे हैं सुन्दर लाल जी?"

"खुफिया विभाग की रिपोर्ट यही कहती है पण्डित जी। इस धांधली की शुरूआत कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया ने ही की। उन्होंने बाकी मन्त्रियों को भी अपने साथ मिला लिया। सभी से कहा गया कि वो जमकर कमाई करें। कुछ मन्त्रालय ऐसे भी हैं, जिनमें चाहकर भी कमाई ना के बराबर ही होती है। उन मन्त्रियों ने ये शिकायत रखी कि उनके हाथ-पल्ले तो कुछ पड़ेगा ही नहीं। तब ये तय हुआ कि प्रत्येक मन्त्रालय की कमाई को इकट्ठा करने पर सभी मन्त्रियों में

बराबर-बराबर बांट दिया जायेगा—लेकिन कुमार स्वामी और जयन्त मुखिया अपनी कमाई में से किसी को हिस्सा नहीं देंगे। कुमार स्वामी सेनाओं के लिये जो प्लेन, हेलीकॉप्टर, जहाज, पनडुब्बी, हथियार वगैरा खरीद रहा है, उसमें अपना कमीशन तय किया है। जयन्त मुखिया ने भी नई ट्रेनों, मालगाड़ियों, रेलवे लाइन और पुलों के ठेकों में कमीशन तय किया है। बाकी मन्त्री भी ऐसा कर रहे हैं। कुल मिलाकर हमारे तमाम मन्त्री भ्रष्ट हो गये हैं। भेड़िये बनकर भारत मां का गोश्त नोच रहे हैं। कुछ कीजिये पण्डित जी। नहीं तो देश तबाह हो जायेगा। पार्टी बदनाम हो जायेगी। जो बुरे काम देवेन्द्र सिंह की सरकार में हो रहे थे, वो ही हमारी सरकार में हो र हैं।"

सुन्दर लाल की आंखें भीग उठीं।

चेहरा यूं बनने-बिगड़ने लगा कि मानो वह रुलाई रोकने की चेष्टा कर रहा हो।

केशव की समस्त नसों में भरा खून मानों तेजाब की मानिन्द ही खौलने लगा।

इलैक्ट्रिक एलीमेंट की मानिन्द ही चेहरा सुर्ख होकर दहकने लगा।

कनपटियों व चौड़ी पेशानी की नसें केंचुओं की ही मानिन्द उभरकर छटपटाने-सी लगीं।

आंखों की कटोरियों में लावा-सा दहकने लगा।

मुट्ठियां इस कदर भिंच चलीं कि उनमें पत्थर के टुकड़े होते तो उनका आटा बन गया होता।

फिर केशव ने अपने सेक्रेटरी को बुलाकर कहा कि तमाम मन्त्री मन्डल को तुरन्त ही इमरजेंसी मीटिंग के लिये तलब किया जाये।

तभी उदयराज का मोबाइल फोन गुनगुनाने लगा।

उसने अपने सेक्रेटरी से बात की तो गम्भीर होता चला गया।

"क्या हुआ अध्यक्ष जी?" पूछा सुन्दर लाल ने।

"तमाम मन्त्री और कई सांसदों के साथ कुमार स्वामी

मेरे घर पर पहुंचा है और मुझसे कोई जरूरी बात करना चाहता है।"

केशव सोच में पड़ गया और फिर बोला—"आप जाइये ए० सी० पी० साहब! उन लोगों से मिलिये। देखिये कि क्या मामला है!"

❑❑❑
❑❑❑

"ये क्या गड़बड़ी मचाई हुई है तुम लोगों ने?" बैसाखियों के सहारे बंगले के हॉल में दाखिल हुआ उदयराज और सांसदों व मन्त्रियों के साथ बैठे कुमार स्वामी व जयन्त मुखिया पर प्रेशर कुकर की मानिन्द ही फट पड़ा—"खुफिया विभाग के जरिये सारी रिपोर्ट मिल चुकी है...तुम लोगों की तमाम कारगुजारियों का भांडा फूट चुका है। तुम दोनों तो घोटाले और कमीशनखोरी कर ही रहे हो—बाकी मन्त्रियों को भी भ्रष्टाचार की राह पर चला दिया है। क्या जनता ने हमारी पार्टी को इसीलिये सत्ता सौंपी थी? तुम लोग ना तो पार्टी की छवि का ख्याल कर रहे हो, ना ही देश का। देवेन्द्र सिंह और उसके मन्त्रियों ने तो बाद में धलियां शुरू की थीं—लेकिन तुम लोग तो सरकार के बनते चालू हो गये। इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा तुम लोगों को। तुम लोगों से ना सिर्फ मन्त्री पद छी जायेंगे, बल्कि पार्टी से भी निकाल दिया जायेगा। तुम लोगों के खिलाफ जांच कराई जायेगी और दोष साबित होते ही जेल की हवा खिलवाई जायेगी।"

कुछ मन्त्रियों व सांसदों के चेहरे फक्क पड़ गये। पसीने छूट चले—उनकी जीभ होठों की खुश्की मिटाने की चेष्टा करने लगी।

लेकिन!

कुमार स्वामी व जयन्त मुखिया के सिरों पर जूं तक नहीं रेंगी।

जरा-सा भी तो फर्क नहीं पड़ा उन पर!

मुकेश परमार समेत अन्य कई मन्त्रियों के होठों पर भी मुस्कान नृत्य कर रही थी।

उदयराज की पेशानी पर चिन्ता की लकीरें उभर आईं और आंखों में आश्चर्य के साथ कौतूहलता के भाव भी परिलक्षित होने लगे—

"क्या बात है कुमार स्वामी...!" आखिर उसने पूछ ही लिया—"तुम्हारी और इन लोगों की इस बेशर्मीभरी मुस्कराहट का मतलब क्या है?"

जवाब देने से पहले कुमार स्वामी ने एक सिगरेट सुलगाई। कश लगाकर और धुएं को फेफड़ों के पिंजरे में रोके हुये उठकर बैसाखियों के सहारे खड़े उदयराज के करीब पहुंचा। स्याह होंठों को गोल कर धुएं का गोला उदयराज के चेहरे पर दागा। उदयराज के चेहरे पर क्रोध और आंखों में हैरानी के भाव दिखलाई पड़े।

"अध्यक्ष महोदय...!" उदयराज की आंखों में झांकते हुये किंग कोबरा की फुंफकार-सी आवाज में बोला कुमार स्वामी, "जिस तरह सरदारों के मोहल्ले में नाई की दुकान नहीं होती, वेश्याओं के मौहल्ले में स्कूल नहीं होता, कब्रिस्तान में फुलवारी नहीं होती और ब्रह्मचारियों के आश्रम में महिला नहीं होती—उसी तरह राजनीति में ईमानदारी भी नहीं होती। हम लोग उल्लू के पट्ठे हैं क्या जो इलेक्शन जीतने के लिये और उससे पहले करोड़ों रुपये खर्च किये हैं? आज की तारीख में राजनीति मुफ्त में नहीं होती। इलेक्शन में करोड़ों रुपये लगाने पड़ते हैं। हराम का माल तो है नहीं कि लगा दिया और वापिस पाने का ख्याल भी नहीं करें। जिन लोगों को मन्त्री पद भी नहीं मिला, वो बेचारे क्या करेंगे? खर्चा निकलाने को और कमाई करने के लिये सांसद निधि में कमीशन खायेंगे और लोगों का काम कराने को उनसे मोटी रकम लेंगे।

तुम्हारे उस सत्यवादी, ईमानदार, परोपकारी, देशभक्त केशव पण्डित ने सभी को बुलाकर वार्निंग दे दी कि हर किसी को ईमानदारी से काम करना है और जरा-सी भी गड़बड़ी की तो कान पकड़कर पार्टी से निकाल देगा—जेल की हवा खिलवा देगा। लेकिन कोई उससे पूछे कि क्या हम लोगों ने अपने घर में आग लगाकर हाथ सेंकने को पोलटिक्स ज्वाइन की थी?

हमारे घरों में दौलत का पेड़ लगा है क्या? पार्टी ने तो इलेक्शन में खर्चे के लिये चवन्नी तक भी नहीं दी थी। जिन्दगीभर भागा-दौड़ी की, मेहनत की...कुत्ते बनकर गली-गली सूंघते फिरे—क्या सिर्फ देश सेवा के लिये ही? नहीं...बिल्कुल नहीं! राजनीति भी बिजनेस है। कोई दस रुपये लगाता है तो बीस रुपये कमाने की कोशिश करता।"

"चुप! चुप!" चीख उठा उदयराज। क्रोधातिरेक यूं ही कांपने लगा कि जैसे कोई खाली बस कच्चे रास्ते पर फुल स्पीड में दौड़ाई जा रही हो। चीख-चीखकर बोला वह—"शर्म नहीं आती ऐसी नीच और गिरी हुई बातें करते हुये? हिन्दुस्तान पार्टी ने हमेशा ही ईमानदार और देशभक्त नेता, मन्त्री और प्रधान-मन्त्री दिये। दुःखी, परेशान जनता ने उम्मीदें लगाकर हमें सत्ता सौंपी। हमें जनता की सेवा करनी है, देश की सेवा करनी है। देश को तरक्की की राह पर ले जाना है। ईमानदारी और पारदर्शिता से काम करने हैं। जो-जो भी भ्रष्टाचारी हैं, धांधलियां कर रहे हैं, उन्हें ना सिर्फ मन्त्री पद से हटाया जायेगा, पार्टी से भी दूध में गिरी मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिया जायेगा। तुम सबके खिलाफ सख्त कार्रवाई हो रही है। इसीलिये पण्डित जी ने तुम सबको बुलाया है।"

"बेशक...हमें मन्त्री पद से हटाया जा सकता है और पार्टी से भी निकाला जा सकता है।" कुमार स्वामी की बजाय जयन्त मुखिया मगरमच्छ की खाल-सी खुश्क व खुरदुरी आवाज में बोला, "लेकिन हमारी संसद सदस्यता समाप्त नहीं की जा सकती। हमसे हमारी सांसदी नहीं छीनी जा सकती। अगर हमें पार्टी से निकाला जायेगा तो ये सरकार भी जायेगी। ये पार्टी सत्ता में नहीं रहेगी।"

"क्यों नहीं रहेगी? हमारे पास दूसरे सांसद हैं। उन्हें मन्त्री बनवाकर नई सरकार का गठन कर दिया।"

"गलतफहमी में जी रहे हो अध्यक्ष जी।" कुमार स्वामी सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये बोला, "जरा आंखें खोलकर ये देखिये कि हम लोगों की तादाद यानि संख्या कितनी है? हम पूरे डेढ़ सौ हैं...डेढ़ सौ। इलेक्शन में लगाई रकम को ब्याज

समेत हर कोई वापिस पाना चाहेगा। सो दूसरे मन्त्री या सांसद भी हमारे साथ आ सकते हैं। क्योंकि इस बात का अहसास तो हर किसी को हो चुका है कि केशव पण्डित किसी को भी कमाई करने का मौका नहीं देने वाला। माना कि दूसरे लोग हमारे साथ नहीं आते। तो भी आपके या पार्टी के पास कितने सांसद रह जायेंगे? सिर्फ दो सौ। जबकि सरकार बनाने के लिये पौने तीन सौ से ज्यादा चाहिये।"

"और जनाब को पिचहतर सांसद ढूंढे से भी मिलने वाले नहीं हैं।" उद्योग मन्त्री मुकेश परमार मानो शब्दों को कीलों की मानिन्द ही ठोंक-ठोंककर ही बोल रहा था, "क्योंकि निर्दलीय सांसदों की संख्या सिर्फ पैंतालीस है–जिन्हें लाने से आपकी सरकार बची नहीं रहेगी। बाकी सांसद तीसरा मोर्चा के हैं और इन्डियन पब्लिक पार्टी यानि देवेन्द्र सिंह के हैं।"

"और वो हमारे साथ हैं।"

"क...क्या?" उदयराज यूं चिहुंका कि मानो जयन्त मुखिया ने बम फोड़ दिया हो।

"हां, मुखिया ने ठीक ही कहा है...!" कुमार स्वामी धूर्त किस्म की मुस्कान के साथ ही बोला–"कच्चा खेल खेलने वाले अनाड़ी नहीं हैं हम! पक्का खेल खेलने वाले खिलाड़ी हैं हम! हमारी देवेन्द्र सिंह और तीसरा मोर्चा के नेताओं से सैटिंग हो चुकी है। हम लोगों को नई पार्टी की मान्यता मिल जायेगी। फिर हम देवेन्द्र सिंह और तीसरा मोर्चा वालों के साथ गठ-बन्धन कर लेंगे और सरकार बनाने का दावा कर देंगे। श्रीमान राष्ट्रपति महोदय को हमें सरकार बनाने का न्योता देना ही होगा–क्योंकि बहुमत हमारे साथ होगा। हमारी सरकार बन जायेगी। प्रधानमन्त्री बनेगा कुमार स्वामी।" वह अपने सीने को तर्जनी उंगली से ठोककर बोला, "कुमार स्वामी...यानि कि मैं। आपकी पार्टी आ जायेगी विपक्ष में और चुपचाप बैठी तमाशा देखेगी। सो आप अभी जाइये और ईमानदारी के उस पुतले केशव पण्डित से मिलिये। उससे कहिये कि अगर प्रधानमन्त्री बने रहना है तो धृतराष्ट्र बन जाये। हम लोगों की तरफ से आंखें मूंद ले और हमें हमारे काम करने दे। या फिर वो प्रधानमन्त्री की कुर्सी खाली करने को तैयार हो जाये। उसकी जगह कुमार स्वामी प्रधानमन्त्री बनेगा। हम लोग उससे मिलने नहीं जायेंगे। अगर उसे प्रधानमन्त्री की कुर्सी दचाकर रखी है तो स्वयं चलकर हमारे पास...मेरे घर पर आयेगा। हमारी शर्तों को कबूलना होगा उसको और इसी प्राइम मिनिस्टर के रूप में ही काम करना होगा। उसका सिर्फ नाम होगा–जबकि शासन हम चलायेंगे...हम। जाकर केशव पण्डित से बात करिये और फिर हमें बतलाइये कि उसका जवाब क्या है?"

सकते की सी अवस्था में रह गया उदयराज! उसकी दशा उस दूल्हे सरीखी हो चली, जो कि धूमधाम के साथ बारात लेकर ससुराल पहुंचा हो लेकिन दुल्हन ने बोल दिया हो कि वो उसके साथ नहीं, बल्कि अपने प्रेमी के साथ शादी करेगी, वो अपनी बारात वापिस ले जाये।



अमावस की अन्धेरी रात में जैसा सन्नाटा किसी बस्ती से बाहर वाले कब्रिस्तान में होता है–वैसा ही सन्नाटा था...प्रधानमन्त्री कार्यालय में।

लुटे-पिटे से उदयराज ने तमाम बातें बतलाईं और केशव के साथ सुन्दर लाल ने भी ध्यानपूर्वक सुनी–फिर दोनों गम्भीर हो गये–गहन चिन्तन में खो गये।

मामला गम्भीर...अति गम्भीर था।

सच बात तो ये है कि कुमार स्वामी और उसकी टीम ने दिमाग के जादूगर के दिमाग में भी हलचल-सी, खलबली-सी मचा दी थी।

आखिरकार सुन्दर लाल ने फेफड़ों में फंसी सांस को नथुनों के रास्ते बाहर फेंका और कसमसाते हुये बोला–"सोचा नहीं था कि मामला इतना गम्भीर हो जायेगा। कुमार स्वामी और बाकी लोगों से इतनी नीचता की उम्मीद कतई नहीं थी। कमीनों ने पहले देवेन्द्र सिंह और तीसरा मोर्चा वालों के साथ सैटिंग की और फिर धांधलियां शुरू कीं। उन कुत्तों-कमीनों ने पहले अपने बचाव के रास्ते ढूंढे, फिर गड़बड़ियां कीं। उनकी तादाद

डेढ़ सौ हैं। अगर उन्हें पार्टी से निकाला जाता है तो अपनी सरकार अल्पमत में आ जायेगी। जबकि वो लोग देवेन्द्र सिंह और तीसरा मोर्चा के नेताओं के साथ मिलकर सरकार बना सकते हैं। अगर उनकी सरकार बन गई तो...देश को बेचकर खा जायेंगे।"

"अगर नहीं निकाला तो वो गड़बड़ियां करेंगे।" उदयराज हथेली पर घूंसा मारकर बोला, "फिर तो वो शेर हो जायेंगे। खुलकर घोटाले करेंगे और पार्टी को कलंकित करके रख देंगे। बहुत कठिन समस्या है। मेरा दिमाग तो काम नहीं कर रहा है। आप ही सोचिये पण्डित जी। अब तो आपको ही निर्णय लेना है कि क्या किया जाये।"

"मेरा दिमाग भी काम नहीं कर रहा है।" केशव कुर्सी से उठकर थकी-थकी-सी आवाज में बोला, "घर जाना चाहूंगा। थोड़ा आराम करूंगा, फिर सोचूंगा कि...क्या करना है।"

❑❑❑

❑❑❑

"नमस्कार...सलाम...हाजी साहब...!"

"सलाम! कैसे हो काला मदारी?"

"ठीक हूं। आपकी मेहरबानी।"

"हां...तुम ठीक क्यों ना होंगे...तुम्हारी मौज में भला क्या कमी है? ये तो हम ही हैं, जो फिक्र कर-करके घुले जा रहे हैं।"

"ऐसी बात ना कीजिये हाजी साहब!" हाथ में वाकी-टाकी के साइज का ट्रांसमीटर लिये हुये काला मदारी बोला—"क्या खाकसार से कोई खता हो गई है?"

"जान-बूझकर अन्जान मत बनो काला मदारी!" आई० एस० आई० मुखिया जमाल खान की सुलगती-सी आवाज उभरी—"तुम्हें केशव पण्डित को उड़ाने का काम सौंपा था—लेकिन वो अभी तक जिन्दा है। वो प्रधानमन्त्री बनकर हिन्दुस्तान को तरक्की की राह पर ले जा रहा है—हिन्दुस्तान को मजबूत बनाये जा रहा है।"

"माफी चाहूंगा हाजी साहब! काले खां के पास सिर्फ एक ही मानव-बम था। उसने केशव पण्डित को आर० डी० एक्स० बम से उड़ाने की कोशिश की थी। लेकिन आप तो जानते ही हैं कि केशव पण्डित किस आफत का नाम है। कम्बख्त बच गया। मानव-बम की मदद को गये आतंकियों का भी काम तमाम कर दिया उसने। बम ब्लास्ट होने से पहले ही उसने मानव-बम से सारी जानकारी ले ली थी और उसके साथियों के अते-पते भी ले लिये थे। ये तो बढ़िया बात थी कि मानव-बम को मेरे बारे में कोई जानकारी नहीं थी। काले खां का भी ठिकाना नहीं जानता था वो। बम-ब्लास्ट होने से पहले ही केशव कार से बाहर कूद गया था। फिर उसके बेटे आशीर्वाद, चेले राजन और करतार सिंह ने होटल में ठहरे आतंकियों का बैंड बजा दिया।"

"उसके बाद तो कोशिश कर सकते थे तुम काला...म...!"

"अफसोस की बात है कि अभी काले खां के पास कोई मानव-बम या आत्मघाती नहीं है। केशव पण्डित को आतंकी नहीं मार सकते। वो अकेला ही पूरी फोर्स के बराबर है—ऊपर से प्रधानमन्त्री बन गया वो।"

"यानि अब कुछ नहीं हो सकता।" दूसरी तरफ से जमाल खान जला-भुना-सा...व्यंगभरे लहजे में बोला—"हमें सब्र करके चुपचाप बैठ जाना चाहिये। अपनी शिकस्त कबूल कर लेनी चाहिये। वो हिन्दुस्तान को मजबूत कर देगा और फिर एक दिन हमारे मुल्क पर हमला भी बोल देगा।"

"ऐसा कुछ भी नहीं होगा हाजी साहब! आप जैसा समझ रहे हैं, यहां वैसा कुछ नहीं हो रहा है। ऐसा नहीं कि मैं यहां पर हाथ-पर-हाथ धरे बैठा था। अपने दिमाग को सोने नहीं दिया मैंने—उसको कसरत कराता रहा! केशव पण्डित को मारना तो पॉसिबल नहीं था—इसीलिये मैंने दूसरा चक्कर चलाया। यूं समझिये कि केशव को फांस दिया है। उसकी दशा सांप-छछूंदर वाली हो गई है। अगर छछूंदर को निगले तो मर जायेगा और अगर उगलेगा तो अन्धा हो जायेगा। उसके एक तरफ खाई तो दूसरी तरफ कुआं है।"

"क्या मतलब? हमें तफसील में समझाओ।"

नीम अन्धेरे वाले कमरे में बैठा काला मदारी बतलाने लगा।

"यानि...यानि कुमार स्वामी के नेतृत्व में मन्त्रियों और सांसदों ने बगावत का झन्डा बुलन्द कर दिया है।" दूसरी तरफ से जमाल खान उत्साह से भरा हुआ बोला—"अगर उन्हें केशव पण्डित पार्टी से निकालता है तो वो लोग दूसरी पार्टियों के साथ मिलकर सरकार बना लेंगे। अगर उन्हें पार्टी से नहीं निकाला जाता है तो वो जमकर धांधली और लूटपाट करेंगे।"

"हां...हाजी साहब! अब या तो केशव पण्डित को उन सभी लोगों के खिलाफ कार्रवाई करके अपनी सरकार गिरानी होगी और प्रधानमन्त्री का पद छोड़ना पड़ेगा। या फिर सभी को धांधलियां करने की छूट देनी होगी। दोनों ही सूरतों में हिन्दुस्तान का नुकसान होना है। हिन्दुस्तान तरक्की करने की बजाय पिछड़ता चला जायेगा—कमजोर पड़ता चला जायेगा। इसका फायदा आपको—आपके मुल्क को होगा—हम जैसों को होगा। जब केशव के तमाम मन्त्री लूट-खसोट करेंगे तो वो देश की भलाई के लिये कुछ नहीं कर पायेगा। हकीकत तो ये है कि वो सिर्फ डमी प्राइम मिनिस्टर बनकर रह जायेगा और सरकार दूसरे लोग ही चलायेंगे। ये भी हो सकता है कि केशव ईमानदारी छोड़कर बेईमानी के रास्ते पर चल पड़े। वो ये सोचे कि जब बाकी लोग देश को दोनों हाथों से लूट रहे हैं तो फिर वो ही क्यों पीछे रहे।"

"नहीं, काला मदारी! हमें नहीं लगता कि केशव पण्डित ऐसा करेगा। वो पक्का वतन परस्त है। वो देश की खातिर जान लेने, जान देने वालों में से है। वो पी० एम० की कुर्सी छोड़ देगा।"

"तो भी हमें फायदा है हाजी साहब! देश की बागडोर लुटेरों के हाथों में होगी तो देश की क्या कन्डीशन होगी? हिन्दुस्तान रसातल की तरफ जायेगा। हिन्दुस्तान की कमजोरी का फायदा हम लोग उठायेंगे।"

"बिल्कुल...ज्यादा भी नहीं तो...कश्मीर को हिन्दुस्तान से अलग करने का हमारा सालों पुराना ख्वाब पूरा हो ही जायेगा।

तुम्हारी जानकारी ने हमारा खून बढ़ा दिया है काला मदारी। जनरल साहब भी सुनकर खुश हो जायेंगे। फिर भी तुम चौकस रहना। सारे मामले पर नजर रखना। कोई गड़बड़ी ना हो जाये। उसका नाम केशव पण्डित है। वो देश की भलाई के लिये कुछ भी कर सकता है।"

"वो कुछ भी नहीं कर पायेगा हाजी साहब! उसके सामने कुंओं और खाई वाले ही रास्ते हैं। तीसरा कोई रास्ता तो है ही नहीं। कुल मिलाकर अपने दोनों हाथों में लड्डू हैं। बस देखना ये है कि केशव पण्डित कौन-सा फैसला करता है। वो अपने सभी मन्त्रियों और सांसदों को कुछ भी करने की छूट देता है—या फिर उन लोगों को पार्टी से निकालकर अपनी सरकार और प्रधानमन्त्री पद की कुर्बानी देता है?"

❑❑❑
❑❑❑

"एक तरफ कुआं तो दूसरी तरफ खाई है सोफी...!" सोफिया के साथ बैठा चाय की चुस्कियां ले रहा था केशव। चेहरे के साथ-साथ आवाज में भी चिन्ता व छटपटाहट झलक रही थी—"मुझे प्रधानमन्त्री पद का कतई भी लालच नहीं है। मेरे लिये तो ये पद सिर पर लटकी दोधारी तलवार की तरह ही है। मैं उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई करूंगा तो वो अलग पार्टी बनाकर तीसरा मोर्चा और इण्डियन पब्लिक पार्टी के साथ मिलकर नई सरकार का गठन कर लेंगे। फिर उनके पास सत्ता की ताकत होगी। वो कमीने खुलकर मनमानी करेंगे—धांधलियां करेंगे। देश का बेड़ा गर्क हो जायेगा। दूसरी तरफ उन लोगों को पार्टी से निकाला नहीं जाता तो वो फिर भी घोटाले करेंगे। कमीशन खायेंगे। देश का नुकसान तो होगा ही—साथ ही पार्टी का भी सत्यानाश होगा। सरकार का हैड होने के नाते मुझ पर भी पाप चढ़ेगा। नहीं...मैं ऐसा नहीं कर सकता। उन लोगों के सामने झुक नहीं सकता—उनकी शर्तें कबूल नहीं कर सकता।"

"क्यों ना आशीर्वाद, राजन और करतार सिंह को बुलाकर इस बाबत मशविरा ले लिया जाये?"

"नहीं! उन्हें मुम्बई में रहने दो सोफी! आशीर्वाद के टेस्ट चल रहे हैं। राजन और करतार सिंह को कोर्ट के जरूरी काम निपटाने हैं। वैसे भी उनसे कोई काम की सलाह नहीं मिल सकती। रहा सवाल आशीर्वाद का, तो वो छूटते ही ये कहेगा कि सभी को एक लाइन में खड़ा करके गोलियों से उड़ा दिया जाये। या फिर स्वयं जाकर उन लोगों का तियां-पांचा कर देगा। जबकि ये समस्या का हल नहीं है। मुझे प्रधानमन्त्री पद की गरिमा को भी बरकरार रखना है। कानून को हाथ में नहीं ले सकता मैं। प्रधानमन्त्री पद की शपथ लेते वक्त मन में बस ये ही अरमान थे कि हिन्दुस्तान के बिगड़ चुके सिस्टम को बदल दूंगा। भ्रष्टाचार और जुर्म का नामोनिशान जड़ से मिटाकर 'राम-राज्य' की स्थापना कर दूंगा। लेकिन जल्दी ही इस बात का अहसास हो गया कि मैं चाहकर भी, लाख कोशिशें करके भी कुछ अच्छा काम नहीं कर सकूंगा। क्योंकि तालाब की तमाम मछलियां गन्दी हैं। बेटे ही मां को नोच-नोचकर खा रहे हैं। मैं सिर्फ इतना ही कर सकता हूं कि राष्ट्रपति महोदय के पास जाकर अपना त्याग-पत्र दे दूं और चुपचाप अपने घर को लौट जाऊं।"

सोफिया ने चाय की घूंट भरी और केशव की झील-सी नीली आंखों में झांकते हुये बोली—"क्या होगा इस्तीफा देने से? तुम्हारी जगह दूसरा कोई प्रधानमन्त्री बन जायेगा, जो दावे और वादे तो बड़े-बड़े करेगा, लेकिन देश की बिगड़ती हालत को सुधारने के लिये कुछ भी नहीं करेगा। करना चाहेगा भी तो देश के बाकी कर्णधार करने नहीं देंगे, जैसे तुम्हें नहीं करने दे रहे हैं। तुम्हें इस्तीफा नहीं देना है केशव—तुम्हें तो हिन्दुस्तान का काया-कल्प करना है। एक नये हिन्दुस्तान की नींव रखनी है, जिसमें जुर्म के कंस और भ्रष्टाचार के रावण नहीं होंगे। उस हिन्दुस्तान में शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पीयेंगे।"

"ले...लेकिन ये कैसे मुमकिन है सोफिया? मैंने ऐसी कोई चेष्टा की तो मुझे प्रधानमन्त्री की कुर्सी से उठाकर फेंक दिया जायेगा।"

"प्रधानमन्त्री तो बेचारा उस बकरे की तरह ही होता है,

जो कि खूंखार भेड़ियों से घिरा रहता है। वो मर्जी से ईमानदारी की घास भी नहीं खा सकता। लेकिन तुम्हें हिन्दुस्तान को सुधारने के लिये प्रधानमन्त्री नहीं, कुछ और बनना होगा! तुम्हें तानाशाह बनना होगा केशव तानाशाह! तानाशाही के हन्टर से ही भेड़ियों को भेड़ बनाया जा सकता है और अपने कानून बनाकर सभी को उन पर चलने के लिये मजबूर किया जा सकता है। बहुत हो लिया प्रजातन्त्र का खेल। हिन्दुस्तान को एक तानाशाह की जरूरत है और वो तानाशाह तुम्हें बनना है केशव! हां, बन जाओ सजना तानाशाह...।"

❑❑❑

❑❑❑

"नमस्कार, काला मदारी जी...!" देवेन्द्र सिंह ट्रांसमीटर सैट पर पूरे उत्साह के साथ बोले जा रहा था। आपका हुक्म बजा दिया मैंने! आपने जैसा कहा, वैसा ही कर दिया मैंने। वाह...जवाब नहीं आपके दिमाग का। आप सिर्फ नाम के ही नहीं, बल्कि काम के भी मदारी हैं। क्या खूब प्लान बनाया आपने! दिमाग के जादूगर केशव पण्डित को ही अपने जाल में फांस लिया। उसके लिये बचाव का कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा! इधर कुआं तो उधर खाई। वो कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया और उनकी टीम को हटाता है तो फिर उसकी सरकार और प्रधानमन्त्री वाली कुर्सी भी जाती है। उन लोगों के गुट को अलग पार्टी का दर्जा मिल जायेगा। मैंने सभी निर्दलीय सांसदों के साथ भी सैटिंग कर ली है। हम सरकार बनाने का दावा कर देंगे और मेरी कोशिश होगी कि प्रधानमन्त्री की कुर्सी मुझी को मिले—या फिर ऐसा कोई बन्दा प्रधानमन्त्री बने, जो मेरी मुट्ठी में रहे। जिस तरह मैं आपको फायदा पहुंचाता रहा हूं—आगे भी पहुंचाता रहूंगा।"

"तुमने हमारे प्लान को बखूबी अन्जाम दिया है देवेन्द्र सिंह...!" ट्रांसमीटर से कौए के जैसी कर्कश आवाज निकली, "अफसोस इसी बात का रहा कि हमें सिर्फ छह महीने पहले ही तुम्हारे खिलाफ सबूत मिले थे और तुम्हें आई० एस० आई० का एजेन्ट बनाया गया। हम तुमसे ज्यादा फायदा नहीं उठा

पाये थे लेकिन अब तुमसे भरपूर फायदा उठाया जायेगा। बदले में तुम्हें खूब दौलत मिलेगी। अभी तक तो तुम सिर्फ आई० एस० आई० के दिल्ली के ही एरिया कमांडर हो। जल्दी ही तुम्हें एक-दो और स्टेट की जिम्मेदारी दी जायेगी। लेकिन एक बात तो बतलाओ तुम। अगर केशव पण्डित ने प्रधानमन्त्री पद के लालच में हालात से समझौता कर लिया तो?"

"अव्वल तो ऐसा होगा ही नहीं काला मदारी जी! अगर हुआ भी तो...कोई गम नहीं! बहुमत अपना रहेगा। केशव को वो ही करना पड़ेगा, जो हम चाहेंगे। उसे अपनी कठपुतली बना देंगे।"

"तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर! अगर केशव पण्डित किसी तरीके से हमारे साथ आ जाये तो फिर कहना ही क्या! हालांकि वो हमारा जानी दुश्मन रहा है। लेकिन उस जैसे जीनियस को आई० एस० आई० में लाकर हम उसके दिमाग का भरपूर फायदा उठायेंगे। कुल मिलाकर बाजी अपने हाथों में है। आगे जो भी होगा...हमारे फायदे का ही होगा। बस, अब तो देखना ये है कि केशव पण्डित क्या फैसला करता है?"

❑❑❑

❑❑❑

"क्या हुआ...?" सोफिया सकपकाकर बोली, "तुम मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो केशव? क्या तुम ये तो नहीं सोच रहे थे कि...कहीं मेरा दिमाग तो नहीं चल गया है?"

"तुमने बात तो कुछ ऐसी ही की है।" कहने पर केशव ने लाइटर की नीली लौ से चारमीनार मार्के वाली सिगरेट सुलगा ली।

"कुछ गलत तो कहा नहीं मैंने। तुमसे तानाशाह बनने को ही तो कहा है।"

"तानाशाही का मतलब समझती हो तुम?"

"हां, समझती हूं।"

"क्या समझती हो?"

"देश के तमाम सिस्टम तुम्हारे हाथों में आ जायेंगे। कोई राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति नहीं होगा! कोई केन्द्र या राज्य सरकार

नहीं होगी। कोई राज्यपाल भी नहीं होगा। देश का संविधान भी नहीं रहेगा। तुम्हारे अपने बनाये कानून होंगे और जनता को...सभी को उन कानूनों का पालन करना होगा। कोई जन प्रतिनिधि भी नहीं होगा। एक तरह से देश में इमरजेंसी लग जायेगी। वर्तमान कानून और अदालतों की कोई अहमियत नहीं रह जायेगी।"

"क्या ये दादागिरी जैसी बात नहीं होगी?"

मुस्कराई सोफिया, फिर [illegible] होकर बोली—"किसी व्यक्ति का कोई अंग सड़ जाता है, जिसकी वजह से उसके पूरे जिस्म में सेप्टिक फैल सकता है, उसकी मौत हो सकती है। वो अपने सड़े हुये अंग को दर्द की वजह से कटवाने को कतई भी राजी नहीं है। लेकिन डॉक्टर उसकी जान बचाने के लिये जबरदस्ती उसके सड़े हुये अंग को काट देता है—क्या ये डॉक्टर की दादागिरी है? स्टूडेन्ट पढ़ाई नहीं कर रहे हैं और ऐसे गलत काम कर रहे हैं कि उनका भविष्य चौपट हो जायेगा। अगर टीचर उनके साथ सख्ती से पेश आता है और जबरदस्ती उन्हें पढ़ाता है, पनिशमेंट देकर उन्हें सुधारता है तो क्या ये उस टीचर की दादागिरी है?"

"......" केशव ने जवाब ना दिया, सिर्फ सिगरेट में कश लगाता रहा और सोफिया की हरी आंखों में देखता रहा।

"तुम अपनी ईमानदारी, अपना जमीर बचाये रखने को इस्तीफा देकर मुम्बई लौट जाओगे। लेकिन इसके बाद क्या होगा? वो सभी भ्रष्टाचारी सरकार बना लेंगे और गिद्धों की तरह देश को नोच-नोचकर खा जायेंगे। पहले से जख्मी भारत माता के जिस्म पर पैनी चोंच और पंजे गड़ायेंगे। देश की जनता त्राहि माम-त्राहि माम कर उठेगी। गंगा-जमुना में पानी की बजाय तेजाब बहेगा। सूरज रोशनी की बजाय अन्धेरा फैलायेगा। चांद चांदनी की बजाय आग ही उगलेगा। मिट्टी से फसल नहीं, बारूद उगेगा। पेड़ों पर फल नहीं, बम लगेंगे। बाग में कोयल नहीं कूकेगी—बल्कि भेड़िये गुर्रायेंगे। हवाओं में जहर घुला होगा। मां की छाती से दूध की बजाय खून निकलेगा। दुल्हन की डोली नहीं, उसकी इज्जत की अर्थी उठेगी। चैन-ओ-अमन

ढूंढे से भी नहीं मिलेगा। गुलशन में गुण्डागर्दी, लूटपाट, हत्या, बलात्कार के कांटे ही उगेंगे। देश के आंगन में मौत हिंसा के घुंघरू बांधकर डांस करेगी और शैतान ढोलक बजायेंगे। इन्सानियत किसी कोने में दुबकी बैठी सुबक रही होगी। भूख, बदहाली, भ्रष्टाचार और महंगाई का ही साम्राज्य होगा। हिन्दुस्तान बारूद के ढेर पर बैठा नजर आयेगा।"

"बस...बस करो सोफी...!" केशव पसीने-पसीने होकर हांफता हुआ-सा बोला—"मैं इससे ज्यादा नहीं सुन सकता।"

"अभी तो सुन ही रहे हो—लेकिन आगे तो तुम्हें ये सब अपनी आंखों से देखना होगा। नरक की आग में झुलसना होगा। राम राज्य का स्वप्न देखने वाले पण्डित महोदय—तुम्हें रावणराज देखना पड़ेगा। इसके लिये काफी हद तक तुम ही जिम्मेदार होओगे। हालात को देखो और समझो। इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं है। देश को बचाना है तो तानाशाही अपनानी ही होगी। तभी देश के दुश्मनों, देशद्रोहियों, मुजरिमों, भ्रष्टाचारियों की नाक में नकेल डाल सकते हो। हिन्दुस्तान को तानाशाह चाहिये और तानाशाह तुम्हें बनना है मेरे सजना...तुम्हें। बन जाओ सजना तानाशाह...बन जाओ तानाशाह।"

केशव की मुट्ठियां भिंच चलीं।

चेहरा मगरमच्छ की खाल जैसा सख्त व खुरदुरा होकर भभकने लगा।

आंखों में खून के कतरे-से उतर आये।

फूलते-पिचकते नथुनों से फुंफकारें-सी फूटने लगीं।

पश्चिम में प्रजातन्त्र का सूरज छिपता जा रहा था और पूरब में तानाशाही का सूर्योदय हो रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

तीनों सेनाओं यानि थलसेना, वायुसेना व जलसेना के अध्यक्ष केशव से मिलने उसके पी० एम० ऑफिस आये।

किसी को भनक ना लगी कि केशव ने उन तीनों को किस मकसद से बुलाया है?

इसे आम मुलाकात ही समझा जा रहा था।

केशव के हाव-भाव देख तीनों सेना अध्यक्ष ये तो समझ गये कि मामला गम्भीर है, लेकिन ये नहीं मालूम था कि असल माजरा क्या है?

चाय-नाश्ते के पश्चात् केशव ने चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली और तीनों अध्यक्षों से सम्बोधित होकर बोला—"मेरे बारे में आप तीनों क्या राय रखते हैं? आपकी समझ में मैं देश की भलाई के लिये कुछ कर सकता हूं—या करना चाहूंगा कि नहीं?"

सवाल थोड़ा अटपटा-सा था, लेकिन थलसेना अध्यक्ष ने कहा—"आपके बारे में तो देश का बच्चा-बच्चा जानता है सर कि आप कितने बड़े देशभक्त हैं। आप देश के वास्ते बड़ी से बड़ी कुर्बानी दे सकते हैं। आपने देश के लिये बहुत से काम किये भी हैं। कई बार अपनी जान जोखिम में डाली भी है। सही बात तो ये है कि आप जैसे चन्द गिने-चुने लोगों की वजह से ही देश सही-सलामत है। आपके प्रधानमन्त्री बनने से सिर्फ मैं ही नहीं, बल्कि सभी मिलिट्री वाले और आम नागरिक भी खुश हैं।"

"बिल्कुल यही बात है सर!" वायुसेना अध्यक्ष भी तपाक से बोला, "देश को ना जाने कब से आप जैसे प्रधानमन्त्री की जरूरत थी। आपके पी० एम० बनने से तीनों सेनाओं का हौसला बढ़ा है।"

"बिल्कुल सर!" जलसेना अध्यक्ष भी बोला, "आप प्रधानमन्त्री बने रहेंगे तो देश का भाग्य बदल जायेगा।"

केशव ने इन्कार में सिर हिलाकर तीनों सेनापतियों को अचम्भे में डाल दिया। तीनों ने पहले एक-दूसरे की तरफ देखा, फिर सवालिया निगाहों से केशव को ही देखने लगे।

कुर्सी छोड़कर उठा केशव!

सिगरेट फूंकते हुये चहलकदमी-सी करने लगा, फिर कसमसाती-सी आवाज में बोला—"नहीं, मै प्रधानमन्त्री पद पर नहीं बना रह सकता।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं सर?"

"ऐसा...क्यों बोल रहे हैं सर?"

"कोई गड़बड़ी है क्या सर?"

"दरअसल बात ये है कि...!" केशव ने विस्तार पूर्वक बतलाया कि कैसे कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया अन्य मन्त्रियों के साथ मिलकर घोटाले कर रहे हैं और अपने खिलाफ कार्रवाई होने पर वो डेढ़ सौ सांसदों, देवेन्द्र सिंह व तीसरा मोर्चा के नेताओं व सांसदों के साथ मिलकर सरकार बनाने की तैयारी कर रहे हैं।

तीनों सेना अध्यक्ष भौचक्के-से रह गये।

चिन्तित व व्याकुल हो चले।

"मेरे एक तरफ कुआं तो दूसरी तरफ खाई है। अगर उन दुष्टों के खिलाफ कार्रवाई करता हूं तो वो सभी मिलकर सरकार बना लेंगे और देश को लूटकर खा जायेंगे। अगर उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करता हूं तो वो जमकर धांधलियां करेंगे—जिसे मैं कतई भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरे होते हुये कोई देश को, जनता को नुकसान पहुंचाये, ये मेरी बर्दाश्त से बाहर की बात है। लेकिन हालात ये हैं कि उन लोगों के पास बहुमत है, मेजोरिटी है। वो देश को नुकसान पहुंचाने से बाज नहीं आने वाले हैं।"

"ये...ये तो बहुत बुरा होगा सर...!" थलसेना अध्यक्ष चिन्तित भाव से बोला, "जब बाड़ ही खेत को खाने लगेगी, माली ही गुलशन उजाड़ने लगेंगे तो फिर तो अनर्थ ही होगा।"

"आपको कोई-ना-कोई उपाय तो करना होगा सर! उन दुष्टों पर लगाम लगानी ही होगी।"

"बिल्कुल...!" जलसेना अध्यक्ष भी वायुसेना अध्यक्ष के सुर-में-सुर मिलाकर बोला—"देश को तो बचाना ही होगा। हम लोग और आप देश के अहित को तो बर्दाश्त कर ही नहीं सकते हैं।"

केशव वापिस कुर्सी पर बैठा। सिगरेट के टोटे को ऐश-ट्रे में ठूंसा, फिर तीनों की आँखों में झांकते हुये और हरेक शब्द को मानो नाप-तौल कर बोला, "फिर तो एक ही रास्ता बचता है। जिसके लिये मुझे आप तीनों की...तीनों सेनाओं की मदद चाहिये।"

"आप बोलिये तो सही सर...!" वायुसेना अध्यक्ष तपाक से बोला—"हम आपके साथ हैं।"

"मुझे प्रजातन्त्र खत्म करके इमरजेंसी लगानी होगी और तानाशाह बनना होगा।"

तीनों सेना अध्यक्ष सन्नाटे-से में रह गये।

कुछ क्षणों के लिये मानो उनकी सांसें ही थम गई हों।

"क्या हुआ?" केशव जख्मी किस्म की मुस्कान के साथ बोला, "मेरी बात पसन्द नहीं आई? अगर नहीं आई तो...कोई बात नहीं। मैं अपने पद से इस्तीफा दे देता हूं और घर में बैठकर देश की दुर्दशा पर खून के आंसू बहाता हूं। या फिर उन सभी दुष्टों को जान से मारकर फांसी पर चढ़ जाता हूं। मेरी ये कुर्बानी शायद देश को बचा ले जाये।"

"नहीं...ऐसा कुछ भी नहीं होगा सर...!" वायुसेना अध्यक्ष मेज पर घूंसा मारकर बोला—"उन लोगों को मार देने से क्या होगा? उनकी जगह दूसरे लोग इलेक्शन लड़कर और जीतकर आयेंगे। वो सरकार बनायेंगे और घोटाले करेंगे, भ्रष्टाचार करेंगे। उन्हें कौन मारेगा? आप फांसी पर चढ़ जायेंगे तो मां भारती को आप-सा सच्चा सपूत कहां से मिलेगा? संकट की इस घड़ी में भारत माता और हिन्दुस्तान को आपकी सख्त जरूरत है।"

"बिल्कुल सर!" थलसेना अध्यक्ष बोला, "हमारी खामोशी का गलत मतलब ना निकालिये आप! इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। आप तानाशाह बन जाइये और देश को अपने तरीके से चलाइये।"

"हां, सर!"

"बिल्कुल! आप तानाशाह बन जाइये।"

"लेकिन इसके लिये आप लोगों को मेरा साथ देना...।"

"हम आपके साथ हैं...!" तीनों एक सुर में बोले।

"तीनों सेनाओं को मजबूत बनना होगा—कमर कसनी होगी! लोग भड़क सकते हैं। बेकाबू हो सकते हैं। वो आन्दोलन कर सकते हैं। गृह युद्ध की भी नौबत आ सकती है। जिस तरह किसी बच्चे की हड्डी टूट जाये तो वो डॉक्टर को हाथ

भी नहीं लगाने देता, लेकिन डॉक्टर को उसकी हड्डी जोड़ने के लिये उसके साथ सख्ती से पेश आना पड़ता है। इसी तरह देश की भलाई में सेनाओं को भी सख्त होना पड़ेगा। इसी के साथ देश के भीतर छिपे दुश्मनों से भी निपटना होगा और दुश्मन देशों के हमले से निपटने के लिये सरहदों पर भी मोर्चा लेना होगा।"

"हम देश की सीमाओं के साथ देश के भीतरी हालातों से भी निपट लेंगे सर।" थलसेना अध्यक्ष आत्मविश्वास भरी दृढ़ता से बोला, "हमारी सेनायें, हमारे जवान हर तरह के हालातों से निपटने में सक्षम हैं। आपको तीनों सेनाओं का खुलकर और भरपूर साथ मिलेगा। बन जाइये सर...तानाशाह!"-

❑❑❑
❑❑❑

राष्ट्रपति महोदय ने पूरी गम्भीरता के साथ ही केशव की बातों को सुना।

केशव के कहने पर उपराष्ट्रपति को भी बुला लिया गया था—उपराष्ट्रपति ने भी केशव की पूरी बातें सुनीं और फिर चेन्तित हो चले।

"एक मिनट...उपराष्ट्रपति जी...!" कहने पर राष्ट्रपति महोदय केशव से दूर हॉल के कोने में चले गये।

उपराष्ट्रपति भी वहां पहुंच गये।

दोनों में मन्त्रणा होने लगी।

वो इतनी धीमी आवाजों में बातें कर रहे थे कि केशव को कुछ भी पता नहीं चल पा रहा था।

दस मिनट की गुफ्तगू, मन्त्रणा, विचार-विमर्श के पश्चात् दोनों केशव के पास लौटे तो केशव सोफे से उठ खड़ा हुआ।

दोनों ने आशीर्वाद की मुद्रा में केशव के सिर पर हथेलियां रख दीं।

"हम दोनों का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है केशव बेटे!" बोले राष्ट्रपति महोदय, "खून में कोई विकार आ जाये तो नीम का कड़वा काढ़ा पीना ही पड़ता है। बीमारी हो जाने पर कड़वी दवाइयां भी पीनी पड़ती हैं और इंजेक्शन की सुई का दर्द भी

झेलना पड़ता है। देश वास्तव में बीमार भी है और जख्मी भी है। जख्मों की मरहम-पट्टी भी करनी होगी और बीमारी वाले किटाणुओं का खात्मा भी करना पड़ेगा। इसके लिये तानाशाही का इंजेक्शन लगाना होगा। हम दोनों बूढ़े तीर्थ यात्रा पर निकल रहे हैं। अभी से राष्ट्रपति भवन तुम्हारे हवाले है।"

❑❑❑
❑❑❑

केशव ने बुलाया और वो भी राष्ट्रपति भवन में?

उदयराज व सुन्दर लाल की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर माजरा क्या है?

राष्ट्रपति भवन का नजारा ही बदला हुआ था! ब्लैक कमान्डोज तो तैनात थे ही—साथ ही तीनों सेनाओं के अध्यक्षों तथा बाकी अफसरों की गाड़ियां भी खड़ी थीं।

"ये सब क्या माजरा है अंकल जी?" पसोपेश में पड़ा उदयराज बोला, "पण्डित जी ने हमें यहां पर बुलाया है। यहां पर तीनों सेनाओं के अध्यक्ष अपने मातहतों के साथ मौजूद हैं। आखिर मामला क्या है?"

"अब मैं क्या बतला सकता हूं बेटा? तुम्हारे साथ ही बैठा हुआ था, जब पण्डित जी का फोन आया। लेकिन ये तय है कि कोई-ना-कोई गड़बड़ी है। पहले मैं सोच रहा था कि शायद पण्डित जी राष्ट्रपति जी को अपना इस्तीफा देने आये हैं। लेकिन यहां तो कुछ और ही माजरा लगता है। कहीं...कहीं पण्डित जी ने इमरजेंसी लगाने का फैसला तो नहीं कर लिया...?"

"इमरजेंसी...!" चिहुंककर बोला उदयराज, "ये...ये आप क्या कह रहे हैं अंकल जी? इमरजेंसी तो मन्त्री मंडल की सहमति से लगाई जाती है। पण्डित जी को कुमार स्वामी और बाकी लोगों ने जिस तरह घेरा है, उसका निदान इमरजेंसी तो नहीं है। नहीं...मुझे तो कुछ और ही गड़बड़ी लगती है। चलिये भीतर चलकर देखते हैं। यहां पर मीडिया वालों की...दूरदर्शन वालों की भी गाड़ियां मौजूद हैं। यानि प्रेस वार्ता का इन्तजाम किया गया है। मामला समझ से परे है। भीतर चलने पर ही मालूम पड़ेगा कि क्या बात है?"

कहने पर उदयराज बैसाखियों के सहारे आगे बढ़ गया—साथ में काफी गम्भीर नजर आ रहा सुन्दर लाल तो था ही।

उनके साथ चार ब्लैक कमान्डोज भी चल रहे थे।

एक बन्द दरवाजे के बाहर ठिठके ब्लैक कमाण्डोज और उनमें से एक ने दोनों को भीतर जाने का इशारा किया।

दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

फिर सुन्दर लाल ने दरवाजा खोला और उदयराज को भीतर दाखिल होने का इशारा किया।

दोनों भीतर पहुंचे तो केशव से सामना हुआ।

जिसे देख दोनों के मुखों से आश्चर्य मिश्रित सिसकारियां-सी छूट गईं।

आंखें फैलती चली गईं।

एक नया ही केशव सामने था—

काले रंग की मिलिट्री की जैसी ड्रेस में।

उसके चेहरे पर कठोर किस्म के भाव थे।

आंखों में भी दृढ़ता थी।

गुलाबी होंठों के मध्य सिगरेट की बजाय सिगार दबा हुआ था।

"आइये, सुन्दर लाल जी...ए० सी० पी० साहब...!" मानो कोई टाइगर इन्सानी जुबान में बोला हो, "हिन्दुस्तान का पहला तानाशाह केशव पण्डित आपका इस्तकबाल करता है।"

सुन्दर लाल व उदयराज के दिलो-दिमाग पर मानो आकाशीय दामिनी गिर पड़ी हो।

❑❑❑

❑❑❑

दूरदर्शन व अन्य न्यूज चैनल्स के टी० वी० कैमरे ऑन थे और लाइव टेलीकास्ट कर रहे थे।

कई माइकों से सुसज्जित मेज के पार चार कुर्सियां रखी हुई थीं, जिन पर तीनों सेना अध्यक्षों के साथ काली वर्दी वाला केशव भी विराजमान था। हॉल में मीडिया वालों के अलावा सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी, करतार सिंह, केशव और

आशीर्वाद के गुरु रमाकान्त और रमाकान्त की बेटी माधवी, आशीर्वाद के दोस्त टीटू व गुड्डी और मुम्बई पुलिस इन्सपेक्टर अनिल यादव भी मौजूद था।

सुन्दर लाल और उदयराज तो थे ही!

केशव ने जब दोनों को बतलाया था कि उसने तानाशाह बनने का निर्णय ले लिया है तो पहले तो दोनों चौंके थे, फिर उदयराज ने हर्षित भाव से कहा था—"वाह...ये हुई ना मर्दों वाली बात। मैं ये सोच-सोचकर परेशान हो रहा था कि कुमार स्वामी और उसकी टीम को काबू में लाने का कौन-सा रास्ता हो सकता है? कुछ भी नहीं सूझ रहा था। सिर्फ यही एक रास्ता बचा था, जो आपने चुना है पण्डित जी। मेरी तो मेरी ...स्वर्ग में बैठी सुजाता की आत्मा भी खुश हो रही होगी। देश को बचाने के वास्ते डिक्टेटरशिप यानि तानाशाही वाला रास्ता ही बचता है। अब देखूंगा कि वो कमीने क्या करते हैं? छोड़ना मत दुष्टों को। मेरा आपको भरपूर समर्थन है। क्यों सुन्दर लाल अंकल जी?"

"अं...हां, क्यों नहीं...?" सुन्दर लाल भी पूरी गर्मजोशी के साथ बोला था, "वास्तव में ही आपने उचित निर्णय लिया है पण्डित जी! मैं आपके साथ हूं। अगर कहीं भी मेरी जरूरत पड़े तो निःसंकोच याद कर लेना। आपके और देश के वास्ते चौबीसों घण्टे कुछ भी करने को तैयार रहूंगा। अब तमाम चिन्तायें दूर हो गईं। अब देश सही पटरी पर आ जायेगा। लेकिन बाकी देशों से टक्कर लेनी पड़ेगी। वो डिक्टेटर शिप खत्म करके डेमोक्रेसी पर जोर देंगे। खास करके खुद को दुनिया का मुखिया समझने वाला अमेरिका! और पाकिस्तान के तो तन-बदन में आग ही लग जायेगी। वो अब तक जो भी गड़बड़ियां करता रहा है, उसे रोक देनी पड़ेंगी—या फिर आप रोक देंगे। चीन भी कुछ कम नहीं है। पाकिस्तान और चीन एक साथ मिलकर देश पर हमला भी कर सकते हैं। दोनों मुल्कों से होशियार रहना पड़ेगा।"

कोई जवाब नहीं दिया था केशव ने—सिर्फ मुस्कराया भर ही था।

लेकिन उसकी झील-सी नीली आँखें मानो बोल पड़ी थीं—"चिन्ता मत कीजिये। कोई गड़बड़ी करेगा तो उसे मुंह-तोड़ जबाब दे दिया जायेगा।"



पूर्व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह के घर पर उसके बेटे वासुदेव सिंह के अला तीसरा मोर्चा के तमाम सांसद नेता, कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया, मुकेश परमार समेत कई मन्त्री व हिन्दुस्तान पार्टी के वो सभी सांसद भी मौजूद थे, जो कि मन्त्री पद के ना मिलने पर बागी हो गये थे।

"केशव पण्डित की तरफ से कोई जवाब नहीं आया सिंह साहब...!" शराब की चुस्की लेकर बोला कुमार स्वामी, "जबकि मैंने कोई घण्टाभर पहले सुन्दर लाल और उदयराज को भी फोन किया था और पूछा था कि केशव पण्डित ने क्या फैसला लिया है? दोनों ने कहा कि केशव के तमाम फोन बन्द हैं और उससे सम्पर्क नहीं हो पा रहा है। मैंने दोनों को अल्टीमेटम दिया था कि अगर मुझे घन्टेभर में जवाब नहीं मिलता है तो हम लोग हिन्दुस्तान पार्टी छोड़कर नई पार्टी बनाने और फिर तीसरे मोर्चे और इन्डियन पब्लिक पार्टी के साथ मिलकर अपनी सरकार बनाने की तैयारियां शुरू कर देंगे।"

"घण्टाभर से तो ज्यादा हो गया है...!" देवेंन्द्र सिंह रिस्टवाच के डायल पर दृष्टिपात करके बोला, "ऐसे मामलों में ढील कतई नहीं देनी चाहिये। तुरन्त ही उस लंगड़े से बात करो और जवाब मालूम करो।"

कुमार स्वामी ने कुर्ते की जेब से मोबाइल फोन निकालकर उदयराज का नम्बर लगाया, फिर फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ घन्टी जाने लगी, फिर उदयराज की आवाज सुनाई पड़ी—"हैलो।"

"हां, क्या हुआ अध्यक्ष महोदय! केशव पण्डित से बात की या नहीं?"

"बात करने की तो नौबत ही नहीं आई। पण्डित जी ने मुझे और सुन्दरलाल जी को राष्ट्रपति भवन में बुलवाया है।"

"राष्ट्रपति भवन...!" कुमार स्वामी आंखें सिकोड़कर बोला—"वो वहां क्या करने गया है? कहीं...कहीं वो सरकार भंग करके नये चुनाव कराने की सिफारिश करने तो नहीं...?"

"पण्डित जी मीडिया से रू-ब-रू हैं। टी० वी० खोलकर देखो। तुम्हें और तुम्हारे तमाम साथियों को ऐसा जवाब मिलेगा कि सिर पकड़कर खून के आंसू रोने लगोगे।"

"क...क्या मतलब? तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?"

"मतलब समझना है तो तुरन्त ही टी० वी० खोलकर देखो और पण्डित जी के नये अवतार के दर्शन करके जीवन धन्य कर लो!" इतना कहने पर दूसरी तरफ से उदयराज ने फोन काट दिया।

हड़बड़ाये से कुमार स्वामी ने फोन को यूं देखा, जैसे कोई औरत अपनी सौतन को देखती है।

"क्या हुआ...?" पूछा देवेन्द्र सिंह ने, "तुम्हारी शक्ल तो ऐसी हो गई—जैसे जूतों से पिटाई हो गई हो?"

देवेन्द्र सिंह के शब्दों पर ध्यान दिये बिना कुमार स्वामी बुरा-सा मुंह बनाये हुये बोला—"वो लंगड़ा बोल रहा था कि केशव पण्डित राष्ट्रपति भवन में है।"

"राष्ट्रपति भवन...!"

"राष्ट्रपति भवन...!"

कइयों के मुंह से अनायास ही निकला और वो एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"राष्ट्रपति भवन...!" देवेन्द्र सिंह भी चौंककर बोला, "वो वहां क्या करने गया है?"

"मालूम नहीं! लंगड़े ने...उदयराज ने बतलाया नहीं! वो बोल रहा था कि हम टी० वी० पर देख लें। केशव पण्डित मीडिया वालों से मुखातिब है। ये भी कह रहा था कि टी० वी० पर केशव पण्डित के नये अवतार के दर्शन होंगे और हम लोग सिर पकड़कर खून के आंसू रोने लगेंगे।"

"ऐसा क्या...?" हैरानी व दुविधा में पड़ा देवेन्द्र सिंह बोला, "जरा टी० वी० तो ऑन करो वासुदेव। देखें तो सही कि केशव पण्डित क्या खेल, खेल रहा है?"



"सभी भारतवासियों को नमस्कार, सत श्री अकाल, सलाम, गुड मॉर्निंग...!" तीनों सेनाओं के अध्यक्षों के साथ काली वर्दी में खड़ा केशव टी० वी० कैमरों की तरफ देखते हुये बोल रहा था, "मुझे इस वर्दी में देखकर आप चौंक रहे होंगे—आपका चौंकना वाजिब भी है। खैर, राजनीति में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन सुजाता बहन जी ने अपनी कसम देकर मुझे इलेक्शन लड़वाया, फिर बहन जी की हत्या कर दी गई और हालात ऐसे बने कि मुझे प्रधानमन्त्री पद सम्भालना पड़ा! बहुत अरमान थे कि...ये करूंगा, वो करूंगा। हिन्दुस्तान में रामराज्य स्थापित कर दूंगा। लेकिन जल्द ही इस बात का अहसास हो गया कि मैं तो शेखचिल्ली की तरह सिर्फ ख्वाब ही देख रहा था। हकीकत के पत्थरों ने मुझे कांच की तरह ही तोड़ दिया।

गैरों की क्या बात की जाये—अपने ही बेवफा निकले। मेरी सरकार के मन्त्री ही धांधलियां कर रहे थे। भ्रष्टाचार की कीचड़ में सनकर घोटाले कर रहे थे, कमीशन खा रहे थे। जो सांसद मन्त्री ना बन पाये थे, या जो दौलत कमाने के लिये ही सांसद बने थे, वो भी उन भ्रष्टाचारियों के साथ मिल गये। उनकी तादाद डेढ़ सौ के करीब थी। उन्हें पूर्व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह और तीसरा मोर्चा के नेताओं का भी समर्थन था—यानि सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे बन गये थे।

उन लोगों ने मुझे ब्लैकमेल करना चाहा। ये कहा कि मैं उन्हें कमाई करने दूं और आँखें होते हुये भी धृतराष्ट्र की तरह अन्धा बन जाऊं। साथ ही ये धमकी भी दी कि अगर मैंने उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई की तो वो नई पार्टी बना लेंगे। तीसरा मोर्चा और इन्डियन पब्लिक पार्टी के साथ मिलकर मिली-जुली सरकार का गठन कर लेंगे। यानि उन्हें दोनों हाथों से दौलत कमानी ही थी और देश की कोई चिन्ता नहीं थी। मैं दुःखी और परेशान हो चला क्योंकि वो लोग बहुमत में थे और मैं अल्पमत में था। देश की और देशवासियों की चिन्ता थी। उन

लोगों के खिलाफ अगर कार्रवाई करता तो वो अपनी सरकार बनाकर लूट-खसोट मचाते—देश का सत्यानाश कर देते। धृतराष्ट्र बनना भी मन्जूर नहीं था मुझे। मैं अपने प्यारे वतन की तरफ से आंखें कैसे मूंद सकता था भला?

ऐसी विकट परिस्थितियों में मेरी धर्मपत्नी ने मुझे एक सुझाव दिया। वो बोली कि अगर अपने देश को बचाना है तो तानाशाह बन जाओ। बहुत सोच-विचार करने पर मुझे भी लगा कि हिन्दुस्तान को सचमुच ही तानाशाह की जरूरत है। सो मैं बन गया हूं तानाशाह! जी हां, अब इस देश में डेमोक्रेसी यानि प्रजातन्त्र नहीं है। अब यहां पर डिक्टेटर शिप यानि तानाशाही लागू की जा रही है। अब तमाम सिस्टम बदले जायेंगे। कानून भी नये बनेंगे और सभी को उन कानूनों का पालन करना होगा।

लेकिन आम जनता को नागरिकों को जरा-भी चिन्ता करने या घबराने की जरूरत नहीं है। मेरी तानाशाही की तलवार मुजरिमों, जालिमों, जमाखोरों, गैरकानूनी धन्धे करने वालों, भ्रष्टाचारियों, देशद्रोहियों और देश के दुश्मनों पर ही चलेगी। आम आदमी की तो रक्षा की जायेगी। भूखों को खाना, प्यासों को पानी, गरीबों को धन मिलेगा। मजलूमों को तुरन्त ही इन्साफ मिलेगा। बहू, बेटियों और बहनों की इज्जत की रक्षा की जायेगी। किसानों और बाकी गरीबों के तमाम कर्जे माफ। बेरोजगारों को नौकरी या रोजगार के लिये बिना ब्याज के लोन मिलेगा। बहुत जल्द ऐसा माहौल बना दूंगा कि गहनों से लदी कोई जवान महिला आधी रात को अकेली जंगल से भी गुजरेगी तो हवा भी उसे छेड़ने की जुर्रत नहीं कर पायेगी।

लोग रातों को घरों के दरवाजे खुले छोड़कर ठाठ के साथ सोया करेंगे और उनके घर से झाड़ू की एक सींक तक भी चोरी नहीं होगी। कोई भी व्यक्ति खुले आम करोड़ों रुपये लेकर कहीं भी आ-जा सकेगा—कोई उसकी तरफ देखेगा तक नहीं। मेहनती, ईमानदार और देशभक्त किस्म के लोगों की पूरी कद्र की जायेगी—जबकि देश, समाज या कानून या इन्सानियत के खिलाफ सुई की नोक बराबर भी काम करने वालों को इसी धरती पर नरक के दर्शन करा दिये जायेंगे।

हिन्दुस्तान को एक बार फिर से विश्व गुरु बनाना है। शक्तिशाली, मजबूत, आत्म-निर्भर! ऐसे हालात बना दिये जायेंगे कि सभी देशवासियों को खुद के हिन्दुस्तानी होने पर गर्व महसूस होगा। हिन्दुस्तान को कमजोर करने वाले, यहां पर गड़बड़ियां करने वाले या हिन्दुस्तान के टुकड़े करने के ख्वाब देखने वालों को इतने टुकड़े किये जायेंगे कि उन्हें आटा छानने वाली छलनी में छाना जा सकेगा। बस, आप सभी लोगों का सहयोग चाहिये मुझे! बहुत से गलत आदमियों को मेरा ये कदम पसन्द नहीं आयेगा। वो आप लोगों को भड़काने की कोशिश करेंगे। वो आन्दोलन की आड़ में दंगे भड़काने की कोशिश कर सकते हैं। उन लोगों से मैं अपने तरीके से निपट लूंगा। बस, आप लोग उनके साथ मत रहियेगा—नहीं तो गेहूं के साथ घुन भी पिस सकती है! शाम सात बजे मैं फिर आप लोगों से टी० वी० के माध्यम से बातें करूंगा। तब तक के लिये विदा चाहूंगा...जयहिन्द...!"



मानो कोई जादूगर आया और जादू की छड़ी घुमाकर उनके होठों पर कान, कानों वाली जगह पर आंखें, नाक को सिर पर लगाकर उड़न छू हो गया। ऐसी ही दशा थी उन सबकी—

पूर्व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह की, उसके बेटे वासुदेव सिंह की, कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया, मुकेश प..ार, उनके साथियों और तीसरे मोर्चे के सभी नेताओं—सांसदों की।

"ये...ये क्या हो गया...?" देवेन्द्र सिंह की आवाज मानो गले की बजाय किसी गहरे कुएं से निकलकर ही आ रही थी, "केशव पण्डित ने तो खुद को डिक्टेटर...तानाशाह घोषित कर दिया! तीनों सेनाओं के अध्यक्ष भी उसके साथ हैं। वो राष्ट्रपति भवन से बोल रहा था तो इसका मतलब ये हुआ कि उसे राष्ट्रपति का समर्थन मिल चुका है।"

"यानि अपने देश से डेमोक्रेसी खत्म...!" जयन्त मुखिया लुटा-पिटा-सा बोला—"तानाशाही चालू।"

"ऐसा हो जायेगा...सोचा भी नहीं था।" कुमार स्वामी के घर में मानों कोई जवान मौत हो गई थी, "हमारी तमाम तैयारियां धरी-की-धरी रह गईं। सारे ख्वाब मिट्टी में मिल गये। ये सोचकर खुश हो रहे थे कि सरकार में सिर्फ अपनी ही चलेगी—या फिर अपनी ही सरकार बनेगी। दोनों हाथों से दौलत बटोरेंगे—दुनियाभर की ऐश लूटेंगे। लेकिन...ये तो अनर्थ हो गया। हम तो राजा बनते-बनते भिखारी बन गये। ... नहीं केशव हमें। ना जाने हमारे साथ क्या करेगा?"

"इतनी जल्दी हार मानने की जरूरत नहीं है दोस्तों...!" मुट्ठियों को भींचे हुये देवेन्द्र सिंह के चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव परिलक्षित होने लगे और आवाज भी मानो जख्मी नाग की फुंफकार में परिवर्तित हो चली, "ऐसे कैसे तानाशाह बन जायेगा वो? हमारे देश में आजादी के बाद प्रजातन्त्र लागू किया गया था। प्रजातन्त्र...यानि जनता का राज! केशव पण्डित तानाशाह बनकर अकेला मजे नहीं ले सकता। हम उसका विरोध करेंगे। धरने पर बैठेंगे। आन्दोलन करेंगे। देश बन्द का आह्वान करेंगे।"

"आप शायद भूल रहे हैं डैड कि केशव ने अपनी स्पीच में देश की जनता से कहा है कि वो हम लोगों को बहकावे में ना आयें—नहीं तो गेहूं के साथ घुन भी पिस सकता है। उसके इरादे ठीक नहीं लग रहे हैं मुझे! मेरी सलाह तो यही है कि हम लोगों को माल समेटकर हिन्दुस्तान से फुर्र हो जाना चाहिये। तानाशाही में कुछ भी हो सकता है। कोई सुनवाई नहीं होती, कोई अदालत नहीं होती। तानाशाह जो भी चाहे, वो ही होता है। वो हमारा नाश पीटकर रख देगा।"

अपने बेटे वासुदेव सिंह की बातें सुनकर देवेन्द्र सिंह गम्भीर व चिन्तित हो चला।

"मेरे ख्याल से वासु ठीक ही कह रहा है।" डरा-सहमा-सा जयन्त मुखिया बोला, "जान है तो जहान है। हम लोगों को तुरन्त ही हिन्दुस्तान छोड़कर भाग लेना चाहिये।"

"ले...लेकिन जायेंगे कहां?" एक सांसद ने पूछा।

"बहुत बड़ी दुनिया है।" कुमार स्वामी ने जवाब दिया,

"हम पाकिस्तान चलेंगे। वहां हमें शरण मिल जायेगी। हम लोग वहां की सरकार और आई० एस० आई० के साथ मिलकर केशव पण्डित के खिलाफ जंग लड़ेंगे...अरे! ये आवाजें कैसी हैं? ऐसा लगता है कि ढेर सारे लोग इसी तरफ चले आ रहे...।"

इतने में ही ढेर सारे हथियारबन्द सैनिकों के साथ राजन शुक्ला वहां आ पहुंचा और सभी को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरने पर सैनिकों से बोला—"इन सभी को अरेस्ट कर लिया जाये। पण्डित जी ये फैसला करेंगे कि इन लोगों के साथ क्या किया जाना है।"

सभी के चेहरों पर मुलतानी मिट्टी-सी पुतती चली गई।

देवेन्द्र सिंह ने गीदड़ भभकियां दिखलाते हुये गिरफ्तारी का विरोध किया तो मिलिट्री वालों ने उसकी हड्डी-पसलियां तोड़ डाली।

बाकी सभी को भीगी बिल्ली बनते देर ना लगी।

❑❑❑

❑❑❑

"ये...ये क्या हो गया काला मदारी...!" ट्रांसमीटर पर आई० एस०आई० मुखिया जमाल खान की बौखलाई हुई आवाज उभर रही थी, "केशव पण्डित तानाशाह बन गया.. और तुमने हमें आगाह भी नहीं किया?"

'मुझे खबर होती तो जरूर आगाह करता हाजी साहब!" वह मानो अंगारों पर लोटते हुये ही बोल रहा था, "मुझे तो बहुत बाद में जानकारी मिली। तब तक केशव तानाशाह बन चुका था। उसने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, तीनों सेनाओं के अध्यक्षों के साथ सैटिंग कर ली थी और राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर चुका था।"

"बुरा हुआ...बहुत बुरा हुआ...!" दूसरी तरफ से जमाल खान लुटा-पिटा-सा, मातमी लहजे में बोला, "ये हमारे हक में ठीक नहीं हुआ। जनरल साहब भी बहुत परेशान हैं। हम तो सोच रहे थे कि केशव पण्डित परेशान होकर इस्तीफा दे देगा और सत्ता पर देवेन्द्र सिंह, कुमार स्वामी वगैरा काबिज हो जायेंगे, तब हिन्दुस्तान में वो ही होता...जो हम चाहते।"

"मैंने तो अपनी तरफ से पूरा खेल, खेल दिया था हाजी साहब! देवेन्द्र सिंह के जरिये कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया, मुकेश परमार, बाकी कई मन्त्रियों और सांसदों को बागी बना दिया था। ऐसे हालात बना दिये थे कि केशव पण्डित को अपने मन्त्रियों और सांसदों को धांधली करने की छूट देनी पड़ती—या उनके खिलाफ कार्रवाई करनी पड़ती। कुल मिलाकर नतीजा एक ही निकलना था—कुमार स्वामी के नेतृत्व में नई पार्टी बनाई जाती। तीसरा मोर्चा और देवे[illegible] सिं[illegible] पार्टी मिलकर सरकार बनाती। प्रधानमन्त्री कोई भी बनता—[illegible] मेरी मुट्ठी में रहता। देवेन्द्र सिंह के खिलाफ तो मेरे पास सबूत है ही। दूसरा कोई प्रधानमन्त्री बनता तो बुरे काम जरूर करता। उसके बुरे कामों की वीडियो फिल्म बनाई जाती और उसे अपनी मुट्ठी में करके अपने हाथों की कठपुतली बना लेता मैं। वो सिर्फ डमी पी० एम० ही होता। सरकार तो मैं...मेरा मतलब आप ही चलाते। इस बार तो हिन्दुस्तान को पूरी तरह से तबाह कर डालते।"

"लेकिन केशव पण्डित तो पूरा हरामी निकला। उसने खुद तानाशाह होने का ऐलान करके हमारे ख्वाबों पर गोबर फेर दिया। क्या हालात हैं हिन्दुस्तान के?"

"बहुत बुरे...हाजी साहब! देवेन्द्र सिंह, उसका बेटा वासुदेव सिंह, कुमार स्वामी जयन्त मुखिया, मुकेश परमार समेत सभी बागी मन्त्री और सांसद, तीसरा मोर्चा के तमाम नेता और सांसद गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिये गये हैं। डेमोक्रेसी तो खत्म हो ही चुकी हैं। सभी तरह की हड़तालों, धरनों, प्रदर्शन, जाम वगैरा पर बैन लगा दिया गया है। देशभर में मिलिट्री के जवान तैनात हैं। आई० एस० आई० और दूसरे ऐसे ही संगठनों के लोगों को पकड़कर गिरफ्तार नहीं किया जा रहा है, बल्कि उनको डायरेक्ट गोलियां मारी जा रही हैं। आतंकियों को भी शूट किया जा रहा है। बाकी के जान बचाने को जहां भी जगह मिली, वहीं छिप गये हैं। हालात ऐसे नहीं हैं कि कोई भी बाहर निकलकर गड़बड़ी कर सके। सभी को जान बचाने की पड़ी है। हमें बैक फुट पर आना पड़ गया है।"

"क्या केशव को उड़ाया नहीं जा सकता...काला मदारी?"

"अभी तो मुमकिन नहीं है हाजी साहब...कतई भी नहीं है। क्योंकि मिलिट्री और सभी सेनाओं के जवान पूरे मुस्तैद हैं। केशव की सिक्योरिटी के बन्दोबस्त अमेरिकी राष्ट्रपति की सिक्योरिटी को भी फेल कर रहे हैं। अभी तो केशव पर हमला करने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता है। लेकिन इसका मतलब ये भी नहीं कि हम काला मदारी हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहेगा...।" उसके मुंह से मानो आग की लपटें ही निकल रही थीं, "बहुत करारी चोट दी है केशव पण्डित ने मुझे। उससे खार खा गया हूं...खुन्नस खा गया हूं। उसका खात्मा किये बिना चैन से नहीं बैठूंगा। लेकिन ठन्डी करके खानी होगी। सब्र से...ठन्डे दिमाग से काम लेना होगा। कोई-ना-कोई तरकीब तो निकलेगी ही! अगर केशव पण्डित ज्यादा दिनों तक तानाशाह बना रहा तो हमारा सत्यानाश कर देगा। उसकी तानाशाही के साथ-साथ उसकी जिन्दगी को भी खत्म करना होगा।"

"खूब...बहुत खूब! तुम्हारे तेवरों से लग रहा है कि तुम कुछ-ना-कुछ जरूर करोगे काला मदारी! फतह और शिकस्त जिन्दगी के जरूरी हिस्से हैं। शिकस्त मिलने पर भी जो फतह की उम्मीद ना छोड़े—वो ही बढ़िया खिलाड़ी होता है। हमें उम्मीद है कि जल्दी ही तुम कुछ करके दिखलाओगे। तब तक होशियार रहना। काले खां को भी होशियार कर देना। तुम दोनों के दम पर ही हम हिन्दुस्तान के खिलाफ मिशन चला रहे हैं।"

"ठीक है हाजी साहब! नमस्ते...सलाम।" कहने पर काला मदारी ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया। फिर उसने एक सिगरेट सुलगाई और उठकर चहलकदमी-सी करते हुये दिमाग के घोड़ों को इधर-उधर दौड़ाने लगा।

□□□

□□□

जेल की बैरकों के बाहर वाले लम्बे-चौड़े बरान्डे में चीखो-पुकार मची हुई थी।

पूर्व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह, उसकी सरकार में रहे तमाम

मन्त्री, तीसरे मोर्चा के तमाम नेता, कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया, मुकेश परमार समेत केशव मन्त्री मन्डल के सभी मन्त्री, जो कि घोटालों, कमीशनखोरी में लिप्त थे—इनके अलावा पूर्व की सरकारों में रहे तमाम मन्त्री भी थे।

सभी के जिस्मों पर मात्र अन्डर वियर ही थे। सभी को बर्फ की सिल्लियों पर लिटाकर बांध दिया गया था और जेल-कर्मी उन पर ना सिर्फ हन्टर बरसा रहे थे, बल्कि उनके जख्मों पर 'खरा' का नामक भी बुरका जा रहा था।

आशीर्वाद, राजन, करतार सिंह व सुन्दर लाल के साथ केशव वहां पहुंचा, वो भी सेना के हेलीकॉप्टर से।

बाकी दो हैलीकॉप्टर में ब्लैक कमान्डोज थे।

तीनों हेलीकॉप्टर्स जेल के प्रांगण में ही उतरे थे। जेलर समेत जेल के तमाम अधिकारियों ने काली वर्दी वाले केशव की अगवनी की और सभी लोग उस बरान्डे में पहुंचे।

"क्या इन लोगों ने जुबान खोली?" केशव ने जेलर से पूछा।

"मुश्किल से दस मिनट पहले ही इन लोगों का टॉर्चर शुरू हुआ है...सर! जब तक ये मुंह नहीं खोलेंगे—इन्हें टॉर्चर किया जाता रहेगा।"

केशव ने आशीर्वाद को इशारा किया।

किसी बच्चे को मानो मनपसन्द खिलौना खरीदने की इजाजत मिल गई हो।

भुने हुये चने के दाने कुटकुटाते हुये वो सीधा बर्फ पर औंधे लेटे पूर्व प्रधानमन्त्री देवेन्द्र सिंह के पास पहुंचा।

एक स्टूल खिसकाकर बैठ गया और चनों की फंकी मारकर बोला—"कभी कल्पना भी नहीं की होगी तूने कि पूर्व प्रधानमन्त्री होते हुये भी यूं आम गुन्डों-बदमाशों की तरह पिटेगा। लेकिन किया क्या जाये? मामला देश से जुड़ा है। तुम लोग ने देश की दौलत लूट-लूटकर विदेश भिजवा दी। स्विस बैंक में हराम की कमाई जमा कराते रहे। उस दौलत पर देश और देशवासियों का अधिकार है। अगर सारी दौलत वापिस आ जायेगी तो देश का कितना भला होगा। ना सिर्फ सारे कर्जे

उतर जायेंगे, बल्कि देश अमीर हो जायेगा। बाकी लोग भी बतलायेंगे। तू भी बतला दे कि तेरे स्विस एकाउन्ट का कोड नम्बर क्या है? वहां पर कोई पास बुक या चाबी नहीं देते। स्विस बैंक वाले अपने कस्टमर को एक कोड नम्बर देते हैं। उस कोड नम्बर से कोई भी रकम निकाल सकता है। तेरा कोड नम्बर क्या है?"

"मैं...मैंने...स्विस बैंक में कोई रकम...जमा नहीं...ई...ई...ई...ऽऽऽ।"

देवेन्द्र सिंह को मानो तेज करेंट लगा हो।

जिसे हलाल करने के लिये छुरी से आधी गर्दन काट दी गई हो, उसी मुर्गे की ही मानिन्द देवेन्द्र सिंह बुरी तरह छटपटा और तड़फड़ा रहा था।

मारे पीड़ा के आंखें कटोरियों से बाहर छलांग लगाने को बेकरार थीं।

जिस्म का तमाम खून मानो चेहरे पर आकर इकट्ठा हो गया था।

तमाम नसें यूं उभर आईं कि मानो खाल फाड़कर जिस्म से बाहर निकल जाना चाहती हों।

ऐसा सब हुआ 'मुण्डे' के दायें हाथ के अंगूठे की वजह से—जिसके ऊपरी सिरे ने देवेन्द्र सिंह की कनपटी की एक नस को दबाया हुआ था।

आशीर्वाद मानो बिजलीघर बन गया था और अंगूठे के जरिये देवेन्द्र सिंह के जिस्म में करेंट छोड़ रहा था। मात्र दस सेकेंड पश्चात् ही आशीर्वाद ने अंगूठे को हटा लिया।

पीलिया के मरीज की मानिन्द पीला पड़ा देवेन्द्र सिंह पसीने से नहोया यूं ही हांफे जा रहा था कि मानो दमे के मरीज को बैल की जगह हल के जुए में बांधकर घण्टों खेत में चलाया गया हो।

अल्प विश्राम के पश्चात् आशीर्वाद ने आंखें मूंदकर गहरी श्वांस खींचकर योग-बल से अपने जिस्म में तीव्र करेंट उत्पन्न किया और फिर अंगूठे को देवेन्द्र सिंह की कनपटी पर रखकर हल्का-सा दबाव डाला तो देवेन्द्र सिंह पुनः 'ई...ई...ई...ई'

की भिंची-भिंची-सी आवाज निकालते हुये बुरी तरह कांपने व तड़फड़ाने लगा।

इस मर्तबा उसकी तड़फ ज्यादा थी।

"क्यों...मजा आ रहा है ना?" शैतान दिखलाई पड़ रहा मुण्डा फुंफकारते हुये ही बोला, "तेरी हड्डियों तक में पीड़ा के बिच्छू डंक मार रहे होंगे। इस क्रिया से हाथी तक को भी उसकी नानी याद दिलाई जा सकती है—फिर तेरी तो औकात ही क्या है प्यारे लाल! अगर मैंने तेरी नस पर अपने अंगूठे को पन्द्रह सेकेंड तक रखे रखा तो तेरे खून का पानी बन जायेगा और तेरा राम-नाम सत्य हो जायेगा।" आशीर्वाद ने अंगूठा हटा लिया।

मानो देवेन्द्र सिंह के जिस्म पर मुल्तानी मिट्टी का लेप कर दिया गया था और ऊपर से ड्रमभर पसीना डाल दिया गया था।

हांफते हुये वो जिस्म को बार-बार सिकोड़कर फैला रहा था—मानो अन्तिम सांसें ले रहा हो।

काम चलाऊ सामान्य होने में उसे पांच मिनट लगी।

"मैं...मैं...कोड बतलाता हूं...!" वह हांफते हुये बहुत ही मरी-सी आवाज में बोला—"डी...एस...ट्रिपल नाइन...ए० बी० सी० आर० पी० नाइन टू जेब्रा...।"

"गुड...ये हुई ना कोई बात! अब ये भी बतला दे कि तेरे एकाउन्ट में कितनी रकम है?"

"नौ सौ करोड़...आह...!"

"गुड...वैरी गुड! और तेरे बेटे वासुदेव सिंह के खाते में कितना माल जमा है?"

"सात सौ करोड़...!"

"उसका एकाउन्ट नम्बर?"

देवेन्द्र सिंह ने बतला दिया।

राजन व करतार सिंह डायरी में नोट कर रहे थे। इसके बाद आशीर्वाद ने करेंट वाले अंगूठे का इस्तेमाल करके कुछ अन्य लोगों से भी उनके स्विस बैंक के एकाउन्ट के कोड नम्बर ज्ञात किये—

बाकियों ने तो घबराकर ऐसे ही बतला दिये। वो सच बोल रहे थे कि झूठ—ये जांचने के लिये केशव और आशीर्वाद ने उन्हें हिप्नोटाइज्ड किया।

सभी सच बोले थे।

सुन्दर लाल चुपचाप खड़ा तमाशा देख रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

ये सिलसिला यहीं पर ही खत्म नहीं हुआ।

ये तो आगाज था—अन्जाम नहीं।

देशभर के तमाम पूर्व केन्द्रीय व राज्य मन्त्रियों, नेताओं को मिलिट्री ने उठा लिया और उन्हें टॉर्चर करके मालूम किया कि उन्होंने अब तक कितनी कमाई की और वो कहां पर है?

देश-विदेश में मौजूद उन लोगों का तमाम धन हासिल किया गया और उनकी प्रोपर्टी, फैक्ट्री व कम्पनी इत्यादि पर भी कब्जा कर लिया गया।

कुल मिलाकर इतनी रकम और प्रोपर्टी थी कि देश का तमाम कर्ज चुकता करने पर भी बेहिसाब दौलत बची थी, जिसका उपयोग देश के विकास कार्यों में किया जाना था।

बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां, मिलें लगाई जाने लगीं, ताकि बेरोजगारों को रोजगार मिल सके। जो बेरोजगार अपना धन्धा करना चाहते थे, उन्हें बैंक के जरिये बिना ब्याज के लोन मिलने लगा।

केशव ने सबसे ज्यादा ध्यान दिया देश की सुरक्षा व्यवस्था पर—

तीनों सेनाओं को आधुनिक हथियारों, वाहनों व जरूरी साधनों से लैस किया जाने लगा।

वैज्ञानिकों को कहा गया कि वो धन व संसाधनों की कमी महसूस ना करें और परमाणु बमों के साथ शक्तिशाली व दूर तक मार करने वाली मिसाइलों व अन्य अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करें। केशव ने जेल अधिकारियों व पुलिस व मिलिट्री के अधिकारियों को एक जरूरी मीटिंग के लिये तलब किया—

"हमारे देश में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें दोनों वक्त का भोजन, बीमार होने पर दवाइयां नहीं मिलती। जबकि जुर्म

करके जेल जाने वाले मुजरिमों को दोनों वक्त का खाना मिलता है और बीमार पड़ने पर इलाज भी किया जाता है। मैं इस बात को कतई नहीं मानता कि जेलों में रखकर उन्हें सुधारा जा सकता है। कोई मुजरिम जब जेल जाता है तो पहले से मौजूद बड़े मुजरिम उसे बतलाते हैं कि उसने जुर्म करते हुये कौन-कौन-सी गलतियां की थीं, जिनकी वजह से वो कानून के शिकंजे में फंसा था और उसे कौन-सी सावधानियां बरतनी थीं, चालाकियां करनी थीं कि वो कानून के लपेटे में नहीं आता। यानि उसे नौसिखिये से खेला-खाया मुजरिम बनाया जाता है। जेल के बड़े मुजरिमों से उसकी दोस्ती होती है और वो उनसे जुर्म करके कानून से बचने के तरीके सीखता है। किसी बड़े मुजरिम का गैंग ज्वाइन कर लेता है। जेल से निकलने पर बड़े-बड़े जुर्म करता है। ये भी कड़वी सच्चाई है कि बड़े, दौलतमन्द और पहुंच वाले मुजरिमों को जेल में होटल जैसी सुविधायें मिलती हैं। नहीं...अब जेलों की कॉलोनियां बनेंगी और उनमें बेघर लोग रहा करेंगे।"

केशव ने सभी को चौंका दिया और दुविधा में भी डाल दिया।

"स...सर...!" एक जेल अधिकारी ने झिझकते हुये पूछ ही लिया—"फिर मुजरिम कहां पर रहेंगे?"

केशव ने पहले सिगार सुलगाया और कश लगाकर नासिकाओं से खुशबूदार धुआं छोड़ा, फिर चेहरे पर कठोर किस्म के भाव समेटकर खुरदुरे-से लहजे में बोला, "उन सभी को आजाद कर दिया जायेगा।"

"क्या?"

"व्हाटऽऽ?"

"क...क्या?"

हर किसी के मुंह खुले-के-खुले रह गये!

आँखों में आश्चर्य व 'सस्पैंस' के भाव लिये हुये वो एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

जी तो सभी का चाह रहा था कि केशव से पूछें—लेकिन किसी की हिम्मत ना पड़ी।

उन सभी के मनोभावों को ताड़ने पर मुस्कराया झील-सी

नीली आंखों वाला, फिर सिगार में कश लगाकर बोला—"मेरे जवाब का गलत मतलब निकाल लिया है आप लोगों ने। तमाम मुजरिमों को छोड़ा तो जायेगा—लेकिन सजा देने पर। गुन्डागर्दी, मारपिटाई, चोरी, लूटपाट करने वालों को घुटनों से पैर काटकर छोड़ दिया जायेगा। जेबकतरों का जेब काटने वाला हाथ काट दिया जायेगा। इसी तरह सभी मुजरियों को सजा देकर छोड़ दिया जायेगा। उम्र कैद की सजा वाले कातिलों के दोनों हाथ और पैर काट दिये जायेंगी। बलात्कारियों को 'हिजड़ा' बना दिया जायेगा और दोनों आंखें फोड़ दी जाये। हरेक मुजरिम को सजा मिलेगी। जेलों में बन्द तमाम देशद्रोहियों, देश के दुश्मनों को सरे आम जान से मारा जायेगा—ताकि उनके अन्जाम को देखकर कोई दूसरा देशद्रोही, देश का दुश्मन बनने की हिम्मत ना करे—देश को किसी भी किस्म का नुकसान पहुंचाने की कल्पना भी ना करने पाये।"

केशव का चेहरा सुर्ख पड़ गया और उसके हलक से मानो शब्दों की बजाय चिता की लपटें ही निकल रही थी—"जितने भी देशद्रोही, देश के दुश्मन, आई० एस० आई० के और उस जैसी संस्थाओं से जुड़े लोग हाथ आयें तो उन्हें हाथों-हाथ गोलियों से भून दिया जाये। हरेक मुजरिम को सजा दी जाये और छोड़ दिया जाये। किसी मुजरिम को जेल नहीं भेजा जायेगा। जेलें रहेंगी ही नहीं। हरेक जिले में मुजरिमों को पकड़ने के लिये आधुनिक वाहनों और हथियारों के साथ हेलीकॉप्टर्स भी भेजे जा रहें हैं। पुलिस मुख्यालयों में लाई डिटेक्टर, ब्रेन मैपिंग...यानि सच उगलवाने वाली मशीनें, उपकरण लगेंगे और एक्सपर्ट भी मौजूद रहेंगे। जैसे ही मुजरिम अपना गुनाह कबूलेंगे—वहां मौजूद जज तुरन्त ही सजा सुना देगा और मुजरिम को उसी के इलाके में ले जाकर सजा दे दी जायेगी। वकीलों और अदालत से जुड़े बाकी लोगों को उनकी तनख्वाह या कमाई के हिसाब से दूसरी नौकरी दी जायेगी, या बिजनेस करने के लिये तमाम प्रकार की सुविधायें दी जायेंगी। कोई भी बेरोजगार नहीं रहेगा। कुल मिलाकर हिन्दुस्तान में अरब की तरह वाले कानून लागू किये जायेंगे—तभी यहां से जुर्म का नामोनिशान मिट पायेगा।"



और फिर वो ही हुआ, जो केशव चाहता था।

जेलों में बन्द तमाम मुजरिमों को सजा देकर छोड़ दिया गया।

सबसे बुरा हाल बलात्कारियों का किया गया—उन्हें नपुंसक बनाने के साथ आँखें फोड़कर अन्धा भी कर दिया गया।

तमाम जेलें खाली—

उनमें उन गरीब लोगों को बसा दिया गया, जो कि बेघर थे।

केशव ने दो काम बहुत ही सटीक किये—

उसने टी० वी० के माध्यम से दोनों कामों की जानकारी ही नहीं बल्कि सम्बन्धित लोगों को आदेश भी दिया—

"हिन्दुस्तान के तमाम नागरिकों को एक खास किस्म का कम्प्यूटराइज्ड कार्ड बनवाना होगा, जो कि ए० टी० एम० कार्ड के जैसा ही होगा। उस कार्ड की बाबत तमाम जानकारियां कम्प्यूटर्स में फीड की जायेंगी और हरेक थानों, पुलिस पैट्रोलिंग गाड़ियों में वो कम्प्यूटर्स मौजूद होंगे। पुलिस किसी का भी कार्ड लेकर कम्प्यूटर में डालेगी और कार्ड धारक के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर सकेगी। कार्ड पर सिर्फ फोटो ही नहीं, फिंगर प्रिंट्स, हैन्ड राइटिंग और ब्लड ग्रुप भी दर्ज होगा। अगर कार्ड धारक नकली हुआ तो तुरन्त ही पकड़ा जायेगा और उसको सख्त सजा दी जायेगी। हिन्दुस्तान के तमाम जिलाधिकारी—पुलिस अधिकारी अपने स्टाफ के लोगों के साथ स्कूलटीचर्स, नगर पालिका, महापालिका के कर्मचारियों की मदद से सिर्फ एक महीने के भीतर कार्ड बनायेंगे। कार्ड बनवाने वाले की जानकारी को उसके गांव का प्रधान और इलाके का पुलिस अधिकारी सत्यापित करेंगे। शहरी नागरिकों का सत्यापन वार्ड मेम्बर, पार्षद, चेयरमैन, मेयर और इलाके की पुलिस करेगी। अगर किसी की जानकारी बाद में गलत निकली तो उसके साथ-साथ उसके इलाके के पुलिस अधिकारी, प्रधान-मेम्बर, पार्षद, चेयरमैन और मेयर को भी भुगतनी होगी।

कम्प्यूटराइज्ड मशीनों से लैस गाड़ियां हरेक गांव, कस्बे

और शहर में जायेंगी और हाथों-हाथ ही कार्ड बनाकर दे देंगी और कार्ड से सम्बन्धित जानकारी इन्टरनेट की पुलिस वेबसाइट पर भी फीड हो जायेगी—जिसे हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से पर देखा जा सकेगा। ये कार्ड सिटीजन कार्ड कहलायेंगे। एक-महीना बाद जिसके पास सिटीजन कार्ड नहीं होगा—उसे तुरन्त ही अरेस्ट कर लिया जायेगा और उसके बारे में छानबीन की जायेगी। वो मुजरिम या गैरकानूनी तरीके से हिन्दुस्तान में दाखिल हुआ विदेशी हुआ तो उसको तुरन्त ही गोली मार दी जायेगी। इस तरह मुजरिमों, डाकुओं, आतंकियों और देश के दुश्मनों का खात्मा करने में सहूलियत हो जायेगी।

इसी के साथ सभी नागरिकों के वाहनों की स्पीड पर भी कन्ट्रोल किया जायेगा। आई० ए० एस०, आई० पी० एस० अधिकारियों के साथ तमाम पुलिस वाले भी मिलिट्री के जवानों और वाहन बनाने वाली कम्पनियों के इंजीनियरों और मैकेनिकों के साथ मिलकर हरेक वाहन के इंजिन या स्पीड कन्ट्रोल करने वाली मशीनें बदलेंगे। अब अपने देश में कोई भी कार साठ किलोमीटर प्रति घंटा से ऊपर नहीं दौड़ सकेगी। बसें और ट्रक पचास किलोमीटर की स्पीड से ही चल पायेंगे। मोटर साइकिल, बाइक, स्कूटर, स्कूटी, मोपेड वगैरा चालीस की स्पीड से ज्यादा नहीं चल पायेंगे। सिर्फ पुलिस और मिलिट्री के वाहनों की स्पीड ही फास्ट होगी—ताकि जुर्म करके भाग रहे मुजरिमों को आसानी से पकड़ा जा सके। इस काम को भी एक महीने के भीतर कम्पलीट कर दिया जायेगा। इसके बाद अगर किसी वाहन की स्पीड निर्धारित सीमा से ज्यादा पाई गई तो वाहन मालिक के साथ उस इलाके के पुलिस वालों पर भी गाज गिरेगी। देश को पटरी पर लाने के लिये इस किस्म के उपाय किये जायेंगे और नये-नये कानून भी बनाये जायेंगे—जो कि जनहित में ही होंगे। सो मैं देश के तमाम नागरिकों से आशा करता हूं कि मुझे सहयोग देंगे...जयहिन्द।"

❑❑❑

❑❑❑

केशव के आदेश पर कुछ सामानों पर स्पेशल टैक्स लगा दिया गया—

मसलन कि कारें, शराब, ए० सी०, सिगरेट, कोल्ड ड्रिंक, हवाई यात्रा, ट्रेनों की फर्स्ट क्लास वाली यात्रा, होटल, बार, डांस-बार, पैट्रोल, डायमंड व प्लेटीनम ज्वैलरी, महंगी वाली पोशाकें, विदेशी सामान।

जो शराब की बोतल तीन सौ रुपये की थी, उसकी कीमत तीन हजार रुपये कर दी गई। चालीस रुपये वाली सिगरेट का पैकेट दो सौ रुपये का, चालीस हजार वाला ए० सी० दस लाख रुपये का कर दिया गया। इसी तरह बाकी सभी उन चीजों, साधनों व ऐश की चीजों के दाम बढ़ा दिये गये, जो सिर्फ अमीरों के लिये ही थीं।

इन चीजों से होने वाली मोटी कमाई को सब्सिडी के रूप में इस्तेमाल करके गरीबों व मध्यम वर्ग के लोगों के उपयोग की वस्तुएं बहुत सस्ती कर दी गईं—मसलन कि अनाज, चावल, दालें, सब्जियां, दूध, दवाइयां, साइकिल, बसों व ट्रेनों का किराया, मकान बनाने के लिये सीमेंट, लोहा, रेत इत्यादि रेडीमेड कपड़े, बिना सिले कपड़े, मसाले, साहित्य, पत्रिकायें, अखबार, बच्चों के खिलौने, स्कूल फीस, पढ़ाई की कॉपी-किताबें, स्टेशनरी, हॉस्पिटल का इलाज इत्यादि। किसानों व गरीबों के तमाम कर्जे माफ!

गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों को बिजली-पानी मुफ्त, मध्यम वर्ग के लिये भी बिजली व पानी, हाउस टैक्स घुटनों-घुटनों सस्ता।

डीजल सस्ता!

गैस सिलेन्डर बहुत सस्ते।

यानि कुल मिलाकर गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों की बल्ले-बल्ले!

❑❑❑

❑❑❑

चम्बल का बीहड़!

बहुत लम्बा-चौड़ा क्षेत्र!

नदी के दोनों तरफ मिट्टी के ऊंचे-नीचे टीले, पेड़ों के झुरमुट और झाड़-झंखाड़।

रूपा डाकू और उसका पचास आदमियों का गैंग।

रूपा ने बेहिसाब डकैतियां डाली थीं, हत्याएं की थीं और किडनेप करके फिरौतियां हासिल की थीं।

रूपा की सबसे बड़ी कमजोरी थी...औरत!

वो अपने गैंग में कई-कई लड़कियां रखता था, इस पर भी वो जहां डकैतियां डालता था, वहां की जवान लड़कियों व औरतों की अस्मत से जरूर खेलता था।

उसकी शक्ति और आतंक का इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वो पिछले पन्द्रह सालों में कभी भी पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ा था और मुठभेड़ में दो दर्जन पुलिसवालों को ढेर कर चुका था।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान की सरकारों ने संयुक्त रूप से उसके खिलाफ पुलिस अभियान चलाये—लेकिन चम्बल के दुर्गम रास्तों और बीहड़ की भूल-भुलैयों की वजह से वो कभी हाथ नहीं लगा।

तीनों सरकारों ने उस पर बीस-बीस लाख यानि साठ लाख रुपये का इनाम घोषित किया हुआ है—

जिन्दा या मुर्दा...डेड ऑर एलाइव!

वो ही रूपा डाकू अपने हथियारबन्द गैंग के साथ शराब और बकरे के गोश्त का मजा ले रहा था कि गड़गड़ाहट जैसी आवाजों ने चौंका दिया।

"रूपा भाई जी...!" ऊंचे टीले पर तैनात एक डाकू गला फाड़कर चिल्लाया—"कई सारे हेलीकॉप्टर आ रहे हैं। मिलिट्री के लगते हैं।"

"सभी मोर्चा ले लो।" तीन फुट लम्बे बाल व फुटभर लम्बी दाढ़ी वाला रूपा चिल्लाकर बोला, "हम पहले मुकाबला करेंगे। अगर फोर्स तगड़ी हुई तो छिपते हुये भागेंगे और छोटी कुइयां वाले ठिकाने पर पहुंचेंगे।"

रूपा समेत सभी डकैतों ने हथियार सम्भाल लिये और मोर्चा ले लिया।

उन लोगों ने टीलों में छोटी-छोटी गुफायें बनाई हुई थीं, जिनमें धूप, गर्मी, बरसात से बचा जा सकता था और टोही

हेलीकॉप्टर से भी बचे रहते थे। हरे रंग के एक दर्जन हेलीकॉप्टर हवा में परवाज भर रहे थे—जिनके निचले हिस्सों में ऑटोमैटिक मशीनगनें फिट थीं। उनमें सवार मिलिट्री जवानों के पास दूरबीनें, मशीनगनें और हैन्डग्रेनेड भी थे। जब कोई डाकू नजर नहीं आया तो उन लोगों ने ग्रेनेड फेंकने शुरू कर दिये—

धुम्म...धड़ाम...ऽऽऽ

धुम्म...धड़ामऽऽऽ।

कर्णभेदी धमाकों के साथ टीले खील-खील होने लगे और मिट्टी के गुब्बार उठने लगे।

घण्टेभर तक हजारों ग्रेनेड डाले गये!

रूपा डाकू और उसके तमाम साथी मिट्टी के ढेरों तले दबे पड़े थे।

जिन्दा नहीं...मुर्दा!

□□□

□□□

लुम्बक!

चन्दन, खैर, शीशम जैसी कीमती लकड़ियों का स्मगलर—जिसका आतंक चारों तरफ था।

काला जंगल का बेताजब बादशाह!

ना जाने कितनी बार फोर्स लुम्बक को पकड़ने के इरादे से काला जंगल में घुसी, लेकिन कोई भी बचकर वापिस ना लौटा।

किसी की लाश तक नहीं मिली।

मिलती भी भला कैसे—लुम्बक अपने शिकारों को बेरहमी के साथ मारकर अपने पालतू कुत्तों और टाइगर का निवाला बना देता था—या फिर झील में पलने वाले मगरमच्छों के हवाले कर देता था।

लेकिन इस मर्तबा मामला कुछ और ही था।

तानाशाह केशव के हुक्म पर मिलिट्री ने काला जंगल की घेराबन्दी की थी।

पहले दो दर्जन हेलीकॉप्टरों ने ऊपर से मशीनगनों से फायरिंग की, ग्रेनेड फेंके—इसी के साथ ऐसे बम भी डाले जिनसे

निकलने वाली गैस आंखों में तेजाब-सा भर देती थी और फेफड़ों में पहुंचकर पीड़ाभरी घुटन पैदा करती थी—पूरे जिस्म में ही आग-सी लगा देती थी।

हालात ऐसे बने कि अपने दो सौ लोगों को मरवाने पर लुम्बक बाकी चार सौ आदमियों के साथ जान बचाने की गरज से भाग निकला।

लेकिन भागकर जाता कहां?

जंगल की तो सेना ने घेराबन्दी की हुई थी।

सिर्फ गोलियां और ग्रेनेड ही नहीं चले, बल्कि रॉकेट भी दागे गये।

तमाम आदमियों समेत लुम्बक भी ढेर कर दिया गया।

❑❑❑

❑❑❑

एक दर्जन आतंकवादी—जिन्हें जेल से निकालकर लाया गया था।

एक बड़े स्टेडियम में मैदान के बीचों-बीच लोहे के एक दर्जन खम्बे गाड़े गये थे और उन सभी आतंकियों को उन खम्भों के साथ लोहे की जंजीरों से कसकर बांधा गया था।

बिना टिकिट का 'तमाशा' था—सो स्टेडियम में डेढ़ लाख से भी ज्यादा लोग जमा थे।

मीडिया वालों के कैमरे सैट थे, जो कि लाइव टेलीकास्ट कर रहे थे।

बाकायदा ट्रे में रखकर लोगों को पत्थर बांटे गये थे।

इन्तजार की घड़ियां समाप्त हुईं और स्टेडियम में छह हेलीकॉप्टर उतरे।

ब्लैक कमाण्डोज के साथ काली वर्दी वाला केशव हेलीकॉप्टर से बाहर निकला और जनता का अभिवादन करते हुये एक ऊंचे मंच पर पहुंचा।

ऊंचे सिंहासन पर विराजमान होने पर केशव ने सिगार सुलगा लिया और फिर सामने रखे माइक पर बोला—"खेल शुरू किया जाये।"

उक्त आवाज स्टेडियम में लगे कई लाउडस्पीकर्स के माध्यम से गूंज उठी थी।

बस फिर क्या था...लोग खम्भों के साथ बंधे खड़े आतंकियों पर पत्थर फेंकने लगे।

पत्थर लगने पर आतंकी मारे पीड़ा के चीख उठते।

बहुत से लोगों के पत्थर आतंकियों तक नहीं पहुंच पा रहे थे—वो हताश होकर 'धत्त तेरे की' कह उठते।

जिसका पत्थर 'निशाने' पर लगता वो यूं ही खुश हो रहा था, मानो जैकपॉट लग गया हो। खून से लथपथ आतंकियों के आस-पास काफी पत्थरों के ढेर-से लग गये।

रोते-कराहते आतंकी चीखते-चिल्लाते और गिड़गिड़ाते हुये रहम की भीख मांग रहे थे। फिर एक हेलीकॉप्टर आया और सभी आतंकियों पर ढेरा सारा पैट्रोल गिराकर उन्हें पैट्रोल से नहलाकर वापिस चला गया।

दो सैनिक सनील के लाल कपड़ों से ढके दो बड़े-बड़े थाल लिये हुये मंच पर पहुंचे और केशव के सामने रखी मेज पर दोनों थाल रख दिये। केशव ने दोनों कपड़े हटा दिये।

एक थाल में धनुष और दूसरे थाल में एक दर्जन तीर रखे हुये थे।

तीरों के अगले सिरों पर पैट्रोल से भीगी कपड़े की पट्टियां लिपटी हुई थीं।

उठा केशव—उसने धनुष उठा लिया।

थाल में से एक तीर उठाकर धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाया।

एक सैनिक ने लाइटर जलाकर तीर के अगले सिरे पर बंधी पैट्रोल वाली पट्टी से लौ स्पर्श की तो तीर का अगला सिरा जल उठा।

केशव के जबड़े प्रेशर कुकर के ढक्कन की मानिन्द ही कसते चले गये—

आंखों में खून-सा उतर आया।

उसने प्रत्यंचा खींचकर झटके के साथ छोड़ दी—

सर्र...से जलता हुआ तीर हवा में उड़ते हुये शिकारी बाज की मानिन्द ही खम्भे से बंधे एक आतंकी पर झपटा-सा।

तीर आतंकी के कुर्ते से टकराया।

परिणाम स्वरूप पैट्रोल से नहाया वो आतंकी आग की

ऊंची-ऊंची लपटों से घिर गया और उसके हलक से गगनभेदी चीखें निकलने लगीं। इसी तरह केशव ने बाकी के तीर चलाकर बाकी के आतंकियों का भी 'दाह-संस्कार' कर डाला।

❑❑❑
❑❑❑

पूरे पांच सौ आतंकियों को रेलवे लाइन पर लिटाकर लोहे की मजबूत तारों से इस कदर कसकर बांधा गया था कि वो पूरे जोर लगाने पर भी हिल नहीं पा रहे थे।

रेलवे लाइन के दोनों तरफ हजारों की तादाद में लोग इकट्ठा थे।

वो खुश तो थे ही—लेकिन साथ ही आतंकियों के होने वाले अन्जाम की कल्पना मात्र से उत्तेजित भी थे।

दिल जोर-जोर से धड़क रहे थे।

लाइव टेलीकास्ट करने वाले दूरदर्शन व मीडिया वालों के कैमरे ऑन थे।

अपने अन्जाम के बारे में सोच-सोचकर ही आतंकियों के दम खुश्क हुये जा रहे थे।

जो खून नसों के भीतर चींटी की रफ्तार से ही गर्दिश किया करता था, वो अब उस चूहे की मानिन्द ही भागा-दौड़ी कर रहा था—जिसके पीछे बिल्ली पड़ी हुई हो।

वो आसपास तैनात हथियारबन्द सैनिकों से फरियाद कर रहे थे, रहम की भीख मांग रहे थे, लेकिन...!

सैनिकों ने मानो कानों में रूई ठूंसी हुई थी।

ट्रेन की व्हिसल सुनाई पड़ी।

दूर से सुपर एक्सप्रेस ट्रेन दौड़ी चली आ रही थी। आतंकी जोर-जोर से रोने लगे, चींख-चींखकर रहम की भीख मांगने लगे।

लोगों की उत्तेजना व धड़कनें बढ़ने लगीं।

ज्यों-ज्यों ट्रेन करीब आती जा रही थी, त्यों-त्यों आतंकियों की चीखो-पुकार व रुदन बुलन्द होता जा रहा था।

नसों में भरा खून अब हिरण की मानिन्द ही यूं दौड़ लगा रहा था कि मानो उसके पीछे शेरों का झुन्ड पड़ा हुआ हो।

दिलों का आलम ये था कि मानो चिम्पैंजी के नटखट बच्चों को कपड़ों के थैलों में बन्द कर दिया गया हो।

धड़कनों की रफ्तार तो धड़धड़ाती चली आ रही ट्रेन से भी तेज थी।

ट्रेन के रूप में मौत करीब और करीब आती जा रही थी।

पटरियों पर दौड़ते भारी-भरकम चक्के 'खटाक...खटाक' का कानफोड़ू शोर कर रहे थे।

पांच सौ चीखें बुलन्द होती [illegible]।

फिर चीखें चार सौ निन्यानवें ही रह [illegible]।

एक आतंकी के ची[illegible] उड़ चुके थे।

फिर तो एक-एक करके चीखों की संख्या जल्दी-जल्दी कम होती चली गई।

बहुत से तमाशाइयों ने घबराकर मुंह फिरा लिये या आँखें मूंद लीं।

कई सिसकारियां व चीखें भी उभरीं।

❑❑❑
❑❑❑

"देख रहे हो जमाल खान...हिन्दुस्तान में क्या चल रहा है...?" रिमोट से टी०वी० ऑफ करने पर पाकिस्तानी राष्ट्रपति क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुए बोला—"हमारे ट्रेण्ड किये आंतकियों और आई० एस०आई० एजेण्टों को खुले आम मारा जा रहा है—उनकी मौत का तमाशा बनाया जा रहा है। कुछ को जिन्दा ही आग से जला दिया गया। बहुतों को ट्रेन की पटरियों पर बांधकर उनके चीथड़े उड़वा दिये गये। कइयों को गोलियों से तो कइयों को तोप के गोलों से उड़ा दिया गया। कइयों को पब्लिक से पत्थर मरवाकर हलाक कर दिया। उधर सरहद पर ढाई सौ लोग हिन्दुस्तान में घुसने की कोशिश कर रहे थे। हिन्दुस्तानी मिलिट्री ने उन्हें घेर लिया। उन लोगों ने हथियार डालकर सरेंडर कर दिया—लेकिन मिलिट्री वालों ने सभी को गोलियों से भून दिया। हमारे हजारों आदमी हलाक कर दिये गये हैं। तुम्हें मालूम है कि नहीं—?"

"सब मालूम है जनाब।" आई०एस०आई० मुखिया जमाल खान हथेलियों को परस्पर मसलते हुए और कसमसाते हुए बोला—"लेकिन हमारी मजबूरी ये है कि [illegible] इस मुद्दे को

दुनिया के सामने नहीं उठा सकते। आप ही ऐलान कर चुके हैं कि हिन्दुस्तान में दहशतगर्दी करने वालों का पाकिस्तान से कोई ताल्लुक नहीं है—ना ही पाकिस्तान टेररिस्ट को अपने यहां ट्रेनिंग दे रहा है। अगर हम मुखालफत करेंगे तो जाहिर हो जायेगा कि हिन्दुस्तान में मारे जा रहे लोग हमारे अपने हैं। मजबूरी है, हमें उनकी मौत का तमाशा चुपचाप देखना होगा।"

"नहीं...हम नहीं देख सकते। हमारा खून खौल रहा है। तन-बदन में आग लगी हुई है। केशव पण्डित ने चन्द ही दिनों में हमारी तमाम तैयारियों, मेहनत और दौलत पर पानी फेर दिया है। कश्मीर में भी दहशतगर्दों को चुन-चुन कर हलाक किया जा रहा है। काला मदारी और काले खां क्या कर रहे हैं—?"

"हालात के हाथों मजबूर हैं वो दोनों...जनाब। उन्होंने तमाम कारगुजारियां बंद कर दी हैं। अपने आदमियों को अण्डरग्राउण्ड हो जाने को बोल दिया है। और खुद भी खामोश बैठ गये हैं।"

जनरल की वर्दी वाले राष्ट्रपति ने जल्दी-जल्दी सिगार में यूं कश लगाये मानो उसके धुएं से भीतर जलती चिता की लपटों को बुझाने की कोशिश कर रहा हो—

"नहीं...यूं बात नहीं बनेगी जमाल खां...।" मानो वह दांतों के सरोते से शब्दों की सुपारी काटते ही बोला—"हमने हिन्दुस्तान में गड़बड़ी मचाने को बहुत कुछ किया—लेकिन केशव पण्डित हमारे किये कराये पर पानी फेर रहा है। मुजरिमों और भ्रष्टाचारियों को भी पकड़कर हाथों-हाथ सजा दी जा रही है। मंहगाई पर काबू पा लिया उसने। बेरोजगारों को रोजगार दे रहा है। तीनों सेनाओं को मजबूत करने में लगा है। यूं तो वो हिन्दुस्तान को हर तरह से मजबूत बना देगा और हमारा मुल्क बहुत कमजोर पड़ जायेगा। जंग छिड़ने पर हमें मुंह की खानी पड़ेगी। काला मदारी और काले खां से कॉन्टेक्ट करो। उनसे बोलो कि वो खामोश बैठकर तमाशा ना देखें। वो रिस्क लें और हिन्दुस्तान में धमाके करें—गड़बड़ियां करें—दहशत फैलायें। बदसमनी का माहौल पैदा करें। हिन्दुस्तान की

खुशहाली और हिन्दुस्तानियों की खुशी देख हमारे सीने पर तीर-से चल रहे हैं, सांप-से लौट रहे हैं। दिल में आग लगी है। खून का तेजाब बना जा रहा है। केशव पण्डित का इलाज करो। उसे रोको। उस पर लगाम कसो। दुनिया से उठा दो उसे—या किसी भी तरीके से उसकी तानाशाही का खात्मा करो।"

"जनाब...।" तभी मिलिट्री की वर्दी वाला एक अधेड़ हाथ में फोन लिये हुए ऑफिस में दाखिल हुआ और बड़े ही अदब के साथ बोला—"अमेरिकी प्रेसीडेण्ट जी से कॉन्टेक्ट हो गया है, आप उनसे बातें कीजिये।"

राष्ट्रपति ने फोन को छीन ही तो लिया और कान से लगा कर बोला—"गुड इवनिंग सर—।"

"गुड इवनिंग। बोलो, जनरल...तुम हमसे कौन-सी जरूरी बात करना चाहते थे?"

"मैं हिन्दुस्तान की बाबत बात करना चाहता था सर।"

"हां, बोलो—।"

दोनों के दरमियान इंग्लिश में गुफ्त-गू हो रही थी।

"केशव पण्डित ने प्रजातन्त्र समाप्त करके तानाशाही लागू कर दी है। इससे वहां पर अफरा-तफरी का माहौल है। वहां की जनता पर जुल्मो-सितम हो रहे हैं। बेगुनाहों को सरेआम मारा जा रहा है। दुःखी लोगों में मुस्लिम भी हैं, इसलिये मुझे बहुत पीड़ा हो रही है सर।"

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है जनरल। हमारे कहने पर हमारे राजदूत महोदय केशव से मिले थे और विरोध प्रकट किया था लेकिन केशव ने इस बात को साबित कर दिया कि हिन्दुस्तान में गड़बड़ियां हो रही थीं। वहां पर जुर्म और भ्रष्टाचार का बोलबाला था। आतंकवादी घटनायें दिनों-दिन बढ़ रही थीं। केशव ने तानाशाह बनने पर आतंकियों, मुजरिमों और भ्रष्टाचारियों को ही सजा दी है। वरना वहां की जनता खुश है क्योंकि महंगी वस्तुएं सस्ती हो गई हैं। गुण्डों-बदमाशों का भय नहीं रहा है। हर कोई सुरक्षित है।"

बुरी तरह सकपकाया पाकिस्तानी जनरल।

उसे अमेरिकी राष्ट्रपति से ऐसे जवाब की कतई भी उम्मीद नहीं थी।

कुछ सोचने पर वो बोला—"लेकिन सर, आप दूसरी तरफ भी तो ध्यान दीजिये। केशव अपनी तीनों सेनाओं को मजबूत कर रहा है। उसने हथियारों, गोला-बारूद, टैंक, लड़ाकू विमान खरीदने शुरू कर दिये हैं। वो परमाणु बम और खतरनाक किस्म की मिसाइलें तैयार करा रहा है। एक दिन हिन्दुस्तान अमेरिका के लिये ही खतरा बन जायेगा। आपको आंखें दिखलायेगा, आपकी चौधराहट को चुनौती देगा। आपकी बादशाहत खतरे में पड़ जाये...।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा।" अमेरिकी राष्ट्रपति का लहजा यकायक ही खुश्क हो चला—"हमारी केशव से फोन पर बात हो चुकी है। उसका इरादा सिर्फ अपने देश को मजबूत करने का और आतंकवाद के खिलाफ जंग लड़ने का है। हमारे पास इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि आतंकवाद को बढ़ावा देने में सबसे बड़ा हाथ पाकिस्तान का ही है।"

"ये—ये आप क्या कह रहे हैं...सर...?"

"हम बिल्कुल सच और हकीकत बयान कर रहे हैं...जनरल। विश्व के कई आतंकवादी संगठनों को तुम्हारा देश हर तरीके से मदद पहुंचा रहा है। अमेरिका में हुई आतंकी घटना को अन्जाम देने वालों को भी पाकिस्तान की मदद मिल रही है। ओसामा-बिन-लादेन और उसके जैसे कई आतंकी सरगनाओं को पाकिस्तान ने ही अपने यहां शरण दी हुई है। पहले पाकिस्तान सिर्फ भारत में ही आतंकवाद फैला रहा था लेकिन अब तो इंग्लैण्ड समेत अमेरिका में भी गड़बड़ी की जा रही है।"

"ये...झूठ है सर। सरासर झूठा इल्जाम है। लगता है कि उस केशव पण्डित ने आपको बहका...।"

"हम कोई बच्चे नहीं हैं कि कोई भी हमें बहका लेगा। हमारे पास सोचने-समझने के लिये दिमाग है। हम हिन्दुस्तान के साथ मिलकर आतंकवाद के खिलाफ जंग लड़ने जा रहे हैं। तुम्हें हमारी ये सलाह है कि आतंकियों की मदद करना बन्द करो। सभी आतंकी सरगनाओं को हमारे हवाले कर दो या फिर उन्हें अपने देश से निकाल दो। उनकी मदद करनी बन्द कर

दो—वरना इसका खामियाजा तुम्हीं को भुगतना होगा...गुड नाइट...।"

दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया।

बेचारा पाकिस्तानी राष्ट्रपति—

उसका चेहरा देखने लायक था।

"क...क्या हुआ...जनाब...?" जमाल खान ने उसके हाव-भाव देख डरते-सहमते हुए ही पूछने की हिम्मत की।

"ऐसी की तैसी।" राष्ट्रपति ने फोन को दीवार पर इतनी जोर से मारा कि नीचे गिरने पर उसके अस्थि-पंजर अलग-अलग हो गये। मानो वह मानसिक संतुलन खोकर ही चीख-चीखकर बोला—"उस साले पर केशव पण्डित ने जादू का डण्डा फिरा दिया है। उल्टे ही वो हम पर इल्जाम लगा रहा था। धमका रहा था। हालात ठीक नहीं हैं जमाल खान। लगता है कि अमेरिका का रूझान हमसे हटकर हिन्दुस्तान की तरफ जा रहा है। ये हमारे वास्ते ठीक नहीं होगा। इस तरह तो हमें कदम-कदम पर शिकस्त का मुंह देखना पड़ेगा। हिन्दुस्तान हम पर हावी हो जायेगा। नहीं...केशव का कोई-ना-कोई इलाज करना ही होगा। फौरन ही काला मदारी से बात करो। दिमाग का इस्तेमाल करोगे तो कोई-ना-कोई रास्ता भी निकलेगा। केशव पण्डित का खात्मा किये बिना हमारा काम नहीं चलने वाला।"

"जी जनाब।" जमाल खान सिर झुकाकर बोला—"मैं कुछ करता हूं। खुदा ने चाहा तो जल्दी ही केशव पण्डित का खात्मा हो जायेगा।"

"हमें बेकरारी के साथ उस दिन का इन्तजार रहेगा। जिस दिन केशव की मौत की खबर आयेगी—हमारा मुल्क ईद मनायेगा—।"

"आमीन—।"

❑❑❑

❑❑❑

प्लास्टिक की सफेद स्क्रीन के पीछे काली पैन्ट, ओवरकोट व हैट वाला काला मदारी सिगार में कश लगाते हुए व्याकुलता के साथ चहल कदमी-सी कर रहा था। उसकी आंखें बार-बार

स्क्रीन के पार पिक्चर हॉल जैसे हॉल की तरफ उठ जातीं—जैसे उसे बेताबी के साथ किसी का इन्तजार था।

इस तरफ से स्क्रीन के पार का दृश्य स्पष्ट देखा जा सकता था—जबकि दूसरी तरफ से बिना लाइट के तो कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ता था। लाइट जलने पर भी परछाई जैसा ही दिखलाई पड़ता था।

काली पोशाक वाले काले खां को हॉल में दाखिल होते देख काला मदारी ने मेज पर रखा कार्डलेस माइक उठा लिया और कौए जैसी कर्कश आवाज में बोला—"आओ काले खां! हम तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे।"

"नमस्ते, काला मदारी जी।" काले खां स्टेज के करीब पहुंचकर सिर झुकाकर बड़े ही अदब से बोला—"मैं आपके पास ही आ रहा था कि अचानक ही पेट में भयानक किस्म का दर्द उठ गया। फौरन ही नर्सिंग होम जाना पड़ा। अल्ट्रासाउण्ड में कुछ नहीं आया। डॉक्टर ने गैस-प्रॉब्लम बतला कर दवा लिख दी थी और एक इंजेक्शन लगा दिया...अब आराम है।"

"तुम इसी हुलिये में थे—?"

"इतनी बड़ी गलती कैसे कर सकता हूं काला मदारी जी? मैं कई मर्तबा टी०वी० पर आ चुका हूं। अखबारों में तो मेरी तस्वीरें छपती ही रहती हैं। अब तो ऐसे ही केशव पण्डित की हुकूमत चल रही है। देखते ही हलाक कर दिया जाऊंगा। मैंने हुलिया बदला हुआ था। यहां आने पर ही फेसमास्क और विग उतारी है। खैर उस नर्सिंग होम में पूर्व प्रधानमंत्री देवेन्द्र सिंह और उसका बेटा वासुदेव सिंह एडमिट थे। उनका एक-एक हाथ और एक-एक पैर काट दिया गया है। बाकी नेताओं-मंत्रियों का भी ऐसा ही हश्र किया गया है। ऊपर से उनकी तमाम दौलत और प्रोपर्टी छीनकर फकीर बना दिया गया है। रहन के लिये घर तक नहीं रहे बेचारों के पास। स्विस बैंक से उन लोगों की जमा की गई तमाम रकम को केशव ने हिन्दुस्तान में मंगवा लिया है—जो कई खरब रुपयों की है। केशव उस रकम का इस्तेमाल देश की भलाई में कर रहा।"

"छोड़ो इस टॉपिक को काले खां।" काला मदारी खीज

कर बोला—"ये सब तो हमें भी मालूम है। स्विस बैंक में किसी भी हिन्दुस्तानी की रकम नहीं छोड़ी है...केशव पण्डित ने। हमारी हाजी साहब से बातें हुई थी। वो और पाकिस्तान के हुक्मरान बहुत परेशान हैं। उनकी परेशानी को अमेरिका ने भी बढ़ा दिया है। अमेरिका ने पाकिस्तान का साथ देने से मना कर दिया। वो हिन्दुस्तान के साथ मिलकर आतंकवाद के खिलाफ मुहिम छेड़ने की बात कर रहा है।"

"छोटा मुंह और बड़ी बात कहने की हिमाकत कर रहा हूं काला मदारी जी। हमारे आकाओं को अमेरिका में दहशतगर्द नहीं भेजने थे। या अमेरिका में गड़बड़ी करने वाले दहशतगर्दों की मदद नहीं करनी चाहिये थी। अमेरिका तो पाकिस्तान का सरपरस्त रहा है। हर मामलों में पाकिस्तान का साथ देता रहा है। भले ही अमेरिका पाकिस्तान को हिन्दुस्तान के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा था लेकिन पाकिस्तान की रोजी-रोटी तो चल ही रही थी। अमेरिका की सरपरस्ती हटते ही हिन्दुस्तान पाकिस्तान को बुरी मार मारेगा।"

"केशव पण्डित को खत्म करने का हुक्म मिला है जमाल खान।"

"ले—लेकिन...आप तो जानते ही हैं जनाब कि केशव की जान लेना आसान नहीं है। सिर्फ फौज और पुलिस ही नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान की अवाम भी केशव पण्डित के साथ है। उस तक पहुंचना भी मुमकिन नहीं है—।"

"क्या आत्मघाती यानि फिदायीन भी इस काम को अन्जाम नहीं दे सकते—?"

"नहीं, कतई नहीं। केशव से कई सौ मीटर की दूरी पर पहुंचने वाले की भी पूरी बारीकी के साथ तलाशी ली जाती है। दरअसल मिलिट्री वाले केशव के काम से बहुत खुश हैं। उन्हें केशव के काम बहुत पसन्द आ रहे हैं। वो नहीं चाहते कि केशव को जरा-सी भी खरोंच आये। इसलिये वो अपनी तरफ से ही केशव की सिक्योरिटी टाइट किये हुए हैं। चार फिदाइनों को भेज चुका हूं। चारों ही पकड़े गये। तीन को तो मिलिट्री वालों ने बुरी मौत मारा—चौथे ने पोटेशियम सायनाइड

वाला कैप्सूल चबाकर खुदकुशी कर ली। अब आप ही बतलाइये कि केशव को कैसे हलाक किया जाये—?"

□□□
□□□

कोई जवाब देने की बजाय काला मदारी कुर्सी पर बैठ गया और मेज पर रखे पैकेट से नया सिगार निकाल लिया। स्टील के कटर से उसका अगला सिरा काटने पर लाइटर से सुलगा लिया।

उठा और कश लगाते हुए चहलकदमी करने लगा। उसने 'आइडिये' की तलाश में दिमाग के तमाम घोड़ों को चारों दिशाओं में दौड़ा दिया। एक घोड़े को जैसा भी आइडिया मिला, उसे लेकर वापिस लौटा।

मेज पर से माइक उठा लिया उसने और बोला—"अगर केशव की फिलहाल जान नहीं ली जा सकती तो...दूसरी तरकीब इस्तेमाल करते हैं। ऐसा कुछ करते हैं कि केशव तानाशाही को खत्म करके प्रजातन्त्र लागू करने पर मजबूर हो जाये। प्रजातन्त्र लागू करने के लिये उसे तानाशाह वाली कुर्सी छोड़कर इलेक्शन कराने होंगे। वो स्वयं भी इलेक्शन लड़ सकता है और जीत भी सकता है लेकिन हमारी कोशिश होगी कि इलेक्शन के दौरान ही केशव का खात्मा कर दिया जायेगा। उसकी तानाशाही खत्म होने पर हमारा काम आसान हो जायेगा।"

"लेकिन...केशव पण्डित अपनी तानाशाही को खत्म क्यों करेगा...काला मदारी जी—?"

"हम उसे मजबूर करेंगे जमाल खां।"

"कैसे—?"

"तुम अपने उन तमाम आदमियों को नकली मिलिट्री वाले बनाओगे जमाल खान...जिन्होंने पाकिस्तान में बाकायदा कमान्डो ट्रेनिंग ली हुई है। वो नकली मिलिट्री वाले क्या करेंगे...क्या ये भी तुम्हें बतलाने की जरूरत है?"

काले खां का चेहरा गुलाब के फूल-सा खिल उठा और आँखें हीरों की मानिन्द ही चमचमा उठीं—

"नहीं, बतलाने की जरूरत नहीं...काला मदारी जी। मेरे नकली फौजी हिन्दुस्तानियों पर कहर ढा देंगे—जमकर जुल्मो-सितम करेंगे।"

"गुड...वैरी गुड! तुम्हारे वो नकली फौजी लूट-पाट भी करेंगे। जवान औरतों के साथ बलात्कार भी करेंगे। आज की तारीख में हिन्दुस्तान की कानून व्यवस्था मिलिट्री वालों ने ही सम्भाली हुई है। लेकिन हमारे नकली सैनिक अपने कुकर्मों से मिलिट्री को बदनाम कर देंगे। जनता त्राहि-त्राहि कर उठेगी। केशव मिलिट्री के अफसरों से कन्ट्रोल करने को कहेगा—लेकिन हमारे आदमी भला क्यों बाज आने लगे—वो तो अपना उत्पात जारी रखेंगे। केशव ठहरा पक्का देशभक्त। वो कतई बर्दाश्त नहीं करेगा कि निर्दोष हिन्दुस्तानियों पर जुल्मो-सितम ढाये जायें। वो मजबूर होकर डिक्टेटर शिप हटाकर डेमाक्रेसी लागू कर देगा। वो जब तक ऐसा नहीं करेगा हमारे नकली फौजी जनता जनार्दन पर कहर ढाते रहेंगे। ढाते ही रहेंगे...।"

□□□
□□□

"ये...ये सब क्या हो रहा है पण्डित जी?" उदयराज के साथ आया सुन्दर लाल दुःख व आक्रोश भरे लहजे में बोल रहा था—"मिलिट्री वालों ने तो जुल्मो-सितम की हद कर दी। वो निर्दोष लोगों को बेवजह मार देते हैं। घरों और दुकानों में घुस कर लूटपाट कर रहे हैं। सबसे दुख वाली बात तो ये कि वो महिलाओं के साथ बलात्कार भी कर रहे हैं। आपने मिलिट्री के अफसरों से बात भी कर ली। उनसे ऐसे मिलिट्री वालों के खिलाफ कार्रवाई करने को भी कहा—लेकिन कोई भी फर्क नहीं पड़ा है। मिलिट्री वालों का उत्पात जारी है। जनता में हाहाकार मचा हुआ है। कई महिलायें अपनी इज्जत गंवाने पर खुदकुशी कर चुकी हैं। क्या आप इसीलिये तानाशाह बने थे? नहीं...इससे बेहतर तो यही होगा कि तानाशाही को खत्म करके प्रजातन्त्र लागू कर दिया जाये। आपका क्या ख्याल है...?" उसने अन्तिम सवाल चुपचाप बैठे उदयराज से किया।

"इस बात का निर्णय तो पण्डित जी को ही लेना है

अंकल। हां, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि मिलिट्री वाले बेलगाम होते जा रहे हैं। उनके जुल्मो-सितम की खबरें देश के सभी हिस्सों से आ रही हैं। मुझे नहीं लगता कि उन्हें आसानी से कन्ट्रोल किया जा सकेगा। भगवान के लिये जल्दी से कुछ कीजिये पण्डित जी।"

काली वर्दी वाले केशव ने सिगार में कश लगाया और फिर कहा—"मेरी तवज्जो भी उसी तरफ ही है ए०सी०पी० साहब...सुन्दर लाल जी। आप निश्चिन्त रहिये। मैं जल्द से जल्द कुछ करूंगा। अगर जरूरत पड़ी तो तानाशाही खत्म करके डेमोक्रेसी लागू कर दूंगा। मैंने जनरल साहब को भी बुलवाया है। वो आते ही होंगे...खैर, आप ये बतलाइये कि चाय लेंगे कि कॉफी—?"

उसी वक्त जनरल भी आ गया।

उसने केशव को सैल्यूट मारने के साथ 'जयहिन्द' भी कहा—

"जयहिन्द...।" बोलकर केशव उठा और उससे हाथ मिलाकर बोला—"मैं आपका ही इन्तजार कर रहा था जनरल साहब। बैठिये—।"

"थैंक्यू, सर।" कहने पर जनरल सुन्दर लाल व उदयराज के बीच खाली रखी कुर्सी पर बैठ गया।

केशव ने इन्टरकॉम पर किसी को चार कॉफी के साथ नाश्ता भिजवाने के लिये कहा।

केशव के आग्रह पर जनरल ने एक सिगार सुलगा लिया और कश लगाकर बोला—"आपके कहने पर मैंने मिलिट्री इन्टेलीजेंस को काम सौंपा। इन्टेलीजैंस की रिपोर्ट काफी चौंका देने वाली है।"

"यही ना कि तमाम गड़बड़ियां, मार-पिटाई, कत्ल, लूटपाट और बलात्कार करने वाले मिलिट्री के लोग नहीं हैं...?"

"जी...।" जनरल चौंककर बोला—"आपको ये सब कैसे मालूम...?"

मुस्कराया झील-सी नीली आँखों वाला और फिर सिगार को धुएं के छल्ले छोड़ने पर पूरे आत्मविश्वास के साथ

बोला—"मुझे जितना स्वयं पर विश्वास है उससे ज्यादा भारतीय सेना पर भरोसा है जनरल साहब। हमारे जवान सिर पर कफन बांधकर चौबीसों घंटे खतरों से खेलते हैं। मौत की आँखों में आँखें डालकर हर तरह की मुसीबतों का सामना करते हैं। वो देश और देशवासियों की रक्षा करते हैं। वो दुश्मन की जान लेने और अपनी जान देने से कतई भी नहीं हिचकिचाते। एक सेना के लोग ही तो हैं, जिन पर हम हिन्दुस्तानी गर्व करते हैं। मुझे शुरू से ही विश्वास था कि हमारे देश में अचानक ही जो गड़बड़ियां शुरू हुई हैं, उनके पीछे हमारे जवानों का कतई भी हाथ नहीं है, उनके पीछे दुश्मन का शातिर दिमाग काम कर रहा है और नकली जवान गड़बड़ी कर रहे हैं। वो आई०एस०आई०वाले या फिर आतंकी हैं, जो मिलिट्री वाले बनकर उत्पात मचा रहे हैं। ये सब पाकिस्तानी हुक्मरानों के कहने पर आई०एस०आई० का मुखिया काला मदारी या फिर टेरर मूवमेण्ट फ्रन्ट का सरगना काले खां करा रहा है।"

"तो फिर क्या किया जाये सर...?"

□□□
□□□

मिलिट्री की जीप में सवार थे वे लोग।

एक मेजर की वर्दी में था और बाकी सैनिकों की वर्दियों में थे।

"कल तो मजा आ गया रहमान भाई...।" जीप ड्राइव करने वाला मेजर की वर्दी वाले से बोला—"उस घर में काफी माल हाथ लगा। मजे वाली बात तो ये है चार जवान और खूबसूरत लड़कियां भी थीं। कई-कई मर्तबा रेप किया उनके साथ—जब वो मर गईं तो मजबूरी में छोड़ना पड़ा। आज भी ऐसा कोई घर मिल जाये—जहां माल के साथ हुस्नो-शबाब का अनमोल खजाना भी मिल...।"

गड़गड़ाहट की आवाज ने उनका ध्यान बंटाया।

उसने सड़क पर से नजरें हटाकर ऊपर देखा तो हरे रंग के दो हेलीकॉप्टर उड़ते दिखलाई दिये।

"मि...मिलिट्री वालों के हे...हेलीकॉप्टर हैं...रहमान भाई।"

"तो तू घबरा क्यों रहा है? हम भी तो मिलिट्री वाले हैं।" मेजर की वर्दी वाला बोला—"उन्हें क्या मालूम कि हम पाकिस्तानी हैं और नकली मिलिट्री वाले...।"

"ऐ सुनो।" एक हेलीकॉप्टर काफी नीचे आ गया और उस जीप के ऊपर उड़ने लगा। उसकी खिड़की पर बैठा मेजर चीखकर बोला—"तुम लोग कौन हो—?"

"मिलिट्री वाले हैं।" मेजर की वर्दी वाला रहमान भी चीख कर बोला।

"कोड बोलो।"

"को...कोड?" गड़बड़ा गया रहमान।

बाकी के लोग भी घबराकर एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे।

"हां, कोड।" हेलीकॉप्टर में बैठा मेजर तेज आवाज़ में बोला—"आज से सभी मिलिट्री वालों के लिये कोड वर्ड जारी किया गया है। और सभी को बतला भी दिया गया है। ताकि नकली मिलिट्री वालों को पकड़ा जा सके। जल्दी से कोड वर्ड बोलो।"

"मारे गये।" रहमान नामक आतंकी पसीने-पसीने होकर बोला—"कोड का चक्कर भी चला दिया। मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं। अब इसे क्या बतलाऊं।"

"जल्दी से कोड वर्ड बोलो। मेरे तीन गिनने तक कोड बतलाना होगा...एक...दो...तीन?"

"गाड़ी उस कच्चे रास्ते पर ले लो।" घबराया हुआ नकली मेजर ड्राइवर से बोला—"जान बचाने के वास्ते जंगल की पनाह लेनी होगी।"

ड्राइवर ने जीप की रफ्तार कम किये बिना ही स्टेयरिंग को तेजी के साथ घुमा दिया।

धड़ाम...।

धड़ाम ऽ ऽ ऽ!

तभी ऊपर हेलीकॉप्टर से दो बम डाले गये।

सभी आतंकियों के साथ आग के गोलों में लिपटी जीप गैस के गुब्बारे की मानिन्द ही हवा में उठती चली गयी और

फिर फटकर खील-खील होकर खेत में इधर-उधर बिखर गई। साथ ही इन्सानी जिस्म के टुकड़े खून व गोश्त के लोथड़ों के साथ हड्डियों के टुकड़े भी यहां वहां गिरे।

□□□

□□□

टीयूं...टीयूं...टीयूं...की आवाज करती मिलिट्री की जीप अस्सी की रफ्तार से दौड़ी चली जा रही थी।

उससे आगे दौड़ रही जीप का ड्राइवर बगल में बैठे जवान से बोला—"ये मिलिट्री वाले हमारा पीछा तो नहीं कर रहे हैं सुहेल...?"

"पागल हुआ हैं क्या तू...ओये अनवर? उन्हें क्या पता कि हम नकली फौजी हैं। वो गश्ती जीप है। पैट्रोलिंग कर रही हैं। साइड मांगेगी तो साइड दे देना वरना यूं ही चलता रह...।"

मोड़ आने पर ड्राइवर को हड़बड़ाकर तेजी के साथ ब्रेक लेने पड़े।

चि...चिरड़...की आवाज के साथ चारों पहिये सड़क पर रगड़ के साथ चिंगारियां छोड़ते हुए जाम हो गये और सभी फौजी रूपी आतंकियों को झटका-सा लगा। सामने मिलिट्री की दो जीपें अगल-बगल में पूरी सड़क को घेरे खड़ी थीं।

दोनों में से एक जीप के बोनट पर खड़ा मेजर की वर्दी वाला चीखकर बोला—"कोड वर्ड बोलो—।"

सभी आतंकी हड़बड़ाये।

"क्या होगा?" ड्राइवर की बगल में बैठा आतंकी थूक-सा सटककर बोला—"भाग निकलने का रास्ता भी तो नहीं है। पीछे भी जीप है।"

पीछे वाली जीप काफी दूरी पर ही रुक गई थी।

एक आतंकी उठा तथा चीखकर बोला—"ब्लैक टाइगर।"

"ब्लैक टाइगर।" जीप के बोनट पर खड़ा मेजर व्यंगपूर्ण मुस्कान के साथ बोला—"ये तो कल का कोड वर्ड है। आज का कोड वर्ड बोलो।"

सभी आतंकियों की हालत खराब।

"बाप रे!" एक आतंकी रूआंसा-सा होकर बोला—"हमें

तो यही कोड बतलाया गया था। लेकिन ये मालूम नहीं था कि मिलिट्री वाले रोजाना ही कोड वर्ड बदल रहे हैं। अब...इन्हें कौन-सा कोड वर्ड बतलाया जाये–?"

"जल्दी से बोलो। आज का कोड वर्ड क्या है–?"

"ब्लैक डॉग।" एक आतंकी चीखकर बोला ही था कि दूसरा घबराया हुआ बोला–"ब्लैक कैट–।"

मेजर ने मुस्कराकर दूसरी जीप पर सवार उस सैनिक को देखा जिसने कंधे पर रॉकेट लांचर रखा हुआ था।

वह सैनिक भी मुस्कराया, फिर उसने तेज आवाज में 'भारत मां की जय' बोलकर लांचर का ट्रेगर दबा दिया...धुम्म।

लांचर से निकला रॉकेट पिछले हिस्से से आग व धुआं छोड़ते हुए हवा में उड़ा और सीधा आतंकियों की जीप से टकराया।

धड़ाम ऽ ऽ ऽ ऽ!

□□□

□□□

"व्हाट ऽ ऽ ऽ?"

जनरल की वर्दी वाला पाकिस्तानी राष्ट्रपति यूं ही चिहुंका कि मानो अचानक ही उसकी कुर्सी की गद्दी में नागफनी का पौधा उग आया।

ऐसा ही कुछ हाल उसके सामने बैठे लेफ्टिनेंट जनरल की वर्दी वाले जमाल खान का भी हुआ।

दोना के मुंह यूं खुले हुए थे कि मानों किसी जादूगर ने अदृश्य प्लायर से उनका मुंह खोला हुआ था।

फट पड़ने को तैयार आंखों में आश्चर्य व अविश्वास के मेंढक छप्पक-छप्पक कर रहे थे।

जबकि हाथ में फोन लिये खड़ा ब्रिगेडियर की वर्दी वाला अधेड़ दोनों की दशा पर भौचक्का-सा खड़ा हुआ था।

"क...क्या बोले तुम...?" राष्ट्रपति ने स्वयं को सकते की अवस्था से निकालकर पूछा–'जरा एक बार फिर से तो बोलना...।"

"हिन्दुस्तान से वहां के तानाशाह केशव पण्डित का फोन

था। उसने कहा कि वो आपसे बात करनी चाहता है जनरल साहब। वो दोबारा ठीक नौ बजे फोन करेगा।"

राष्ट्रपति ने जमाल खान की तरफ देखा और दुविधा में पड़ा हुआ बोला–"आखिर केशव पण्डित हमसे क्या बात करनी चाहता है–?"

असमंजस के जाल में फंसे जमाल खान ने कंधों को उचका कर कहा–"कह नहीं सकता...जनाब। मुझे खुद समझ में नहीं आ रहा है कि केशव पण्डित फोन पर आपसे क्या बात करनी चाहता है? हमें उसके फोन का इन्तजार करना पड़ेगा। जरूर उसके दिमाग में कोई ना कोई खुराफात होगी। बहुत ही शातिर दिमाग वाला बन्दा है जनाब। काला मदारी ने प्लान बनाकर काले खां के आदमियों को नकली फौजी बनकर गुण्डागर्दी करने को...बदअमनी फैलाने को कहा था। लेकिन केशव ने चाल चल दी। उसने मिलिट्री वालों को रोजाना नया कोड वर्ड देना शुरू कर दिया। मिलिट्री वाले हमारे आदमियों को घेरकर उनसे कोड वर्ड पूछते और उनके ना बता पाने पर उन्हें उड़ा देते। तीन दिन में ही हमारे तीन हजार आदमी हलाक कर दिये गये। मजबूर होकर काला मदारी ने काले खां को बोल दिया कि वो नकली मिलिट्री वाला खेल फौरन ही बंद कर दे–नहीं तो उसके तमाम आदमी हलाक हो जायेंगे।"

तभी ब्रिगेडियर के हाथ में थमा फोन गुनगुनाने लगा।

"केशव पण्डित का ही फोन है जनाब।"

राष्ट्रपति व जमाल खान दोनों ही तनाव में दिखलाई दिये।

फिर राष्ट्रपति ने हाथ बढ़ाकर फोन ले लिया और दूसरे हाथ के इशारे से ब्रिगेडियर को बाहर जाने का इशारा किया।

"स्पीकर फोन खोलकर गुप्तगू कीजिये जनाब।" जमाल खान फुसफुसाकर बोला–"जरा मैं भी तो सुनूं कि केशव आपसे क्या बात करना चाहता है?"

□□□

□□□

राष्ट्रपति ने स्पीकर फोन वाला बटन दबाने पर फोन मेज पर रख दिया और आवाज को रौबदार, दमदार व बुलन्द बनाकर

बोला—"यस, हम प्रेसीडेण्ट एंड मिलिट्री जनरल ऑफ पाकिस्तान बोल रहे हैं—।"

"तो इतना जोर लगाकर बोलने की भला क्या जरूरत है? क्या तुम्हारे जोर लगाने से पाकिस्तान मजबूत, दमदार, ताकतवर मुल्क बन जायेगा—?" फोन के स्पीकर से मानों कोई शेर इन्सानी जुबान में ही बोल रहा था—"मैं केशव पण्डित बोल रहा हूं।"

"हां, बोलो हिन्दुस्तान के तानाशाह।" राष्ट्रपति व्यंगभरे लहजे में बोला—"किसलिये फोन किया है?"

"तुम्हें समझाने के लिये...।"

"हमें क्या समझाना चाहते हो पण्डित...?"

"अपनी काली करतूतों से बाज आ जाओ। उन गलतियों को मत दोहराओ—जो तुमसे पहले वाले हुक्मरानों ने पाकिस्तान के सियासतदानों ने की थीं। उनका नतीजा पाकिस्तान ने भुगता था। तुम्हारी गलतियों का खामियाजा भी पाकिस्तान को ही भुगतना पड़ेगा।"

"क्या मतलब है तुम्हारा—क्या तुम हमें धमकी दे रहे हो—?"

"नहीं। अभी तो हकीकत का आईना ही दिखला रहा हूं जनरल।" शेर की आवाज में हल्की-सी गुर्राहट समाविष्ट होने लगी—"अगर याददाश्त कमजोर हो तो इतिहास की किताब के पन्ने उलटकर देख लेना। वो चीख-चीख कर बतलायेंगे कि जब पाकिस्तान बना था तो हिन्दुस्तान ने पूरे दो सौ करोड़ रुपये दिये थे और ब्याज के साथ-साथ मूल भी माफ कर दिया था। फिर बांग्लादेश वाली जंग में पाकिस्तान के एक लाख से ज्यादा सैनिकों ने हथियार डालकर हिन्दुस्तानी सेना के सामने घुटने टेक दिये थे—सरेंडर कर दिया था। इसके बाद जब-जब भी पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान के साथ जंग छेड़ी उसे मुंह की खानी पड़ी। हमारे जवानों ने कंकर का जवाब पत्थर से, गालियों का जवाब गोलियों से दिया। एक बार तो हमारे जांबाज जवान लाहौर तक जा पहुंचे थे। हर बार हजारों पाकिस्तानी सैनिकों को बंधक बनाया गया या सरैंडर करने को मजबूर कर दिया।

जिन्हें मारा, उनकी तो कोई गिनती ही नहीं है। जब पाकिस्तान को अपनी औकात और हैसियत का अहसास हुआ तो मर्दों वाली जंग से मुंह फेर लिया और हिजड़ों वाली जंग लड़नी शुरू कर दी।"

"हिजड़ों वाली जंग? क्या मतलब है तुम्हारा?"

"तुम लोगों में आमने-सामने वाली जंग लड़ने की हिम्मत तो थी नहीं—इसलिये आतंकवाद का सहारा लिया। आई०एस०आई० जैसे संगठन को हिन्दु... में सक्रिय किया। कई आतंकी संगठन भी सक्रिय किये। कश्मीर, पंजाब में आतंकवाद को बढ़ावा दिया। कभी संसद पर हमला किया तो कभी अक्षरधाम मन्दिर पर हमले किये गये। धोखे से हमले करके निर्दोष लोगों की जान लेना कोई मर्दानगी नहीं होती। ये तो बुजदिलों और हिजड़ों का काम होता है।"

"तु...तुम हमसे बात कर रहे हो पण्डित...।" क्रोध से पागल हुए जा रहे जमाल खान से रहा नहीं गया तो तिलमिला कर बोला—"अपनी जुबान को लगाम दो—।"

"ये कौन बदतमीज बोला जनरल? क्या उसे इतनी भी तमीज नहीं है कि जब दो लोग गम्भीर मसले पर बातें कर रहे हों तो किसी तीसरे को बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना नहीं बनना चाहिये?"

क्रोध तो जनरल को भी बहुत आया, लेकिन जमाल खान तो मारे क्रोध के आपा ही खोकर चीख-चीख कर बोला—"मैं लेफ्टीनेंट जनरल जमाल खान बोल रहा हूं केशव पण्डित।"

"ओ...आई०एस०आई० का मुखिया बोल रह है।" फोन से केशव की आवाज प्रस्फुटित हुई—"तू ही है वो बुजदिल—जो पाकिस्तान में बैठकर हिन्दुस्तान में अपने आदमियों से गड़बड़ी करवा रहा है।"

"तू...तू अपनी हद पार कर रहा है पण्डित।"

"चल बे। अभी हद कहां पार की है मैंने? अभी तो मैं अपने ही वश में हूं। शुक्र मना कि मैंने अभी हद पार नहीं की है—वरना दुनिया के नक्शे से तेरे मुल्क का नामोनिशान ही मिट गया होता—।"

"अपनी जुबान को लगाम दे...मैं कहता हूं कि अपनी जुबान को लगाम दे पण्डित।"

"मेरी जुबान के तीरों से ही तेरा बुरा हाल हो रहा है ओये जमाल खान! अगर मैंने अपने तीरों को जुबान के धनुष से उतारकर दिमाग के धनुष पर चढ़ा लिया तो...तेरा वजूद ही मिट जायेगा।"

"मैं...मैं...हिन्दुस्तान का खात्मा कर दूंगा—।"

"चल बे। तू क्या...और तेरी हस्ती क्या? बड़े-बड़े बादशाहों और लुटेरों ने हिन्दुस्तान का खत्म करने के मन्सूबे पाले...लेकिन वो मिट्टी में मिल गये। जबकि हिन्दुस्तान उसी आन, बान, शान के साथ सीना ताने खड़ा है और खड़ा रहेगा। हिन्दुस्तान की मिट्टी की तासीर ही ऐसी है कि कोई उसे झुक कर सलाम करे तो मां बनकर उसे अपनी आगोश में भर लेती है—लेकिन कोई सिरफिरा उसे टेढ़ी नजरों से भी देखे तो बारूद बनकर उसके वजूद को ही खत्म कर देती है। हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा शेर है...शेर। अगर हम सभी हिन्दुस्तानी एक साथ दहाड़ उठे तो तेरे पाकिस्तान में ऐसा भूकम्प आयेगा कि सब कुछ तहस-नहस हो जायेगा।"

"फोन पर ही तू इतनी जुबानजोरी कर रहा है।"

"मैं तो अकेला ही कई मर्तबा पाकिस्तान में आया और तबाही मचाकर वापिस लौट गया। तूने, तेरे आकाओं और पाकिस्तानी मिलिट्री ने क्या कर लिया था? मेरा बाल भी बांका नहीं हो सका तुम लोगों से।"

"इस बार आयेगा तो...।"

"तो भी तुम लोगों से कुछ नहीं होगा। पहले हिन्दुस्तान से दो सौ करोड़ लिये। इसके बाद अमेरिका के फेंके टुकड़ों पर पल रहे हो। जिसके हाथों में भीख का कटोरा हो उसे कपड़ों से बाहर नहीं निकलना चाहिये—वरना बच्चे भी हंसकर खिल्ली उड़ाते हैं। खैर तू अपनी चोंच बंद रख और मुझे जनरल से दो टूक बात करने दे—।"

मारे अपमान व क्रोध के बावला हुआ जा रहा जमाल खान कुछ कहने जा रहा था कि जनरल ने आंखें निकालकर उसकी

बोलती बन्द कर दी और जहर की-सी घूंट भरकर बोला, "हां, बोलो पण्डित क्या कहना चाहते हो?"

"मुझे चौबीस घंटे के भीतर काला मदारी और काले खां चाहिये—साथ में उनके तमाम आदमी भी।"

"ये दोनों कौन हैं...हम नहीं जानते...।"

"ये फतवे किसी और को पढ़ाना...जनरल! इस तरह झूठ बोलकर और मासूम बनकर अमेरिका वालों को बहुत बेवकूफ बनाते रहे हो। लेकिन मेरा नाम केशव पण्डित है। उड़ते पंछी के नहीं घोसले में छिपे पंछी के भी पंख गिन लेता हूं। काला मदारी और काले खां तुम्हारे ही मोहरे हैं। वो मुझे चौबीस घंटे के भीतर चाहिये।"

"अगर नहीं मिलेंगे तो...तो?"

"तो चौबीस घंटे पूरे होने पर ही दिखलाऊंगा—बतलाऊंगा नहीं।"

इतना कहने पर ही दूसरी तरफ से केशव ने फोन डिसकनेक्ट कर दिया।

□□□
□□□

ठीक चौबीस घंटे पश्चात् दिल्ली स्थित एक गुप्त परमाणु अनुसंधान केन्द्र पर केशव की मौजूदगी में वैज्ञानिक 'हिन्द' नामक मिसाइल छोड़ने का तैयारियां कर रहे थे।

बत्तीस मीटर लम्बे और चार मीटर व्यास वाले 'हिन्द' की क्षमता तीव्र गति से चार हजार किलोमीटर तक मार करने की थी और वो कई टन विस्फोटक सामग्री अपने भीतर समा सकता था।

तैयारियां होने पर वैज्ञानिकों ने केशव की तरफ देखा तो केशव ने मिसाइल दागने का इशारा कर दिया।

और फिर सिर्फ छह मिनट पश्चात् ही पाकिस्तान स्थित एक मिलिट्री कैन्ट पर 'हिन्द' मिसाइल गिरी और तबाही का खेल, खेल गई।

कैन्ट में मौजूद तमाम हथियार, गोला-बारूद, वाहन और हजारों मिलिट्री वाले उड़ गये।

पूरा कैन्ट ही उड़ गया।
दूर-दूर तक ईंटें या मलबा ही दिखलाई पड़ रहा था।

□□□
□□□

"मैंने कहा था ना कि चौबीस घंटे पूरे होने पर करके दिखलाऊंगा—बतलाऊंगा नहीं?" मेज पर रखे फोन के स्पीकर से केशव की सर्द किस्म की आवाज फूट रही थी—"अगर मैं चाहता तो पाकिस्तान के किसी भी शहर या शहरों को उड़ा सकता था और उड़ा सकता हूं—लेकिन निर्दोष नागरिकों की जान लेना ठीक नहीं समझा मैंने। तुम्हारे एक मिलिट्री कैन्ट को उड़ाकर सिर्फ ये समझा दिया है कि मैं क्या कर सकता...!"

"करने को तो हम भी बहुत कुछ कर सकते हैं केशव पण्डित...!" जनरल की वर्दी वाला राष्ट्रपति मानो अंगारे चबा-चबाकर बोला, "जबकि हमला हम भी कर सकते हैं। हमारे पास भी मिसाइलें हैं।"

"तुम्हारे लिये होंगी वो मिसाइलें। मेरे लिये तो झाड़ू की सींकें ही हैं। उनकी मारक क्षमता बहुत कम है और वो सिर्फ चार सौ किलोमीटर की दूरी ही तय कर सकती हैं। जबकि हिन्दुस्तान ने ऐसी मिसाइलें ईजाद कर ली हैं, जो पांच हजार किलोमीटर की दूरी तक मार कर सकती हैं। इसलिये अपनी उन झाड़ू की सींकों की धमकी मत दो। अगर जंग लड़ने का मन है तो आ जाओ मैदान में। मैं वो गलती नहीं करूंगा, जो हमारे नेताओं ने की थी और कब्जे में आये पाकिस्तानी हिस्सों और गिरफ्तार सैनिकों को छोड़ दिया था। कोई कब्जा...कोई गिरफ्तारी, कोई सरेंडर नहीं होगा। आर-पार की जंग होगी। नामोनिशान ही मिटाकर रख दिया जायेगा। खाली मैदान रह जायेगा—जहां हमारे बच्चे क्रिकेट खेलेंगे। अगले चौबीस घण्टों के भीतर काला मदारी और काले खां ने सरेंडर ना किया तो एक साथ कई मिसाइलें दागी जायेंगी और तुम होने वाले नुकसान का अनुमान भी ना लगा सकोगे...जयहिन्द...हिन्दुस्तान जिन्दाबाद।"

दूसरी तरफ से फोन बन्द!

राष्ट्रपति ने सिगार सुलगा लिया और मानो अंगारों पर लोटते हुये सामने बैठे जमाल खान से बोला—"पानी सिर से ऊपर जा रहा है जमाल मियां। केशव तबाही का खेल खेलने को तैयार बैठा है। अगर हम काला मदारी और काले खां को केशव के हवाले करते हैं तो ये हमारी नककटी हो जायेगी। चौबीस घंटे का अल्टीमेटम दिया है उसने। चौबीस घण्टे से पहले ही कुछ करके दिखलाना होगा तुम्हें। जरूरत समझो तो तुरन्त ही हिन्दुस्तान जाओ। चौबीस घण्टे पूरे होने से पहले केशव पण्डित का खात्मा करके आओ।"

"जी जनाब...!" चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव समेटकर बोला जमाल खान, "आप देखिये कि ये नाचीज चौबीस घंटों के भीतर क्या कारनामा करके दिखलाता है!"

□□□
□□□

"नमस्ते...सलाम...हाजी साहब...!"

"सलाम...!" काला मदारी के हाथ में थमे ट्रांसमीटर सैट से जमाल खान की गुर्राती-सी आवाज खारिज हुई, "केशव पण्डित ने क्या किया...जानते हो? उसने तुम्हें और काले खां को अपने कब्जे में लेने को हमारा एक मिलिट्री कैन्ट उड़ा दिया। अगले चौबीस घण्टे के भीतर उसने पूरी तबाही मचाने की धमकी दी है।"

"मैं जानता हूं...हाजी साहब।"

"जानते हो तो कुछ करते क्यों नहीं हो?" दूसरी तरफ से जमाल खान गुर्राकर बोला—"पूरे पाकिस्तान का नाश पिटवाने का इरादा है क्या?"

"न...नहीं.. जनाब...!"

"सुनो काला मदारी...!"

"जी कहिये!"

"जयहिन्द डैम बहुत बड़ा डैम है। हमने सुना है कि अगर वो डैम टूट जाये तो भयानक किस्म की तबाही ला देगा।"

"बिल्कुल हाजी साहब! दिल्ली तक में बीस मीटर पानी होगा। इससे पहले पड़ने वाले तमाम इलाके तो पूरी तरह तबाह

ही हो जायेंगे। कोई भी शहर, कस्बा या गांव सलामत नहीं बचेगा। लेकिन आप चाहते क्या हैं हाजी साहब?"

"काले खां के साथ मिलकर जयहिन्द डैम पर कब्जा कर लो। वहां बारूद और डायनामाइट फिट कर दो। फिर डैम को उड़ाने की धमकी देकर केशव को अकेले और निहत्थे डैम पर बुलवाओ! वो नहीं चाहेगा कि हिन्दुस्तान में इतनी बड़ी तबाही हो जाये। वो आकर सरेंडर कर देगा। फिर उस साले को तड़फा-तड़फाकर मार डालो। सारा टंटा ही खत्म हो जायेगा।"

"ले...लेकिन...!"

"लेकिन? लेकिन क्या?"

"आप तो मेरी मजबूरी जानते ही हैं हाजी साहब। मैं डैम तक नहीं जा सकता। मुझे ज्यादातर समय केशव पण्डित के साथ ही बिताना पड़ता है। मैं उसके साथ ना होऊं तो वो कभी भी घर पर चला आता है। डैम तक पहुंचने में बहुत वक्त लगेगा। वैसे भी मुझे सभी देशवासी जानते हैं। मेरे जयहिन्द डैम तक जाने की बात छिप नहीं सकेगी। केशव को तो आप जानते ही हैं कि वो कितना जीनियस और माइन्डेड है। उसे पता चल गया कि मैं ही काला मदारी हूं तो--वो मेरा बुरा हाल करेगा। कुत्ते से भी बुरी मौत मारेगा।"

"हुम्म...ठीक है! हम हिन्दुस्तान में ही हैं। हम अपने तरीके से जयहिन्द डैम तक पहुंच रहे हैं। वहां पर काले खां और उसके आदमियों को भेज दो। वो लोग पूरी होशियारी बरतते हुये ही डैम तक पहुंचें। डैम पर कब्जा होते ही तुम्हें बतला दिया जायेगा। फिर तुम केशव पण्डित से बात करके उसे अकेले और निहत्थे ही डैम पर भेज देना। इस बात का ख्याल रखना कि वो कोई चालाकी ना करने पाये। अगर वो कोई होशियारी करे तो हमें खबरदार कर देना।"

"ठीक है। हाजी साहब...ठीक है।"

❑❑❑
❑❑❑

हाजी जमाल खान के नेतृत्व में काले खां और उसके सौ आदमियों ने जयहिन्द डैम पर ऑटोमैटिक हथियारों, ग्रेनेड व बमों से हमला कर दिया।

तमाम सिक्योरिटी वालों के साथ वहां मौजूद सभी इंजीनियरों व कर्मचारियों, डैम पर घूमने आये सभी सैलानियों को खत्म कर दिया।

लेकिन काम इतना आसानी से भी नहीं हुआ। सिक्योरिटी वालों ने जमकर मुकाबला किया था और तीन दर्जन आतंकियों को हलाक करने पर ही शहीद हुये थे।

बांध पर कब्जा करने पर शक्तिशाली विस्फोटक बमों को इस तरह सैट कर दिया गया कि रिमोट से बटन दबाकर बांध को तोड़ा जा सकता था।

करीब ही एक ऊंची पहाड़ी थी।

जमाल खान ने तय कर लिया था कि अगर बांध को तोड़ने की नौबत आई तो वो अपने आदमियों समेत उसी पहाड़ी पर पहुंच जायेगा और दूसरी तरफ से उतरकर नेपाल के रास्ते हिन्दुस्तान से निकल जायेगा। उसने काला मदारी से कॉन्टेक्ट करके बोल दिया कि वो केशव से बात करके उसे डैम पर भेज दे।

❑❑❑
❑❑❑

हमारी सफलता से बौखलाकर अन्य प्रकाशक लंगड़े घोड़े पर सवार होकर सफलता की मन्जिल स्पर्श करने के लिये निम्न स्तरीय तरीके अपनाने पर विवश हो गये हैं। 'केशव पण्डित' के नाम का लाभ उठाने के लिये वे छद्म नामों को जन्म देकर आपको धोखा देने के प्रयास में लीन हैं।

परन्तु 'केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित' तथा उन मिलते-जुलते नामों वाले लेखकों में कितना अन्तर है, ये उन लोगों की सफलता से ही स्पष्ट हो गया है। परन्तु फिर भी यदा-कदा कुछ पाठक भ्रम का शिकार हो जाते हैं। वो 'केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित' के भुलावे में दूसरे किसी भी उपन्यास को पढ़ सकते हैं तथा फिर अपना माथा पीट लेने पर विवश हो सकते हैं।

सो हमने आपकी सुविधा के लिये 'केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यासों के टाइटल-कवर के ऊपर भी 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम देना शुरू कर दिया है। कृपया आप 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का उपन्यास लेते समय उपन्यास के कवर पर 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम अवश्य देख लें, ताकि आप माथा पीटने से बचे रहें।

धन्यवाद! प्रकाशक

धीरज पॉकेट बुक्स एवं

तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

रविवार का दिन था।

स्कूल की और अदालत की छुट्टी थी—इसलिये आशीर्वाद, राजन, करतार सिंह, चांदनी शनिवार की रात को ही दिल्ली चले आये थे।

सोफिया तो अपने बालम के साथ थी ही।

वो सभी लोग सुबह-सवेरे नाश्ता ले रहे थे कि खबर आ गई कि जयहिन्द डैम पर काले खां और उसके आदमियों ने सभी को मारकर कब्जा कर लिया है।

तुरन्त ही जनरल का फोन आ गया, वो केशव से आदेश लेकर काले खां और उसके आतंकियों के खिलाफ मिलिट्री

ऑपरेशन करना चाहता था—लेकिन केशव ने मना कर दिया और कहा कि वो पहले इस बात का इन्तजार करेगा कि काले खां की डिमांड क्या है?

थोड़ी ही देर के पश्चात् केशव के मोबाइल पर 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा...हम बुलबुले हैं इसकी...ये गुलिस्ता हमारा' वाले गीत का मधुर संगीत उभरने लगा।

केशव ने फोन उठाकर देखा तो पाया कि स्क्रीन पर उभर रहा नम्बर कतई अजनबी था।

"हलो...!" उसने फोन कान से लगाया।

"मैं काला मदारी बोल रहा हूं।" कौए जैसी कर्कश आवाज केशव के कान से टकराई!

"ओ...तू...!" केशव मुस्कराकर बोला—"तेरे ही फोन का इन्तजार कर रहा था मैं। ये बोल कि जयहिन्द बांध को मुक्त करने के लिये तेरी डिमांड क्या है?"

"तुम...तुम्हें मालूम था कि मेरा फोन आयेगा और मेरी कोई डिमांड भी होगी?" काला मदारी की आवाज में हैरानी थी।

"हां! काले खां तेरे लिये काम करता है। तेरे कहने पर ही उसने बांध पर कब्जा किया होगा। जहां तक मेरा अन्दाजा है, तेरे पाकिस्तानी आका मुझसे बौखला उठे हैं—उनकी हालत पतली है। मुझ पर काबू करने के लिये ही ये खेल खेला गया है। ये बोल कि मुझे क्या करना होगा?"

"तुझे अकेले और निहत्थे जयहिन्द डैम पर पहुंचकर खुद को हाजी साहब के हवाले करना होगा।"

"हाजी साहब?"

"जमाल खान!"

"ओ...वो भी यहां पर आया हुआ है।"

"कोई चालाकी नहीं होनी चाहिये पण्डित। तुझे प्लेन और हेलीकॉप्टर उड़ाने आते हैं। तू वहां अकेला ही जायेगा और खुद को हाजी साहब, काले खां के हवाले कर देना है। इसके बाद तेरी किस्मत का फैसला हाजी साहब करेंगे। अब ये बोल कि तू कितनी देर में...कितने बजे तक डैम पर पहुंच जायेगा? एक

बात याद रखना कि अगर तू वहां नहीं पहुंचा तो...डैम को उड़ा दिया जायेगा! ये तो बतलाने की जरूरत नहीं है कि अगर डैम उड़ता है तो कितनी तबाही मचेगी?"

"नहीं-नहीं, बतलाने की जरूरत नहीं है। मैं मिलिट्री के हेलीकॉप्टर...," अचानक ही केशव की वाणी खामोश हो गई। झील-सी नीली आंखें सिकुड़ती चली गईं और पेशानी पर बल पड़ गये, फिर वो बोला—"से जयहिन्द डैम पर पहुंच रहा हूं। मुझे पांच घण्टे तो लगेंगे ही! एक-डेढ़ बजे तक पहुंच जाऊंगा मैं।"

"ठीक है, मैं हाजी साहब को बोल देता हूं।"

"तू नहीं पहुंचेगा वहां?"

"इच्छा तो है तेरी मौत देखने की...।"

"तो फिर चल...!"

"नहीं...मेरी कोई मजबूरी है।"

"मेरी साथ चल...ना...!"

"पागल हुआ है क्या तू?"

"नहीं...इसमें पागलपन वाली भला क्या बात है? हम दोनों होलीकॉप्टर से चलते हैं। मैं तुझे लेने आ रहा हूं।"

केशव के वाक्य ने आशीर्वाद, साफिया, राजन, चांदनी व करतार सिंह को चिहुंका दिया।

"क...क्या मतलब है तेरा...?" दूसरी तरफ से काला मदारी भी चौंककर बोला—"तुम्हें क्या मालूम कि मेरा घर कहां पर है?"

"हम मौत का घर ढूंढ लेते हैं—फिर तेरा घर ढूंढने में भला क्या दिक्कत आयेगी? दस मिनट में ही तेरे घर पहुंच रहा हूं।"

इतना कहने पर केशव ने फोन बन्द कर दिया।

□□□
□□□

वह जरूरत से ज्यादा ही परेशान था!

सिगरेट में कश लगाते हुये बदुबुदाया—"केशव ने ये क्यों कहा कि वो मेरे घर पर आ रहा है? तो क्या केशव को मालूम पड़ गया कि मैं ही काला मदारी हूं? लेकिन कैसे? मैंने तो चोरी

के फोन से बात की उससे। आवाज बदलने में माहिर हूं ही मैं। फिर केशव मुझे कैसे पहचान सकता है? क्या वो ऐसे ही अन्धेरे में तीर चला रहा था? लेकिन उसने तो कहा कि दस मिनट में मेरे घर पहुंच रहा हूं! यानि...यानि अगर वो मेरे घर आता है तो...ये बात क्लियर हो जायेगी कि वो मुझे पहचान चुका है। फिर तो मुझे अपने बचाव का रास्ता सोच लेना चाहिये। केशव ने मुझे पकड़ लिया तो बहुत बुरी मौत मारेगा।"

वह कुर्सी से उठा और बैसाखियों को बगल में दबाकर कांच के पल्लों वाली खिड़की पर पहुंचा—जहां से उसके बंगले का मेनगेट, लॉन व पोर्टिको नजर आता था।

मुश्किल से दो मिनट ही गुजरी थी कि लाल रंग की टाटा सफारी कार मेनगेट से दाखिल होकर पोर्टिको में रुकी और उसमें से आशीर्वाद, राजन व करतार सिंह के साथ केशव बाहर निकला। सबसे पहले उसने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द किया और फिर एक आलमारी खोली। आलमारी के भीतर एक और गुप्त आलमारी थी—उसी आलमारी से उसने कृत्रिम पैर निकाला और फुर्ती के साथ कटे हुये पैर पर फिट कर लिया।

बैसाखियां फेंक दीं उसने और आम आदमी की मानिन्द ही चलते हुये अटैच्ड बाथरूम में दाखिल हो गया!

कोई सोच भी नहीं सकता था कि वो लंगड़ा भी हो सकता है।

□□□
□□□

कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द पाने पर केशव ने आशीर्वाद को इशारा किया।

चने कुटकुटाते आशीर्वाद नें घूमकर पीठ की तरफ से बन्द दरवाजे पर प्रहार किया...।

भड़ाक की आवाज के साथ दरवाजा टूटकर भीतर की तरफ जा गिरा।

"ऐह रूम तो खाली है प्राहवा जी...!" करतार सिंह कमरे में दाखिल होने पर बोला—"वो किथे गया?"

"बाथरूम के नीचे वाले गुप्त रास्ते का गुप्त दरवाजा है।

सुजाता बहन ने मुझे इस गुप्त रास्ते के बारे में बतला दिया था।" कहने पर केशव बाथरूम में दाखिल हुआ और दीवार पर लगी एक बच्चे की पेन्टिंग को उतारकर फेंक दिया। पेन्टिंग वाली जगह पर एक आला था और उसमें बिजली के मेनस्विच जैसा ही स्विच लगा हुआ था। केशव ने स्विच का लीवर दायें से बायें घुमाया तो हल्की-सी घरघराहट के साथ दीवार का तीन गुणा पांच फुट का हिस्सा पहले पीछे की तरफ धंसता चला गया और फिर किसी शटर की मानिन्द ही ऊपर उठकर गायब हो गया।

केशव जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरते हुये बोला—"ये बंगला सुजाता बहन के पड़दादा जी ने फिरंगियों की समय में बनवाया था और उन्होंने ही खतरे के समय बच निकलने के लिये ये गुप्ता रास्ता बनवाया था। ये रास्ता काफी लम्बा है। ग्राण्ड ट्रंक रोड पर कमला नेहरू पार्क के करीब वाले पुराने कब्रिस्तान के एक पुराने कुएं में जाकर निकलता है। तुम तीनों ऐसा करो कि गाड़ी से उस कब्रिस्तान में पहुंचो और उदयराज को पकड़ो। अगर वो वहां से निकल गया तो उसे पकड़ना मुश्किल हो जायेगा।"

"आप ठीक कह रहे हैं डैडी जी। हम तीनों वहीं पहुंचते हैं। या तो आप उसे पकड़ेंगे—या फिर हम लोग दबोच लेंगे।"

केशव कोई जवाब दिये बिना संकरी गुफा जैसे गलियारे में तेज कदमों से दौड़ पड़ा।

उसे जल्दी ही उदयराज दिखलाई पड़ गया तो रफ्तार को बढ़ा दिया।

दौड़ते उदयराज को अपना पीछा किये जाने का अहसास हुआ तो वह ठिठका और पलटा।

उसने दीवार में लगा लोहे का एक लीवर दबा दिया और चींख-चींखकर बोला—"वहीं रुक जा पण्डित! इस गुफा में ढेर सारी माइन्स बिछाई गई हैं—जिन्हें मैंने एक्टिव कर दिया है। अगर तेरा पैर किसी माइन्न पर पड़ा तो तेरे परखच्चे उड़ जायेंगे। यकीन नहीं होता तो...नमूना देख ले।"

कहने पर उदयराज ने एक छोटा-सा पत्थर उठाकर

गलियारे में फेंका तो धड़ाम...की कर्णभेदी आवाज के साथ आग की लपटें—धुआं व धूल उड़ी।

❑❑❑
❑❑❑

आग...धुआं व धूल के हटने पर अपने पैरों पर खड़ा उदयराज क्रूर किस्म की मुस्कान के साथ बोला—"अब तो मेरी बात पर यकीन हो गया होगा तुझे केशव पण्डित! अगर मेरा पीछा किया तो...उड़ जायेगा। चुपचाप वापिस लौट जा और जयहिन्द डैम पर पहुंच। अगर तू वहां नहीं पहुंचा तो डैम को उड़ा दिया जायेगा। इसके बाद करोड़ों हिन्दुस्तानियों की मौत का जिम्मेदार तू ही होगा। अगर तू वास्तव में ही देशभक्त है तो करोड़ों लोगों की जानें बचाने के लिये अपनी जान की कुर्बानी दे दे। वापिस लौटने से पहले इतना जरूर बतला दे कि तूने ये कैसे जाना कि काला मदारी मैं ही हूं?"

"जब तू फोन पर बात कर रहा था तो मुझे कोयल और बुलबुल की आवाजें सुनाई दीं। तेरे कमरे में लगी वाल क्लॉक में हर घण्टा पूरा होने पर लकड़ी की छोटी-छोटी कोयल और बुलबुल बाहर निकलकर बोलती हैं। ऐसी घड़ियां अपने देश में नहीं बनती! मैं वो वॉल क्लॉक फ्रांस से लाया था और सुजाता बहन को बर्थ-डे पर गिफ्ट की थी। उसी वॉल क्लॉक ने तेरा भान्डा फोड़ दिया ए० सी० पी०। वाकई मैंने सोचा भी नहीं था कि तू ही काला मदारी होगा। तुझे ईमानदार और देशभक्त समझता था और दिल से तेरी इज्जत किया करता था। लेकिन तू तो दुश्मनों के तलुए चाटने वाला कुत्ता निकला। देश का गद्दार निकला तू।"

"क्या रखा है देशभक्ति या कर्त्तव्यनिष्ठता में?" उदयराज कड़वाहट भरे लहजे में बोला, "ये बेवकूफ किस्म के लोगों के लिये है—या तेरे जैसे सिरफिरों के लिये है। जिन्दगी की कड़वी सच्चाई ये है कि दौलत ही आज का भगवान है। जिसके पास दौलत है, वो सुखी है। जिसके पास दौलत नहीं, वो जीते जी ही नरक भोगता है। जब मैं पुलिस में था तो मुजरिमों को मारता था और एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट कहलाता था। मुझे जांबाज और

ईमानदार किस्म का पुलिस अफसर समझा जाता था।

हकीकत ये थी कि मैंने अपने शिकारों के दुश्मनों से मोटी रकम ऐंठकर एनकाउन्टर किये थे। जितनी दौलत कमाई उतनी ही भूख बढ़ती चली गई थी। इसीलिये मैंने आई० एस० आई० ज्वाइन कर ली थी। पाकिस्तानी हुक्मरानों को खुश करके काला मदारी यानि इन्डिया में आई० एस० आई० का चीफ बन गया। अपने ससुर साहब, साले साहब...अपनी धर्मपत्नी सुजाता भारती को मैंने ही उड़वाया और बदले में अरबों रुपये कमाकर स्विस बैंक में जमा किये।"

"हरामजादे...कुत्ते...!" केशव क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये बोला, "सुजाता बहन जी की हत्या के लिये तुझे माफ नहीं करूंगा। बहुत बुरी मौत मारूंगा तुझे।"

"नहीं...तू कुछ नहीं कर पायेगा पण्डित! तुझे हजारों शहर, कस्बे और गांवों के साथ करोड़ों लोगों को बचाने के लिये जयहिन्द बांध पर पहुंचना है। वहां तुझे बहुत बुरी मौत मारा जायेगा। तेरी मौत के साथ ही मेरा राज भी राज रह जायेगा। तेरी जगह मैं लूंगा। हिन्दुस्तान की बागडोर मैं सम्भालूंगा। मैं बनूंगा हिन्दुस्तान का बादशाह। मेरे अलावा कोई विकल्प भी तो नहीं रहेगा। फिर तो मैं दौलत के पहाड़ खड़े कर दूंगा। अभी तो मैं चलता हूं। तू भी तुरन्त ही जयहिन्द डैम पर पहुंच। वहां तेरा बेताबी के साथ इन्तजार हो रहा है।"

कहने पर उदयराज पलटकर भाग निकला। लेकिन कुएं से बाहर निकलते ही आशीर्वाद राजन व करतार सिंह ने उसे दबोच लिया और अच्छी-खासी धुनाई कर डाली।

□□□
□□□

हरे रंग के हैलीकॉप्टर को देखकर डैम के पुल पर मौजूद जमाल खान, काले खां और उनके तमाम आदमी सतर्क हो गये—उन्होंने हथियार सम्भाल लिये। जमाल खान ने काले कुर्ते की जब से वो रिमोट निकाल लिया, जिससे डैम पर सैट किये बमों को ब्लास्ट किया जा सकता था।

हैलीकॉप्टर उसी पुल की सड़क पर उतरा।

लेकिन ये क्या?

केशव अकेला नहीं उतरा!

उसके साथ उदयराज भी था।

बुरी तरह जख्मी उदयराज—जिसके जख्मी होठ सूजकर मोटे हो गये थे और एक आंख का ढक्कन भी बन्द था।

उसके हाथों को पीठ पीछे करके बांधा गया था और मुंह में रूई का गोला ठूंस दिया गया था।

उसकी कनपटी पर रिवॉल्वर लगाये हुये केशव काले खां व जमाल खान से बोला—"पहचानते हो इसे—कौन है ये?"

"हां, पहचानता हूं। ये काला मदारी है।"

काले खां और बाकी आतंकियों ने चौंककर उदयराज को देखा।

"तेरा सबसे बड़ा मोहरा मेरे कब्जे में है जमाल खान! तुरन्त ही डैम पर सैट किये गये बमों को हटवा दे।"

मुस्कराया जमाल खान, फिर जहरीली किस्म की हंसी हंसकर बोला—"पागल हुआ है क्या तू पण्डित? अगर तू ये समझता है कि मैं काला मदारी को बचाने के लिय तेरा हुक्म मान लूंगा...तो तू बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार है। ऐसे मोहरों की परवाह नहीं करते हम लोग। एक मरेगा तो दूसरा आ जायेगा। लेकिन तुझे मारना जरूरी है...बहुत जरूरी है, क्योंकि तेरे होते हमारे मन्सूबे पूरे नहीं होंगे। तू पाकिस्तान के लिये खतरा बना रहेगा। देख...कितने हथियार तुझ पर तने हुये हैं। मेरा इशारा होते ही तुझ पर बेशुमार गोलियां बरस उठेंगी—तेरे जिस्म को छलनी-छलनी कर दिया जायेगा।"

"सुना तूने...!" केशव जमाल खान को खूनी नजरों से घूर रहे उदयराज से धीमी आवाज में बोला, "तूने इन कमीनों के लिये अपने वतन के साथ गद्दारी की—जबकि इन लोगों को तेरी जान की कतई परवाह नहीं है। मैं तेरे हाथ खोल देता हूं। अगर तुझमें थोड़ी-बहुत शर्म-लिहाज या देशभक्ति बची होगी तो प्रायश्चित कर लेगा।"

कहने पर केशव ने उदयराज के हाथ खोल दिये।

"इसे ज्यादा मोहलत देना मुनासिब नहीं होगा हाजी साहब!" काले खां केशव को घूरते हुये बोला, "इसे फौरन से

पेश्तर मार दीजिये। ये बहुत खतरनाक है। इसने ये भी मालूम कर लिया कि उदयराज ही काला मदारी है और काला मदारी को अपने साथ भी ले आया। ये कोई-ना-कोई गड़बड़ी जरूर करके आया होगा। ये कुछ भी कर सकता है।"

"नहीं...ये कुछ नहीं कर पायेगा।" जमाल खान काले खां की तरफ बढ़ते हुये बोला—"इसके पास रिवॉल्वर जरूर है—लेकिन इतने हथियारों के होते हुये इसकी रिवॉल्वर भला क्या कर पायेगी? फिर भी इसे ज्यादा मोहलत देना ठीक नहीं होगा। दुश्मन को ज्यादा देर तक जिन्दा रखना ठीक नहीं होता।"

और इसी के साथ उदयराज ने वो अप्रत्याशित हरकत कर डाली, जिसके बारे में जमाल खान और काले खां ने सोचा तक नहीं था।

अपनी शर्ट के बटनों को झटके के साथ तोड़ने के साथ ही उदयराज ने जमाल खान व काले खां के गलों में लोहे के शिकंजे जैसी मज़बूत बाहों का फन्दा कस दिया और किसी भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राकर बोला—"मेरे पेट पर बंधे शक्तिशाली रिमोट बम को देख रहे हो तुम दोनों! इनका रिमोट पण्डित जी के पास है।"

"हां, ये सच है...!" केशव ने रिवॉल्वर को नीले कोट की जेब में रखकर दूसरी जेब से रिमोट निकालकर कहा, "इस रिमोट का एक बटन दबते ही उदयराज के जिस्म पर बांधा बम ब्लास्ट हो जायेगा और तुम्हारे परखच्चे उड़ जायेंगे।"

"मैं रिमोट के बटन दबाकर....!" रिमोट से दूसरे वाले हाथ से उदयराज के हाथ को अपने गले से हटाने को पूरे जोर लगाते हुये जमाल खान दम घुटने की वजह से भिंची-भिंची-सी आवाज में बोला, "पूरे डैम...को उड़ा दूंगा...बहुत बड़ी तबाही होगी।"

"नहीं...तू इतना जीदार नहीं है जमाल खान! तू दूसरों की जान तो ले सकता है—लेकिन अपनी जान देने का गुर्दा तुझमें नहीं है। चल, दबा बटन। डैम तो उड़ेगा ही। तू भी उड़ेगा। मैं भी उड़ूंगा...बाकी लोग भी उड़ेंगे।"

इतना बोलते ही केशव धनुष से छूटे तीर की मानिन्द

ही जमाल खान तक पहुंचा और उससे रिमोट छीनकर पुल से नीचे पानी के सागर में उछाल दिया।

"अब बोल...जमाल खान! तेरा रिमोट तो पानी में गया। उसके बिना कोई ब्लास्ट नहीं होगा। लेकिन मेरे हाथ में थमा रिमोट उदयराज और तेरे तमाम आदमियों के साथ तेरे भी परखच्चे उड़ा देगा।"

"अबे छोड़...क्या करता है?"

"ये तेरी नहीं सुनेगा जमाल खान! [illegible] ...नेगा। क्योंकि इसे हिप्नोटाइज्ड करके ही यहां पर लाया हूं। इस वक्त ये मेरे हुक्म का गुलाम है। मैंने इसे जो समझाया था...इसने वो ही किया है। अब तू अपने तमाम आतंकियों को बोल कि वो हथियारों को पुल के उस तरफ गहरे पानी में डाल दें। अगर एक मिनट के भीतर तमाम हथियार पानी में ना गये तो अपने अन्जाम की परवाह किये बिना मैं रिमोट का बटन दबा दूंगा।"

मरता क्या ना करता?

जमाल खान ने हुक्म दिया और आतंकियों ने अपने हथियार पानी में फेंक दिये।

केशव ने जेब से मोबाइल फोन निकालकर उसके कुछ बटन दबाये और फिर फोन को वापिस जेब में रख लिया।

मुश्किल से पांच मिनट पश्चात् ही वायुमंडल हेलीकॉप्टरों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

मिलिट्री के एक दर्जन हेलीकॉप्टर डैम के ऊपर मंडरा रहे थे।

तड़...तड़...तड़...!

रेट...रेट...रेट...!

ऊपर से अन्धाधुंध फायरिंग की गई।

तमाम आतंकी गोलियों से छलनी-छलनी होकर पुल पर ही ढेर हो गये।

एक हैलीकॉप्टर पुल पर उतरा और उसमें से आशीर्वाद, राजन व करतार सिंह बाहर निकले। तीनों ने नायलोन की डोरियों से जमाल खान, उदयराज व काले खां को एक साथ बांध दिया। केशव ने उदयराज को सम्मोहन-मुक्त कर दिया।

मौत के एहसास ने उदयराज, जमाल खान व काले खां के चेहरे फक्क कर दिये और पसीने से पूरी तरह नहला दिया।

बाकी हैलीकॉप्टर भी पुल पर उतरे और उनमें से मिलिट्री के जवान निकलकर डैम पर फिट किये गये बमों को हटाने के लिये दौड़ पड़े।

उदयराज, काले खां व जमाल खान को एक हैलीकॉप्टर में सवार किया गया—उसी में केशव, आशीर्वाद राजन व करतार सिंह भी सवार हुये।

आशीर्वाद ने पायलट वाली सीट सम्भाली और हैलीकॉप्टर को उड़ा दिया।

जब हैलीकॉप्टर एक घने जंगल के ऊपर से गुजर रहा था तो केशव ने राजन व करतार सिंह से कहा—"इन तीनों को उठाकर नीचे फेंक दो।"

"न...नहीं...!"

"नहीं...हमें माफ..."

"रहम...रहम करो।"

तीनों रोने-गिड़गिड़ाने लगे—रहम की भीख मांगने लगे।

"नहीं...तुम तीनों ही रहम के काबिल नहीं हो।" केशव कड़वाहटभरे लहजे में बोला, "हिन्दुस्तान को नुकसान पहुंचाने वालों के लिये एक ही सजा है...मौत...।"

राजन व करतार सिंह ने तीनों को उठाकर खुले दरवाजे से बाहर फेंक दिया और केशव ने रिमोट का बटन दबा दिया।

धड़ाम...के भयानक शोर से चारों दिशायें गूंज उठीं।

□□□

□□□

"सोफी...सोफी...सोफी...!"

किसी ने पुकारने के साथ झिंझोड़ा भी तो सोफिया हड़बड़ाकर उठ बैठी।

उसने सामने खड़े केशव को देखा।

अपनी पड़ोसन सोनिया, उसके पति हेमन्त और बेड पर लेटे उसके बेटे चुनमुन को देखा।

"क्या हुआ सोफी...?" केशव मुस्कराकर बोला—"तुम इस तरह इधर-उधर क्या देख रही हो?"

"तुम तो हैलीकॉप्टर में थे।"

"हैलीकॉप्टर में?" केशव सकपकाकर बोला, "क्या बात कर रही हो तुम?"

"हां! तुमने जमाल खान, उदयराज और काले खां को बम से उड़ा दिया था।"

"जमाल खान...उदयराज...काले खां? कौन हैं ये तीनों? लगता है कि तुम कोई ख्वाब देख रही थीं।"

"ख्वाब? क्या मतलब? क्या तुम हिन्दुस्तान के तानाशाह नहीं बने...?"

"तानाशाह...और मैं? बाप रे! इतनी भयानक बात मत करो सोफी। मुझे वकील, इन्वेस्टीगेटर और लेखक ही रहने दो।"

सोफिया ने हथेलियों से सिर थाम लिया।

"क्या हुआ सोफी?"

"कुछ नहीं! रात सोनिया बहन की ज़िद पर मैं लेट गई थी। नींद आ गई और ख्वाब देखने लगी।"

"क्या देखा ख्वाब में?"

सोफिया बतलाने लगी कि उसने ख्वाब में क्या-क्या देखा था।

केशव हंसने लगा और फिर बोला—"बहुत ही भयानक ख्वाब था सोफी! इस पर तो शानदार उपन्यास लिखा जा सकता है। सुजाता भारती, उदयराज, वंशराज, सुन्दर लाल, कुमार स्वामी, जयन्त मुखिया, मुकेश परमार, काले खां, जमाल खान वगैरा का कोई असतित्व नहीं है। इन सभी पात्रों की रचना तुम्हारे अवचेतन ने कर डाली और अच्छी-खासी स्टोरी भी तैयार कर डाली।"

सोफिया ने ठन्डी आह-सी भरी और फिर सोनिया से पूछा—"चुनमुन कैसा है?"

"मैं ठीक हूं आन्टी जी...!" बैड पर लेटा चुनमुन कमजोर-सी आवाज में बोला, "आपने और अंकल जी ने मेरी बहुत हेल्प की...थैंक्यू।"

सोफिया ने उठकर चुनमुन का माथा चूम लिया और फिर केशव से बोली—"आशीर्वाद ने कल मुझसे एक पहेली पूछी थी

केशव: मुझसे सोल्व नहीं होने वाली। वो आमना-सामना होते ही जवाब मांगेगा। प्लीज...तुम ही बतला दो कि बादशाह, बेगम, वजीर, वजीरनी, दास और दासी नदी को कैसे पार करेंगे?"

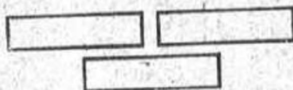
केशव ने बतला दिया और फिर बोला—"आशीर्वाद को मत बोलना कि मैंने बतलाया है।"

"नहीं बतलाऊंगी! वैसे केशव...क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मेरा ख्वाब पूरा हो जाये?"

"क्या मतलब?"

"देश के जो हालात हैं...उन्हें देखकर क्या एक तानाशाह की जरूरत महसूस नहीं होती? बन जाओ सजना तानाशाह।"

प्रत्युत्तर में केशव ने जोरदार ठहाका लगा दिया...बस!



"ले...लेकिन ये कैसे मुमकिन है सोफिया? मैंने ऐसी कोई चेष्टा की तो मुझे प्रधानमन्त्री की कुर्सी से उठाकर फेंक दिया जायेगा।"

"प्रधानमन्त्री तो बेचारा उस बकरे की तरह ही होता है, जो कि खूंखार भेड़ियों से घिरा रहता है। वो अपनी मर्जी से ईमानदारी की घास भी नहीं खा सकता। लेकिन तुम्हें हिन्दुस्तान को सुधारने के लिये प्रधानमन्त्री नहीं, कुछ और बनना होगा। तुम्हें तानाशाह बनना होगा केशव...तानाशाह! तानाशाही के हन्टर से ही भेड़ियों को भेड़ बनाया जा सकता है। बहुत हो लिया प्रजातन्त्र का खेल! अब हिन्दुस्तान को एक तानाशाह की जरूरत है और वो तानाशाह तुम्हें बनना है केशव! हां, बन जाओ सजना तानाशाह...!"



A.H.W. DHEERAJ SERIES

धीरज पॉकेट बुक्स

₹ 50